सत्र : 2021-22

अभिनव ज्योति

एक नहीं, दो नहीं, करो बीसों समझौते,
पर स्वतन्त्र भारत का मस्तक नहीं झुकेगा।

अगणित बलिदानों से अर्जित यह स्वतन्त्रता,
अश्रु, स्वेद, शोणित से सिंचित यह स्वतन्त्रता।
त्याग, तेज, तपबल से रक्षित यह स्वतन्त्रता,
दु:खी मनुजता के हित अर्पित यह स्वतन्त्रता।

इसे मिटाने की साजिश करने वालों से कह दो,
चिनगारी का खेल बुरा होता है।
औरों के घर आग लगाने का जो सपना,
वो अपने ही घर में सदा खरा होता है।

अपने ही हाथों तुम अपनी कब्र न खोदो,
अपने पैरों आप कुल्हाड़ी नहीं चलाओ।
ओ नादान पड़ोसी अपनी आँखें खोलो,
आजादी अनमोल, न इसका मोल लगाओ।

''भारतरत्न'' पं. अटल बिहारी बाजपेयी

NAAC Accredited 'B' Grade

शिक्षा निदेशालय, उच्च शिक्षा (इलाहाबाद) द्वारा 'क' श्रेणी प्राप्त

दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई (जालौन) उ.प्र.

सरस्वती वंदना

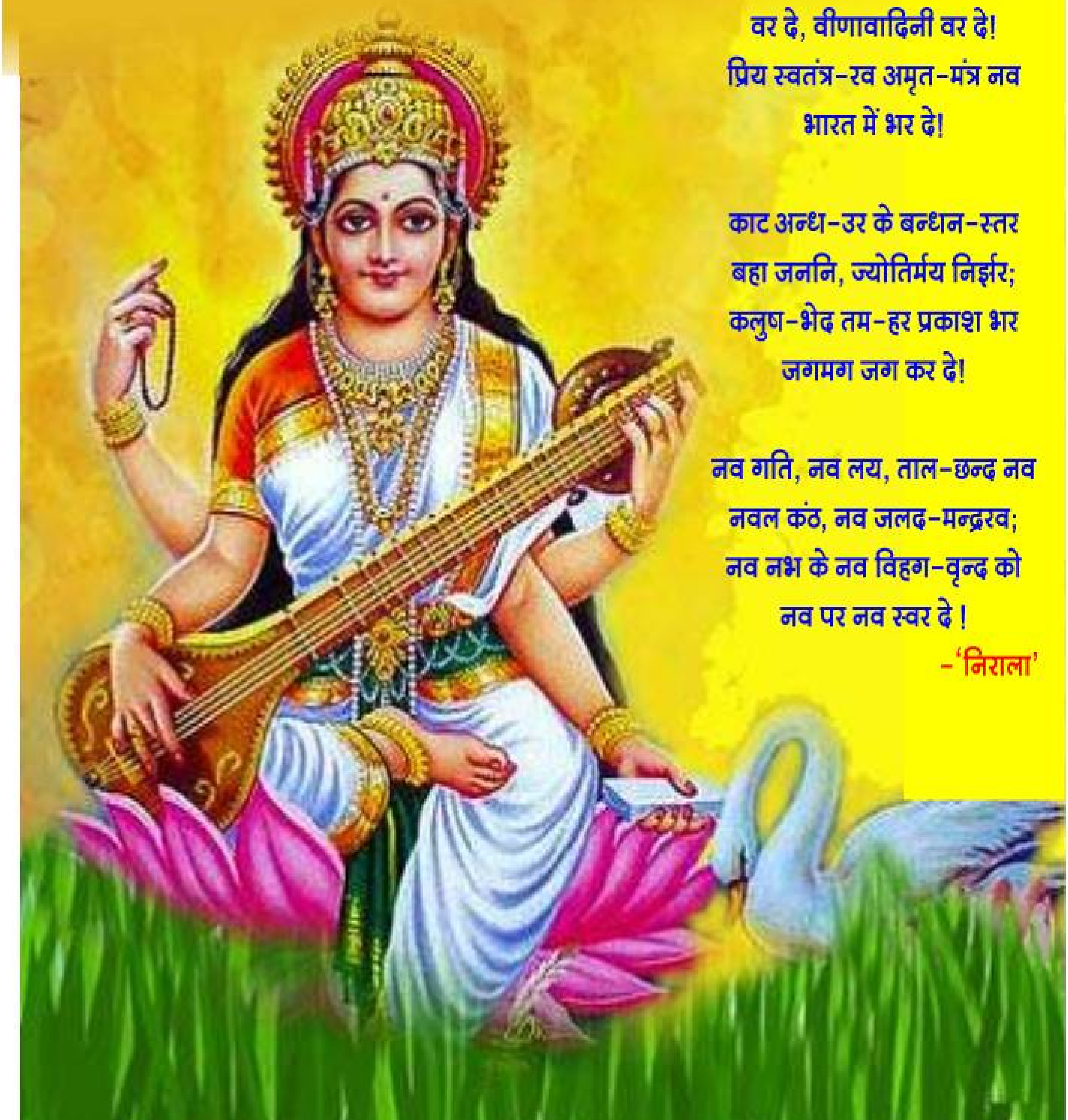

वर दे, वीणावादिनी वर दे!
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!

काट अन्ध-उर के बन्धन-स्तर
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर;
कलुष-भेद तम-हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे!

नव गति, नव लय, ताल-छन्द नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव;
नव नभ के नव विहग-वृन्द को
नव पर नव स्वर दे !

-'निराला'

अभिनव ज्योति

NAAC Accredited 'B' Grade

शिक्षा निदेशालय, उच्च शिक्षा (इलाहाबाद) द्वारा 'क' श्रेणी प्राप्त

संरक्षक

प्रो० (डॉ.) राजेश चन्द्र पाण्डेय

प्राचार्य

प्रधान सम्पादक

डॉ० नीरज कुमार द्विवेदी

सम्पादक मण्डल

डॉ० सर्वेश कुमार शाण्डिल्य

डॉ० शीलू सेंगर

डॉ० आराम सिंह

डॉ० शरत् श्रीवास्तव

डॉ० नगमा खानम्

डॉ० जितेन्द्र प्रताप

सत्र : 2021–22

प्रो. मुकेश पाण्डेय
कुलपति
Prof. Mukesh Pandey
Vice-Chancellor

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
झाँसी – 284 128 (उ. प्र.) भारत
BUNDELKHAND UNIVERSITY
JHANSI - 284 128 U.P. (INDIA)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि दयानन्द वैदिक कालेज, उरई (जालौन) द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अभिनव ज्योति' के सत्र २०२१-२२ के अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

दयानन्द वैदिक कालेज, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय का अग्रणी महाविद्यालय है जहाँ से शिक्षित हुये विद्यार्थी आज देश - विदेश में उच्च पदों पर आसीन होकर महाविद्यालय और विश्वविद्यालय को गौरवान्वित कर रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में ऐसे लेखों, कविताओं का प्रकाशन किया जायेगा जिसके अध्ययन से वर्तमान में अध्ययनरत् छात्र- छात्रायें लाभान्वित होंगे।

मेरी ओर से पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु शुभकामनायें प्रेषित हैं।

शुभकामनाओं सहित,

(प्रो. मुकेश पाण्डेय)
कुलपति

प्रो. राजेश चन्द्र पाण्डेय
प्राचार्य
दयानन्द वैदिक कालेज, उरई
(जालौन) - २८५००१

सन्देश

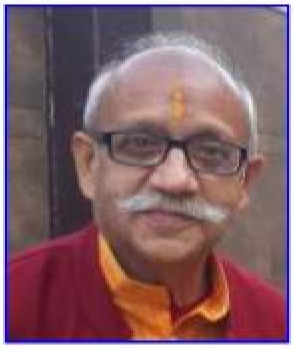

मेरे लिए यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई की वार्षिक पत्रिका 'अभिनव ज्योति' सत्र 2021–22 प्रकाशन हेतु तैयार है। 'अभिनव ज्योति' महाविद्यालय की रचनात्मक प्रतिभा का अनिवार्य अंश है। महाविद्यालय परिवार की सर्जनात्मक ऊर्जा से हमारा समाज भी प्रकाशित होगा। मैं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों द्वारा रचनात्मक दायित्व के सम्यक् निर्वहन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। इसके साथ ही महाविद्यालय परिवार के मंगलमय तथा उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ ।

डॉ. हरीमोहन पुरवार
अध्यक्ष / उपाध्यक्ष
प्रबन्धकारिणी कमेटी
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई

सन्देश

यह प्रसन्नता का विषय है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अभिनव ज्योति' (सत्र 2021–22) प्रकाशन हेतु तैयार है। कोविड के कठिन दौर से हम उबर रहे हैं। समाज अपने सामान्य रूप में लौट रहा है। विकास पुनः गतिमान हो रहा है। इसी के साथ शिक्षा व्यवस्था भी अपनी पटरी पर लौट रही है। कोविड काल की विपरीत परिस्थितियों में भी हमारे महाविद्यालय में पूर्ण क्षमता के साथ पठन–पाठन एवं पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों का कुशलतापूर्वक संचालन हुआ है। कॉलेज के गरिमामय संस्कार और समयानुरूप उन्नति के पग ही हमारे अस्तित्व के आधार हैं। महाविद्यालय परिवार का सहयोग और समर्पण ही हमारी दक्षता है। आगामी समय में नैक मूल्यांकन प्रस्तावित है। आशा करता हूं कि महाविद्यालय परिवार पूर्ण सामर्थ्य के साथ अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करेगा। मेरा मानना है कि बूंद–बूंद से सागर बनता है और कण–कण से आगर। इस समय मुझे यह पंक्ति स्मरण आ रही है–

जब हौसला कर लिया है ऊँची उड़ान का।
कद देखना फ़िज़ूल है फिर आसमान का।

'अभिनव ज्योति' संपादक मंडल के सतत प्रयास से पत्रिका प्रकाशनार्थ तैयार है। आशा करता हूं कि जल्द ही यह पत्रिका विद्यार्थियों के हाथों में होगी। पोस्ट कोविड समय में ऊर्जा से भरे हुए भावी कर्णधारों के हाथ में देश का भविष्य है। ई वर से प्रार्थना है कि इनका जीवन–पथ सदैव आलोकित करें। इनके मन में देश के प्रति सच्ची निष्ठा और समर्पण का भाव भरें। अंत में, मैं संपादक मंडल व महाविद्यालय परिवार को शुभकामनाएं देते हुए समस्त विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

डॉ0 देवेन्द्र कुमार
अवैतनिक मंत्री
प्रबन्धकारिणी कमेटी
दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई

सन्देश

किसी भी प्रधान के सर सदैव ही कांटों का ताज विराजता है। प्राचार्य का पद महाविद्यालय के प्रधान सेवक का ही होता है। महाविद्यालय की प्रतिष्ठा और पद की गरिमा के अनुरूप निर्णय लेने होते हैं, जो कुछ लोगों के लिए खट्टे और कुछ लोगों के लिए मीठे होते हैं। परन्तु मेरा सदैव ही प्रयास होता है कि ई वर मुझसे जो भी निर्णय करवाए वह महाविद्यालय के, मेरे सहयोगियों के और विद्यार्थियों के लिए हितकारी हों ताकि महाविद्यालय उन्नति के पथ पर निर्बाध रूप से आगे बढ़ता रहे।

नई शिक्षानीति 2020 उच्च शिक्षा में इसी सत्र से लागू हुई है। इसने न केवल सरकार, वि वविद्यालय के समक्ष नवीन चुनौतियां खड़ी की हैं अपितु महाविद्यालय के समक्ष भी अनेक चुनौतियां उपस्थित हुई हैं। मेजर, माइनर विषयों हेतु योग्य अध्यापकों की उपलब्धता, वर्ष में दो बार परीक्षा का आयोजन, आन्तरिक मूल्यांकन, साथ ही वि वविद्यालय परीक्षा का नोडल परीक्षा केन्द्र बनाया जाना आदि अनेक प्रकार की नवीन चुनौतियों का सामना करते हुए महाविद्यालय अपनी पूर्ण क्षमता और दक्षता के साथ कार्य करने हेतु प्रयासरत है।

लगभग सात दशकों की समृद्ध परम्परा में उच्चादर्शों और मानकों के जो नवीन आयाम महाविद्यालय ने स्थापित किए हैं उन उच्चाद ों को नवीन शिखर तक ले जाने हेतु मैं सदैव संकल्पित रहा हूं। मेरा प्रयास रहता है कि कुशल प्रबन्धतन्त्र के आशीर्वाद से, शिक्षक एवं शिक्षणेतर कर्मचारियों के सहयोग से, जागरुक विद्यार्थियों की आकांक्षाओं पर खरा उतर सकूं।

मैं आभारी हूं अपने सहयोगियों का जिन्होंने प्रत्येक दायित्व–निर्वहन में उन्मुक्त भाव से समर्थन दिया। मैं इस महाविद्यालय से जुड़े सभी ऊर्जस्वित व्यक्तियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए, संपादक मंडल के साथ, समस्त महाविद्यालय परिवार के प्रति मंगलकामनाएं व्यक्त करता हूं।

प्रो० (डॉ०) राजेश चन्द्र पाण्डेय
प्राचार्य
दयानन्द वैदिक कॉलेज
उरई

सम्पादकीय

हम सभी इस बात से भलीभांति परिचित हैं कि कोरोना वायरस ने वर्तमान परिदृश्य को बहुत बड़े स्तर पर नुकसान पहुंचाया है। सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक नुकसानों की भरपाई तो काफी हद तक हो जाती है परन्तु मानसिक एवं भावनात्मक नुकसान की भरपाई बड़ी मुश्किल होती है। कोरोना ने हमारे समाज को व्यापक स्तर पर प्रभावित किया है। कोरोनोपरान्त समाज एक अलग स्वरूप में सामने आया है। हम अब डिजिटल युग के प्रथम चरण को पार कर चुके हैं। आज हर नागरिक के हाथ में इलेक्ट्रानिक गैजेट्स हैं। हर हाथ, हर दिमाग व्यस्त है, कोई खाली नहीं है। यह समाज के लिए एक सकारात्मक संकेत है। इस सकारात्मकता के बीच हमें यह मूल्यांकित करना चाहिए कि युवा पीढ़ी, जो अभी तक पूरी तरह खाली बैठी थी, वह अचानक कहां व्यस्त हो गई ? इस प्रश्न का उत्तर, मेरे नजरिए से, बहुत कठिन नहीं है डिजिटल दुनिया ने सभी को अपने आगोश में समा लिया है। बच्चे, बूढ़े और जवान सभी इस दुनिया की चमक–दमक और मायामोह में इस कदर डूब गए हैं कि जैसे बाकी की दुनिया है ही नहीं। परिणति बड़ी ही भयावह नजर आती है। यह आभासी दुनिया महाभारत के उस चक्रव्यूह की तरह लग रही है जिसमें अभिमन्यु को घुसना तो आता है परन्तु निकलना नहीं। डिजिटल क्रांति ने हमारे दैनिक जीवन को निश्चय ही सरल बनाया है, परन्तु युवा पीढ़ी का इसके प्रति निमग्नता के स्तर तक सहज आकर्षण एक खतरनाक संकेत भी दे रहा है। इसके प्रभाव में अनेक युवा दिग्भ्रमित हो रहे हैं, उनमें संवेदना का स्तर प्रभावित हो रहा है। प्रेम, सम्मान और परिवार के प्रति जुड़ाव में कमी आ रही है, वे हिंसा की तरफ झुकते जा रहे हैं। हमारे देश की बौद्धिक सम्पदा जाया जा रही है। इससे न केवल युवाओं को अपितु अभिभावकों सहित हम सभी को अपनी जिम्मेदारी सुनिश्चित करने की जरूरत है। डिजिटल क्रांति के सकारात्मक पक्ष को हमें अपनाना है और नकारात्मक पक्ष के प्रति सावधान रहने की जरूरत है। डिजिटल जगत् में ज्ञान का अपरिमित संसार व्याप्त है। ज्ञान के इस पवित्र सागर में डुबकी लगाते हुए हम सभी को अपना जीवन सफल बनाना है।

मैं आभारी हूँ पत्रिका के संरक्षक एवं महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार जी का जिन्होंने पत्रिका के प्रति सजगता बनाए रखी। साथ ही समय–समय पर यथावश्यक दिशा–निर्देशों से सम्पादक मण्डल को अभिसिंचित किया। मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ महाविद्यालय प्रबंधकारिणी समिति के माननीय अवैतनिक मंत्री डॉ. देवेन्द्र कुमार जी का जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन हेतु सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। मैं कृतज्ञ हूँ पत्रिका के तत्कालीन सम्पादक मण्डल के सभी सम्मानित सदस्यगणों (डॉ. मन्जू जौहरी, डॉ. सुरेन्द्र मोहन, डॉ. जितेन्द्र प्रताप, डॉ. अंगद सिंह कुशवाहा, डॉ. सर्वेश कुमार शांडिल्य, डॉ. प्रवीण सिंह) के प्रति जिन्होंने वार्षिकांक हेतु सामग्री संकलित एवं व्यवस्थित करने में अभूतपूर्व योगदान दिया।

पत्रिका के कलेवर को अंतिम रूप प्रदान करने हेतु वर्तमान सम्पादक मण्डल के सभी सहयोगियों के प्रति विशेष रूप से आभारी हूँ। उन सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ जिनका रचनात्मक सहयोग इस अंक को प्राप्त हुआ है। मै आभार व्यक्त करता हूँ उन सभी सम्मानित सदस्यों का जिन्होंने सम्पादक मण्डल से बाहर रहते हुए भी पत्रिका निर्माण में यथासमय सहयोग प्रदान किया। विवेक ऑफसेट, उरई के प्रति भी मैं आभारी हूँ जिनके सहयोग से यह पत्रिका मुद्रित हो रही है। मैं सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों की ओर से महाविद्यालय के समस्त छात्र–छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य हेतु मंगलकामनाएं व्यक्त करता हूँ।

डा. नीरज कुमार द्विवेदी
प्रधान सम्पादक

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
	विचार वीथिका		
1.	स्वतन्त्रता समर में जनपद जालौन के वैश्यों की भूमिका	डॉ. हरीमोहन पुरवार 'बुन्देलरत्न'	11
2.	श्रेय नहीं कुछ मेरा	प्रो. (डॉ.) राजेश चन्द्र पाण्डेय	13
3.	आजादी का अमृत महोत्सव और हमारी भागीदारी	डॉ. अलकारानी पुरवार	21
4.	पारिस्थितिकी तंत्र	डॉ. विजय कुमार यादव	23
5.	भारत की समृद्ध ज्ञान–परम्परा	प्रगति मिश्रा	24
6.	'पटकथा' में चित्रित सामाजिक विद्रूपता और धूमिल	अनुपम देवी	25
7.	फॉरेस्टमैन ऑफ इंडिया	अनामिका	29
8.	परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के सूत्र	आस्था तिवारी	30
9.	दर्द न जाने कोई उपन्यास में तृतीय लिंग की व्यथा	सुप्रिया सोनी	32
10.	नम्र रहने की ताकत	आलोक कुमार	34
11.	डरावना स्वप्न अनोखी सीख	रिया तिवारी	35
12.	इंटरनेट युग एवं व्यक्तिगत तथा सामाजिक सामंजस्य	डॉ. राजेश पालीवाल	36
13.	साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद के विविध आयाम	डॉ. अतुल प्रकाश बुधौलिया	38
14.	हिन्दी साहित्य में नयी कविता का युग	शिवानी सिंह जादौन	42
15.	बरसात	राहुल	46
16.	उच्च शिक्षा और सूचना तकनीक	डॉ. हृदयकान्त श्रीवास्तव	48
17.	कुंवर नारायण के काव्य में सामाजिक एवं नैतिक मूल्य	रीना	53
18.	भारतीय संविधान एवं महिलाओं का वैधानिक प्रतिनिधित्व	डॉ. नमो नारायण	56
19.	प्रयोगवाद : प्रयोग की प्रयोगशाला	आँचल कुमारी	59
20.	ग्रीन हाउस प्रभाव	डॉ. नीलरतन सिंह	62
21.	भारत–अमेरिका संबंध : एक मूल्यांकन	डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी	63

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
22.	बी.एड. महिला एवं पुरुष प्रशिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन	रश्मि जादौन	73
23.	योग–प्राणायाम एवं मूल्य	डॉ. सुरेन्द्र यादव	76
24.	शुक्ल जी के निबंध विषयक विचार	डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी	83
25.	भाषिक संक्रमण का समय और हिन्दी	रविप्रकाश पाण्डेय	87
26.	सोचो ! पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमना बन्द कर दें, तो क्या होगा ?	शिवानी तिवारी	92
27.	पर्यावरण संरक्षण : हमारा नैतिक धर्म	डॉ. कृपाशंकर यादव	94
28.	एक महान शासिका : रुद्रमा देवी	अलाउद्दीन	98
29.	What Psychology is not?	Samya Baghel	99
30.	The Indian English Novel	Dr. Sheelu Sengar	101

काव्य वीथिका

1.	वृक्षारोपण	डॉ. के.के. निगम	103
2.	कलम के किरदार में	विवेक कुमार यादव	103
3.	भारत का गौरव	उर्वशी द्विवेदी	104
4.	सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा	विवेक कुमार 'अकेला'	104
5.	सीख	अंजली निराला	105
6.	काश मेरे भी पंख होते	अंजली वर्मा	105
7.	प्रेरणा गीत	अंशिका शर्मा	106
8.	पिता का बेटी के प्रति प्यार	आँचल स्वामी	107
9.	जीवन	आकाँक्षा वर्मा	107
10.	आज की नारी	आकृति रावत	108
11.	सपनों में जान	आकृति रावत	109
12.	वीर शहीदों की कहानी	सृष्टि जादौन	110

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
13.	बुन्देली कविता–हंसना मत	साक्षी राजपूत	110
14.	एक औरत की कहानी	अंकुर बाथम	111
15.	मन की बात	नेहा राजपूत	112
16.	एकता गीत	धीरेन्द्र प्रताप सिंह	113
17.	जिन्दगी	वर्षा देवी	113
18.	I Wish.....	Jyoti Kushwaha	114
19.	Botany	Shlesha Kanchan	115
20.	Don't Quit	Vaishnavi Yadav	116
21.	A Munda Song	Dr. Atul Prakash Budhoulia	117

परिषदीय गतिविधियाँ

1.	हिन्दी परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी	118
2.	संस्कृत साहित्य परिषद् रिपोर्ट : 2021–2022	डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य	119
3.	English Association Report : 2021-22	Dr. S.M. Yadav	121
4.	इतिहास परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. मंजू जौहरी	122
5.	अर्थशास्त्र परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. कृपाशंकर यादव	123
6.	संगीत परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. शगुफ्ता मिर्जा	123
7.	भूगोल परिषद् की शैक्षणिक गतिविधियां : 2021–22	डॉ. गौरव यादव	124
8.	राजनीति विज्ञान परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. नगमा खानम	126
9.	समाजशास्त्र परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डा. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव	127
10.	मनोविज्ञान परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. माधुरी रावत	128
11.	शिक्षक शिक्षा विभाग रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. शैलजा गुप्ता	129
12.	एम.एड. (स्ववित्तपोषित) विभाग रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. सुरेंद्र यादव	130
13.	वनस्पति विज्ञान परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. नीति कुशवाहा	131

अनुक्रमणिका

क्र.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
14.	रसायन विज्ञान विभाग परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. नफीसुल हसन	132
15.	Zoology Association की गतिविधियाँ : 2021–22	डॉ0 आलोक पाठक	133
16.	गणित परिषद् रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान	134
17.	Report of Council of Physics : 2021-22	Dr. Angad Singh Kushwaha	135

परिसर गतिविधियाँ

1.	समारोह दृश्य श्रव्य समिति वार्षिक आख्या : 2021–22	डॉ. राजेश पालीवाल	136
2.	राष्ट्रीय सेवा योजना वार्षिक आख्या : 2021–22	डॉ. माधुरी रावत	139
3.	वीमैन सेल की प्रगति आख्या : 2021–2022	डॉ. मन्जू जौहरी	140
4.	पर्यावरण समिति रिपोर्ट : 2021–22	डॉ. नमो नारायण	141
5.	एन.सी.सी. रिपोर्ट : 2021–22	ले. (डॉ.) रामप्रताप सिंह	141
6.	रोवर–रेंजर वार्षिक आख्या : 2021–22	डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी	142
7.	बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय अन्तर्महाविद्यालयीय रोवर–रेंजर समागम रिपोर्ट	डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी	145

सेवानिवृत्त

1. सेवानिवृत्त कर्मचारीगण 148

स्मृतिशेष

1. विजयराम 148
2. डॉ. मदन मोहन तिवारी 149
3. डॉ. साम्या बघेल 150

चित्र वीथिका

महाविद्यालय में सत्र पर्यन्त संचालित गतिविधियों की छवियां 151

स्वतन्त्रता समर में जनपद जालौन के वैश्यों की भूमिका

डॉ. हरीमोहन पुरवार, 'बुन्देलरत्न'
निदेशक
बुन्देलखण्ड संग्रहालय, उरई

महान् चिन्तक एवं दिशा निर्देशक मनु ने कहा है कि–"पराधीन सब कुछ दुखरूप है, स्वाधीन सब कुछ सुखरूप है।– यह संक्षेप में सुख दुख का लक्षण है।"

अस्तु दुख की जड़ परतन्त्रता है व सुख की चेतना स्वतन्त्रता है। सुख का आभास स्वतन्त्रता है। आनन्द व हर्ष का कारण स्वतन्त्रता है। प्रेम व सौहार्द का पर्याय स्वतन्त्रता है। इस देश की ऐसी महान् स्वतन्त्रता को उस समय आघात लगा जब हमने अपने ब्रिटिश शरणागत को अपने अतिथि को "अतिथि देवो भव" मानकर उसे स्थान दिया। उसका वन्दन किया परन्तु उस अतिथि ने हमारी सांस्कृतिक भावनाओं के उस प्रेमोमयी निश्चल व्यवहार का अन्यत्र लाभ उठाते हुये, हमें दासता की जंजीरों में जकड़ दिया और हम शनैः शनैः गुलाम हो गये। ये गुलामी हमारे रक्त में नहीं थी। अतः हमने अंगड़ाई ली और पुनः अपनी स्वतन्त्रता के लिये एक जुट होकर संघर्ष पथ पर आगे बढ़े।

कंटकाकीर्ण स्वतन्त्र संघर्ष पथ पर इस देश के सभी वर्गों एवं जातियों ने यथासाध्य अपना–अपना बलिदान देकर इस पथ को अपने त्याग एवं बलिदान से सुवासित किया है। इसी श्रृंखला में जनपद जालौन के वैश्य वर्ग का भी विशेष योगदान रहा है। सन 1857 से 1947 तक 90 वर्षों तक अनवरत रूप से चलने वाले स्वतन्त्रता समर में इस जनपद जालौन के वैश्य समुदाय द्वारा परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से अपनी अतिविशिष्ट भूमिका का निर्वहन किया गया जिसके कारण ब्रिटानी हुकूमत को इस देश को अपने चंगुल से आजाद करना ही पड़ा।

महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा भारत छोड़ो आन्दोलन में अपने कितने ही वैश्य बन्धुओं ने अंग्रेजों के खिलाफ जेलों को अपनी उपस्थिति से भर दिया था। हमारे ये वैश्य बन्धु आज भले ही स्मृति एवं इतिहास के पटल से विलुप्त हो गये हों परन्तु जब इन्होंने इंकलाब जिन्दाबाद, वन्देमातरम् आदि नारे लगाये थे तो सात समुद्र पार बैठे अंग्रेज हुक्मरानों की रात्रि की नीदें उड़ गयीं थीं और जब ये हमारे प्रेरणास्त्रोत बमों के धमाके करते थे तो अंग्रेजों को दैनिक दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो जाती थी।

आज स्वतंत्रता की पचहत्तरवीं की वर्षगांठ पर अपने महान् स्वजातीय बन्धुओं को स्मरण कर हम उन्हें अपनी पुष्पांजलि प्रेषित करते हैं। जनपद जालौन के जिन वैश्य वीर रणबांकुरों ने स्वतंत्रता समर में बढ़–चढ़कर भाग लिया उनमें श्री कालीचरण बसारिया, कोंच, श्री गंगाधर सेठ, देवापुरवा, जालौन, श्री गंगाप्रसाद, कोंच, श्री गंगाप्रसाद, उरई, श्री गयाप्रसाद गुप्त, रसाल, श्री जगदीश नारायण रूसिया, कालपी, श्री जैदेव गुप्ता, कोंच, श्रीमती धानकुंअर देवी, ऊमरी, श्री नत्थूराम, जालौन, श्री नत्थूराम, उरई, श्री नागूराम सोनकिया, जालौन, श्री नाथूलाल, कुसमिलिया, श्री पन्नालाल गुप्ता, मुसमरिया, श्री पन्नालाल पहाड़िया,

जालौन, श्री प्रहलाद गुप्त, कोंच, श्री बद्रीप्रसाद पुरवार, जालौन, श्री बनवारीलाल गुप्त, जैसारी कलां, श्री बंशीधर अग्रवाल, जालौन, श्री बांकेलाल, हदरुख, श्री बाबूराम गुप्त, मिझौना, श्री बाबूलाल, कालपी, श्री बैजनाथ, चुर्खी, श्री स्वामी ब्रह्मानन्द उर्फ रामदीन पहारिया, जालौन, श्री वृन्दावन, डकोर, श्री बृजलाल गुप्त, माधौगढ़, श्री भगवानदास अग्रवाल, कोंच, श्री मन्नीलाल अग्रवाल, कालपी, श्री मानिक तेली, जगम्मनपुर, श्रीमती मायादेवी, उरई, श्री मोतीलाल वैश्य, डकोर, श्री रघुनन्दनलाल, गरहर, श्री रघुनन्दनलाल, कोंच, श्री रघुनाथदास, कोंच, श्री रघुनाथ प्रसाद, करतेर, श्री रघुवरदयाल गुप्त, माधौगढ़, श्री रघुवंशीलाल, डकोर, श्री रामकिसुन, हदरुख श्री रामकिसुन, रामपुरा, श्रीरामगोपाल गुप्त, कोंच, श्रीराम चेतन गुप्त, कुठौन्द श्री रामनरायण अग्रवाल, कोंच, श्री श्यामलाल, एट, श्री सियाराम, कोंच, श्री सुखलाल सेठ, कोंच, आदि का प्रमुख स्थान रहा है। इनके अलावा न जाने कितने बन्धुओं ने अपनी कुर्बानी इस स्वतन्त्रता महायज्ञ में समिधा बनकर दी जिसके ज्योतित अग्निपुंज से ही यह स्वतन्त्रता आज हम भोग रहे हैं।

एक ओर जब जेलें भरी जा रहीं थीं। लोग फांसी के फन्दों पर लटकाये जा रहे थे। कोड़ों और चाबुकों की मार से शरीर की चमड़ी उधेड़ी जा रही थी। ठण्ड की सांय–सांय करती रात्रि में बर्फ की सिल्लियों से जहां शरीर गलाये जा रहे थे वहीं घरों में बैठी मां–बाप की बूढ़ी निगाहें अपने जवान बेटों की राह देख रहीं थी, बहिनें अपने हाथों में रक्षाबन्धन का पवित्र सूत्र लिये अपने भाइयों की कलाई का पवित्र स्मरण कर रहीं थीं, कहीं प्रियतमा अपने प्रियतम की स्निग्ध स्मृतियों में खोयी–खोयी अर्द्धचेतनावस्था में प्रतीक्षारत थीं और कहीं–कहीं समूचा परिवार भूख–प्यास की चपेट में आकर दम तोड़ता तड़प रहा था वहीं पर समाज के कुछ धैर्यवान, अपरोक्ष रूप से अपने आजादी के दीवानों के परिवार के लालन–पालन के दायित्व का निर्वाह कर रहे थे। जो जेल गये वे इतिहास बन गये और जिन्होंने अपना सर्वस्व इन आजादी के मतवालों के लिये जेल से बाहर रहते हुये अर्पित किया, बूढ़े मां बाप की लाठी बने, बहिन की राखी को कलाई दी और घर की लाज को सम्मान दिया, वे आजादी की हवा में हवा हो गये। आज हम उन हवा हुये आजादी के दीवानों को भी अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

सुभाषितम्

क्षमाशस्त्रं करे यस्य, दुर्जनः किं करिष्यति?
अतृणे पतितो वह्निः, स्वयमेवोपशाम्यति।। —महाभारत

जिसके हाथ में क्षमा रूपी अस्त्र हो, उसका दुर्जन क्या बिगाड़ सकेगा ? घास–फूस रहित भूमि पर गिरी अग्नि स्वतः ही शान्त हो जाती है।

सत्येन रक्ष्यते धर्मो, विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृजया रक्ष्यते रूप कुलंशीलेन रक्ष्यते।। —महाभारत

धर्म सत्य से रक्षित होता है। विद्या की योग से रक्षा होती है। रूप की स्वच्छता से रक्षा होती है और कुल शील (अच्छे स्वभाव) से रक्षित होता है।

श्रेय नहीं कुछ मेरा.....

(अज्ञेय कृत असाध्य वीणा पर केन्द्रित)

प्रो0 (डॉ0) राजेश चन्द्र पाण्डेय
प्राचार्य

अज्ञेय ने साहित्य की अनेक विधाओं में रचना की है। कहा जा चुका है कि जिन भी विधाओं को उन्होंने अभिव्यक्ति के लिए चुना, उन पर अपने असाधारण व्यक्तित्व की छाप छोड़ दी। जहाँ तक कविता का सवाल है, उन्होंने सघन अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए कविता को सबसे अधिक समर्थ और संप्रेषण की दृष्टि से सबसे अधिक सफल पाया। कविता में पर्याप्त सांकेतिकता होती है। छन्द, लय, गति के अनुशासन में, कविता में, शब्द में अर्थ–प्रतिपत्ति का अवसर सबसे अधिक मिलता है और उसका प्रभाव टिकाऊ भी होता है।

रचनाकार जीवन के लौकिक स्तर का वर्णन–चित्रण करके ही संतुष्ट नहीं हो जाता। वह अपने भीतर के 'कुछ' को बाहर के 'कुछ' से जोड़ना चाहता है, वैश्विक लीला को, संस्कृतियों के रहस्य को, प्रकृति की सर्वमयता को भी समझना चाहता है, उनसे अपना नाता–रिश्ता जोड़ना चाहता है और अज्ञेय की कविताओं में सागर के ब्याज से अविराम अस्ति, वन के सन्नाटे में, मौन की अनुभूति और मौन द्वारा अभिव्यंजना, विराट् की भावना के जो संदर्भ–संकेत आए हैं वे उसी रहस्य–सत्ता से जुड़ने की आकांक्षा के प्रतीक हैं। प्राकृतिक परिवेश की हत्या अज्ञेय के लिए चिन्ता का विषय है क्योंकि वह संस्कृति के एक स्रोत को ही काट देने का मूर्खतापूर्ण आयोजन है, सौंदर्य को ही नष्ट और क्षत–विक्षत कर देने का षड़यंत्र है। इसी परिप्रेक्ष्य में उनका यह कथन सांकेतिक हो जाता है–"पहाड़ के पास रहूँगा, सागर के पास रहूँगा, हिन्दी में रहूँगा। 'पहाड़ शिव–शक्ति के मिथक से जुड़े हैं, सागर लीला मणि विष्णु का निवास स्थान है और इन से जुड़ी अनुभूतियों को पूरी भाव प्रवणता से अपनी भाषा–हिन्दी में ही व्यक्त किया जा सकता है।

रचना की भाषा संस्कृति की आँख इस अर्थ में है कि अपनी भाषा में ही अपनी संस्कृति का बोध हो सकता है। इसलिये उसे निरंतर बहते स्वच्छ जल से धोते रहने की अपनी उपयोगिता है। संस्कृत–बोध परंपरा बोध है। अपनी भाषा में ही हम अपने को पहचान सकते हैं–अस्मिता बोध का वही एक मात्र माध्यम है। अपनी भाषा में हम अपने अनुक्षण जानते हैं। भाषा मोक्षदा है, सम्पराय है जिसमें विराट् प्रकट होता है और हर व्यक्ति अपने को पता है, पहचानता है।

आधुनिक हिन्दी काव्य परम्परा में अज्ञेय अत्यंत महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। अज्ञेय भारतीय सांस्कृतिक परम्परा, आस्था, व्यक्ति और व्यक्तित्व, आस्तिकता तथा आध्यात्मिकता के अद्वितीय कवि के रूप में चर्चित हैं। अज्ञेय मूल रूप से छोटी कविताओं के कवि हैं, किन्तु उनके द्वारा बुनी गई बड़ी कविताएँ भी अप्रतिम है। उनकी रचनाएँ किसी एक बिन्दु विशेष पर अथवा थीम पर केन्द्रित होती हैं। भारतीय परम्परा और पाश्चात्य परम्परा दोनों का समान रूप से अनुशीलन करने के कारण अज्ञेय की कविताओं में भावबोध की विविधता है। अज्ञेय ने एक तरफ जहाँ भारतीय आध्यात्मिकता का आश्रय ग्रहण किया है, वहीं दूसरी तरफ पाश्चात्य

साहित्यिक आदर्शों को भी स्वीकार किया है।

अपने काव्य–चिन्तन में अज्ञेय ने सबसे ज्यादा अभिव्यंजना पर बल दिया है, उन्होंने कविता के परिप्रेक्ष्य में शब्दों की अर्थवत्ता पर जोर दिया है। 'आलवाल' की एक टिप्पणी में अज्ञेय ने लिखा है–"कवि केवल शब्दों का ही अर्थगर्भ उपयोग नहीं, अर्थगर्भ मौन का भी उपयोग करता है, मुझे हमेशा यही लगा है कि सही भाषा का मौन द्वारा भी संप्रेषण हो सकता है।"[1]

अपनी व्यापक दृष्टि के साथ लगभग पाँच दशकों तक संकल्पपूर्वक, आस्थापूर्वक हिन्दी साहित्य पर छाये रहने वाले अज्ञेय स्पष्ट रूप से कहते हैं कि–"पहाड़ के पास रहूँगा, सागर के पास रहूँगा, हिन्दी में रहूँगा।" ध्यान देना होगा कि पहाड़ और सागर अज्ञेय के लिए सांस्कृतिक अस्मिता के प्रतीक थे और हिन्दी जातीय या राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक है। अपनी रचनाओं में अज्ञेय निरन्तर इन प्रतीकों से गहरे स्तर पर जुड़ते हैं। 'असाध्य वीणा' इसी क्रम की एक सशक्त रचना है।

असाध्य वीणा क्लासिकल कोटि की एक महान रचना है। स्वर, नाद और रस एक साथ इस कविता में मौजूद हैं। इस कविता का रचनाकाल सन् 1960 है। यह कविता अज्ञेय के महत्वपूर्ण संकलन 'आँगन के पार द्वार' में प्रकाशित है। भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित इस संग्रह में 18 छोटी कविताएँ और दो बड़ी कविताएँ संकलित हैं। 'आँगन के पार द्वार' (साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित) संग्रह की यह कविता अज्ञेय की अत्यंत महत्वपूर्ण कविता है। इस कविता की रचना प्रक्रिया और रचनाकाल के बारे में स्वयं अज्ञेय ने चर्चा की है। अप्रैल 1990 में दूरदर्शन के दिल्ली केन्द्र से प्रसारित 'सन्नाटे का छंद' शीर्षक वृत्तचित्र में अज्ञेय ने स्वीकार किया है कि यह कविता कुमायूँ–अल्मोड़ा में रची गयी थी। कवि ने वनप्रांतर तथा विभिन्न स्वरों का संगीत वहीं पर सुना था।

अज्ञेय की कवि–प्रतिभा का चमत्कार यदि देखना हो तो 'असाध्य वीणा' और 'मरुथल' श्रंखला की कविताओं को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है। 'असाध्यवीणा' के मूल में एक कथा है जो देश विशेष से संबंधित है और कथा एक विशेष कालखण्ड में घटित हुई। लेकिन कवि ने कथा को दैशिक आयाम से उठाकर कालातीत आयाम में इस तरह प्रतिष्ठित कर दिया है कि जन–मात्र उसमें, अर्थात् उस वीणा के संगीत में अपने हृदय की धड़कनें सुन सकता है, उस दिव्य संगीत (वीणा से स्वयभू संगीत अवतरित होता है कि जिस में ब्रह्मा का अशेष प्रभामय मौन सोता है।) से अपने को जोड़ सकता है और इससे भी अधिक चमत्कार–पूर्ण और नाटकीय है कविता का अंत–मौन से उद्‌भूत संगीत मौन में ही डूब जाता है, विश्रांति पा जाता है और पाठक को पता भी नहीं चल पाता कि कब, कैसे, क्या घटित हो गया–'उठ गयी सभा, युग पलट गया।'

ऐतिहासिक स्रोत की दृष्टि से यह कविता जापानी लोक कथा पर आधारित है। इस कविता के संदर्भ में जो साक्ष्य प्राप्त हैं, उनके आधार पर यह कविता जापानी कवि ककू–जू–ओका–कूरा द्वारा रचित है। इस कविता का मूल शीर्षक "TAMING THE HARP" है जो "THE BOOK OF TEA" पुस्तक में संकलित है। जापान की यह लोक कथा चाय व्यापारियों के माध्यम से चीन में भी अत्यंत लोकप्रिय हुई। अज्ञेय ने अपनी इस कविता का बिम्ब वहीं से लिया है।

मूलकथा के अनुसार 'लुंगमेन की तंग घाटियों' में एक विशाल 'किरी' नामक वृक्ष था। वह वृक्ष

अत्यन्त विशाल था। किसी तपस्वी साधक ने उस वृक्ष की एक डाली से एक विराट् वीणा बनायी, लेकिन लम्बे समय तक कोई भी वादक उससे संगीत अवतरित नहीं कर सका। बहुत दिनों तक वह वीणा चीन के सम्राट के दरबार में पड़ी रही और 'असाध्यवीणा' नाम से ख्यात् हो गई। बहुत दिनों के बाद पेइवोह नामक एक तपस्वी वीणा वादक राजदरबार में आता है और वीणा से संगीत प्रस्फुटित करता है। इसी मूल कथा को और विविध घटनाक्रम को अज्ञेय ने भारतीय परम्परा के संदर्भों में प्रस्तुत किया है।

भारतीय परिवेश में अज्ञेय ने जो कथानक बुना है, उसके अनुसार उत्तराखण्ड के गहन गिरि–प्रांतरों में किरीटी नामक एक विशाल वृक्ष था। उसकी विशालता इतनी व्यापक थी कि उसका शिखर भाग बादलों को स्पर्श करता था और जड़ें नागराज वासुकि के फण पर टिकी हुई थी। उसका वृत्त इतना विशाल था कि अनेक वन्य पशु उसके भीतर निवास करते थे। इसी विराट् किरीटी वृक्ष से वज्रकीर्ति नामक एक ऐन्द्रजालिक ने एक डाल को काटकर विशाल वीणा का निर्माण किया। यह वीणा वज्रकीर्ति की जीवन भर की साधना थी, जिस परिपूर्णता के साथ ही वज्रकीर्ति की जीवनलीला भी पूर्ण हो गयी। कई वर्षों तक जब यह वीणा बजाई नहीं जा सकी, तब इसे 'असाध्य वीणा' नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। कई वर्षों के बाद उत्तराखण्ड के शासक के दरबार में प्रियंवद नाम का एक साधक आता है जिसकी साधनात्मक प्रौढ़ता का प्रमाण उसके विशाल केश थे, जिसके कारण उसका नाम केशकम्बली पड़ा। कविता के आरम्भ में कवि ने वीणा के ऐतिहासिक स्वरूप को चित्रित किया है। प्रियंवद केशकम्बली राजदरबार में उपस्थित होकर अपने विशाल कम्बलनुमा केशों को खोलकर उसे धरती पर बिछाकर चुपचाप बैठ जाता है। वीणा उसके सामने लाकर रख दी जाती है। जिसे उठाकर वह अपनी गोद में रख लेता है। प्रियंवद वीणा के ऊपर अपना शीश झुकाकर समर्पित हो जाता है और कुछ समय बाद वीणा से संगीत अवतरित होता है। प्रियंवद के द्वारा वीणा के माध्यम से संगीत को अवतरित करने का जो प्रक्रम बना, वह कविता का सर्वाधिक सशक्त पक्ष है।

मूल कथा में जो प्रतीक आये हैं, वह बौद्ध धर्म से संबंधित हैं। जापान में प्रचलित जेन साधना भारत के बौद्ध धर्म का रूपान्तरण ही है। चीन में उसका रूपान्तरण 'ताओवाद' में हुआ। चीन और जापान दोनों की साधना पद्धतियों में बौद्धधर्म की तर्ज पर ही मौन और ध्यान को प्रमुखता दी गयी। इस कविता की व्यापक पड़ताल के क्रम में समीक्षक डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय ने अपनी पुस्तक 'अज्ञेय साहित्य विमर्श' के खण्ड–2 के अन्तर्गत लिखा है–"दोनों ही पद्धतियों का प्रमुख सिद्धान्त एक है–मौन में डूबे बिना विराट् की अनुभूति संभव नहीं है। विराट् का संगीत आत्मा में उतरता है, आत्मा का विराट् से नीरव एकालाप मौन में ही संभव है।"[2]

कविता की समीक्षा करते हुए आत्मपक्ष और विराट के संगीत का संदर्भ विश्लेषित करते हुए डॉ0 पाण्डेय ने अपनी कृति में आगे लिखा है–'जापान प्रवास में अज्ञेय ने जेन साधकों का गम्भीर अध्ययन किया और महान कवि बासो की कृतियों से उन्होंने प्रभाव ग्रहण किया, प्रेरणा प्राप्त की। यह भी उल्लेख्य है कि स्वयं बासो 'ताओवाद' से प्रभावित थे और बासो के माध्यम से अज्ञेय ने 'ताओवाद' से प्रेरणा ग्रहण की। इस प्रकार 'असाध्य वीणा' (ताओवाद में वृक्ष वीणा) की मूलकथा का निहितार्थ यह है कि विराट का संगीत सृष्टि में गूँज रहा है और मौन में ही उससे एकात्म हुआ जा सकता है।"[3]

'असाध्यवीणा' अज्ञेय की क्लासिकल रचना इस अर्थ में भी है कि कवि ने इस कविता में ध्वनि और चित्र का अद्भुत समन्वय किया है। वज्रकीर्ति द्वारा वीणा का निर्माण, वीणा की सृजन प्रक्रिया का राजा द्वारा वर्णन, प्रियंवद केशकम्बली का राजसभा में प्राण खींचकर–पलक मूंदकर मौनभाव से बैठना, प्रियंवद केशकम्बली द्वारा वीणा को उठाकर गोद में रखना, प्रियंवद का गिरि–प्रान्तर में सघन निविड़ के बीच अपने को किरीट तक को सौंपना, गिरि–प्रान्तर के समस्त सुप्त संगीत को वृक्ष के भीतर जागृत करना और वीणा के माध्यम से 'स्मृति' तथा 'श्रुति' का गायन इस कविता की अर्थवत्ता को परिभाषित करती है। इस पूरी कविता में अज्ञेय ने कुल चार स्थलों पर मातृ–शिशु बिम्ब को खींचा है। प्रियंवद और वीणा के बीच निर्मित यह बिम्ब कविता के भावात्मक समर्पण को परिभाषित करता है।

कविता के आरम्भ में कवि ने प्रियंवद के तपस्वी रूप को रेखांकित किया है। प्रियंवद का यह कहना है कि–

'कलावन्त हूँ नहीं, शिष्य, साधक हूँ–
जीवन के अनकहे सत्य का साक्षी'[4]

कविता की सशक्त परम्परा का निर्वहन है। पंक्तियाँ प्रियंवद के साधक और शिष्य रूप का सरल उद्‌घोष मात्र नहीं है, अपितु समर्पण की पराकाष्ठा का प्रतीक है। प्रियंवद इसी भाव से उस अभिमंत्रित वाद्य को (वीणा) अपने को सौंपता है और अपने आप को मौन को समर्पित कर देता है। समर्पण की इस प्रक्रिया में प्रियंवद द्वारा वीणा को उठाकर अपनी गोद में रख लेना और विराट् सभा का मौन हो जाना रचना–प्रक्रिया की गम्भीर बुनावट का प्रतीक है। प्रियंवद कविता के आरम्भ में ही अपने आप को सर्वप्रथम वीणा को समर्पित करता है, क्योंकि वीणा उस विराट् वृक्ष से निर्मित की गयी है, जिसमें संस्कारों का पूँजीभूत स्रोत है।

अपने शिष्य और साधक रूप को जागृत करते हुए प्रियंवद सर्वप्रथम वीणा के माध्यम से उस विशाल किरीटी वृक्ष को संबोधित करता है, जिसके भीतर प्रकृति का सम्पूर्ण संगीत संचित है। किरीटी वृक्ष के भीतर संगीत की सूक्ष्म से लेकर कर्कश ध्वनि तक को प्रियंवद जागृत करता है। उसकी दृष्टि में वृक्ष के भीतर संचित संगीत ही वीणा के माध्यम से जागृत होगा। इसी कारण प्रियंवद किरीटी वृक्ष के संस्कारों को जागृत करना चाहता है और वीणा के माध्यम से वृक्ष के भीतर संचित संगीत को अवतरित करना चाहता है। प्रियंवद का यह समर्पण प्रतिस्पर्धा भाव से नहीं है अपितु शिष्य भाव से इसी कारण वह किरीट वृक्ष से प्रार्थना करता है कि–

तू गा
मेरे अंधियारे अंतस में आलोक जगा
स्मृति का
श्रुति का[5]

'असाध्यवीणा' कविता में अज्ञेय ने कुछ दार्शनिक सिद्धान्तों की भी स्थापना की है। कविता के इस अंश में जहां प्रियंवद यह कहता है कि–यह वीणा रखी है : तेरा अंग–अपंग! – यहाँ कवि 'अंशी और अंश' के औपनिषदिक सिद्धान्त की स्थापना करता है। भारतीय औपनिषदिक परम्परा में यह अवधारणा है कि

'ब्रह्मा अंशी है' और 'मनुष्य अंश है'। 'असाध्य वीणा' में भी 'अंशी और अंश' का यह सिद्धान्त परिलक्षित है। किरीटी वृक्ष अंशी है और वीणा अंश है, क्योंकि वीणा उसी किरीटी वृक्ष के एक अंश को काटकर निर्मित की गयी है। अस्तु वृक्ष के संस्कार ही वीणा के संस्कार हैं। इसी कारण प्रियंवद सर्वप्रथम उस विराट् किरीटी वृक्ष को अपने को सौंपता है और यह प्रार्थना करता है कि किरीटी वृक्ष अपने लम्बे–विलमें जीवन के संचित संगीत को वीणा के माध्यम से अवतरित करे।

यहां एक बात और ध्यान देने योग्य है कि प्रियंवद राजसभा में उपस्थित होने के बाद से ही मौन का आश्रय ग्रहण करता है। प्रियंवद राजा से परिचयात्मक संवाद के उपरांत मौन में डूब जाता है और जब तक वीणा तारों से संगीत प्रस्फुटित नहीं होता है तब तक वह मौन भाव से ही वृक्ष के संस्कार को जागृत करता है। यहां ध्यान देना होगा कि अज्ञेय हिन्दी कविता में अकेले ऐसे कवि हैं, जिन्होंने 'मौन में भी संप्रेषण के भाव' को स्वीकार किया है। अज्ञेय ने अपनी कई कविताओं में मौन के माध्यम से सम्प्रेषण को प्रभावी माना है, क्योंकि अज्ञेय का मानना है कि 'मौन द्वारा भी अभिव्यंजना' होती है और मौन में ही उस परब्रह्म के संगीत को सुना जा सकता है। उस परमात्मा के संगीत को सुना जा सकता है। उस परमात्मा के अनाहत–नाद को मौन ही व्यक्त कर सकता है। अज्ञेय को दिव्य संगीत का भावन अत्यंत प्रिय है, इस कारण वह मौन का आश्रय ग्रहण करते हैं। कवि का मानना है कि मौन का संगीत आत्मशोध द्वारा ही अवतरित हो सकता है। इसी कारण प्रियंवद सबसे पहले अपने को शोधता है फिर वीणा की अनुभूति करता है और तब किरीटी वृक्ष को समर्पित होता है। यही अज्ञेय की असाधारण प्रतिभा का प्रतीक भी है, क्योंकि केवल वही जानते हैं कि सन्नाटे का भी छंद होता हे, उसका भी संगीत है।

'असाध्य वीणा' कविता में अज्ञेय ने किरीट वृक्ष और वीणा के प्रसंग के माध्यम से एक और आध्यात्मिक सिद्धान्त की स्थापना की है जो 'सहअस्तित्व का सिद्धान्त' है। अज्ञेय ने किरीटी वृक्ष और वीणा दोनों को समान रूप से महत्वपूर्ण माना है अज्ञेय का मानना है कि वीणा का होना ही वृक्ष के अस्तित्व का प्रतीक है। एक औपनिषदिक सिद्धान्त है–'तुभ्यं मह्यं नमो नमः'–अर्थात् तुमको और मुझको दोनों को नमन है। चूंकि परमतत्व ब्रह्मांड के घट–घट में व्याप्त है और वही मानव–मात्र के भीतर भी है, इसलिए अज्ञेय ब्रह्म और मनुष्य के सहअस्तित्व को स्वीकार करते हैं। अपनी एक टीप में उन्होंने लिखा है–'स्मरामि अतएव अस्मि' (become a part of etarnity) अज्ञेय का यही आदर्श है–'मैं पन विहीन मैं' इसी आदर्श को प्रियंवद स्थापित करता है। इसी कारण वह किरीटी वृक्ष को जागृत करते हुए उसके भीतर संचित संगीत को अवतरित करना चाहता है, विश्रान्ति पाना चाहता है।

प्रियंवद द्वारा वृक्ष के सुप्त संस्कारों को जागृत करने का जो आह्वान किया जाता है, उस आह्वान की प्रबलता के कारण एवं एक तपस्वी साधक के रूप में वृक्ष के भीतर संचित संस्कारों को जगाने के कारण किरीटी वृक्ष अपनी विगत् की स्मृतियों को अपने भीतर संयोजित करता है और सहर्ष उद्घोष करता है–'हां; मुझे स्मरण है' किरीटी वृक्ष का अपने भीतर संचित संगीत को स्मृति/स्मरण करना, इस बात का प्रतीक है कि 'जीवन स्मृतिधर्मी' है। यह अज्ञेय की रचनात्मक कुशलता का प्रतीक है कि उन्होंने 'असाध्यवीणा' कविता की संरचना और बनावट (Texture andStructure) दोनों में बिम्बों और प्रतीकों का कुशल प्रयोग किया हैं। सहज रूप से देखा जा सकता है कि किसी विशाल पर्वतीय जंगल में कुल जितनी तरह की ध्वनियां हो सकती हैं, उनका व्यापक प्रयोग कवि ने इस कविता में किया है। एक तरफ जहाँ घास की

पत्तियों की टूटने की प्रतीकात्मक योजना है, तो वहीं दूसरी तरफ रेतीले कगारों का गिरना भी भय पैदा करता है। एक तरफ कवि ने मिट्टी की खुशबू तो दूसरी तरफ बटुली के सोंधे अन्न की खुशबू का घ्राण बिम्ब निर्मित किया है। इस लम्बी कविता में अज्ञेय ने विम्बों और प्रतीकों का कुशलतापूर्वक चयन किया है। डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी ने एक स्थान पर 'असाध्यवीणा' को उद्धृत करते हुए लिखा है–"अर्थ और अनुभव का अद्वैत इस लम्बी कविता (असाध्यवीणा) का साध्य है।"[6]

किरीटी वृक्ष अपने भीतर संचित समस्त संस्कार को स्मृत करता है और नादमय संस्कृति को जागृत कर अपने जीवन संचय को छंदयुक्त करता है। अपनी 'प्रज्ञा को वाणी देता' है और 'दिव्य संगीत' वीणा को तारों से 'झंकृत' होता है। अज्ञेय इसी दिव्य संगीत को वीणा के माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं, इसी 'अशेष प्रभामय' की साधना को कवि संस्कृति और परम्परा के माध्यम से वीणा से जोड़ता है, यही 'मौन का संगीत' है, जिसमें 'निखिल ब्रह्मांड' का बोध होता है।

अज्ञेयकृत 'असाध्यवीणा' की समीक्षा करते हुए 'अज्ञेय : साहित्य विमर्श' खण्ड दो के अंतर्गत आलोचक डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय ने लिखा है–'अशेष प्रभामय' की साधना ही कवि का लक्ष्य है और यही इसे अपनी संस्कृति और परम्परा से जोड़ती है। 'असाध्यवीणा' में कला/कविता के स्वरूप, उसकी रचना–प्रक्रिया का उद्घाटन किया गया है। कविता एक यज्ञ है, अनुष्ठान है, उसके प्रति सम्मान भाव अपेक्षित है। इस यज्ञ में कवि अपनी ही आहुति देता है। जहां 'मैं पन' है, 'अहंकार है' वहां कविता या कला नहीं हो सकती। 'असाध्यवीणा' की मूल कथा में ही यह संकेत निहित है–अन्य कलाकारों ने वीणा में अपने को गाया, इसलिए वे असफल रहे, पेइवोह और प्रियंवद ने वीणा को ही गाने दिया। अज्ञेय ने अपने लेखन में बार–बार इस तथ्य पर बल दिया है।"[7] अज्ञेय ने 'शेषा' की एक टीप में इस बात को लिखा है कि "कविता तभी मिलेगी जब पहले से एक स्वागत का, अभ्यर्थना का भाव लेकर हम उसके जगत में प्रवेश करें।" इसी संग्रह की एक अन्य टीप में अज्ञेय ने लिखा है "भारतीय कला अध्यात्म तत्व तक जाना चाहती है। उसका उद्देश्य चित्सुख है।"[8]

प्रियंवद द्वारा किरीटी वृक्ष से संगीत को अवतरित करने का जो आह्वान किया गया, वह वीणा के माध्यम से अवतरित होता है। ध्यान दिया जाय तो स्पष्ट होता है कि अज्ञेय ने किरीटी वृक्ष के माध्यम से स्मृति की रचनात्मक शक्ति की चर्चा की है। किरीटी वृक्ष और असाध्यवीणा तथा वीणावादक प्रियंवद तीनों ही स्मृति की रचनात्मक शक्ति से भरपूर हैं। इस कविता में प्रियंवद किरीटी वृक्ष की सोई हुयी स्मृतियों को जगाता है उसके प्रत्युत्तर में किरीटी वृक्ष का उद्बोधन सुनाई पड़ा है। "हां मुझे स्मरण है।" संख्यात्मक दृष्टि से 'मुझे स्मरण है' कि कुल छः आवृत्ति इस कविता में हुई है। स्मृति के सजीव होते ही रचनात्मकता प्रकाश में आती है, जिसके परिणामस्वरूप वीणा से 'स्वर शिशु किलक' उठते हैं और एक अद्भुत संगीत अवतरित होता है। अगर ध्यान से देखा जाय तो यह कविता मौन की नाटकीय अन्विति भी है, कविता की संरचना में नाटकीयता निहित है। ऐसा कहना इसलिए उचित है कि कवि स्मृति का आश्रय लेता है और स्मृति अतीत के परदे उठाती चलती है। नाटकीयता का यही गुण है कि एक दृश्य दूसरे दृश्य से जुड़ता जाता है और धीरे–धीरे उस पर से पर्दा हटता जाता है और पाठक आस्वाद के उस बिंदु तक पहुंच जाता है जो कविता की संरचना के केन्द्र में है।

वृक्ष की स्मृतियों के द्वारा वीणा से प्रस्फुटित संगीत का स्वरूप भी अलग है। जहां तक संगीत के प्रभाव का प्रश्न है तो वह सबके लिए अलग–अलग है। राजा के भीतर राजधर्म का भाव जागृत होता है, रानी के भीतर साधना का पथ प्रशस्त होता है, साधारण जनसभा के लिए भी संगीत की स्वर लहरियां पृथक–पृथक भावबोध उत्पन्न करती हैं। यह दृश्य एक अन्य औपनिषदिक सिद्धान्त की पुष्टि करता है–"एकोऽहं बहुस्याम'–ब्रह्म एक है और उसका बोध सभी को अलग–अलग है। जनमात्र के लिए संगीत का अनुभव भी ऐसा ही है। इस वैविध्यबोध का चित्रण अज्ञेय ने अद्भुत तरीके से किया है। जनमात्र के अनुभव को विविध बिम्बों और प्रतीकों के माध्यम से कवि ने संयोजित किया है। इस दृश्य में अज्ञेय ने कविता को साधारण परिवेश से उठाकर एक बृहत्तर परिवेश में स्थापित कर दिया है और इस तरह अज्ञेय की काव्य कला अपने उत्कर्ष को प्राप्त हुई है।

कविता के अंतिम चरण में जहां प्रियंवद वीणा से उत्पन्न ध्वनि को 'सब कुछ की तथता' स्वीकार करता है, वह एक तपस्वी साधक की निर्भीक आत्मस्वीकृति है। सांसारिक मनुष्य से विलग एक तपस्वी–शिष्य–साधक ही किसी विराट् कार्य को संपादन करने के उपरांत 'श्रेय नहीं कुछ मेरा' कहने की शक्ति रखता है। कविता का अंतिम अंश अज्ञेय की आध्यात्मिक–कलात्मक–सांस्कृतिक संवेदना का शिखर माना जाय तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। ध्यान दिया जाय कि अपनी संस्कृति और अस्मिता के प्रति आदर–स्वागत–अनुराग का प्रबल भाव अज्ञेय के मन में है। कविता के एकदम अंत में प्रियंवद की स्वीकारोक्ति एक बड़े सिद्धान्त का समर्थन करती है। प्रियंवद का यह कहना कि "श्रेय नहीं कुछ मेरा"–उस सच्चे कलाकार की आत्माभिव्यक्ति है, जो कला के लिए आत्म समर्पित होता है। क्योंकि कलाकार तभी तक कलाकार है जब तक वह अपनी सोच में अपने को 'सामान्य' मानता है, लेकिन जब उसके भीतर 'विशिष्टता का अहं' जागृत हो जाता है, तो वह कलाकार की सीमा से हट जाता है। प्रियंवद के अलावा कोई भी वीणावादक इसलिए वीणा को नहीं बजा सके क्योंकि उनमें 'विशिष्टता का अहं बोध' था। लेकिन प्रियंवद का सम्पूर्ण परम्परा के प्रति अपने को समर्पित कर देना ही उसकी सफलता का कारण बना। भावना द्वारा भावना का समर्पण–यही कला का मर्म है। क्योंकि कला समर्पण चाहती है। समर्पण के द्वारा ही उसे साधा जा सकता है। शिष्य भाव ही कला की साधना का मार्ग है और प्रियंवद अपने आरंभिक परिचय में ही स्वीकार करता है कि–'कलावन्त हूँ नहीं शिष्य साधक हूँ'– यही कला का मार्ग है। दरअसल कला आत्मशोध है और आत्मिक नीरव संवाद है–अर्थात्–'आत्मा का आत्मा से नीरव एकालाप' ही अभीष्ट है।

ध्यान दिया जाय कि इसी 'नीरव एकालाप' से उस अव्यक्त ब्रह्म के संगीत को सुना जा सकता है, क्योंकि विराट् तत्व का भावन चिरन्तन सुख है। उस विराट् तत्व के सम्पूर्ण संगीत को सुनने के लिए ही अज्ञेय का कवि–मन मौन का आश्रय ग्रहण करता है। तभी विराट् के प्रति अश्रेय का मन निसंग समर्पित हो जाता है। वैश्विक चेतना की अनुभूति में वाणी का लय हो जाना ही मौन की साधना है। अज्ञेय स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि 'वाणी को समर्पित कर देना ही रचना का ध्येय' है। प्रियंवद ने वाणी के समर्पण द्वारा ही वीणा से संगीत को अवतरित किया। प्रियंवद की शाब्दिक नीरवता महाशून्य के महामौन में विलीन होकर ही वीणा के तारों से प्रस्फुटित हुई।

ध्यान दिया जाना चाहिए कि अज्ञेय के काव्य का सबसे बड़ा लक्ष्य अनुभूति का सम्प्रेषण और अनुभूति की अभिव्यंजना है। 'आलवाल' की एक टिप्पणी में उन्होंने स्वीकार किया है कि "कवि केवल शब्दों का ही अर्थगर्भ उपयोग नहीं, अर्थगर्भ मौन का भी उपयोग करता है। मुझे हमेशा लगा है कि यही भाषा का

श्रेष्ठ, कलात्मक उपयोग है। कविता शब्दों के बीच की नीरवताओं में होती है। मौन के द्वारा भी सम्प्रेषण हो सकता है।"

निष्कर्षतः 'असाध्यवीणा' अज्ञेय की क्लासिकल कोटि की रचना है। इस कविता में अज्ञेय का कवि–रूप और चिंतक–रूप दोनों का गहन समन्वय दिखाई पड़ता है। अज्ञेय आधुनिक हिंदी कविता के विराट् भाव के कवि हैं। एक ही रचनाकार के भीतर कवि–विचारक–आध्यात्मिक व्यक्तित्व का घनिष्ठ और उर्वरा संबंध अज्ञेय की विशेषता है। सांस्कृतिक अस्मिता–राष्ट्रीय अस्मिता और साहित्यिक अस्मिता–तीनों का ही प्रबल संरक्षण अज्ञेय के कवि व्यक्तित्व का लक्ष्य रहा है। चीन और जापान की प्रचलित लोक कथा के माध्यम से भारतीय परम्परा का पुनराविष्कार 'असाध्यवीणा' में दिखाई पड़ता है। ध्यातव्य है कि शान्ति और समर्पण का वैश्विक संदेश बौद्ध धर्म के माध्यम से ही दुनिया के विभिन्न देशों में प्रसारित हुआ। 'असाध्यवीणा' का मूल कृत्य भी कहीं–न–कहीं इससे जुड़ता है। अज्ञेय ने 'असाध्यवीणा' के माध्यम से भारतीय परम्परा को नया आयाम दिया है। यह कविता युगांतरकारी रचना है, जो भारतीय आध्यात्मिक–चेतना की चरम परिणति तक पाठक को ले जाती है।

अंततः यह कि अज्ञेय भारतीय मिट्टी के कवि हैं, लीला–कल्प–तीर्थ–संपराय की संवेदना में जीवित रहने वाले कवि हैं–और भारतीय परंपरा के सबसे बड़े कवि हैं। अज्ञेय विराट सत्ता (उसे ईश्वर कहें या न कहें) को–'डिवाइजन प्रेजेंस' को स्वीकार करते हैं। आध्यात्मिकता की ओर झुकाव को, पूछे जाने पर, अज्ञेय ने अस्वीकार नहीं किया है। जो हो, अज्ञेय साहित्य में निस्संदेह इसके पर्याप्त संकेत–संदर्भ मौजूद है। अज्ञेय–साहित्य में वस्तु–नियोजन, शब्द–चयन एवं शब्द–विधान, कलात्मक अभिव्यक्ति इतनी सुरुचिपूर्ण है कि अज्ञेय की प्रशंसा करनी होगी। अज्ञेय लेखक की तटस्थता (डीटैचमेंट ऑफ परसनैलिटी) के विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। अज्ञेय की भाषा में लोच है, उनका शब्द–विधान गतिपरक, लयात्मक है। रचना में, रचनाकार में, देश की माटी के संस्कार बोलते हैं। मिथक 'रहस्यमय शक्ति–स्रोत' होते हैं। किसी देश या जाति के मिथक उस देश या जाति के सामूहिक अवचेतन, उस देश की संस्कृति परंपरा जाती स्मृति के भण्डार या संवाहक होते हैं। इस मर्म तक पहुंचना रचनाकार का सांस्कृतिक दायित्व है।

संदर्भ–

1. अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन, आलवाल
2. पाण्डेय, डॉ0 सुरेशचन्द्र, अज्ञेय : साहित्य विमर्श, खण्ड–2
3. वही
4. अज्ञेय, सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन, असाध्यवीणा
5. वही
6. चतुर्वेदी, रामस्वरूप, अज्ञेय
7. पाण्डेय, डॉ0 सुरेशचन्द्र, अज्ञेय : साहित्य विमर्श, खण्ड–2

'आजादी का अमृत महोत्सव' और हमारी भागीदारी

डॉ. अलकारानी पुरवार
एसो. प्रोफे. एवं प्रभारी अंग्रेजी, विभाग

किसी भी राष्ट्र का भविष्य तभी उज्ज्वल होता है जब उस देश के नागरिक अपनी अतीत की गौरवशाली उपलब्धियों को न केवल संजोकर रखते हैं, वरन् उससे जुड़े रहकर निरंतर कुछ न कुछ सीखते भी हैं। कहा गया है कि वह सभ्यता जो अपनी विरासत संभालकर नहीं रख पाती, एक दिन नष्ट हो जाती हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे पास गर्व करने के लिए एक सुन्दर, सुदृढ़ एवं समृद्ध ऐतिहासिक चेतना एवं सांस्कृतिक विरासत है, बस आवश्यकता उसे समझने और महसूस करने की है। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि आजादी की 75वीं वर्षगांव को समर्पित 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम की शुरूआत 12 मार्च 2021 को गुजरात के अहमदाबाद स्थित साबरमती आश्रम से पदयात्रा (स्वाधीनता मार्च) को हरी झंडी दिखाकर की गयी। यह महोत्सव देश की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ 15 अगस्त 2022 से 75 सप्ताह पूर्व शुरू होकर 15 अगस्त 2023 तक निरंतर जारी रहेगा। इसके अंतर्गत मुख्यतः पांच स्तंभों पर जोर दिया गया है:—

1. स्वतंत्रता संग्राम
2. 75 वर्ष पूर्ण होने के विचार
3. 75 वर्ष पूर्ण होने की उपलब्धियां
4. 75 वर्ष पूर्ण होने के कार्य
5. 75 वर्ष पूर्ण होने के संकल्प

'आजादी का अमृत महोत्सव' के विभिन्न प्रतीकात्मक मायने हैं जैसे— आजादी की ऊर्जा का अमृत, स्वाधीनता सेनानियों से ग्राह्य प्रेरणाओं का अमृत, नए विचारों/संकल्पों का अमृत, आत्मनिर्भरता का अमृत यानि कि अतीत की ऊर्जा से प्रेरणा लेकर राष्ट्र को नयी ऊँचाइयों तक पहुँचाना। यहाँ स्मरणीय यह है कि इस बार यह विगुल किसी विदेशी शासन के खिलाफ न होकर अपनी शक्तियों को संकलित कर राष्ट्र के गौरव को बढ़ाने में है, भारत को पुनः विश्वगुरू के रूप में स्थापित करने का है। यह तभी संभव है जब हममें से प्रत्येक नागरिक इस पुनीत यज्ञ में अपनी जवाबदेही की आहुति देना सुनिश्चित करेगा।

चूँकि यह महोत्सव जनभागीदारी की भावना से एक जन—उत्सव के रूप में मनाया जाना है, अतः यह हम सभी का नैतिक दायित्व है कि हम पूर्ण उत्साह, मनोयोग एवं निष्ठा के साथ अपनी जवाबदेही सुनिश्चित करें। यानि कि एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में हमारे जो भी कर्तव्य हैं उनको निभाने के अलावा राष्ट्रोत्थान के लिए हमें कुछ तो खास करना होगा ताकि हम इस महोत्सव में सिर्फ ताली बजाने वाले दर्शक के रूप में नहीं वरन एक सच्चे देशवासी के रूप में अपना सकारात्मक योगदान दे सकें।

इसमें कोई संदेह नहीं कि 21वीं सदी का भारत कुछ अलग सा भारत है। यह आत्मनिर्भरता की ओर धीमी गति से ही सही पर मजबूती से कदम बढ़ाता हुआ भारत है। इसी विकास के क्रम में आजादी के अमृत

महोत्सव के मूल में जन भागीदारी का भाव ही प्रधान है। प्रस्तुत नारा स्पष्ट रूप से इस वृहद् कार्यक्रम का उद्देश्य प्रकट करता है।

आज नए भारत के समुद्र–मंथन में, जन–जन की भागीदारी है–
आजादी के अमृत महोत्सव की बेला में, आत्मनिर्भर भारत की तैयारी है।

वर्तमान में कोरोना की वजह से उत्पन्न संकटकाल में सारे विश्व के समक्ष स्पष्ट रूप से सिद्ध भी हो गया है कि आज का आत्मनिर्भर भारत समस्त मानवता को महामारी के संकट से बचाने के लिए भी संकल्पबद्ध हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अपनी सदियों पुरानी गौरवशाली परंपरा का निर्वाह करते हुए पूर्णतया स्वदेशी तकनीक से 'कोरोना वैक्सीन' का निर्माण कर न केवल अपनी वरन् विश्व के अनेक देशों की जनता की जीवन रक्षा में अपना सार्थक योगदान दिया है। हम भारतीयों ने कोरोनाकाल के संकट के बावजूद अपनी जिजीविषा से इसे 'आपदा वर्ष' के रूप में न लेकर 'आंतरिक खोज का वर्ष' के रूप में स्वीकार किया है। आंतरिक खोज से आशय अपने अन्दर की ऊर्जा को पहचानना, देश की प्राचीन गौरवशाली परम्पराओं (विशेषकर योग एवं आयुर्वेद सम्बंधित) को पुनः जीवनशैली में स्वीकार करना, नवोन्मेष या नवाचार पर केन्द्रित होना। यहाँ परम्पराओं को स्वीकारने का मतलब किसी भी तरह की रूढ़ियों में बंधने से नहीं बल्कि विरासत को मजबूती देते हुए विकास के पथ पर बढ़ना है।

'आजादी का अमृत महोत्सव' आजादी की लड़ाई के साथ–साथ आजाद भारत के सपनों और उनमें निहित कर्तव्यों को देशवासियों के सामने रखकर आगे बढ़ने का सन्देश देता है। यह हमारा सौभाग्य है कि हम आजाद भारत के इस ऐतिहासिक कालखंड के साक्षी बन रहे हैं जिसमें भारत विश्व में अपना नाम अग्रिम पंक्ति में लिखवा चुका है पर विचारणीय यह है कि इस नए आत्मनिर्भर संकल्पित एवं पुनुरुत्थानशील राष्ट्र के विकास की यात्रा में एक नागरिक के रूप में हमारा क्या योगदान है ? क्या वास्तव में हमने कुछ भी ऐसा किया है जो सही मायनों में हम उन भारत माँ के अमर सपूतों के वंशज कहलाने के योग्य हैं, जिन्होंने आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने में एक पल का समय नहीं लगाया ? वास्तव में ये सभी उत्सव उन अमर शहीदों को श्रद्धांजलि के साथ–साथ उन्हें धन्यवाद देने का एक माध्यम है जिनकी वजह से हम आज स्वतंत्र भारत में साँस ले रहे हैं। हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि हमारी स्वतंत्रता बेशकीमती है और हमें इसका मूल्य समझना चाहिए, इसके प्रति अपनी जवाबदेही को बहुत गंभीरता से लेना चाहिए।

अस्तु, जहाँ तक अमृत महोत्सव में हमारी भागीदारी का प्रश्न है तो स्मरण रहे कि एक स्वस्थ, संतुलित एवं सुदृढ़ समाज के विकास में अपनी सकारात्मक भूमिका सुनिश्चित करने का यही सही समय है ताकि नए राष्ट्र के निर्माण में हमारा भी, अंशमात्र ही सही पर कुछ तो, योगदान हो, सिर्फ पूर्वजों की थाती को संभालने, उस पर गर्वित होने से हमारी जिम्मेदारी की इतिश्री नहीं हो जाती वरन् देश के गौरव को नित नवीन ऊँचाइयों तक ले जाना भी हम सबका ही नैतिक कर्तव्य है। अंत में :–

चलते चलते हैं मिलकर वतन पर जान देनी है,
बहुत आंसा है कमरे में वंदे मातरम् कहना ।

पारिस्थितिकी तंत्र

डॉ. विजय कुमार यादव
एसो. प्रो., वनस्पति विज्ञान विभाग

पृथ्वी पर जल, थल और वायु तीन मंडल पाए जाते हैं। इन तीनों के योग से उस जैवमंडल का निर्माण होता है जिसमें प्राणी जगत् और वनस्पति जगत शामिल है। प्राणी जगत् में सूक्ष्म से विशालकाय प्राणी तक तथा वनस्पति जगत् में पौधौं से वृक्षों तक सभी शामिल होते हैं। इस जैवमंडल की अवस्थिति उस भौतिक पर्यावरण के मध्य है, जिसका निर्माण मिट्टी, जल, कंकड़–पत्थर आदि होता है। जैवमंडल और भौतिक मंडल दोनों की परस्पर क्रिया होती रहती है और ये क्रियाएं एक दूसरे को प्रभावित भी करती हैं। जैवमंडल और भौतिक मंडल के परस्पर संबंधों से निर्मित तंत्र ही पारिस्थिति तंत्र है, जिसके अंतर्गत इनकी परस्पर क्रियाओं और उनके प्रभावों का अध्ययन किया जाता है पारिस्थितिकी तंत्र पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जैसे तालाब, झील, घास का मैदान जंगल आदि हो सकते हैं। प्रत्यक्ष पारिस्थितिक तंत्र में भौतिक और जैविक तत्व मौजूद होते हैं जो चक्र की प्रक्रिया द्वारा एक दूसरे को प्रभावित करते हुए अपने तंत्र को संतुलित रखते हैं। उदाहरण के लिए जंगल एक पारिस्थितिक तंत्र है। पारिस्थितिकी तंत्र की एक प्रमुख विशेषता खाद्य श्रंखला का निर्माण है जिसमें खाद्य का उपयोग करने वाले विभिन्न स्तर होते हैं। पौधे खाद्य श्रंखला के प्रथम स्तर पर होते हैं, जिन्हें प्राथमिक उत्पादन कहते हैं। इस स्तर पर पौधे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया से कार्बोहाइड्रेट रूपी ऊर्जा का उत्पादन करते हैं। दूसरे स्तर पर प्राथमिक उपभोक्ता वर्ग आता है, इसमें इन पौधों का आहार के रूप में उपयोग करने वालों, भेड़–बकरी, चूहे जैसे जानवर आते हैं, जो इसका शाकाहारी स्तर है। तीसरा स्तर मांसाहारी प्राणियों का है जो प्राथमिक उपभोक्ता वर्ग को आहार के रूप में प्रयुक्त करता है जैसे साँप, सिंह आदि। चतुर्थ स्तर पर सर्वहारी वर्ग आता है जो शाकाहार और माँसाहार दोनों को उपयोग करता है, इनमें मुख्य रूप से वे सूक्ष्म जीव आते हैं जो सड़े–गले अवशेषों को भोजन के रूप में ग्रहण कर उनका जैविक अपघटन कर देते हैं। इनमें कुछ खनिज पोषक तत्व मुक्त होते हैं, जो पौधों के विकास में पुनः काम आते हैं। इस चक्र की प्रक्रिया में प्रत्येक स्तर पर ऊष्मा का क्षय होता है। कुछ ऊष्मा शारीरिक विकास में तथा कुछ शोषण क्रिया में नष्ट होती है।

पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन पर मंडराता खतरा पारिस्थितिकी संतुलन भौतिक, जैविक अंगों के गतिशील योगदान पर निर्भर करता है। इनमें से प्रत्येक अंग का एक निश्चित योगदान होता है। यह योगदान उसकी मात्रात्मक, गुणात्मक उपस्थिति पर निर्भर करता है। इनमें से किसी भी अंग या तत्व की मात्रा या गुणता में कमी होना, जिससे पारिस्थितिकी पर विपरीत प्रभाव पड़े पारिस्थितिकी असंतुलन कहलाता है। छोटे–छोटे पारिस्थितिकी तंत्रों से मिलकर ही पृथ्वी के एक एकीकृत पारिस्थितिकी तंत्र का विकास हुआ है।

मानव ने आधुनिक युग में प्राकृतिक चयन के सिद्धांत के स्थान पर मानवीय चयन के सिद्धांत को अपनाया है अर्थात् उसने प्रकृति के साथ संतुलित व्यवहार करने के बजाय उसके अधिकाधिक विनाशकारी

दोहन को अपनी भौतिक सुख–सुविधाओं का आधार बना रखा है। यही कारण है कि हमारी प्राकृतिक संपदाओं का तेजी से क्षय हो रहा है। वन घटते जा रहे हैं और विभिन्न प्रदूषण बढ़ते जा रहे हैं। इसका दुष्प्रभाव तापमान में वृद्धि, बर्फ पिघलने तथा उसके द्वारा समुद्र जलस्तर बढ़ने के रूप में प्रत्यक्ष हो रहा है। कई प्रजातियां लुप्त हो रही हैं, और कई प्राकृतिक संसाधन समाप्त हो रहे हैं। इस पारिस्थितिकी असंतुलन के भयंकर दुष्परिणाम धीरे–धीरे मानवीय सभ्यता को ही उन्मूलित करने की दिशा में बढ़ रहे हैं। पारिस्थितिकी असंतुलन पर अंकुश रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं, जैसे प्रदूषण को जन्म देने वाले भौतिक कारकों को न्यूनतम करना, ऐसे खाद्य पदार्थों, मशीनरियों और अन्य वस्तुओं के उत्पादन को प्रोत्साहन देना जो पर्यावरण मित्र है इससे विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिकी तन्त्रों का संरक्षण किया जा सकता है। मनुष्य के जीवन के लिये पृथ्वी जैसे ग्रह के अलावा अन्य कोई ग्रह नहीं है जिस पर इतनी आसानी से जीवन सम्भव हो सके। अतः हमें पृथ्वी को सुरक्षित तथा पोषित करने की अधिक आवश्यकता है।

भारत की समृद्ध ज्ञान–परम्परा

प्रगति मिश्रा
बी.एड. प्रथम वर्ष

कोई भी देश कितना समृद्ध और शक्तिशाली है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह देश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कितना आगे है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास वैज्ञानिकों की प्रतिभा पर निर्भर करता है। भारत में ज्ञान–विज्ञान की परंपरा वैदिककाल से ही रही है। वेद–संहिताओं से प्रेरणा प्राप्त करके वैदिक काल के ऋषियों ने अनेक शास्त्रों, विज्ञानों एवं वेदांगों की रचना की थी।

आज से दो–ढाई हजार साल पहले हमारा देश भी दुनिया में ज्ञान के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ हुआ करता था। नालंदा और तक्षशिला जैसे–विश्वविद्यालयों में दुनिया भर के विद्यार्थी विद्याध्ययन के लिये आया करते थे। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि आज का युवा वर्ग अपने देश के महान् वैज्ञानिकों से परिचित नहीं हैं। लोग नहीं जानते कि इन वैज्ञानिकों में से अधिकांश सामान्य परिवारों से थे। उन्होंने बहुत कठिनाइयों को झेलकर अपना अध्ययन–कार्य पूरा किया। उन्हें अपने अनुसंधान के लिए आर्थिक अभावों से भी जूझना पड़ा। फिर भी उन लोगों ने हिम्मत नहीं हारी और अपनी प्रतिभा और खोजों से देश की महान् सेवा की। भारत के महान् वैज्ञानिकों का पुण्य स्मरण हमारे सुखमय उज्ज्वल भविष्य की आधारभूमि बनेगा।

सभी स्वनाम धन्य भारतीय वैज्ञानिकों को कोटि–कोटि नमन.............

1 सूर्योदय से पहले उठना अच्छा होता है। ऐसी आदतें आपको समृद्ध और बुद्धिमान बनाती हैं। –अरस्तु

2. इंतजार करना बंद करो, क्योंकि सही समय कभी नहीं आता । – नेपोलियन हिल।

'पटकथा' में चित्रित सामाजिक विद्रूपता और धूमिल

अनुपम देवी
शोधछात्रा, हिन्दी विभाग

आधुनिक काल के सातवें और आठवें दशक के सर्वश्रेष्ठ कवि धूमिल समकालीन कविता के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। धूमिल एक संवेदनशील साहित्यकार रहे हैं। उन्होंने अपने काव्य में पूंजीवादी शोषण–व्यवस्था और राजनीतिक व्यक्तियों के कृत्यों या कार्यों का पर्दाफाश किया है। इस कविता में कवि धूमिल का स्वर इसी शोषण व्यवस्था और राजनीतिक परिदृश्य की विद्रूपताओं को लेकर अत्यधिक मुखरता के साथ प्रस्फुटित हुआ है। उनकी 'पटकथा' यह कविता सामाजिक व्यवस्था में मौजूद शोषणकारी स्थितियों को उजागर करने का प्रयास करती है। इसके साथ धूमिल की कविता 'पटकथा' में राजनीतिक स्थिति और आम आदमी की लाचारी पर तीखी एवं पैनी दृष्टि रखी गई है। जनसामान्य लाचारी, विडम्बना और विद्रुपताओं को बड़ी बेबाकी से प्रस्तुत किया गया है। धूमिल ने 'पटकथा' में शैलीगत सम्पन्नता और काव्यगत विशिष्टता को बड़े ही सुन्दर ढंग से दर्शाया है। आम आदमी का आक्रोश कवि ने कविता में चित्रित करने का प्रयास किया है जिससे इन आम व्यक्तियों का आक्रोश उनकी कविता में सदैव दिखाई देता है। उनका काव्य जनता को सदैव प्रेरित करेगा।

सुदामा पाण्डेय 'धूमिल' के द्वारा सृजित यह कविता 'पटकथा' (1960) में प्रकाशित हुई जो इकतीस पृष्ठ की लम्बी कविता है। यह कविता धूमिल के काव्य संग्रह 'संसद से सड़क तक' में समाविष्ट है। धूमिल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में 'पटकथा' की तरफ देखा जाता है जिसमें आजादी के मोहक स्वप्न के टूटने, देश, जनता, जनतंत्र, देशभक्ति जैसी धारणाओं के नष्ट और विघटित होने के परिणामस्वरूप पैदा हुई स्थिति के परिप्रेक्ष्य को ग्रहण किया गया है।

कवि धूमिल ने पटकथा नामक लम्बी कविता में दिखाया है कि आज आदमी इस मोड़ पर आकर खड़ा हुआ है कि जहाँ सारे प्राचीन सांस्कृतिक मूल्य नष्ट होते नजर आ रहे हैं। प्राचीन संस्कृति के अनुसार किसी रोते हुए के आँसू पोंछकर उसकी सहायता करनी चाहिए, कोई भूखा भिखारी मिले तो उसको पेटभर खाना खिलाना चाहिए। बूढ़े आदमी को कुछ भी काम न करने देना चाहिए, उसके ऊपर काम का बोझ नहीं डालना चाहिए, बुजुर्गों को आदर सम्मान देना चाहिए। पर वक्त के अनुसार सांस्कृतिक मूल्य परिवर्तन से कोई किसी के आँसू नहीं पोंछता। खाली पेट भिखारी को कोई खाना नहीं देता। आज मनुष्य अपना स्वार्थ देखता है। मजदूर आदमी से ज्यादा काम करवाकर कम मजदूरी देते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वार्थ को देखता है और अपना मतलब पूरा करता है–

अब ऐसा वक्त आ गया है जब कोई
किसी का झुलसा हुआ चेहरा नहीं देखता है
अब न कोई किसी का खाली पेट

देखता है न थरथराती हुई टांगे
और न ढला हुआ सूर्यहीन कंधा देखता है
हर आदमी अपना सिर्फ धन्धा देखता है।"

कवि धूमिल ने 'पटकथा' कविता में आम जनता के दुःख को व्यक्त किया है। आजकल कोई भी किसी की सहायता नहीं करता है।

गरीब मजदूरों पर पूँजीवादी अत्याचार करते रहते हैं। अब धीरे–धीरे आपस में भाईचारा खत्म हो रहा है, सब लोग सहानुभूति, प्यार, मान–सम्मान को भुला रहे हैं। इससे लोग एक–दूसरे से दूर होते जा रहे हैं। संस्कृति का यह बदला रूप देखकर कवि धूमिल परेशान होते हैं। पुराने सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार मन्दिर–मठों में भगवान की मूर्ति होती थी। उसके सामने पूजा–पाठ होता था और अनेक कार्यक्रमों का आयोजन भी होता था। जिस जगह को सांस्कृतिक विरासत की जगह माना जाता था वहाँ आदर्श देश विदेश के कुकृत्यों की योजनाओं बन रही है। आजकल जितना पवित्र स्थल हो, उतना ही काले कारनामों से अपवित्र होता है–

"सबसे बड़ा बौद्ध मठ
बारूद का सबसे बड़ा गोदाम
अखबार के मटमैले हाशिये पर
लेते हुए एक तटस्थ और कोढ़ी देवता
शावतवाद न ।
यह मेरा देश

इस कविता में कवि धूमिल ने बताया कि हमारी संस्कृति विश्व में सबसे महान संस्कृति है। वर्तमान में इसी संस्कृति का पतन होता जा रहा है। इस प्रकार संस्कृति के ह्रास होने से सांस्कृतिक मूल्यों की गिरावट बढ़ती जा रही है। इसका परिवर्तन उग्रवाद में होता जा रहा है और उग्रवाद बढ़ने से देश की पूरी व्यवस्था में अस्थिरता का निर्माण होता जा रहा है। इसलिए कवि धूमिल ने अपनी कविता 'पटकथा' के माध्यम से हमारे सांस्कृतिक मूल्य में आयी गिरावट को दिखाने का प्रयास किया है और यह भी दिखाया है कि आम आदमी का कैसे शोषण होता है।

कवि धूमिल की लम्बी कविता 'पटकथा' में दिखाया गया है कि सामान्य आदमी पर पूंजीवादी लोग किस तरह अन्याय और अत्याचार करते है। सामान्य आदमी पर पूँजीवादी लोग किस तरह सामाजिक स्थिति को बिगाड़ने की कोशिश कर रहे है। धूमिल जैसे कवि अपना सारा आक्रोश मध्यवर्गीय समझौतपरस्ती और आत्मकेन्द्रियता पर उतारता है। कवि आम आदमी को उकसाता है और संघर्ष के लिए ललकारता भी है–

"वह क्या है ? जिसने तुम्हें
बर्बर के सामने अदब से
रहना सिखाया है।

क्या यह विश्वास की कमी है ?
जो तुम्हारी भलमनसाहत बन गयी है
या कि शर्म
अब तुम्हारी सहूलियत बन गयी है।"

सामान्य आदमी किस तरह शर्म के मारे कभी भी इस बिगड़ती सामाजिक स्थिति को सुधारने के लिए आवाज नहीं उठा सकता है। 'धूमिल' के इस संघर्षमय जीवन को जीने के लिए आत्मविश्वास को जगाने का काम करते हैं। कवि आम आदमी को आत्मनिर्भर होने को कहता है और उन्हें आगे बढ़ने का हौसला देता है। इस कविता में कवि आम आदमी की स्थिति को सुधारने के लिए प्रयास करता नजर आ रहा है।

देश की आबादी लगातार बढ़ती गयी और बढ़ने वाली भीड़ का कोई जीवन ध्येय नहीं था। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने जो योजनाएं बनाई वे सामान्य जनता तक पहुँच नहीं पायी। इन सारी परिस्थितियों का भयानक परिणाम कवि धूमिल ने पटकथा नामक लम्बी कविता में दर्शाया गया है।

"भीड़ बढ़ती रही / चौराहे चौड़े होते रहे
लोग अपने–अपने हिस्से का अनाज
खाकर निरापद भाव से
बच्चे जनते रहे
योजनाएँ चलती रहीं
बन्दूकों के कारखानों में
जूते बनते रहे।"

कवि धूमिल बताना चाहते हैं कि मूल्य–संक्रमण से सामाजिक परिस्थिति कितनी भयानक रूप से प्रभावित होती है, यह साफ दिखाई देता है। धूमिल कहते हैं कि "आजकल आडम्बर, मिथ्याचरण, सुखोपयोग आदि प्रवृत्तियों के कारण मानव मूल्यों का ह्रास और उनमें बदलाव हो रहे हैं। औद्योगीकरण ने प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, त्याग जैसे परम्परागत मूल्यों का मूल्यों का ह्रास करते हुए जनजीवन में व्यावसायिक मनोवृत्ति को उत्पन्न किया है।"

आम आदमी अपने आपको इस समाज में अकेला और असुरक्षित पाने लगा है जिसके कारण एक बहुत बड़ा सामाजिक भय जन्म लेता है। सामाजिक मूल्यों का गिरता हुआ स्वरूप और उसके कारण बढ़ रहा वर्ग–संघर्ष मनुष्य की सुविधाभोगी मनोवृत्ति के कारण समाज का पतन, असुरक्षा इन सभी सामाजिक संकटों का एक ही हल है–मानव मूल्यों की पुनर्स्थापना करना। इस संदेश को कवि धूमिल ने आम आदमी तक पहुचाने का माध्यम अपनी 'पटकथा' कविता को बनाया है और कवि ने अपने दर्द को व्यक्त किया है। कवि राजनीति के कुचक्र और षड्यंत्रों के ख्यालों से ही संतुष्ट नहीं है अपितु उसकी विचार–प्रक्रिया पाठक के मानसिक तनाव को और सघन कर देती है।

धूमिल समकालीन कविता में प्रखर राजनीतिक चेतना के कवि माने जाते हैं। धूमिल की कविता का

केन्द्र आम जनमानस रहा है। इसी आम जनमानस की तमाम समस्याओं को चित्रित करने का कार्य धूमिल ने अपनी कविता के माध्यम से किया है। उन्होंने अपने काव्य में सदैव व्यक्तियों और व्यक्तियों की समस्याओं को लोगों के सामने प्रस्तुत किया है।

धूमिल की कविता 'पटकथा' स्वतंत्र भारत में घटित घटना के प्रहसन की कविता है, यह कविता स्वाधीनता आन्दोलन के मूल्यों, आदर्शों उम्मीदों और सपनों के साथ राजनेताओं ने जो विश्वासघात किया है, उसी का पूरा काला–चिट्ठा उजागर करती है। 'पटकथा' कविता में संसदीय लोकतंत्र, चुनावी राजनीति, आम आदमी की विवशता, मध्यवर्ग के आपराधिक चरित्र और तार–तार होते हिन्दुस्तान की वेदना अलग तरह से हमारे सामने आती है। यह कविता में भूख, बेचैनी, गुस्से, यथार्थ और सपनों के बीच सवाल खड़े करती है। समाज में आम आदमी की स्थिति इतनी खराब क्यों है ? आज भी आम आदमी को गुलामी और शोषण का शिकार होना पड़ रहा है।

कवि ने भूख और भूख की आड़ में हुए अत्याचारों को देखा है। समाजवाद को कवि ने मालगोदाम में रखी उन बाल्टियों की तरह देखा है कि जिनमें आग लिखा होता है और पानी तथा बालू भरा होता है। भूख जब व्यक्ति को सताती है तब वह अनेक कुरीतियों की तरफ भागता है जिसके चलते वह अपराध करता है। इस कविता में कवि ने ईमानदारी को भी आदमी की कमजोरी बताया है।

इस कविता के माध्यम से कवि ने आम आदमी पर हो रहे शोषण को दर्शाया है। इसमें कवि का आक्रोश चरम पर दिखाई देता है जिससे वह सबको जागरूक करते हुए नजर आता है। इस कविता में आम आदमी लाचार और बेबस दिखाया गया है जो वर्तमान व्यवस्था से प्रभावित हो रहा है। आज व्यक्ति इस राजनीति की नयी हलचल के बीच स्वयं को असहाय महसूस कर रहा है। वैसे धूमिल का संपूर्ण ही आम आदमी को समर्पित है परन्तु 'पटकथा' कविता उस को चरम तक ले जानी वाली कविता है। पटकथा के माध्यम से धूमिल ने समाज की विसंगतियों को स्पष्ट रूप से चित्रित करने का प्रयास किया जो आम जनमानस की समस्या है। कवि 'पटकथा' के माध्यम से आम जनमानस की समस्याओं का सबके सामने प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

संदर्भ

1. पाण्डेय, कृपाशंकर (2006) सर्वेश्वर, मुक्तिबोध और अज्ञेय, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. धूमिल, सुदामा पाण्डेय (1999), संसद से सड़क तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 108।
3. वही, पृ0 104।
4. गंभीर, डॉ. एस. (2004) साठोत्तरी हिन्दी काव्य में राजनीतिक चेतना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 39।
5. धूमिल सुदामा पाण्डेय (1999), संसद से सड़क तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 103।
6. वही पृ0 102।
7. कौर, कुलदीप (2001) बलदेव वंशी का काव्य : सामाजिक यथार्थ, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली प्र. 2।

फॉरेस्टमैन ऑफ इंडिया–जादव पायेंग

अनामिका
एम.एससी., द्वितीय सेमेस्टर
(वनस्पति विज्ञान)

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में बसा राज्य असम अपने विशाल घने जंगलों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। वन–उपवन पेड़ पौधे पानी हवा हमारे प्राकृतिक धरोहर के अभिन्न अंग है। मनुष्य जाति जहां पर जीवन की सभी मूलभूत आवश्यकताओं के लिए प्रकृति पर निर्भर करती है। वही वन–उपवन असंख्य वन्य प्राणियों को भी आश्रय प्रदान करते हैं। पेड़–पौधों और वनों के अभाव में पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं हे। इस तत्व और सत्य को असम के जोरहाट शहर के छोटे से गांव में रहने वाले बहुत ही साधारण शख्स जादव मोलाई पायेंग ने अत्यधिक गहराई से महसूस किया।

जादव मोलाई पायेंग का जन्म 1963 में असम के "मिसिंग ट्राइब" में हुआ था। यह एक पर्यावरणविद् और जोरहाट के वानिकी कार्यकर्ता हैं। जिन्हें लोकप्रिय रूप से 'फॉरेस्ट मैन ऑफ इंडिया' के रूप में जाना जाता है। इन्हें फॉरेस्ट मैन ऑफ इंडिया की उपाधि क्यों दी गई ?

साल 1979 में असम में ब्रह्मपुत्र नदी में आई भयंकर बाढ़ ने उनकी जन्म स्थान के आसपास बड़ी तबाही मचाई थी। बाढ़ का ही असर था कि आसपास की पूरी जमीन पर सिर्फ मिट्टी और कीचड़ दिखता था। साधारण से दिखने वाले जादव ने अकेले उस खाली जमीन को घने जंगल में बदल दिया। यह सब तब शुरु हुआ जब एक दिन जादव ब्रह्मपुत्र नदी स्थित द्वीप अरुणा सपोरी लौट रहे थे। उस समय जादव ने बालिगांव जगन्नाथ बरूआ आर्य विद्यालय के कक्षा 10 की परीक्षा दी थी। रेतीली और सुनसान जमीन में सैकड़ों सांपों को बेजान मरता देख वह चौंक गए। अप्रैल 1979 में इस तबाही को देख जादव ने (जब वह महज 16 साल के थे) मिट्टी और कीचड़ से भरे द्वीप को एक नया जीवन देने के बारे में ठान लिया।

इस बारे में जादव ने अपने गांव वालों से सलाह ली कि हमें पेड़ लगाने चाहिए। सबसे पहले उन्होंने 20 बांस के पौधे तथा उसी के साथ कुछ अन्य पौधे लगाए और उनकी देखरेख की। उसी का परिणाम है कि आज 36 साल बाद उन्होंने अपने दम पर एक जंगल खड़ा कर दिया। जोरहाट में कोकिलामुख के पास स्थित जंगल का नाम मोलाई फॉरेस्ट उन्हीं के नाम पर पड़ा। इसमें जंगल के आसपास का 1360 एकड़ का क्षेत्र शामिल है। हालांकि जंगल को बनाना आसान नहीं था। जादव की दिन–रात की मेहनत लगी। अंत में उन्हें प्रकृति से उपहार मिला और जल्द ही खाली पड़ी जगह पर वनस्पति और जीव–जंतुओं की कई श्रेणियां पाई जाने लगी। इनमें लुप्त होने की कगार पर खड़े एक सींग वाले गैंड़े और रॉयल बंगाल टाइगर भी शामिल हैं।

बता दें कि पायेंगे के इस महान् और सराहनीय काम के लिए भारत सरकार साल 2015 में उन्हें पदम्श्री सम्मान से भी नवाज चुकी है। इसके अलावा जादव पायेंगे को देश की प्रसिद्ध "जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी" ने साल 2012 में सम्मानित करते हुए "फॉरेस्ट मैन ऑफ इंडिया" के उपनाम से भी नवाजा था।

जादव पायेंग का अपनी इस उपलब्धि पर कहना है कि सम्मान मिलना हमेशा प्रेरित करता है, लेकिन मेरा उद्देश्य हमेशा देश की भलाई ही है। वृक्षारोपण पर जादव पायेंग का कहना है कि देश के प्रत्येक नागरिक को अपने जीवन में कम से कम 2 पेड़ लगाने चाहिए। अगर हम ऐसा नहीं करेंगे। पर्यावरण को नुकसान पहंचाते रहे तो एक दिन इस धरती पर कुछ नहीं बचेगा, कुछ भी।" सच है–

"जितनी ज्यादा अंधेरी होती है संघर्ष की रात सफलता का सूरज उतना ही तेज चमकता है"।

परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के सूत्र

आस्था तिवारी
एम.एस.सी., द्वितीय वर्ष
(जन्तु विज्ञान)

ऐसा कोई भी शार्टकट नहीं है जिससे परीक्षा में सफलता मिल जाये। परीक्षा में सफलता अनेक छोटी चीजों को मिलाकर मिलती है। अगर इन सूत्रों का पालन किया जाये तो किसी भी परीक्षा में सफल हो सकते हैं। आप अपनी दिशा से अवगत हैं। आप यदि अपनी योग्यता को जानते हैं। समय के साथ सीखने, सुनने और अन्य योग्यताओं को विकसित करते हैं तो अध्ययन की अच्छी आदत विकसित कर पायेंगे।

95 प्रतिशत जो कुछ हम पढ़ते, सुनते, देखते, बोलते तथा करते हैं, वह याद रहता है। इसमें इन्द्रियों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अतः क्यों न इन इन्द्रियों को संतुलित कर इनका बेहतर उपयोग किया जाये। लम्बी यात्रा एक छोटे से कदम से आरंभ होती है जैसे–

1. लक्ष्य की पहचान करना।
2. स्वयं को जानना।
3. अच्छी आदतें अपनाना।
4. अपनी योग्यता का विकास करना।
5. कठिन परिस्थितियों में सकारात्मक रहना।
6. योग एवं व्यायाम को अपनाना ।

1. लक्ष्य की पहचान करना– सबसे पहले मुख्य लक्ष्य निर्धारित किया जाना चाहिये। एक बार जब मुख्य लक्ष्य तय हो जाते हैं तो छोटे–छोटे लक्ष्य तय किये जा सकते हैं जो आपको मुख्य लक्ष्य की ओर ले जायेंगे। छोटे–छोटे लक्ष्य को हर उपलब्धि पाने के लिये महीने या सप्ताह के अनुसार तय करके सफलता प्राप्त की जा सकती है।

2. स्वयं को जानना– डॉ. ब्रूनो फास्ट स्मृतियों (याददाश्त) के सिद्धान्तों को बताते हैं कि–

A- 25 प्रतिशत जो कुछ हम पढ़ते हैं –

B- 35 प्रतिशत जो कुछ हम सुनते हैं।

C- 50 प्रतिशत जो कुछ हम देखते हैं।

D- 60 प्रतिशत जो कुछ हम बोलते हैं।

E- 75 प्रतिशत जो कुछ हम करते हैं।

स्वयं को जानना इसीलिये आवश्यक हो जाता है हमें पता होना चाहिए कि हमें कैसे सीखना है ? हमें पता होना चाहिये कि हमारी स्मरणशक्ति कैसे काम करती है ? हम क्यों भूलते हैं ? अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिये

हम और क्या कर सकते हैं ? सफल छात्रों के पास जिज्ञासु दिमाग होता है। उन्हें अपनी क्षमताओं पर भरोसा होता है वे सीखने के उत्सुक होते हैं। जितना आप अपने बारे में जानेंगे उतना ज्यादा अच्छा काम कर सकते हैं।

3. **अच्छी आदत अपनाना** :–व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी आदतों पर निर्भर करता है जो अच्छी व बुरी दोनों हो सकती हैं। यदि लक्ष्य बड़ा हो तो अच्छी आदतें रखना अगला चरण हैं क्योंकि वे व्यक्ति के ज्ञान को प्रभावित करती हैं।

4. **अपनी योग्यता का विकास करना** :–व्यक्ति की पहचान उसकी योग्यता से होती है। यह योग्यता उसके सीखने और कुशलता पर निर्भर करती हैं और वे उसकी रुचियों और दृष्टिकोण को निर्भर करती है। योग्यता को विकसित करने के लिये व्यक्ति को अपनी शक्तियों को बढ़ावा देकर कमजोरियों से छुटकारा पाना होता है। नेपोलियन बोनापार्ट के अनुसार "कल्पनाशक्ति संसार पर राज करती हैं।" लगातार प्रयत्न करने पर अंततः सफलता मिलती है। आज का समय SMART अध्ययन का है–

S- Specific – विशिष्ट

M- Measurable– मापा जा सके

A- Achievable– हासिल करने लायक

R- Realistic– वास्तविक

T- Time bound – समयबद्ध

5. **कठिन परिस्थितियों में सकारात्मक रहना**–जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष करना ही पड़ता है पर इन परिस्थितियों में सकारात्मक रहना ताकतवर की विजय जैसा ही है। हमें आगे बढ़ना है तो निश्चित रूप से मुश्किलें आयेंगी परन्तु–

"मुश्किलें दिल के इरादे आजमाती हैं
स्वप्न के परदे निगाहों से हटाती हैं।
हौंसला मत हार गिरकर ओ मुसाफिर,
क्योंकि ठोकरें ही तो इंसान को चलना सिखाती हैं।

6. **योग एवं व्यायाम को अपनाना**–आज की अस्त–व्यस्त जीवनशैली में स्वयं को शारीरिक एवं मानसिक रूप से सुदृढ़ रखना अत्यन्त कठिन काम है। विद्यार्थी के लिये शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहना अत्यन्त आवश्यक है। इस हेतु योग और व्यायाम का सहारा लेना सबसे उपयोगी हैं। योग आसनों के अलावा ध्यान, इच्छाशक्ति और एकाग्रता बढ़ाने में हितकारी है। व्यायाम के महत्व से हम सभी सुपरिचित हैं।

इस प्रकार यह सभी उपाय एक विद्यार्थी के तैयारी से लेकर परीक्षा में सफल होने तक सहयोग प्रदान करते हैं।

'दर्द न जाने कोई' उपन्यास में तृतीय लिंग की व्यथा

सुप्रिया सोनी
शोधछात्रा (हिन्दी विभाग)

युवा कथाकार लवलेस दत्त का उपन्यास 'दर्द न जाने कोई' वर्ष 2012 में विकास प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास कई मायनों में हमारा ध्यान आकर्षित करता है। एक तो अपनी कथ्यगत नव्यता, दूसरे किन्नर समाज की परम्परागत धूमिल छवि को रचनात्मक दिशा देकर उसकी सामाजिक स्वीकार्यता को स्थापित करने की कोशिश करता है और तीसरे इस उपेक्षित, तिरस्कृत समुदाय से जुड़े कई सामाजिक संदर्भों को विमर्श का स्पेश देता है।

एक ट्रांसजेण्डरवुमेन की संघर्षगाथा को लेखक ने अपने पहले उपन्यास 'दर्द न जाने कोई' में उकेरा है। उनका रचना कौशल अपनी विषयवस्तु पर हावी नहीं होता बल्कि उसकी प्रवाहशीलता के साथ बहता हुआ मानवीयता को मार्मिकता के साथ पिरोता है। एक पुरुष से स्त्री बनने की कथा को समाज में घटने वाली दारुण सच्चाईयों के साथ अभिव्यक्त करता है। उपन्यास रूढ़ मान्यताओं के बीच नए जीवनमूल्यों, नई सम्भावनाओं को तलाश करता है। परम्परा में बँधे मध्यवर्गीय परिवार का लड़का बचपन से ही स्त्रीलिंग मनोवृत्तियों से ग्रस्त है। स्कूल में लड़कियों के साथ उठना–बैठना, बात करना, लड़कियों के साथ डांस करना उसे पसन्द है, उसकी इन स्त्री–सुलभ गतिविधियों के चलते बड़े भाई रुष्ट रहते हैं। अपने परिवेश में केवल माँ और बड़ी बहन का स्नेह उसे मिलता है। माँ और बहन उसकी स्त्रैणमनः स्थितियों को उसका बपचना समझकर टालती रहती है। पितृसत्तात्मकता से घिरे परिवार में देवेन्द्र के मनोभाव जिज्ञासा के अथाह सिन्धु में डूबते–उतराते रहते हैं। एक दिन वह अपनी माँ से पूछ बैठता है–"आदमी क्या होता है माँ ? उसका प्रश्न सुनकर माँ खिलखिलाकर हँस पड़ी, मुश्किल से अपनी हँसी रोककर वह बोली, जो तेरे दादा हैं, तेरे पापा थे, तेरे मामा हैं–ये सब आदमी हैं, तू आदमी नहीं है क्या ? "अरे बावले मैं औरत हूँ।" औरत, औरत क्या होता है ? माँ! औरत होता नहीं, होती है। मैं, तेरी दीदियाँ, तेरी नानी, तेरी दादी सब औरतें हैं–कैसे पता चलेगा कौन औरत है और कौन आदमी ? इसके लिए तुझे पढ़ाई करनी होगी– जब खूब पढ़ेगा तो खुद जान जाएगा आदमी औरत का फर्क समझा– चल अब स्कूल जा– माँ ने बात बदलते हुए कहा।"[1]

बचपन का मनोविज्ञान भी बड़ा रचनात्मक होता है और रचनात्मकता के लिए जिज्ञासा एक आवश्यक तत्व है। जिज्ञासा से ही मनुष्य की चेतना बलवती होती है। इसी चैतन्य के माध्यम से मनुष्य को विभिन्न अनुभूतियाँ प्राप्त होती हैं। अनुभूतियों से बुना हुआ संसार ही मनुष्य को पूर्णता प्रदान करता है, वह सुख–दुख के अनुभव प्राप्त कर पता है। उपन्यासकार ने देबू (देवेन्द्र) के बचपन की इन्हीं अनुभूतियों को बड़ी कुशलता के साथ कागज पर उतारा है। देबू के मानस पटल पर बन रही स्त्रीजन्य छवियाँ अपना नया वितान ढूँढती दिखाई देती हैं। मानसिक और भावनात्मक रूप से एक नई परिणति की ओर अग्रसर बच्चे की भावी पृष्ठभूमि तैयार करती है। देबू के बचपन की टूटन, बिखराव और मानसिक यंत्रणा की मार्मिक कहानी पाठक के भीतर एक विचित्र हलचल उत्पन्न कर देती है। उसके बड़े भाई राजेंद्र की प्रताड़ना जैसे उसकी इसी नियति की प्रस्तावना है–लौंडिया बनकर नाच रहा है–तुझसे कितनी बार कहा है कि –ठहर तो, ऐसे नहीं मानेगा, कहते हुए राजेन्द्र ने उसे दो थप्पड़ मारे और हाथ पकड़कर घसीटते हुए बाहर आंगन में ले

जाकर धक्का दिया। वह औंधे मुंह गिरा, इतनी देर में राजेंद्र ने अपनी कमर से बेल्ट निकाली और उस पर बरसानी शुरू कर दी। वह बुरी तरह चीखने लगा। उसकी चीख सुनकर ऊपर के कमरे से मानवेंद्र भी बाहर आ गया और उसे राजेंद्र से बचा लिया। राजेंद्र जोर–जोर से बोल रहा था–जब देखा तब लौंडिया वाली हरकतें करता रहता है। साला लड़का है या लड़की। झाडू लगाएगा, आँगन लीपेगा, बर्तन माँजेगा अजीब लौंडा है–आज साला लौंडिया की तरह चुनरी ओढ़े कमरा बंद करके नाच रहा था। अगर फिर उसने ऐसा किया तो या तो इसे ठीक कर दूंगा या जान से मार डालूंगा–साला अजीब भाई पैदा किया है अम्मा ने– ।"[2]

देबू स्कूल और आसपास अपना कहे जाने वाले एक कोने को खोजता रहता जहां उसकी पुरुष देह में बैठी स्त्री अपनी समस्त भाव–भंगिमाओं के साथ बाहर आ सके। खुले आसमान में साँस ले सके। देबू की लाख कोशिशों के बाद भी उसके भीतर की अनुभूतियाँ बाहरी परिवेश से सामंजस्य नहीं कर पाती। लड़की की तरह रहने, पढ़ने और आगे बढ़ने की उसकी सारी शक्ति उस समय क्षीण हो जाती है जब उसके भीतर की स्त्री संवेदना पूरी ताकत से उभर कर बाहर आ जाती है। उसे लगता है कि वह किसी अंतर्द्वंद में उलझ गया है जिससे बाहर निकालना उसके वश की बात नहीं। लेखक उसके इस मानसिक संघर्ष की मर्मस्पर्शी व्यंजना करता है जहाँ वह स्वयं से लड़ता है और हर बार हार जाता है। स्कूल जाते हुए राहगीरों की अश्लील टिप्पणियों, स्कूल में सीनियर लड़कों के अभद्र ताने, अपने सीनियर सहपाठी राजकुमार की सहानुभूति और अंतरंगता, परीक्षा में फेल होने पर डर कर घर से भागकर मौसी के यहाँ पहुंचना, बड़े भाई राजेन्द्र द्वारा पुनः पिटाई करने पर जैसे वह कहना चाहता था कि–"भइया, मैं जानबूझकर कुछ नहीं करता, मुझसे खुद–ब–खुद हो जाता है, मैं जानबूझकर लड़कियों की तरह नहीं चलता बल्कि मेरी चाल ही ऐसी है, मेरा मन लड़कियों जैसा ही है। भइया; मैं क्या करूं मैं खुद अपने आप से परेशान हूँ।"[3]

देबू के जीवन की यह त्रासदी अपने ऊपर के पुरुषत्व को नकारती और नारीत्व को ओढ़ती है। उपन्यास इन स्थितियों को इतनी गहना से गढ़ता है कि पाठक भी मर्माहत हो जाता है। ऐसी स्थितियों को वैज्ञानिक भाषा में हार्मोन का असंतुलन कहते हैं। किंतु सामाजिकता की परिधि में इस सत्य को स्वीकार करना कड़वा अनुभव है। एक ऐसा धारदार सच जो समाज की प्रतिष्ठा की सारी नसें काट डालता है। पीड़ित पात्र को ही इसका उत्तरदायी मानते हुए उसे उपहास के नर्क में ढकेल देता है। देबू के मानसिक द्वन्द उसके यथार्थ उसकी भावनाओं, आवेगों और संवेदनाओं का उपन्यास में गहरी छाप छोड़ता है। स्त्री होने के लिए अभिशप्त पुरुष की पक्षधरता में समाज का कोई सदस्य नहीं होता है। अन्ततः उसे अपने भविष्य का निर्णय स्वयं ही करना होता है। लेखक ने समाज की चुप्पी में निहित अनिर्वचनीय क्रूरता को संकेतित कर दिया है।

देबू के बचपन से बड़े होने तक की विभिन्न घटनाएँ उसके भीतर के आवेग को कसौटी पर कसती है। लेखक किन्नरों के जीवानुभव, उनके यथार्थ को अपनी भाषा में उतारते हुए मनुष्य बने रहने की जिम्मेदारी का बोध कराता है। उसकी लेखनी उसके भाषा–विन्यास में झलकती हुई दिखाई देती है।

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

1. लवलेश दत्त, दर्द न जाने कोई, विकास प्रकाश, कानपुर, संस्करण 202, पृष्ठ संख्या 11–12
2. वही पृ. 27
3. वही पृ. 50

नम्र रहने की ताकत

आलोक कुमार
एम.ए., द्वितीय वर्ष (अंग्रेजी)

विनम्रता न केवल आपके व्यक्तित्व में निखार लाती है, बल्कि कई बार सफलता का कारण भी बनती है। विनम्रता के एवज में जो सम्मान मिलता है उसका एक अलग महत्व है। मन की कोमलता और व्यवहार में विनम्रता एक बड़ी शक्ति है। कोमलता सदा जीवित रहती है, जबकि कठोरता का जल्द ही विनाश हो जाता है। तलवार कठोर से कठोर पदार्थ को काट देती है, लेकिन कई कठोर पदार्थों को कटने की ताकत उसमें नहीं होती है।

एक बेटे ने पिता से उनकी मृत्यु शैय्या पर पड़े रहने के दौरान कुछ ज्ञानोपयोगी धर्मोपदेश देने का निवेदन किया। पिता ने कहा कि नदी समुद्र तक पहुंचती है तो अपने साथ पानी के अतिरिक्त बड़े–बड़े लंबे पेड़ साथ ले आती है। एक दिन समुद्र ने नदी से पूछा कि तुम पेड़ों को तो अपने प्रवाह में ले आती हो, परंतु कोमल बेलों और नाजुक पौधों को क्यों नहीं लाती हो ? नदी बोली जब–जब पानी का बहाव बढ़ता है तब बेलें झुक जाती है और झुककर पानी को रास्ता दे देती हैं।

पिता ने कहा बेटे ठीक वैसे ही जो जीवन में विनम्र रहते हैं उनका अस्तित्व कभी समाप्त नहीं होता। आप सबने अक्सर देखा होगा और महसूस भी किया होगा कि कई लोग अपने विशेष कार्य में माहिर होते हैं, लेकिन विनम्रता के अभाव में घर या कार्यालय में सदैव परेशानी का शिकार होते हैं। विनम्रता कायरता नहीं है यह व्यक्ति को शांति, शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती है। मनुष्य यदि विनम्रता से जीवन जीना सीख जाए तो अनेक परेशानियां देखते ही देखते समाप्त हो जाती हैं। इनके लिए किसी विशेष उपाय की आवश्यकता नहीं है। थोड़ा सा व्यवहार में बदलाव मात्र लाने से यह संभव हो जाता है। विनम्र व्यक्ति के सामने कठोर हृदय वाले व्यक्ति को झुकना ही पड़ता है। छोटी–छोटी बातों को ध्यान में रखकर हम अपने जीवन को खुशहाल बना सकते हैं। जो विनम्र होते हैं वो हर जगह सम्मान पाते हैं। परमात्मा को भी किसी की अकड़ पसंद नहीं है। वह अपने बच्चे की भलाई के लिए हमेशा खड़ा है, परंतु आवश्यकता है स्वयं में कुछ मूलभूत सुधार लाने की ताकि जीवन सफल हो सके।

मींठे अंगूर

एक भूखी लोमड़ी अंगूर के बाग में आई। रसभरे पके अंगूरों के गुच्छे देख उसकी भूख और बढ़ गई। लाख प्रयत्न करने पर भी अंगूर उसकी पहुँच से बाहर थे। कुछ सोचकर वह बाग से बाहर निकली तो भेडिये ने कहा 'क्यों लोमड़ी बहिन, क्या अंगूर खट्टे हैं?' 'अभी खाये नहीं हैं भइया। खाकर अवश्य बताऊँगी अंगूर खट्टे हैं या मीठे।' कहकर लोमड़ी चली गई। थोड़ी देर बाद वही लोमड़ी आठ–दस अन्य लोमड़ियों के साथ बाग में आई। गोल बनाकर एक के ऊपर एक चढ़कर हर लोमड़ी ने बारी–बारी से छक कर अंगूर खाये। जाते समय भेड़िये को उस लोमड़ी ने बतलाया–'भैया, अंगूर बहुत स्वादिष्ट हैं। पर इन्हें खाने के लिये अपनों में एकता और सहकार होना आवश्यक है।'

डरावना स्वप्न अनोखी सीख

रिया तिवारी
बी.ए. प्रथम वर्ष
(द्वितीय सेमेस्टर)

हम सभी विद्यार्थी कक्षा में बैठे अध्यापक का इन्तजार कर रहे थे, किसी कारणवश अध्यापक अनुपस्थित थे सभी ने सोचा थोड़ा मनोरंजन हो जाये सभी छोटे–छोटे समूहों में विभक्त हो गये किसी ने नृत्य प्रस्तुत किया तो किसी ने एक सुन्दर मधुर गीत गाया और कुछ ने कलाबाजी दिखाई। सब कुछ ठीक चल रहा था कि अचानक ही एक विद्यार्थी का मिजाज बिगड़ने लगा, उसकी आँखें बड़ी और गहरी होती जा रही थी ऐसा लग रहा था जैसे मानो अभी बाहर ही निकली आ रही हो, उसके पूरे शरीर पर हल्के लाल रंग के दाग दिखाई पड़ने लगे देखते–ही–देखते उसके चेहरे सहित पूरे शरीर की रंगत बदल गई। वह बहुत भयानक दिखाई पड़ रहा था उसके शरीर से उसका संयम टूट रहा था। उसमें जैसे ही दूसरे विद्यार्थियों ने थामने की कोशिश की वह भी उसी की ही तरह दिखाई पड़ने लगे। सभी अपनी जान बचाकर भागने लगे। इसका प्रकोप देखते ही देखते क्लास से स्कूल और फिर स्कूल से शहर में फैलने लगा। चारों ओर त्राहि–त्राहि मच गई। सब कुछ एक डरावने दृश्य में तब्दील हो गया। कुछ समझ नहीं आ रहा था, ये क्या हो रहा है, क्यों हो रहा है, इसे कैस रोका जाए ? सब कुछ समझ से परे था। एक–एक करके सभी इसके चंगुल में आ रहे थे।

हम तीन मित्र थे। एक–दूसरे के साथ ही रहते थे। हम दो मित्र तो कुछ पता नहीं चल रहा था, ढूंढ़ने पर देखा कि वह इसकी चपेट में आ चुका था, हम दोनों जैसे–तैसे करे स्कूल से बाहर निकल ही रहा कि मेरा दूसरा मित्र भी इसकी चपेट में आ गया। वह मेरे पीछे भागा मुझे पकड़ने को। मैं घर पहुँचने ही वाली थी कि दूर से देखा कि मेरे परिजन घर के बाहर ही बैठे थे। और आखिर में उसने मुझे न पकड़कर मेरे परिजनों को अपनी चपेट में ले लिया। सब बहुत भयानक होता जा रहा था। शाम ढलने पर मैं स्कूल पहुँची वहाँ देखा तो सभी जमीन पर पड़े थे। शरीर बिल्कुल लाल तबे की तरह हो गया था, सूखे कण्डे की तरह। सभी जगह यही दृश्य था सब कुछ एक खौफनाक मंजर में तब्दील हो चुका था। मैं चीखी–चिल्लाई पर वहाँ कोई नहीं था, मुझे सुनने वाला डर की सीमा पार हो चुकी थी, अब एक पल भी वहाँ ठहरपाना मुश्किल हो रहा था। फिर आँख खुली तो पता चला कि सब स्वप्न था, वास्तविकता में सब ठीक है। पर मेरे भीतर डर अब भी मौजूद था मुझे परेशान कर रहा था, तो वो सिर्फ मेरा डर था, क्योंकि मुझे अपनी मृत्यु का तनिक भी डर नहीं था। फिर प्रश्न यह था कि किस बात का डर। यही सवाल मैं स्वयं से पूछे जा रही थी और मुझे इसका उत्तर भी मिला। वो डर था अपनों को खोने का अपने बनाये मायाजाल के छूट जाने का, इंसान इसी डर के साथ पूरी जिंदगी डरता ही रहता है, वह जिंदगी को जीना भूल जाता है। अगर सही मायने में देखा जाय तो उस स्कूल की उस घटना के घटित होने से पहले तक तो सब ठीक था, अगर सभी पहले ही आपस में प्रेम, सद्भाव, मेल–मिलाप के साथ रहते हों और अपने हर पल को बेहतर बनाकर जीने वालों में से छोटे–छोटे पलों में खुशियाँ ढूँढ लेने वालों में से होते तो कभी भी उन्हें अन्त में डरना या रोना नहीं पड़ता इससे कौन अनजान है। एक दिन सभी को मृत्यु को प्राप्त होना है। कैसे, क्यों, कब ये सब व्यर्थ के सवाल हैं, और इन पर चिन्तन–मनन करना भी व्यर्थ ही है। क्योंकि यह सब ही हमारे हाथों में नहीं है। अगर कुछ है, हमारे हाथों में तो वह है, हमारी जीवनयात्रा। इसे जितना बेहतर तरीके से व्यक्ति जियेगा मृत्यु उसके लिए उतनी ही सरल हो जायेगी।

इंटरनेट युग एवं व्यक्तिगत तथा सामाजिक सामंजस्य

डॉ. राजेश पालीपाल,
अंसि. प्रो., शिक्षक शिक्षा विभाग

वर्तमान समय तकनीकी परिवर्तन का समय है। तकनीकी परिवर्तन के कारण समाज में भी तेजी से परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। सामाजिक परिवर्तन के बाद सामाजिक गतिशीलता तथा सामाजिक गतिशीलता के बाद सामाजिक परिवर्तन होना एक सामान्य प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया समाज में निरंतर चलती रहती है। इंटरनेट के युग में बहुत से कौशलों की पहुंच आम इंसान तक हुई है। कोरोना काल के बाद समाज में शिशुओं से लेकर वयस्कों तक ने टेलीविजन, इंटरनेट, विशेष रूप से मोबाइल गेम्स, व्हाट्सएप, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यूट्यूब जैसी सामाजिक साइटों, वेब सीरीज व वीडियो गेम्स इत्यादि को देखने की प्रवृत्ति असामान्य रूप से बढ़ती हुई दिखाई देती है। छतों/खेल के मैदानों पर बच्चों से लेकर वयस्क जनों की संख्या में सोचनीय गिरावट आई है और उनके द्वारा इंटरनेट पर दिये जाने वाले समय में आशातीत वृद्धि हुई है। व्यक्तियों के एक साथ समूह में बैठने पर एक दूसरे के सुख–दुःख, अनुभव, भविष्य की योजनाओं के आदान–प्रदान की गति बहुत अधिक प्रभावित हुई है। इस काल में विद्यालय के छात्र–छात्राओं से लेकर वयस्कों तक में आत्महत्या की प्रवृत्ति भी दैनिक अखबारों/समाचार पत्रों में बहुतायत से दिखाई पढ़ रही है।

उपर्युक्त समस्या के कारणों पर यदि ध्यान दिया जाये तो उसमें जल्द सफलता की कामना, अधिक अंकों की प्राप्ति की इच्छा, परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्ति की कामना, श्रम के महत्व में कमी, सेवा के भाव में कमी, एकाकी परिवार, अहम् तथा वहम्, आभासी दुनिया को सच्चा मानना, छोटे बच्चों का समय से पूर्व परिपक्व होना, अभिभावकों द्वारा निरीक्षण व आदर्श व्यवहार प्रस्तुत न कर पाना, समाज द्वारा शिक्षकों को ज्ञान देने तक सीमित करना, पड़ोसियों से वार्तालाप में कमी, संवेदनशीलता में कमी, पारंपरिक खानपान में कमी, अभिभावकों द्वारा अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर बनाने की तुलना में इंसान बनाने पर न्यून बल, एकाग्रता में कमी, कंपटीशन के दौर में अभिभावकों द्वारा नॉन स्कूलिंग की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में कमी, कुछ विद्यार्थियों को अधिक सुविधा संपन्न जीवन शैली मिलना, स्वाभिमान की तुलना में अभिमान पर बल, अधिकार की तुलना में कर्तव्य की न्यूनता, सृजनशीलता में कमी, सभी समस्याओं का समाधान यूट्यूब पर देखने की प्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी, विचार शक्ति में कमी, प्रकृति के साथ संतुलन में कमी, वातानुकूलित संस्कृति में वृद्धि, छोटे बच्चों से लेकर वयस्कों तक में इंटरनेट की जबरदस्त लत आदि प्रमुख हैं। यह स्थिति तब और आश्चर्यजनक एवं सोचनीय हो जाती है जबकि छोटे बच्चों द्वारा पीना या खाना तभी संभव हो पाता है मोबाइल/टेलीविजन चल रहा होता है अन्यथा वे भोजन नहीं करना चाहते हैं।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि इंटरनेट की दुनिया ने हमारे ज्ञान, कौशल में वृद्धि की है। इंटरनेट के द्वारा बहुत सी आवश्यकताओं तक हमारी पहुंच सुगम हुई है। पूरा संसार एक वैश्विक गांव बन गया है, विशेष रूप से युवा वर्ग में ऑनलाइन अध्ययन, ऑनलाइन खरीददारी, ऑनलाइन चैट एवं प्रतिदिन आने वाली समस्याओं के आसान हल खोजने की प्रवृति वही है जिससे बहुत से कार्यो को

करने में हमारे समय की बचत हुई है। किंतु बच्चों से लेकर वयस्कों तक को यह बात समझनी होगी कि बिना श्रम के जीवन नहीं है। बिना सेवा के सामाजिक सरोकारों में वृद्धि नहीं है। सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं है। जहां हम रह रहे हैं, काम कर रहे हैं, वह भी हमारा परिवार है। आभासी दुनिया के वहम के साथ हमें वास्तविक दुनिया से नाता जोड़े रखना होगा। संवेदनशीलता हम स्वयं से शुरु करके (अपने लिये समय देकर जैसे योग, व्यायाम, खेलकूद, पैदल चलने में रुचि) प्राकृतिक जीव एवं वनस्पतियों के लिए सजग होने की नितांत आवश्यकता है। सृजनशीलता में वृद्धि के लिए हमें अपने स्वयं के विचारों के साथ कार्य करने पर जोर देने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना होगा। हमें धरती माता की कोख से उतना ही संसाधन लेने की प्रवृत्ति विकसित करनी होगी जितनी हमारे लिये आवश्यक है। नहीं तो आगामी पीढ़ी के लिए हम प्राकृतिक संसाधनों को समाप्त कर देंगे जो कि आगामी पीढ़ी के लिए बहुत ही दुःखदायी होगा। हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य बैठाने पर बल देना होगा।

अध्यापकों द्वारा अध्ययन एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं में विद्यार्थियों की कॉपी–पेस्ट की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करने, पाठ्य सहगामी क्रियाओं में वृद्धि के माध्यम से सामाजिक मेल–मिलाप में वृद्धि कर व्यक्तित्व को अनुपम रूप देने, राष्ट्र के लिए राष्ट्रप्रेम की भावना से संबंधित कार्यक्रम आयोजित कराने, अपनी विरासत व अपनी संस्कृति को सर्वोच्च स्थान पर रखने के लिए प्रेरित करना कुछ हद तक महत्वपूर्ण एवं कारगर सिद्ध होगा।

अभिभावकों द्वारा अध्यापकों को गैरजरूरी नसीहत देने के स्थान पर अच्छा नागरिक बनाने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करने की ओर ध्यान आकर्षित कराना समय की आवश्यकता है। अभिभावकों को अपने नौनिहालों में डॉक्टर, इंजीनियर, चार्टर्ड अकाउंटेंट, आईएएस जैसे सेवा क्षेत्र पर बल देने से पहले अच्छा नागरिक बनाने की प्रवृत्ति पर बल देना होगा। विद्यार्थियों को अपने उम्र एवं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ स्कूलों में भेजने, नॉन स्कूलिंग न कराने, अंकों की होड़ में बच्चों को अवसाद जैसी बीमारियों से बचाने तथा स्वयं आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर दैनिक दिनचर्या में सुबह से लेकर रात तक स्वयं के साथ बच्चों के रहन–सहन पर नजर रखने व इंटरनेट के प्रयोग को सीमित करने की नितांत आवश्यकता है। विद्यार्थियों में दूसरे विद्यार्थी से प्रतिस्पर्धा के स्थान पर स्वयं से प्रतिस्पर्धा बढ़ाने का भाव विकसित करना होगा।

हमें संसार के लिए अच्छे रोबोटों की नहीं बल्कि अच्छे इंसानों की आवश्यकता है। इंटरनेट की दुनिया हमें कहीं न कहीं रोबोट बनाने की ओर ले जा रही है। इंटरनेट का प्रयोग एवं व्यक्तिगत तथा सामाजिक सामंजस्य आज प्रत्येक व्यक्ति की प्राथमिकता में होना चाहिए क्योंकि बिना व्यक्तिगत एवं सामाजिक सामंजस्य के यह दुनिया चल नहीं सकती, अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के लिए यह कहावत, अब पछताये होत का, जब चिड़िया चुग गई खेत, चरितार्थ हो जायेगी।

भाइयो, अब तो नींद से जागो। अपने देश की सब प्रकार से उन्नति करो। जिसमें तुम्हारी भलाई हो वैसी ही किताब पढ़ो। वैसे ही खेल खेलो। वैसी ही बातचीत करो। परदेसी वस्तु और परदेसी भाषा का भरोसा मत रखो। अपने देश में, अपनी भाषा में उन्नति करो।

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

साहित्यिक पत्रकारिता में अनुवाद के विविध आयाम

डॉ. अतुल प्रकाश बुधौलिया
अंसि.प्रो., अंग्रेजी विभाग

आज 21वीं सदी वैश्वीकरण का युग है। मानवीय परिश्रम से लगाकर उसकी गतिशीलता तक में सभी कार्य इलेक्ट्रानिक संसाधनों के द्वारा संचालित हो रहे हैं। ऐसे में भाषा का स्वरूप भी दूरदर्शी और पारदर्शी होता जा रहा है जिसमें अनुवाद का प्रवेश हर स्तर से लाभकारी व हितकर नजर आ रहा है। व्हाट्सएप, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि सोशल मीडिया ने संपर्कों में गति ला दी है। ऐसे में अनुवाद के विविध रंग–रूप तथा क्षेत्र विस्तार सामने आ रहे हैं।

हिन्दी में अनुवाद का प्रारम्भ संस्कृत के प्राचीन साहित्य से होता है। आगे चलकर बौद्ध, जैन, इस्लाम आदि ग्रन्थों का हिन्दी में रूपांतर हुआ और अनुवाद कार्य की महत्ता सिद्ध हुयी। इन सभी ग्रन्थों के अनुदित कार्यों ने अपनी समृद्धि से साहित्य को अत्यधिक प्रेरणा प्रदान की। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अनुदित कार्यों की समृद्धि के कारण हिन्दी का क्षेत्र विस्तार, उसकी पहचान ओर राष्ट्र में उसका स्थान सुनिश्चित हो सका। इसकी समृद्धि के बाद लगभग अन्य सभी भाषाओं का अनुवाद कार्य होने लगा। इसी अनुवाद कार्य ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया और इससे भारतीय साहित्य के समृद्धि का मार्ग प्रशस्त हुआ। साहित्य जगत में अनुवाद के विविध स्वरूप प्रचलन में है जिनमें से निम्न प्रमुख हैं–

साहित्यिक अनुवाद–

भाषा, सामान्य भाषा और साहित्य भाषा दो रूपों में नजर आती है। सामान्य भाषा और साहित्य भाषा में जैसे अंतर होता है, उसी प्रकार अनुवादक भी सामान्य भाषा के अनुवाद के जरिए साहित्यिक भाषा को बढ़ावा प्रदान करता है। अर्थात् लक्ष्य भाषा ही सृजनशील भाषा के रूप में पुनर्गठित हो जाती है। अगर अनुवाद का सृजनात्मक अनुदित कार्य होना है तो उसे सामान्य भाषा के स्तर में रुकावट लाकर अपनी अनुदित कृति को सामान्य कृति से अलग करना होगा क्योंकि लेखक अपना सृजन कार्य भाषा के माध्यम से ही करता है और अनुवादक भाषा के प्राणों में प्रवेश करता है, इसलिए साहित्यिक अनुवाद का कार्य सतही नहीं हो सकता।

अनुवादक अपने संवेदनशील व्यक्तित्व के आधार पर भाषा को पुनर्गठित करता है। साहित्यिक अनुवाद में उसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अन्य किसी अनुवाद में उसका दायित्व इतना महत्वपूर्ण नहीं होता जितना साहित्यिक अनुवाद में होता है क्योंकि साहित्यिक अनुवाद में मूल और लक्ष्य दोनों का एकमात्र साक्षी अनुवादक ही होता है। यहीं पर किसी अनुवादक की क्षमता, उसकी गहराई, उसके ज्ञान का परिमांकन होता है। इस दृष्टि से देखा जा सकता है कि अनुवादक और रचनाकार के मूल और लक्ष्य दोनों भिन्न है। दोनों की सीमाएं अलग–अलग हैं। यहाँ तक कि पाठक भी भिन्न ही हैं।

'अनुवाद' शब्द आज एक व्यापक स्वरूप ग्रहण कर चुका है। वैज्ञानिक प्रगति के साथ–साथ वह हर क्षेत्र में अपना स्थान सुनिश्चित कर चुका है। आज उसकी महत्ता स्थान सुरक्षित करने में ही नहीं बल्कि

उसकी आवश्यकता को महसूस करने की भी है क्योंकि दुनिया भर के लोग वैज्ञानिक उपकरणों के सहारे एक–दूसरे के साथ जुड़ाव महसूस कर रहे हैं। इसी जुड़ाव ने उनके मन–मस्तिष्क पर उनकी साहित्य, संस्कृत, परिवेश आदि को जानने–समझने की जिज्ञासा पैदा की है। इसी जिज्ञासा ने उस देश की भाषा को समझने में अनुदित कार्य का स्थान सुनिश्चित किया है।

मानव चिंतन और मानवीय जीवनानुभवों का सर्वश्रेष्ठ रूप साहित्य में दिखायी देता है। इसलिए इस मानवीय दृष्टिकोण को एक स्तर से दूसरे के रूपान्तरण हेतु अनुवाद कार्य का होना अति आवश्यक हो जाता है। अगर ऐसा न होता तो वेद, रामायण, कुरान, बाइबल आदि प्रसिद्ध ग्रन्थ अपनी–अपनी भाषा के दायरे में ही बँधे रह जाते। इसलिए साहित्य में अनुवाद की महत्ता तब और महत्वपूर्ण हो जाती है जिससे एक भाषा दूसरी भाषा के निकट आकर तुलानात्मक कार्यों के द्वारा अपनी महत्ता सिद्ध कर सके।

भारतीय साहित्य का इतिहास अन्य सभी भाषा के साहित्येतिहास से प्राचीन एवं कलात्मक है। प्राचीनकाल से ही भारत में बहुत–सी बोली और भाषाओं का सृजन होता रहा है। भारत केवल बहुभाषी या बहुबोलियों से ही संबद्ध रहकर अपनी पहचान स्थापित नहीं करता बल्कि साहित्य बहुभाषी और वैविध्यपूर्ण देश के सामाजिक विकास और सांस्कृतिक परिवेश की स्थापना में भी समेकन प्रयास करता है। साहित्य में केवल हिन्दी के साहित्यकार की ही चर्चा नहीं होती बल्कि गुजराती, मराठी, उड़िया, असमिया बंगाली, तमिल तथा तेलुगु साहित्यकार भी इस सामाजिक विकास में अपना योगदान सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं। इन सभी भाषाओं से परिचित हुए बिना अनुवाद कार्य करना असंभव है। भाषा ज्ञान ही इस असंभव को अनुवाद के माध्यम से संभव बनाता है। अनुवाद के ही कारण तुलसीदास और कंबन, कालिदास और बाल्मीकि, प्रेमचंद्र और शरतचंद्र, कबीर, दिनकर, वृंदावनलाल वर्मा, अज्ञेय, आदि भारतीय रचनाकारों का सारा हिन्दुस्तान परिचय प्राप्त कर सका।

कार्यालयीय अनुवाद–

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान ने अपने कामकाज के लिए हिन्दी भाषा को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया। संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान किया गया और यह भी कहा गया कि जब तक संपूर्ण कार्य राजभाषा या राष्ट्रभाषा में न हो तब तक अंग्रेजी को कामकाज की भाषा के रूप में संचालित किया जाता रहे। शुरूआत के समय में हिन्दी का कामकाज के रूप में कोई अनुभव प्राप्त नहीं था जिससे अंगेजी में कामकाज होता रहा। आगे चलकर हिंदी को अंग्रेजी का सहारा देकर कार्यालयी कामकाज की भाषा के रूप में कार्य करने का प्रयास चल पड़ा। जहाँ एक ओर अनुवाद प्रशिक्षण का कार्य किया गया वहीं दूसरी ओर शब्दावली आयोग का गठन करके अनुवाद कार्य पर बल दिया गया। इन दोनों के सहयोग और तालमेल से देश में अनुदित सामग्री तथा प्रशिक्षित अनुवादकों के रिक्त स्थान की भरपाई करने की पूरी कोशिश की गयी।

यह बात ध्यान रखना होगा कि भाषागत हुए इस संशोधन में आज हिंदी केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, संघ के मंत्रालयों तथा तमाम आयोगों और विभागों में सर्वत्र अपेक्षित है। सभी प्रशासनिक कार्यों, न्यायविधानों और सरकारी कामकाज के लिए हिंदी का होना जरूरी हो गया है। इसके लागू होने से अनुचित कार्यों का दायित्व बढ़ गया है। अनुवादों की सीमा में विस्तार हुआ है। गृह मंत्रालय द्वारा सरकारी

कर्मचारियों के लिए कार्यालयी अनुवाद को सीखने की व्यापक व्यवस्था के फलस्वरूप भाषा के प्रचार–प्रसार में तीव्रता आयी है। देशभर में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में हिन्दी विभाग के खुल जाने से कार्यालयी हिन्दी को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद–

भाषा भाव को शब्द रूप देने के साथ–साथ विषय को सामग्री भी देने का कार्य करता है। इसी विषयगत सामग्री में तकनीकी विषय जैसे वाणिज्य, प्रबंधन, इंजीनियरिंग, विज्ञान, एयरोनॉटिक्स आदि विषय भी आते हैं, जिसमें पत्रकारिता का प्रयोग उसी प्रकार हो रहा है जिस प्रकार से विज्ञापन और मीडिया में होता रहा है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी के क्षेत्र में भाषा का यह रूप प्रयोजनमूलक रूप में प्रसिद्ध है। प्रयोजनमूलक भाषा में जीवन के हर क्षेत्र की जरूरत और सारे कार्य व्यापारों का व्यवहृत रूप देखा जा सकता है।

अभी तक देखा गया कि हिंदी का प्रयोग प्रायः बहुत सीमित क्षेत्र में होता रहा। हिंदी के साथ–साथ अंग्रेजी का अस्तित्व भी बरकरार रहा। लगभग–लगभग सभी आयोगों और न्यायपालिकाओं में अंग्रेजी का ही बोलबाला देखने को मिलता है। किंतु वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के गठन के बाद सारे देश की राजनीतिक और एक करने का सांस्कृतिक काम हिंदी द्वारा संभव हो पाया। अब लोग इस सीमित हिंदी की बड़ी सरलता के साथ प्रयोग करने लगे।

राष्ट्रभाषा प्रचार सभा, वर्धा और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, चेन्नई के खड़े होने से हिंदी प्रचार–प्रसार बहुत तीव्र हुआ। राष्ट्रभाषा द्वारा हिंदी साहित्य सम्मेलन का आरंभ होना हिंदी के उत्थान में और चार चाँद लगाने का कार्य किया। किन्तु आजादी के बाद संविधान सभा का गठन हुआ। अब कामकाज की भाषा में बदलाव की आवश्यकता महसूस होने लगी। अंग्रेजों के जाने के बाद अंग्रेजी को भी त्यागने की ललक लोगों में दिखाई देने लगी। किंतु संविधान निर्माता सभा ने एक आदेश पारित करके अंगेजी को जाने से रोक लिया। संविधान निर्माता सभा ने आदेश दिया कि पन्द्रह साल तक हिंदी के साथ अंग्रेजी में भी काम होता रहेगा। किंतु अभी वह पन्द्रह साल पूरा नहीं हुआ और अंग्रेजी अपनी वर्चस्वता कायम की हुई है। 1965 के बाद संविधान में संशोधन कर सहयोगी भाषा के अनुवाद की प्रक्रिया में तेजी लाई गई। अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी भी समानांतर रूप से साथ खड़े होने के लिए जद्दोजहद करने लगी। सरकारी कार्यालय द्विभाषी रूप में उभर कर सामने आया। भारतीय भाषाओं समेत हिंदी में प्रस्तुत अनुवाद होना शुरू हुआ। साहित्य की मांग बढ़ने लगी। वैज्ञानिक तकनीकी ही नहीं कार्यालयी सामग्री के अनुवाद में भी तीव्रता आयी।

मशीनी अनुवाद–

इस कंप्यूटर युग में कम्प्यूटर के आगमन से लोग अत्यधिक आशान्वित हुये। उनकी आकांक्षाएं बढ़ी। हालांकि कम्प्यूटर की क्षमता भले ही सीमित हो किन्तु संभावनाएं असीम है। टंकण के कार्य ने अनुवाद के कार्य में प्रगति ला दी। कंप्यूटर के आगमन से टंकण का कार्य आदमी बोलकर करने लगा। इससे यह महसूस होता है कि अगर कंप्यूटर आवाज पकड़कर टंकण का कार्य कर सकता है तो आने वाले समय में आवाज को पकड़कर के भाषा का निर्धारण भी कर सकता है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर ने 'अक्षरा भारती' से मशीनी अनुवाद का कार्य शुरू किया।

1995 में हैदराबाद यूनिवर्सिटी के सहयोग से तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, मराठी आदि का हिंदी में अनुवाद कार्य ने अनुदित सामग्री में प्रगति के नये रास्तों को जन्म दिया है। आज राजभाषा प्रयोग के कारण अनुवाद का महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। इसी मशीनी अनुवाद का विशेष विकास CDAC, पुणे में चल रहा है।

मशीनी अनुवाद में प्रायः देखा गया है कि कम्प्यूटर के आगमन से अनुवाद कार्य में काफी तीव्रता आयी। अनुदित सामग्री में बढ़ाव नजर आया। कंप्यूटर ने ज्ञान–विज्ञान के साथ–साथ ललित साहित्य के अनुवाद की संभावना में भी गति प्रदान की। सांस्कृतिक जटिल पाठ की समस्या सुलझती नजर आयी। वैश्विक पटल पर साफ्टवेयर बाजार की उपस्थिति ने हममें यह विश्वास पैदा किया कि अब अनुवाद कार्य की संभावना में प्रबलता और अनुसंधान कार्य के समस्याओं का समाधान मिल सकता है। मशीनरी कार्य से अनुवाद की महत्ता में संभावना व्याप्त हुआ है। इसका विकास दिन–प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

पारिभाषिक शब्दावली अनुवाद–

पारिभाषिक शब्दावली ही वैज्ञानिक साहित्य की आधारशिला है। जहां पर शब्द अपने अर्थगत सीमा का उल्लंघन नहीं कर सकता। शब्द का उच्चारण प्रयोग अत्यधिक सरल और व्यावहारिक है। भाषा के प्रतिकूल होते हुए भी अपने अनुकूल करना, इस परिभाषिक शब्दावली अनुवाद का मुख्य कार्य है। पारिभाषिक शब्दावली अनुवाद में प्रायः यह देखा गया है कि इसके द्वारा स्वीकृत एवं निर्मित शबदावली स्पष्ट, सुबोध, विषयबद्ध संक्षिप्तता और उर्वरता लिए हुए अपने मूलनिष्ठा, स्वतंत्रता और सांकेतिकता को प्रदर्शित करती है।

इसमें यह देखने को मिलता है कि हिंदी में निर्मित पारिभाषिक शब्दावली अधिकतर अंग्रेजी से ही निर्मित है। इसके अलावा भारत की अन्य भाषाएं भी इसी को अपना आदर्श मानकर संचालित होती हैं। हिंदी अनुवाद को यहां पर सतर्क रहने की विशेष आवश्यकता है क्योंकि अंग्रेजी का प्रतिरूप हिंदी में निर्मित परिभाषिक शब्दावली में बदलाव लाने में पूर्ण सक्षम है। भारत का संविधान बहुविध सामाजिक संस्कृति की बात कहता है किंतु नैसर्गिक विकास की प्रक्रिया में शब्द–निर्माण एवं भाषा परिवर्तन का कार्य सदैव साथ–साथ जारी रहा है। अतः अनुवाद की प्रक्रिया को सरल और सुबोध बनाने के लिए हिंदी में अनुवाद के मानक को तय करना बहुत जरूरी हो गया है। इसी कारण भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने परिभाषिक शब्दावली आयोग का गठन करके इस कार्य को करने के लिए नया दिशा–निर्देश बनाने का कार्य कर रहा है।

भारतीय साहित्य, अनुवाद के कारण, देशकाल और भाषा की सीमा में बँधकर नहीं रहता अपितु साहित्य में उसके आस्वादन और अध्ययन की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। जीवन के हर क्षेत्र में इसकी प्रासंगिकता प्रमाणित हो चुकी है। इस वैश्वीकरण के दौर में राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अनुवाद का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। इसलिए अनुवाद के कार्य में भी प्रगति हुई है। उनका यह दायित्व बनता है कि वे इस कार्य में बढ़–चढ़कर हिस्सा लें और अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए मौलिक कार्य करें। अब केवल सतही अनुवाद कार्य से काम चलने वाला नहीं है। उनको अब वह दृष्टि प्राप्त करनी होगी जो भाषा के लक्ष्य का निर्धारण कर सके। उनका यह कार्य अत्यन्त कठिन, श्रम साध्य और गहन स्तर पर सूझ–बूझ का परिचायक होना चाहिए। मूलभाव से धारित अनुवाद ही समाज द्वारा अपेक्षित होता है ।

हिन्दी साहित्य में नयी कविता का युग

शिवानी सिंह जादौन
एम.ए., प्रथम वर्ष (हिन्दी)

ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दी कविता के अंतर्गत प्रगतिवाद के उपरान्त साहित्यिक प्रतिमानों एवं तत्संबंधी प्रभावों की दृष्टि से व्यापक परिवर्तन होता है इसके फलस्वरूप मानव और जीवन, साहित्य और समाज, शाश्वत एवं तात्कालिक, व्यापक एवं लघुतर को संक्रमण मूलक चेतना उद्भूत हुई। इनके प्रभाव में प्रयोगवाद का उद्भव 1943 में हुआ तथा उसके समापन के बाद 1953 में रामस्वरूप चतुर्वेदी व लक्ष्मीकांत वर्मा के सम्पादन में 'नये पत्ते' के प्रकाशन एवं 1954 में जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी के सम्पादन में 'नयी कविता' का पहला अंक निकला। इसके साथ ही 1955 में धर्मवीर भारती व लक्ष्मीकान्त वर्मा के सम्पादन में 'निकष' का सूत्रपात हुआ। नयी कविता की विषय–वस्तु में पूर्वागत काव्य से एक विशिष्ट अलगाव दृष्टिगोचर होता है। इसे मानवीय साक्षात्कार की कविता कहा जाता है।

डा0 विद्यानिवास मिश्र ने "जीवन के आस्वादन में विश्वास, पार्थिव जगत की समग्रता का ग्रहण, प्रश्नानुकूलता और भाव के अनुरूप लय व भाषा के अन्वेषण को नयी कविता के मुख्य लक्षण के रूप में स्वीकार किया है।" हिन्दी कविता के इतिहास में विभिन्न युगों का नामकरण युगीन काव्य की प्रवृत्तियों के आधार पर हुआ है। नयी कविता के नामकरण के विकल्पस्वरूप एवं समानांतर अनेक नाम प्रस्तुत किये गये, जैसे सनातनी कविता, सूर्योदयी कविता, अपरम्परावादी कविता, युयुत्षावादी कविता आदि। नामवर सिंह के शब्दों में "रूपाभ, उत्श्रृंखल, हंस, विशाल भारत आदि पत्रिकाऐं परिवर्तन का उद्घोष कर रही थी।" इस सम्बन्ध में 'तार–सप्तक' का प्रकाशन नयी कविता का प्रस्थान बिन्दु माना जा सकता है। नयी कविता अपने दुःख–दर्दों से ऊपर उठकर युग व समाज के दुःख–दर्दों को स्थान देती है–

युग की कातर आँख
तुम्हारी कजरारी आँखों से
कहीं अधिक सुन्दर हैं,
मुझको मिला बुलावा
मैं जाऊँगा,
प्राण, तुम्हारी इन अतृप्त साधों से
मेरे युग की साध कहीं ऊपर है।

नयी कविता में निराशावादी भावनाओं का चित्रण इसकी एक प्रमुख दुर्बलता मानी जाती है। नया कवि निराशा में भी आशावान हो तो नये कवि की आस्था का दूसरा पक्ष है लौकिक जीव के प्रति मोह। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के अनुसार–

एक द्वार की तरह
मैं रेगिस्तान में खड़ा हूँ
एक टूटी दीवार का अकेलापन भी कहाँ है
जो रोक सके
गर्म हवाएँ सनसनाती हुयी।
मुझमें से गुजर जाती हैं।

मुक्तिबोध के अनुसार–"नयी कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस व्यक्ति की सम्वेदनात्मक प्रतिक्रिया है। नयी कविता का ज्वर एक नहीं विविध है। इस कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं–वादमुक्त काव्यदृष्टि, बौद्विकता, आधुनिक बोध, विषयवस्तु का वैविध्य, लोकोन्मुखता, रस की अनिवार्यता का निषेध, गद्यात्मकता, बिम्ब बहुलता, व्यंग्यात्मक शैली। नयी कविता में जीवन और जगत के सभी अनुभव, स्थितियाँ अथवा वस्तुएँ कविता का विषय बन सकती हैं"। डा0 रामदरश मिश्र के अनुसार– "नयी कविता ने लोक जीवन की अनुभूति सौन्दर्य बोध, प्रकृति और उसके प्रश्नों को एक सहज और उदार मानवीय भूमि पर ग्रहण किया, साथ ही लोकजीवन के बिम्बों, प्रतीकों, शब्दों और उपमानों को लोक जीवन के बीच से चुनकर अपने को अत्यधिक संवेदनापूर्ण और सजीव बनाया"।

जीवन के प्रति आसक्ति या अनुराग की भावना :–

नयी कविता के रचना संसार में व्याप्त पराभाव–निराशावादिता आदि कवि को दैन्यता का भाव प्रदान नहीं करते बल्कि उसकी जिजीविषा शक्ति को प्रदान करते हैं। नये कवि की जीवन के प्रति आसक्ति के कुछ उदाहरण दृष्टव्य हैं–

मैं जीऊँगा, रहूँगा
विधाता तुम कितना भी
अन्याय करो, होड़ लेकर रहूँगा। केदारनाथ
X X X X X
एक मैं हूँ
फौलाद की छाती लिये जीता हूँ,
और
आज भी जिन्दा हूँ –लक्ष्मीकान्त वर्मा
X X X X X
जीवन है कुछ इतना विराट
इतना व्यापक
उसमें है जगह सबके लिए
सबका महत्व –धर्मवीर भारती

नयी कविता की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है आधुनिकता और नये विचार। इसके रचना के

समय जिन बौद्धिक विचारों का नया उन्मेष, काव्य में अर्थलय की व्याप्ति, विश्व मानव का स्वरूप, वैयक्तिकता और सामाजिकता का समन्वय आदि आते हैं। नयी कविता की प्रमुख रचनाएँ हैं—मंजीर, धूप व धान, सीढ़ियों पर धूप में, गर्म हवाएँ, स्वप्न भंग, शब्द अब भी सम्भावना है, एक और नचिकेता, अकेले कंठ की पुकार । अज्ञेय, मुक्तिबोध व केदारनाथ अग्रवाल में आस्थावादी स्वर स्पष्ट है। डॉ. सी.वी. राव के शब्दों में "सीमाओं का विकास नयी कविता की बहुत बड़ी उपलब्धि है।" आज के मानव का स्वरूप स्पष्ट करने के लिए सर्वेश्वर ने 'पोस्टर और आदमी' में व्यंग्य का सहारा लिया हैं

लेकिन मैं देखता हूँ
कि आज के जमाने में
आदमी से ज्यादा लोग
पोस्टरों को पहचानते हैं
वे आदर्श से बड़े सत्य हैं।

व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित नयी कविता के वल सामाजिक निषेध की कविता नहीं है। उसमें अनुभूतियों का वैविध्य है। डॉ0 इन्द्रनाथ मदान के अनुसार—"नया कवि व्यक्तिनिष्ठ होकर भी सामाजिक दायित्व से वंचित नहीं है।" नास्तिकता एवं आस्था नयी कविता का एक प्रमुख स्वर है। यह तथ्य निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट होता है—

जिनको तुम कहते हो प्रभु
उसने जब चाहा
मर्यादा को अपने ही हित में
बदल लिया ;
वंचक है।

वेदना छायावदी कविता में ही प्रमुख स्थान पा चुकी थी। उसकी अभिव्यक्ति नये कवियों में प्रमुख रूप से पायी जाती है, जैसा कि प्रस्तुत उदाहरण से स्पष्ट है—

वहन करो
ओ मन ! वहन करो पीड़ा
यह अंकुर है उस विशाल वेदना की
तुममें भी जन्मजात आत्मज है स्वीकार करो,
आंचल से ढककर रक्षण दो।

यौन प्रतीकों को नयी कविता में प्रमुखता से निरूपित किया गया है जैसा कि इस उदाहरण से स्पष्ट है—

भीड़ के स्पर्श बेहूदे लगते हैं
क्योंकि स्पर्शों की भाषा
सिर्फ संदर्भों में पढ़ी जा सकती है।

व्यक्तिवादिता भी नयी कविता की प्रमुखतम प्रवृत्ति कही जाती है। श्रीकान्त वर्मा का यह उदाहरण दृष्टव्य है–

अगर सिकडूं तो कहाँ तक सिकडूं
मैं इस कदर सिकुड़ चुका हूँ कि
छोटे से छोटे
अवसर के छल्ले से अपने को साफ–साफ
बचाकर, गुजर सकता हूँ ।

नयी कविता का भाव बोध जहाँ अत्यन्त समृद्ध है वहाँ उसके कलापक्ष में भी पर्याप्त नवीनतायें हैं। उसके साथ ही अनेक विसंगतियों से युक्त है। नयी कविता की इतनी विशिष्टतायें हैं जितनी जीवन की। वह जीवन का पर्याय बन गयी। नयी कविता एक धारा नहीं अपितु अनेक धारा है फिर भी यदि इसकी विशेषताओं को सूचीबद्ध किया जाये तो वे कदाचित यह होंगी–

- वादमूलकता, अतिवाद और आग्रह में कमी।
- अभिव्यक्तिगत मुक्ति के उद्देश्य एवं आदर्श की काव्य में व्यापक प्रतिष्ठा तथा गद्य का काव्यात्मक प्रयोग।
- शब्द लय की अपेक्षा अर्थलय पर बल।
- प्रस्तुत और अप्रस्तुत के परम्परागत विभाजन का बहुधा प्रयोग तथा जीवंत अनुभव की संश्लिष्ट और समग्र रूप में प्रस्तुति।
- प्रतीकात्मकता की अपेक्षा बिंबात्मकता की प्रधानता तथा खंडित बिंबों का विविध प्रकार से सफल प्रयोग।
- सामान्य के माध्यम से असमान्य की अभिव्यक्ति, उपदेशात्मकता का सर्वथा अभाव, उदात्तीकरण के स्थान पर घनत्व और तीव्रता।
- सत्य के उपेक्षित असाधारण एवं सूक्ष्म पक्षों को काव्यबद्ध करने की प्रवृत्ति।
- कला चेतना में परिष्कार की अपेक्षा प्रामाणिकता की मूल्य वृद्धि।
- कथन में अनेक नाटकीय विधियों का समावेश किन्तु अनुभव की नाटकीयता एवं अभिनयपरकता से प्रायः मुक्ति।
- अनारोपित रीति से स्वतः सामाजिक दायित्व का अनुभव करने वाले मूल्यान्वेषी, नये मानव व्यक्तित्व का धर्म निरपेक्ष भाग्यवादी विचारभूमि पर उदय।

नयी कविता ने नये विषय, नयी बिंब योजना, नयी पद्धति प्रदान की है। नयी कविता का स्वर एक नहीं, विविध है। एक ओर उसमें सुकोमल तीव्र गीतात्मक स्वर है तो दूसरी ओर तीव्र आलोचना का स्वर भी है। प्रकृति के कोमल रमणीय दृश्यों से लेकर हृदय की रसात्मक अनुभूतियों तक के मार्मिक चित्र नयी कविता में कम नहीं है। सच तो यह है कि नयी कविता के भीतर कई स्वर हैं, कई शैलियाँ हैं, कई शिल्प और भाव पद्धतियाँ हैं। नयी कविता एक काव्य प्रकार का नाम है। नयी कविता ने छोटे–बड़े का भेद नहीं रखा है। छोटी–बड़ी अनुभूतियों, सत्यों, घटनाओं और दृश्यों का बनावटी अन्तर नहीं स्थापित किया।

बरसात

राहुल
बी.ए. (द्वितीय वर्ष)

बरसात शुरु होते ही गांव में कुछ समस्यायें उत्पन्न होती ही है पर कुछ समस्यायें ऐसी भी होती है जिन्हें न तो सहा जा सकता है और न किसी अन्य से कहा जा सकता है। बरसात का दिन जब–जब हल्की वर्षा होती है तो जो बूंदे किसी खेत के मालिक अर्थात् किसान व उसके परिवार को अन्न प्रदान करतीं है। वहीं बरसात की बूंदे कुछ घरों में समस्याओं का पैदा करती हैं। यह केवल एक दिन की नहीं अपितु पूरी बरसात की कहानी है और आम लोगों का इन पर कोई काबू नहीं रहता है।

जब राज विद्यालय से घर लौटा, साथ में छोटा भाई भी था। घर आने के बाद उन्होने हाथ–मुंह धोकर खाना खाया। इसके पश्चात् वे पढ़ाई करने बैठ गये। फिर शुरु होती है वर्षा और जैसे ही वर्षा शुरु होती है वे अपनी–अपनी कापी किताबें लेकर अपने घर में (जो मिट्टी का खपरैल था) जाते है। तभी बाहर देखते है कि माँ (जो बकरियां चराने गयी हुई थी) वापस आ गयी है। तभी वहां जाकर बगल में घर (जिसमें पापा लेटते थे) में एक बकरा, दो बकरी खूंटे से और एक छोटी बकरी और एक बड़ी बकरी पापा की चारपाई के पैरों वाले कोनो पर बांध देता है। तभी याद आता है कि कुछ दिन पहले विद्यालय में डॉक्टर आये थे जिन्होंने बताया था कि हमें जानवरों का बाड़ा घर से दूर बनाना चाहिए क्योंकि अगर कोई मच्छर इन्हें काटने के बाद किसी व्यक्ति को काटता है तो उस जानवर के अन्दर जो बीमारी होती है वह उस व्यक्ति में संचारित हो जाती है जिसे वह जानवर के बाद काटता है। पर राज के पापा को तो उसी चारपाई पर लेटना था जिसके पैर वाले कोनों पर बकरियां बंधी हुई थी। पर यह एक ऐसी समस्या थी कि जो वह जानते हुए भी उसका अन्त नहीं कर सकते थे क्योंकि उनके पास इसके अतिरिक्त कोई साधन न था।

बरसात यूँ ही जारी रहती है। इसके चलते उन्हें विद्यालय का काम भी करना था। राज अन्दर वाले एक घर जिसकी दीवारें पक्की थी व छत पर चद्दर पड़े हुए थे वहां जाता है तभी देखता है कि इस घर की छत से पानी नीचे घर में गिर रहा है। ठीक से देखने पर पता चलता है कि चद्दर में दो स्थानों पर छेद है इन्हीं से पानी नीचे घर में आ रहा है। एक स्थान पर एक भगोना व दूसरे स्थान पर एक तसला रख दिया और फिर राज अपना काम करने लगा। कुछ काम हुआ ही था कि भगोने व तसले में से पानी जमीन पर गिरने लगता है। तब राज इसे उठाकर आंगन में फैला देता है फिर राज अपना काम करने लगता है। काम के खत्म होते ही राज खपरैल वाले घर में जाता है वहां का दृश्य बड़ा ही मनोरम था।

जहां छोटा भाई विद्यालय का काम कर रहा था वहीं पर भतीजा (जो 1 वर्ष कुछ दिन का है) वो खेलना चाहता है। तब छोटा भाई मां के कहने पर जमीन से उठकर चारपाई पर बैठ कर अपना काम करने लगता है। माँ भतीजे को चटाई पर बैठाती है। पर उसे तो छोटे चाचा की कॉपी किताबों से खेलना था अर्थात् वह चटाई पर रोने लगता है और चारपाई पर चढ़ने की जिद करता है। तब छोटा भाई अपना काम अधूरा छोड़कर अपनी कापी किताबें रख देता है। वर्षा के चलते–चलते शाम हो जाती है। बड़ा भाई भी काम से घर आ जाता है। तब माँ और भाभी जी रात्रि भोजन बनाने लगती है और राज भतीजे को यहां वहां घुमा–घुमा कर खिला रहा था लेकिन उसे तो आंगन में चलना सीखना था। पर बरसात के चलते यह सम्भव न था।

रात्रि में वे भोजन करते हैं। उसके पश्चात् सब सोने जाते है। भैया भतीजा व भाभी चद्दर वाले घर में और पापा उसी बकरियों वाले घर में छोटा भाई बगल में खपरैल में और माँ छप्पर के नीचे। राज भी मां के पास पड़ी चारपाई पर लोट जाता है। राज की चारपाई पर छप्पर से पानी आता है। राज करवट बदल लेटा है पर उस करवट पर भी पानी आता है। राज के पास वहां सोने के अतिरिक्त कोई स्थान न था। राज खपरैल से एक पतला कपड़े का चद्दर लाता है और उसे ही ओढ़कर सो जाता है। पानी धीरे–धीरे यूं ही बरसता रहता है। राज को मच्छर भी काटते है जिससे रात्रि में ही राज का मुंह सूज जाता है। पर राज उसे खुजलाता नहीं है तो वह सुबह तक ठीक हो जाता है।

सुबह होने के बाद वही सुबह का काम (शौंच, ब्रश, व दातून) के बाद राज दो कलशे व दो बाल्टी पानी बाहर के हैण्डपम्प से भरकर रखता है। अभी पानी की बूंदे बिल्कुल धीमी थीं। जैसे बिजली जाने के बाद बिजली के नल से गिरती है। ठीक वैसे ही मां खाना बनाती है। सबसे पहले राज खाने के लिए बैठा है तभी माँ छोटे भाई से भी खाना खाने के लिए कहती है। राज खाना खा लेता है और जैसे ही विद्यालय के लिए सोचता है। पानी की ये बूंदे बड़ा रूप धारण कर लेती है और वे दोनों भाई विद्यालय नहीं जा पाते है। फिर छोटा भाई खपरैल घर में बैठकर अपना कल का अधूरा काम पूरा करने लगता है। वहीं राज चद्दर वाले घर में भतीजे को ले जाकर खिलाता है। बरसात यूं ही जारी रहती है। जब 10 बजे बरसात बन्द होती है, तब बड़ा भाई काम पर चला जाता है उनके जाने के कुछ देर बाद ही वर्षा पुनः प्रारम्भ हो जाती है। तब तक छोटा भाई अपना विद्यालय वाला काम पूरा कर लेता है। वर्षा धीमी होती है। माँ सोचती है कि वह बकरियां चराने चली जाये, पर राज के कहने पर छोटा भाई खाना बांधकर बकरियां चराने चला जाता है। जब दोपहर में बरसात बन्द होती है और सूरज की किरणें निकलकर जमीन की नमी को सूखा करती है तब राज फिर सोचता है कि जब फिर बरसात होगी तो फिर इन्ही समस्याओं का सामना करना पड़ेगा और करना पड़ेगा ही क्योंकि अभी ऐसा कोई साधन नहीं कि इनका निवारण किया जा सके और राज यह सब सोचते हुए सब कुछ समय पर छोड़ देता है कि जब राज पढ़ लिख कर नौकरी करेगा तो सभी समस्याओं का अन्त इस तरह से होगा कि रहने के लिए पक्का घर बन जाएगा और जानवरों का बाड़ा भी घर से दूर अच्छा सा बनवाऊंगा मगर कब समय आयेगा और कब ये सब सम्भव होगा ये सोच कभी समाप्त न होती थी तभी पुनः बरसात आ जाती है और फिर......................।

अतिक्रमण

अँधा बूढ़ा एक हाथ से अपना पेट दबाये, दूसरे हाथ में कटोरा थामे आने–जाने वालों से बार–बार गुहार लगा रहा था। थोड़ी देर के बाद एक देहाती किस्म का आदमी उधर से होकर गुजरा और उसने जेब से पचास पैसे का एक सिक्का निकाल कर बूढ़े की ओर उछाल दिया तथा खुद आगे बढ़ गया। शायद उसे ट्रेन पकड़ने की जल्दी थी। सिक्का कटोरे में न पड़कर नीचे जमीन पर जा गिरा था और बूढ़ा अपनी सूनी आँखों में चमक लिये हुये दोनों हाथों से टटोलने लगा था। अचानक एक युवक दूसरी ओर से आया और बाज–सा झपट्टा मारकर उसने सिक्का अपनी जेब में डाला, फिर हिहियाता हुआ आगे बढ़ गया। अँधा अभी भी ताबड़तोड़ दोनों हाथों से सिक्के को टटोलने में व्यस्त था।

उच्च शिक्षा और सूचना तकनीक

डॉ. हृदयकान्त श्रीवास्तव
पुस्तकालय प्रभारी

सूचना और तथ्य ज्ञान वृद्धि के साधन हैं। पिछले द क में इलेक्ट्रानिक डाटा प्रोसेसिंग के क्षेत्र के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी की अहम् भूमिका रही है। सूचना और तथ्यों का संसाधन मानवीय जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करते हैं। इसमें दे ा की सीमाएं बाधक नहीं होती। सूचना प्रवाह में दूरी की अब कोई महत्ता नहीं रह गई है। दिन–प्रतिदिन सूचना का प्रवाह तीव्रतर होता जा रहा है। डिजिटल तकनीक के विकास के साथ ही, उन दिनों की तुलना में जबकि एनालॉग सिस्टम प्रयोग में था, आज तथ्यों और सूचनाओं की भीघ्र पुनर्प्राप्ति और अल्प संग्रहण स्थान की आव यकता रह गई है। सूचना और उपयोगकर्ता का संबंध चक्रीय न होकर कुंडलित स्वरूप में होता है। इसलिए सूचना ज्ञान को क्रम ाः और अनवरत रूप से बढ़ाती है। ज्ञान तथ्यों या विचारों का व्यवस्थित समुच्चय होता है। आज सूचना अपने विस्फोटक स्वरूप में हमारे सामने है और हालात् यह हैं कि अगर पढ़े लिखे लोग इसके साथ तारतम्यता नहीं स्थापित कर पाते तो अपने आप को अनपढ़ महसूस करते हैं। हमें सूचना की आव यकता निर्णय लेने, सामाजिक–आर्थिक विकास के लिए भविष्योन्मुखी योजना बनाने, भोध कार्य हेतु जैसे अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में होती है।

सूचना व्यापक अर्थ को धारण करने वाली अवधारणा है जिसे कुछेक भाब्दों में समेटना संभव नहीं होता परन्तु फिर भी विद्वानों ने इसे परिभाषित करने की कोि ा ा की है। इन परिभाषाओं में से कुछ निम्नवत् हैं–

ई. हाफमैन के अनुसार–वक्तव्यों अथवा तथ्यों अथवा संख्याओं की सम्पूर्णता को सूचना कहते हैं, जो बौद्धिक तर्कपूर्ण विचारधारा अथवा किसी अन्य मानसिक कार्य पद्धति के अनुसार धारणात्मक ढ़ंग से संबद्ध होती है।

जे. बेकर के अनुसार–किसी विषय से संबंधित तथ्यों को सूचना कहते हैं।

एन. बल्किन के अनुसार– सूचना उसे कहते हैं जिसमें आकार को परिवर्तित करने की क्षमता होती है।

डी. बैल के अनुसार–सूचना वह आंकडे हैं जो व्यक्तियों के मध्य प्रेषित हो सकें और प्रत्येक व्यक्ति उसका उपयोग कर सके।

सूचना की विशेषताएं

उपलब्धता–सूचना का अत्यन्त महत्वपूर्ण गुण है उसकी उपलब्धता, जो कि तत्काल होनी चाहिए। सूचना अगर कठिनाई और देर से उपलब्ध होती है तो उपयोगकर्ता उसका उपयोग पूर्ण क्षमता के साथ नहीं कर पाता है। फलस्वरूप उसका असर उसके द्वारा प्रदत्त परिणामों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

सामयिकता–कोई भी सूचना अगर समय पर उपलब्ध न हो तो बेकार हो जाती है। सूचना का व्यक्ति के पास सबसे कम समय में पहुँचना बहुत महत्व रखता है। अनेक सूचनाएं इस प्रकार की होती हैं कि अगर उनका उपयोग समय से नहीं हो पाया तो वृहद् स्तर पर नुकसान हो सकता है। और इसके दूसरे पहलू पर विचार करें तो हम कह सकते हैं कि सूचना की तत्काल उपलब्धता हमारे विकास का द्योतक है और उसी

विकास की अनिवार्य धुरी भी।

शुद्धता– ुद्धता का अर्थ सूचना के यथारूप से लिया जाता है। अर्थात् किसी समय में प्राप्त कुल सूचना में से सही सूचना का अधिकतम प्रति ात ही उसकी भाुद्धता का परिचायक है। सूचना का भाुद्ध स्वरूप उपयोग में आसान होता है।

पूर्णता–सूचना भले ही समय से प्राप्त हो जाए एवं अपने स्वरूप में भाुद्ध हो परन्तु अपूर्ण हो तो भी उसके परिणाम घातक हो सकते हैं। अपूर्ण सूचना से गलत निर्णय लिया जा सकता है। इसलिए सूचना का पूर्ण होना आव यक है ताकि उपयोगकर्ता द्वारा उसका प्रयोग बिना किसी भ्रम के किया जा सके।

सर्वव्यापकता–सूचना अपने उस रूप में होना चाहिए कि उसे उसी रूप में और तुरन्त ही प्रयोग में लाया जा सके। सूचना अपने स्वरूप में अनेक प्रकार की होती है और अपने प्रत्येक स्वरूप में उसकी व्यापकता भिन्न–भिन्न होती है परन्तु वही सूचना अच्छी और उपयोग के लायक होती है जो सर्वव्यापक हो।

संक्षिप्तता–सूचना को निर्धारित करते समय यह भी ध्यान में रखना आव यक कि वह यथासम्भव संक्षिप्त हो ताकि उसका अध्ययन आसानी से किया जा सके।

सम्बद्धता–सूचना इस रूप में होनी चाहिए कि उसे आसानी से पूर्व में प्राप्त सूचनाओं को आगे के समय में बढ़ाया और घटाया जा सके।

विश्वसनीयता– ुद्धता व पूर्णता के साथ–साथ वि वसनीयता भी सूचना का महत्वपूर्ण गुण है। प्रयोगकर्ता को यह वि वास होना चाहिए कि दी हुई परिस्थितियों में कभी भी प्राप्त सूचना यही रहेगी।[1]

सूचना के प्रकार

सूचना को जे. एच. भोरा ने छः प्रकारों में विभाजित किया है–

1. विचारात्मक सूचना–इस प्रकार की सूचना के अन्तर्गत किसी समस्या के अस्थिर क्षेत्रों से उत्पन्न होने वाले विचार, धारणा, सिद्धान्त, परिकल्पना आदि से संबंधित है।
2. अनुभवसिद्ध सूचना–ऐसी सूचना के अन्तर्गत अनुभव से सिद्ध सूचना जैसे प्रयोग ालाजनित साहित्यिक खोज अथवा अनुसंधान हेतु स्वयं के अनुभवों द्वारा प्राप्त आंकड़े आते हैं।
3. क्रियाविधिक सूचना–ऐसी क्रियाविधि सम्मिलित होती है जिसके द्वारा भाोधकर्ता को और अधिक प्रभावी ढ़ंग से कार्य करने योग्य बनाया जा सके। इस सूचना से आंकड़े प्राप्त किए जाते हैं और परीक्षण भी किया जाता है। यह वास्तव में एक प्रकार की प्रक्रिया विधि है तथा पूर्ण सूचना, वैज्ञानिक मनोवृत्ति द्वारा प्राप्त की जाती है। अज्ञान से ज्ञान की तरफ ले जाने वाली सूचना है।
4. प्रेरक सूचना–यह सूचना वातावरण द्वारा प्राप्त सूचना है। मानव सदैव से ही प्रयत्न ील रहा है। इसके लिए उसे दो तत्वों से परिचित होना अनिवार्य है–एक स्वयं से दूसरे वातावरण से। वातावरण से मिलने वाली सूचना अधिक प्रभावकारी होती है यही प्रेरक सूचना है।
5. नैतिक सूचना–विभिन्न क्षेत्रों के अन्तर्गत उचित कार्यान्वयन हेतु जो उद्दे य और उत्तरदायित्व निर्धारित होते हैं उनसे संबंधित सूचना को नीति संबंधित सूचना कहा जाता है। इसमें गतिविधियां परिभाषित होती हैं।
6. निदे ात्मक सूचना–समाज के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की गतिविधियों को प्रभावपूर्ण ढ़ंग से पूरा

करने के लिए निदे ात्मक सूचना की आव यकता होती है। इसके द्वारा सहयोग एवं समन्वय प्राप्त कर समस्त सामूहिक गतिविधियों व क्रियाकलापों को प्रभावी ढ़ंग से पूरा किया जा सकता है।

सूचना प्रौद्योगिकी–

सूचना प्रौद्योगिकी, सूचना विज्ञान और प्रौद्योगिकी का एक सम्मिलित उद्यम है। सूचना प्रौद्योगिकी का तात्पर्य सूचना से संबंधित अनेक क्रियाओं में विभिन्न प्रकार की आधुनिक प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से होता है अर्थात् जो प्रौद्योगिकी सूचना के सृजन, संग्रहण एकत्रीकरण, व्यवस्थीकरण, पुनर्प्राप्ति और सम्प्रेषण की गतिविधियों में सहायता प्रदान करती है, सूचना प्रौद्योगिकी कहलाती है। आधुनिक युग में सूचना प्रौद्योगिकी मानवजीवन के प्रत्येक पहलू को प्रभावित कर रही है। इस प्रौद्योगिकी के द्वारा ही द्रुतगति से सूचना प्राप्ति, सूचना प्रक्रियाकरण, संग्रहण सम्प्रेषण एवं पुनर्प्राप्ति सम्भव है। सूचना प्रौद्योगिकी में अनेक आधुनिक प्रौद्योगिकी जैसे–इलेक्ट्रानिक प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, दूरसंचार प्रौद्योगिकी आदि मुख्यरूप सम्मिलित हैं। इस प्रकार संक्षेप में हम कह सकते हैं कि कम्प्यूटर तथा दूरसंचार माध्यमों के द्वारा सूचना स्रोतों का संग्रह, भंडारण, प्रक्रियाकरण और संचारण आदि सभी प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग किए जाने वाले पद को सूचना प्रौद्योगिकी कहा जाता है। सूचना प्रौद्योगिकी को केंट वीहेन और डायना होमेस इस प्रकार परिभाषित करते हैं–''सूचना प्रौद्योगिकी वह पद है, जो सूचना संग्रहण एवं प्राप्तिकरण से संबंधित तकनीक को प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। इसके अन्तर्गत कई आधुनिक तकनीकें जैसे–कम्प्यूटर, दूरसंचार एवं माइक्रो इलेक्ट्रानिक्स आदि सम्मिलित हैं।''[2]

उच्च शिक्षा और सूचना तकनीक

सूचना तकनीक एक बहुआयामी प्रक्रिया है। समाज में मानवीय अस्तित्व के लिए सूचना तकनीक का अपना अलग महत्व है। इसमें उच्च ि ाक्षा के लिए अत्यधिक ज्ञान संचित होता है और आज के लगातार विकसित हो रहे समाज में इस प्रौद्यौगिकी की अहम् भूमिका हो गई है। पठन–पाठन के नए तरीके विकसित हो रहे हैं। उच्च ि ाक्षा में दूरस्थ ि ाक्षा, मुक्त वि वविद्यालयी ि ाक्षा के स्वरूप को धारण करने और उसके विकसित होने में भी नवीन सूचना तकनीक ने आमूलचूल परिवर्तन किया है। उच्च ि ाक्षा और सूचना तकनीक के समन्वय को हम निम्न भीर्षकों के अन्तर्गत समझ सकते हैं–

1. **<u>शिक्षण</u>** –उच्च ि ाक्षा में ि ाक्षण के अन्तर्गत मुख्यतया सूचना देने पर ध्यान दिया जाता है जो कि उच्च ि ाक्षा की मूल भावना का हिस्सा नहीं है। उच्च ि ाक्षा के मुख्य उद्दे य हैं–

- तर्क भाक्ति और विचारणा भाक्ति में विकास।
- अध्ययन की आदत, मूल्य निर्धारण और आत्म विचार की भाक्ति का विकास।
- निर्णयन और दृढ़ता की योग्यता का विकास।

उच्च ि ाक्षा के सभी उद्दे यों जैसे वर्तमान आधारभूत संरचना के साथ ि ाक्षकों की उपलब्धता, ि ाक्षकों का प्र ि ाक्षण, ि ाक्षण कक्ष का उचित आकार आदि को प्राप्त करना अत्यधिक कठिन है। ये उद्दे य चूंकि बहुआयामी होते हैं इसलिए इनकी प्राप्ति नवीन परिदृ य में अनेक तरीकों पर निर्भर करती है। वर्तमान समय में सूचना तकनीक इन बहुआयामी उद्दे यों को प्राप्त करने में सहायक हो सकती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि एक अकेला ि ाक्षक अपने विषय पर पूर्ण और अद्यतन जानकारी दे पाने में

सक्षम नहीं होता है। सूचना तकनीक इस अभाव की पूर्ति में सहायक हो सकता है। यह सूचना के अनेक स्रोतों को उपलब्ध कराता है। सूचना तकनीक द्वारा सूचना की सही जानकारी उपलब्ध होती है और वह भी, जहां तक संभव हो, व्यापक रूप में, विभिन्न प्रारूपों में, अनेक उदाहरणों के साथ।

अधिगमकर्ता जो कि परम्परागत अध्ययन प्रक्रिया और अध्यापन के तरीकों को नकार चुके हैं, सूचना तकनीक उन्हें अनेक लचीले और वैकल्पिक साधन उपलब्ध कराता है। विचार और तर्कभाक्ति के विकास के लिए छात्र और अध्यापकों के प्रयोग के लिए इंटरनेट पर अनेक वेबसाइटस् बिना किसी भाुल्क के उपलब्ध हैं। सूचना तकनीक छात्रों को SAT, NET, GRE, TOFEL आदि प्रतिष्ठित परीक्षाओं की तैयारी में सहायक हो सकती है।

2. <u>संसाधनों की भागीदारी</u>–ि ाक्षा के क्षेत्र में भारत ही नहीं सम्पूर्ण वि व में निवे ा में सापेक्षिक कमी हो रही है। निचले स्तर की ि ाक्षा के विकास के लिए तो फिर भी बहुत सारे आर्थिक साधन मौजूद हैं। इसकी तुलना में उच्च ि ाक्षा के स्तर पर आर्थिक संसाधनों की कमी है। वित्तीय संसाधनों के विकास और प्रबंधन के लिए योजना निर्माता, प्र ाासक, प्रबंधक और नियोजनकर्ता वैकल्पिक रास्ते खोजते हैं। एक रास्ता है केन्द्रीयकृत ईकाई की स्थापना। इसके द्वारा वि वविद्यालय या महाविद्यालय के विभिन्न संकायों के विद्यार्थी, अध्यापकों और भाोधार्थियों द्वारा इसका सम्मिलित उपयोग किया जाए। इस प्रकार की अवधारणा हमारे दे ा में पूर्व से ही अस्तित्ववान है। उदाहरण के लिए वि वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा केन्द्रीयकृत ईकाई का निर्माण किया गया है, जिसे इंटर यूनिवर्सिटी कंसोर्टियम (IUC) के नाम से जाना जाता है और यह देवी अहिल्या वि वविद्यालय, इंदौर में स्थित है। सूचना तकनीक के विनिमय में उच्चीकरण के लिए निसात (NISSAT) की स्थापना हमारे दे ा में की गई है। निसात द्वारा संसाधनों की भागीदारी के माध्यम से महानगरीय पुस्तकालय नेटवर्क के विकास और बेहतर उपयोग हेतु कदम उठाए हैं। सूचना के बढ़ते दबाव के बाद भी सूचना के केन्द्रीयकृत प्रबंधन एवं प्रेरक कारकों के बढ़ते हुए स्वरूप के अन्तर्गत सूचना को विस्तारित किया जा सकता है।

कलकत्ता पुस्तकालय नेटवर्क (CALIBNET) और नेटवर्किंग साफ्टवेयर द्वारा नवीन विकसित सूचना तकनीक को दे ा के विभिन्न पुस्तकालयों और सूचना व्यवसायियों के समक्ष प्रद र्ित किया गया हैं। इसी परम्परा पर दिल्ली पुस्तकालय नेटवर्क (DELNET) ने लक्ष्य किया कि दिल्ली के 40 पुस्तकालयों को आपस में जोड़ा जाए। वर्तमान में डेलनेट के 500 से अधिक पुस्तकालय सदस्य हैं, जिनमें से 132 पुस्तकालय दिल्ली में, 360 सदस्य पुस्तकालय दे ा के अन्य प्रान्तों एवं संघ ाासित केन्द्रों में स्थित हैं एवं 8 विदे ाी पुस्तकालय इसके सदस्य हैं।[3]

3. <u>अध्यापकों में व्यवसायिकता का विकास</u>–यह कहना कहां तक सही होगा कि अगर किसी अध्यापक को आज प्रि ाक्षित कर दिया गया है तो वह आगामी सम्पूर्ण भविष्य के लिए प्रि ाक्षित हो गया है। क्योंकि नई जानकारियों के प्रका ा में आने से सूचना और ज्ञान के क्षेत्र में स्थिति विस्फोटक होती जा रही है। पूर्ण दक्षता के साथ काम करने के लिए आव यक है कि संबंधित क्षेत्रों में हो रहे नवीन विकासों से अध्यापक को लगातार जुड़े रहना आव यक है। ि ाक्षा के प्रति अध्यापकों में व्यवसायिक सोच को विकसित करना आज की महती आव यकता हो गई है। जहां तक संभव हो कॉलेजों द्वारा अध्यापको को इंटरनेट संयोजन उपलब्ध कराना चाहिए ताकि वे नवीन विचारधाराओं से संपर्कित रह सकें और अपने आप को अद्यतन कर सकें। इस प्रकार की सुविधा उपलब्ध होने से वे अपने विषयगत ज्ञान और अन्य संबंधित

ज्ञान से परिपूर्ण हो सकते हैं। वे चाहें तो अपने दे ा या दे ा से बाहर के वि वविद्यालयों से सम्पर्क स्थापित कर अपने आप को नवीनतम जानकारियों से युक्त कर सकते हैं।

4. <u>बढ़ती हुई सुगमता</u>–वर्तमान में वि वग्राम की अवधारणा मजबूत होती जा रही है क्योंकि कोई भी किसी से भी बात कर सकता है, कोई किसी भी पुस्तकालय में प्रवे ा कर सकता है, किसी भी सूचना को जब चाहे तब खोज सकता है भले ही वह अब तक अप्राप्य रही हो। वि व के किसी भी हिस्से या कोने में अब खोज संभव है। यह खोज संभव हुई है इंटरनेट, वायरलेस, ईमेल, वीडियो मेल, सायबर कैफे आदि के अविष्कार से। नई सूचना तकनीक की ही देन है कि आज वि व के अनेक दे ों में आभासी वि वविद्यालय (वर्चुअल युनिवर्सिटी) भी अस्तित्ववान हैं। विद्यार्थी आभासी कक्षाओं में अध्ययन कर रहे हैं। बिना दूसरे दे ों को गमन किए ही विद्यार्थी अपने दे ा और अपने ही आवास पर रहते हुए अपना अध्ययन जारी रखे हुए हैं। दे ा के पहले वर्चुअल वि वविद्यालय का खाका लगभग तैयार कर लिया गया है। आई. आई.टी., कानपुर के नेतृत्व में बनने वाले इस वि वविद्यालय में छात्र, प्रोफेसर और अन्य लोग इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाईन पठन व पाठन का कार्य कर सकते हैं। वर्चुअल वि वविद्यालय में कम्प्यूटर साफ्टवेयर की एक खास तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। इसमें वीडियो व आडियो सामग्रियों से परिपूर्ण वर्चुअल लैब को एकीकृत कमान के तहत जोड़ा जाएगा।

5. <u>शोध और विकास</u>– ाोधार्थियों और उद्योग जगत के लिए सूचना प्राण ाक्ति होती है। ाोधार्थी अद्यतन, स्पष्ट और भीध्र सूचना चाहता है। ाोधार्थी वि वविद्यालयों और भोध संस्थान जैसे बार्क, इसरो, डी आर डी ओ, एन पी एल, आई ए आर आई, आई वी आर टी, भारतीय विज्ञान संस्थान आदि में अपने सभी प्रकार के भोध कार्य करते हैं चाहे वे अवधारणात्मक हो या व्यवहारिक। वि वविद्यालयों को भोध कार्य जारी रखने के लिए बड़ी ही कठिनाई से धन प्राप्त होता है। अधिकां ा वि वविद्यालय उद्योग जगत से भोधादि कार्य के स्तर पर जुड़े नहीं होते और इस दि ाा में अभी तक सरकारी या गैरसरकारी स्तर पर कोई सकारात्मक कदम भी नहीं उठाया गया है। संभवतः यही कारण है कि उद्योग जगत वि वविद्यालयों को भोध कार्य के लिए धन उपलब्ध नहीं कराते। ऐसे परिदृ य में लम्बे समय तक भोध कार्यों को जारी रखना कठिन होता जा रहा है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा भोध कार्यों को आगे बढ़ाना संभव होता जा रहा है क्योंकि यह सर्वसुलभ और सस्ता उपाय है, साथ ही हर समय, हर जगह उपलब्ध भी। आज भारतीय भोधार्थी किसी विदे ाी व्यक्ति या संस्थान के साथ सम्पर्कित होकर आसानी से सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा अपने भोध कार्य को आगे बढ़ा सकता है।

सन्दर्भः–

1. सूचना तकनीक, डी ओ इ ए सी सी सोसाएटी, इलेक्ट्रानिकी विभाग, नई दिल्ली, बी पी बी पब्लिके ान, नई दिल्ली, पृ. 2
2. पुस्तकालय व सूचना विज्ञान–2, डॉ. वी. के. भार्मा, वाई के पब्लि ार्स, आगरा पृ. 3
3. पुस्तकालय व सूचना विज्ञान–2, डॉ. वी. के. भार्मा, वाई के पब्लि ार्स, आगरा पृ. 71
4. हिन्दुस्तान, दैनिक समाचार पत्र, 18 अप्रैल 2011, कानपुर संस्करण, पृ. 09

कुंवर नारायण के काव्य में सामाजिक एवं नैतिक मूल्य

रीना
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)

नई कविता के सशक्त हस्ताक्षर कुँवर नारायण का जन्म 19 सितम्बर 1927 को हुआ। वे अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' (1959) के प्रमुख कवियों में रहे हैं। हिन्दी में उनकी कविता अन्य कवियों से भिन्न एवं विशिष्ट प्रतीत होती है। वे जीवन को उसकी समग्रता और व्यापकता में पूरी गहराई से देखते हैं। वे सहिष्णुता, राष्ट्रीयता, मुक्तता एवं उदारता के पक्षधर कवि हैं। इसी के द्वारा स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। अतः उनके लिये साहित्य जीवन पर विचार है।

कुँवर नारायण नैतिक चेतना एवं नैतिक जीवन के मूल्यों के कवि हैं। उनकी कविता भारतीय सद्भाव एवं उदारपक्ष का विकास है तथा घृणा, तिरस्कार और अवमानना से कोसों दूर है। कुंवर नारायण की कवितायें अपने आप में जीवन मूल्यों का युग है, जो पाठकों एवं आने वाले समय में समाज में लिये किसी उत्सव से कम नहीं है। इतिहास और मिथक के अध्यात्म चिंतन के माध्यम से भविष्य और वर्तमान की कल्पना करना उनकी कविता की विशेषता रही है–

"जिस जमीन के लिए
भाई–भाई लड़े हैं
हम आज भी उसी
जमीन पर खड़े हैं
वे सिद्ध कर देंगे कि महाभारत
कल की नहीं आज की बात है
हम एक नहीं दो में बंटी
कौरवों और पाण्डवों की जात है।"[1]

कुँवर नारायण जी ने अपनी सम्पूर्ण काव्य यात्रा में मानवीय सम्बन्धों को नये ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनकी कविता समाज को नई दिशा देने के लिये एक विरासत के रूप में सामने आई है। उनकी कविता समाज को नया संदेश देती हुई सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों की ओर अभिप्रेरित करती है। भारतीय संस्कृति एक सामाजिक संस्कृति है। इसमें त्याग, प्रेम और विवेक ही जीवन को गति देते हैं। कुंवर नारायण की कविता छल, कपट और अविवेक के विरुद्ध संघर्षरत है–

हे राम
जीवन एक कटु यथार्थ है
और तुम एक महाकाव्य

तुम्हारे बस की नहीं
उसके अविवेक पर विजय
जिनके दस बीस नहीं
अब लाखों सर, लाखों हाथ हैं
और विभीषण भी अब,
न जाने किसके साथ है।"[2]

कुँवर नारायण जी ने कभी किसी मत, वाद या विचारधारा को अपने लेखन कार्य का आधार नहीं बनाया है और न ही किसी एक पक्ष की बात कही है। परन्तु उनकी कविता का बहुत बड़ा हिस्सा सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना को प्रतिबिम्बित करता है। समाज के जिस भी कोने में शोषण, अन्याय, उत्पीड़न आदि पर उनकी दृष्टि गई है, उनकी कविता चुप नहीं रही है। साहित्य के सम्बन्ध में उनका यह विचार कितना सटीक प्रतीत होता है–'बड़ा साहित्य न तो राजनीति का गुलाम रहा है न ही उसका दुश्मन। साहित्य चिंता के मूल में रहते हैं वे जीवन मूल्य, जो मनुष्य के हित में हों, जो उनकी रक्षा कर सकें।[3]

राजनीतिक खोखलेपन को उनकी कविता परत–दर–परत उधेड़ती है। उनकी कविता राजनीतिक स्वास्थ्य को बड़े ही रोचक ढंग से नंगा करने में सक्षम प्रतीत होती है। उनकी कविता राजनीतिक खोखलेपन को कितनी आसानी से व्यक्त करने में सक्षम है–

"इससे बड़ा क्या हो सकता है
हमारा दुर्भाग्य।
एक विवादित स्थल में सिमट कर रह गया तुम्हारा
साम्राज्य
अयोध्या इस समय तुम्हारी अयोध्या नहीं
योद्धाओं की लंका है
'मानस तुम्हारा 'चरित' नहीं
चुनाव का डंगा है।"[4]

उनकी कविता में सांस्कृतिक चेतना भी निहित है, उनकी कविता समाज में व्याप्त अन्याय, भ्रष्टाचार, अत्याचार आदि बुराईयों की भी बात करती है। उनकी यह कविता दिखाती है कि इतने बड़े अन्यायी समाज में एक ईमानदार व्यक्ति कैसे अकेले लड़ रहा है–

"खबर है कि
भ्रष्टाचार के विरुद्ध
बिल्कुल अकेला लड़ रहा है एक युद्ध
कुराहा गाँव का खब्ती सम्मेदीन"[5]

उनकी कविता साम्प्रदायिकता, क्रूरता और मनुष्य के प्रति घृणा के विरुद्ध एक नई संरचना एवं भावबोध को जन्म देती है। 'आजकल कबीरदास' कविता में जाति–पाति के पीछे छिपी झूठी मान्यताओं को ललकारा है–

"जिन नामों को लेकर
झूठ पड़ जाते हैं वे देखते–देखते
लाशों में बदल जाते फूलों के ढेर
करुणा और सुन्दरता का अनाम भाव
स्वाहा हो जाता है
नामों की जात–पांत के धधकते पड़ोस में।"[6]

कुँवर नारायण की कविता उस नैतिक विवेक पर बल देती है जहाँ मनुष्य अपनी आत्मा की अदालत में खड़े होकर स्वयं न्यायाधीश की भूमिका का निर्वाह कर सके। उनके काव्य में सामाजिक संघर्ष वैयक्तिक पीड़ा में रूपान्तरित होता है। शायद इसलिये वे कहते हैं–

"अबकी बार लौटा तो
हताहत नहीं
सबके हिताहित को सोचता
पूर्णतर लौटूँगा।"[7]

अर्थात् वह अभी तक वैयक्तिक संघर्ष को अपने अन्तःकरण पर झेलते हुए हताहत हुए है और उनका संकल्प है कि अगली बार सामाजिक संघर्ष के साथ सबके हिताहित को सोचते हुए पूर्णतर लौटेंगे। यहीं पर उनकी टीस और कसक परिलक्षित होती है। अतः कुँवर नारायण की कविता अपने समय से संघर्ष करती हुई एक बेहतर समाज की कल्पना करती है। अपने समय के शत्रुओं को पहचान कर उनसे सावधान रहने की अपील करती है।

सन्दर्भ सूची

1. इन दिनों–कुँवर नारायण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ सं0 122–123 ।
2. चुनी हुई कविताएँ– कुँवर नारायण, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ सं0 22–23।
3. अन्वय : साहित्य के परिसर में–कुँवर नारायण, सं.–ओम निश्चल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ सं0 114।
4. चुनी हुई कविताएँ–कुँवर नारायण, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ सं0 23।
5. वही, पृष्ठ सं0 14।
6. इन दिनों–कुँवर नारायण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ सं0 17।
7. चुनी हुई कविताएँ–कुँवर नारायण, किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ सं0 30।

भारतीय संविधान एवं महिलाओं का वैधानिक प्रतिनिधित्व

– *डॉ0 नमो नारायण*
असि0प्रो0, राजनीति विज्ञान विभाग

भारतीय संविधान द्वारा महिलाओं को पुरुषों के समान राजनैतिक अधिकार, समानताऐं और स्वतंत्रताऐं प्रदान की गयी हैं, भारत के प्रत्येक स्त्री एवं पुरुष को सक्रिय राजनीति में प्रवेश करने तथा देश की विधान निर्मात्री सभाओं का सदस्य बनकर नीति निर्माता के रूप में अपनी सेवाओं से देश को लाभान्वित करने की स्वतंत्रता है। किन्तु स्वतंत्रता के बाद के निर्वाचनों के इतिहास का यदि अवलोकन किया जाए तो हम देखते हैं कि इस स्वतंत्रता का प्रयोग जितना पुरुषों ने किया है, उतना महिलाओं ने नहीं किया। यदि लोकसभा या राज्य सभा में महिलाओं की स्थिति को देखा जाए, तो निराशा होती है। भारत की कुल जनसंख्या का लगभग आधा भाग महिलाओं का है। भारत में महिलाओं की जनसंख्या 49.65 करोड़ है।[1] भारत में लिंगानुपात 1000 : 933 है तथा महिलाओं की साक्षरता दर 53.67 प्रतिशत है। भारत में लगभग 24.5 करोड़ महिलाऐं लिखने में असमर्थ हैं।

भारत के विभिन्न स्वाधीनता आन्दोलनों में देश के महान नेताओं के साथ महिलाओं की भी सक्रिय भूमिका रही थी। जब बड़े–बड़े नेताओं को ब्रिटिश सरकार जेलों में भर देती थी, तो बाहर का कार्य महिलाओं के द्वारा ही सम्पादित होता था। यदि हम प्राचीन भारतीय इतिहास पर गौर करें तो हमें कई ऐसी महान महिलाओं के सम्बन्ध में प्रमाण मिलते हैं, जिन्होंने समय आने पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से अपने राज्य के कार्यों को सकुशल सम्पादित किया। उनके इस कार्य में कहीं भी कोई भी त्रुटि नहीं पायी गयी, बल्कि वे भी महान शासकों की सूची में शामिल हुयी। रजिया सुल्ताना दिल्ली सल्तनत की शासिका थी। बीजापुर की रानी अहिल्याबाई हो या फिर झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, सभी ने अपनी कूटनीति, शासकीय समझदारी के साथ अपने राजकीय कार्यों का पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ निर्वाह किया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् भी भारतीय महिलाओं ने अपने देश के पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वाधीनता संग्राम में भागीदारी की। इसमें सरोजनी नायडू, कमला नेहरू, मैडम भीखाजी कामा, स्वरूपरानी नेहरू, अरुणा आसिफ अली, कस्तूरबा गाँधी, सुश्री ऐनी बेसेन्ट आदि अनेक नाम लिये जा सकते हैं। किन्तु आजादी प्राप्त कर लेने के पश्चात् महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता में शिथिलता आती गयी। विशेषकर विधायी संस्थाओं में गिनी चुनी महिलाओं के ही नाम रह गये हैं। आजादी के बाद से लोकसभा में महिलाओं की भागीदारी दस प्रतिशत से अधिक नहीं रही। 1952 के लोकसभा चुनाव में सदन में महिलाओं का प्रतिशत 4.4 था, जबकि कुल स्थान 499 थे। 1962 के संसदीय चुनावों में यह प्रतिशत 6.7 फीसदी रहा। वर्ष 2008 के लोकसभा चुनाव में कुल सीटों का सिर्फ 9.6 प्रतिशत प्रतिनिधित्व महिलाओं ने किया।[2]

राज्यसभा में भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व 7 से 15.5 प्रतिशत के मध्य ही दिखाई पड़ता है। वर्ष 1950 से 1960 के दौरान राज्यसभा में जाने वाली मारगेट अल्वा, रूम्मिणी अरुणडेल, लीला देवी, सावित्री देवी निगम, डॉ0 सीता परमानन्द और उमा नेहरू स्वतंत्रता आन्दोलन की पृष्ठभूमि वाली ही थी। स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक मात्र 8 महिलायें कैबिनेट मंत्री, 52 महिलायें राज्यमंत्री, 20 उपमंत्री और एक प्रधानमंत्री (श्रीमती इन्दिरा गाँधी) बन चुकी हैं।[3] इसके अतिरिक्त राज्यों के विधान मण्डल में भी महिलाओं की स्थिति में बहुत ज्यादा अन्तर नहीं है। राज्यों के मुख्यमंत्री के रूप में श्रीमती सुचेता कृपलानी (उत्तर प्रदेश), जे. जयललिता (तमिलनाडु), सुश्री ममता बनर्जी (पं बंगाल) आनंदीबेन पटेल (गुजरात) बंसुधरा राजे

सिंधिया (राजस्थान) शशिकला काकोडकर (गोवा),मायावती (उत्तर प्रदेश), उमा भारती (मध्य प्रदेश), शीला दीक्षित (दिल्ली) ने अपनी प्रशासनिक दक्षता एवं क्षमता का सराहनीय परिचय दिया। निर्णय निर्मात्री संस्थाओं में महिलाओं के न्यून प्रतिनिधित्व को देखते हुए कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के बाद भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागी संस्कृति में गिरावट आयी है। जबकि आन्दोलन काल में महिलाओं का राजनीतिक परिज्ञान, सहभागिता और मूल्यांकन का स्तर आज की अपेक्षा उच्च था। वर्तमान समय में प्राप्त आँकड़ों के परिप्रेक्ष्य में यह तथ्य उभरता है कि पूरी आबादी के आधे हिस्से का संख्यात्मक दृष्टि से प्रतिनिधित्व उनकी जनसंख्या से बहुत कम है। लोकतंत्र की सफलता और वैधता के लिए आवश्यक है कि नीतियों के निर्धारण और क्रियान्वयन दोनों में स्त्री और पुरुषों का सामूहिक योगदान हो, तभी दोनों के हितों का संरक्षण और संवर्द्धन संभव है। यदि स्त्री अथवा पुरुषों में से किसी की भी भागीदारी में कमी आती है, तो नागरिकों का वह हिस्सा अपने राजनीतिक विश्वासों, दृष्टिकोणों, प्राथमिकताओं, विचारों एवं इच्छाओं की पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं कर पाता है और इस प्रकार का प्रजातंत्र आधा–अधूरा ही कहा जा सकता है। महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को बढ़ाने के लिए एवं उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए महिला आरक्षण विधेयक यू0पी0ए0 सरकार ने हाल ही में पारित कराया। संसद व विधान सभाओं में महिलाओं को तैतीस फीसदी आरक्षण की माँग काफी समय से उठ रही थी। इसका मुख्य कारण पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को बराबरी का दर्जा मिल सके। महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए यह आवश्यक है कि उनकी निर्णय निर्मात्री संस्थाओं में भागीदारी अधिक से अधिक हो।

महिलाओं का आरक्षण का मुद्दा नया नहीं है। अंग्रेजों के शासनकाल में मिंटो राजनीतिक सुधार के अन्तर्गत मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, एंग्लो इण्डियन महिलाओं को अलग से राजनीतिक आरक्षण देने का सुझाव भी रखा गया। परन्तु कांग्रेस की ओर से विरोध किये जाने पर तत्काल खारिज कर दिया गया। महिला आरक्षण विधेयक को सर्वप्रथम संयुक्त मोर्चा सरकार ने 12 सितम्बर 1996 को पेश किया था। उसके बाद एनडीए सरकार ने 1998 एवं 23 दिसम्बर 1999 को लोकसभा में पेश किया, परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण रूप से विधेयक पारित न हो सका।

दृष्टव्य है कि विदेशों की तुलना में भारत में महिलाओं को राजनीतिक अधिकार पहले मिले। फिर भी वैश्विक स्तर पर राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को देखते हुए भारत में महिलाओं की सहभागिता अपेक्षा के अनुरूप नहीं है। वैधानिक संस्थाओं में महिला प्रतिनिधित्व के लिए सबसे सशक्त मसविदा महिला आरक्षण विधेयक है, जिस पर पिछले 14 सालों से जोर आजमाइश चल रही है लेकिन कमजोर इच्छा शक्ति के चलते विधेयक पारित नहीं हो पा रहा है।

विधेयक में प्रावधान : संविधान (108वें संशोधन) अधिनियम–2008 में लोकसभा एवं विधानसभाओं में 33 फीसदी आरक्षण का प्रावधान है।

महिला प्रतिनिधित्व के मार्ग में समस्यायें –

सत्ता छिनने का भय : महिला आरक्षण विधेयक के पारित होने में लगा समय इस बात को स्वतः स्पष्ट करता है कि सभी दलों के नेताओं में महिला प्रतिनिधित्व बढ़ने का भय समान रूप से विद्यमान है। महिला आरक्षण विधेयक के पारित होने के फलस्वरूप लोकसभा की 544 सीटों में से 180 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होगी। अभी यह तय नहीं है कि कौन सी सीट रिजर्व रहेगी, लेकिन जो भी सीट रिजर्व होगी, वह पुरुष के हिस्से की होगी।

'पुरुष प्रधान' समाज की मानसिकता बदलना आसान नहीं है : भारतीय समाज में अभी तक महिलाओं को बराबरी का दर्जा देने में हिचक होती है, यह बात अलग है कि महिलायें आज किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं है। आज महिलायें गृहिणी से लेकर युद्धक विमान को चलाने वाली बन गयी हैं। वे

एवरेस्ट से लेकर चाँद तक पहुँच चुकी हैं। लेकिन फिर भी खासतौर पर भारत जैसे विकासशील देशों में समाज की पुरुषप्रधान सोच के कारण महिलाओं को अपने अधिकारों और स्वतंत्रता प्राप्त करने में समय लगेगा।

राजनीतिक दलों में महिला प्रतिनिधित्व की कमी : आज हमारी राजनीति के अन्तर्गत आने वाले दलों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व उंगली पर गिना जा सकता है। चुनाव आयोग ने सभी दलों से सिफारिश की थी कि वह अपनी पार्टी में भी 33 प्रतिशत आरक्षण लागू करें, ताकि अधिक से अधिक महिलाओं को राजनीति की मुख्यधारा से जुड़ने का मौका मिले।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि विधान मण्डलों में महिला प्रतिनिधित्व की राह आसान नहीं है। अभी तक जितनी भी महिलायें वैधानिक संस्थाओं में है, अधिकतर की पारिवारिक पृष्ठभूमि राजनीति की रही है। अतः महिलाओं की समुचित उपस्थिति के लिए उनके लिए विशेष व्यवस्था करना अत्यन्त अनिवार्य है।

यदि महिलाओं को आरक्षण प्राप्त हो जायेगा, तो सदनों, विधानमण्डलों में महिला सदस्यों की संख्या में वृद्धि हो जायेगी। महिलायें सभी निर्णयों में भागीदारी कर सकेगी। वह समाज में अपनी अपेक्षानुरूप परिवर्तन ला सकेंगी। महिलाओं का कर्त्तव्य अभी तक अपने परिवार की देख–रेख तक ही सीमित रहा है। यदि उसको निर्णय लेने में भागीदारी प्रदान की जाती है तो उनकी इच्छाशक्ति में विस्तार होगा। महिलाओं की सहभागिता विधानमण्डलों में बढ़ने से सदन के अन्दर शालीनता तथा मर्यादा आएगी। वर्तमान में हर क्षेत्र में महिलायें अपनी सफलता के झण्डे गाड़ रही हैं, यदि उन्हें राजनीति में भी उचित अवसर प्राप्त होते हैं, तो वह सच्चे अर्थों में समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर सकेंगी। महिलाओं की वैधानिक प्रतिनिधित्व को हम निम्नांकित शीर्षकों से समझ सकते हैं–

1. लोकसभा या राज्यसभा और राज्यों के विधानमण्डलों में महिलाओं की संख्या में वृद्धि (लगभग 33 फीसदी)
2. संसद व विधानमण्डल में अनुशासित व मर्यादा पूर्ण कार्यवाही होगी।
3. महिलायें निर्णयों में भागीदारी करेंगी।
4. महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी बढ़ेगी।
5. निर्णय लेने की क्षमता का विकास होगा।
6. समाज का संतुलित विकास होगा।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि आज की महिला सुशिक्षित एवं निर्णय लेने की क्षमता से सम्पन्न है। यदि उन्हें दायित्व दिये जाएं, तो वे उनका पूर्ण निर्वहन करने में सक्षम हैं। वर्तमान समय में हमारे समाज की ऐसी अनेक महिला पदाधिकारियों का मार्गदर्शन उपलब्ध है, जो अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ हैं। भारतीय संदर्भ में अवलोकन किया किया जाए, तो लोकसभा में 10 प्रतिशत, विधान सभाओं में 5.6 फीसदी, न्यायपालिका में 3.33 प्रतिशत, भारतीय विदेश सेवा में 13.5 प्रतिशत भागीदारी महिलाओं की है। यदि भागीदारी का यह प्रतिशत बढ़ता है तो वास्तव में यह महिला सशक्तीकरण की दिशा में एक और कदम होगा।

संदर्भ–सूची

1. आशा कौशिक : नारी सशक्तीकरण, विमर्श एवं यथार्थ, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर
2. ई0सी0आई0, गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया
3. www. sarkarirel.com लोकसभा सचिवालय

प्रयोगवाद : प्रयोग की प्रयोगशाला

आँचल कुमारी
एम.ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)

आधुनिक हिन्दी कविता के इतिहास में प्रयोगवाद कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से व्यापक बदलाव का प्रतीक है। इसने पूर्ववर्ती काव्यधारा से अपने को रूढ़ीमुक्त करने का प्रयास किया तथा काव्य के सन्दर्भ में प्रायोगिक संभावनाओं को पूर्ण विस्तार प्रदान करने का आग्रह किया। प्रयोगशील काव्यधारा के नवीन संस्कार नये यथार्थ से ग्रहण किये गये हैं और यह नया यथार्थ नया सत्य है जिसमें परंपराओं के प्रति विद्रोह की भावना है। कविता में अनुभूति एवं रागात्मक के स्थान पर बौद्धिकता की प्रधानता है। प्रयोगवाद का आरम्भ 'तारसप्तक' के प्रकाशन (1943) से माना जाता है। इसमें मुक्तिबोध, नेमिचंद जैन, भारत भूषण अग्रवाल, अज्ञेय, रामविलास शर्मा, प्रभाकर माचवे, गिरिजा कुमार माथुर की कवितायें संग्रहीत है।

1951 में 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन हुआ जिसके कवि है– भवानी प्रसाद मिश्रा, शंकुत माथुर, हरिनारायण, घनश्याम व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय एवं धर्मवीर भारती। यह कोई योजनाबद्ध आंदोलन नहीं था। नलनि विलोचन शर्मा और केसरी कुमार ने प्रयोगवाद का घोषणा पत्र प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कहा है– प्रयोगवाद भाव और व्यंजना का स्थापत्य है। प्रयोगवाद सर्वत्र स्वतंत्र है, पूर्ववर्ती परिपाटी को निष्प्राण मानना, अपना अनुकरण वर्जित समझना मुक्त काव्य नहीं स्वछंद काव्य का अभीष्ट। प्रयोगशील प्रयोग को साधन और प्रयोगवाद को साध्य मानना, प्रत्येक प्रयुक्त शब्द व छंद का निर्माता होना।

"प्रयोग जिस अन्वेषण की उपज है वह सामाजिक यथार्थ, नई सामाजिक चेतना, नये मानव संबंध नये काव्यतत्व के लिए नये छंद आदि में किसी धरातल पर नहीं होता। रचना क्षेत्र एक और धरातल पर नहीं होता। रचना क्षेत्र एक और धरातल है जहाँ एक सम्प्रक्त बुद्धिजीवी व्यक्ति में अत्यंत मौलिक एवं अत्यंत निरंतर कुछ आंतरिक तत्व काम करते है। अपने व्यक्तित्व की खोज भी प्रयोग नहीं है। कला की अपनी सौन्दर्य परंपरा में कवि द्वारा इन कलात्मक अनुभव के क्षणों का रखना ही प्रयोग है। अंततः प्रयोग कलात्मक अनुभव का क्षण है । प्रयोगवाद के 15 वर्षों का इतिहास व्यक्तित्व के ही सीमांतों के बीच फैला हुआ है। इनमें से एक सीमांत है मध्यवर्गीय परिवेश के प्रति मध्यवर्गीय कवि का व्यक्तिगत असंतोष और दूसरा सीमांत है जन जागरण से डरे हुए कवि की आत्मसात की भावना! कुल मिलाकर यह चरम व्यक्तिवाद ही प्रयोगवाद का केन्द्र बिन्दु है। इनमें मध्यवर्गीय हीनता, दीनता, अनास्य कटुता, अन्तर्मुखता, पलायन आदि का मार्मिक चित्रण हुआ है। प्रयोगवाद की मुख्य प्रवृत्तियाँ इस प्रकार है–

1. समसामयिक जीवन के प्रति आग्रह विद्रोहात्मक स्वर,
2. व्यक्तिवाद की अभिव्यक्ति,
3. लघु मानव की प्रतिष्ठा,
4. यौन प्रतीकों का बाहुल्य
5. वेदनों की अनुभूति,
6. बौद्धिकता की प्रधानता एवं नवीन कलात्मक विधान।

तब प्रयोगवादी याद में पराजय का अनुभव करता है तो याद की विशिष्ट मनःस्थिति आंकता है! यह संवेदना प्रस्तुत उदाहरण में दृष्टव्य है–

भोर बेला, नदी तट की घाटियों का नाद,
चोट खाकर जग उठा सोया हुआ अवसान,
नहीं मुझको नहीं अपने–अपने दर्द का अभिमान,
मानता हूँ मैं पराजय हैं तुम्हारी याद !

प्रयोगवादी कवि चेतना पर किसी संज्ञा का अनवरत सूक्ष्म स्पंदन भी अनुभव करता है इसीलिए वह व्यक्ति मन के अनेक सूक्ष्म भावों का चित्रण अत्यंत सफलता के साथ कर जाता है। रघुवीर सहाय भावानुकुल हृदय की अभिव्यक्ति की विफलता को इन शब्दों में प्रकट करते हैं–

सिनेमा की रीलों सा कसके लिपटा है।
सभी कुछ मेरे अन्दर/कमानी खुलने की भरती हुमस
प्रयोगवाद की प्रमुख विशेषता है कि वह प्रेरणा का नहीं मनःस्थिति का कवि है। वह मनोविज्ञान को अधिक आश्रय देता है। नये अर्थ और नये प्रयोगों की ओर अग्रसर हुआ –
फिर रूपक, मुझको हो क्या गया है
रूपक के बिना फिर मैं सोच भी ना पाऊँगा
लगता है रूपक की नगरी में कैद मैं
खुद भी एक रूपक बन गया हूँ।

प्रयोगवाद कविकाल में बोध के प्रति अत्यंत सचेत रहे हैं। शाश्वत एवं तात्कालिकता का द्वन्द उनकी कविता में संवेदनात्मक बिन्दू बनकर उभरा है। वे क्षणानुभूति को महत्व प्रदान करते हैं। कवि जीवन के प्रत्येक क्षण को अवोघ मानता है–

क्षण अमोघ है,
इतना मैंने
पहले भी पहचाना है
इसलिए सांझ को
नश्वरता से नहीं बांधता ।

प्रयोगवाद के अंतर्गत सभ्यता के संकट को विविध प्रकार से देखा गया है। भौतिकता भी एक प्रमुख संकट है और इससे अनेक समस्याओं का प्रादुर्भाव होता है, फलतः कवि भौतिकता से मुक्ति चाहता है–

समस्या एक
मेरे सभ्य नगरों में और ग्रामों में
सभी मानव
सभी सुंदर व शोषण मुक्त कब होंगे।

प्रतीक–के क्षेत्र में प्रयोगवाद ने छायावादी लक्षणिक वक्रता से आगे बढ़कर अत्यधिक सांकेतिक प्रतीकों के प्रयोग किए परन्तु संपूर्ण प्रयोगवाद प्रतीकवाद नहीं है–

टेढ़े मुँह चाँद की रोशनी
भीमाकार पुलों के ठीक नीचे
ठीक नीचे बैठकर
चोरों सी उचक्कों सी
नालों और झरनों के तटों पर
किनारे–किनारे चल
पानी पर झुके हुए
रात–विरात वह, मछलियाँ फँसाती है

प्रयोगवादी कवि अपनी विकलता के लिए एक चौकाने वाली उपमा नहीं देते बल्कि उस उपमा के सहारे अपनी मानसिक हठ को अधिक सूक्ष्मता से व्यक्त करते हैं। छायावादी कवि ने भी जहाँ चाँदनी का कथाचित्र अंकित किया, प्रयोगवादी कवि ने शिशिर की राका–निशा की वास्तविकता इस प्रकार चित्रित की है–

वंचना है चाँदनी
झूठ वह आकाश का निर्बाध गहन विस्तार,
शिशिर की राका–निशा की भाँति है निःसार ।

नया कवि नये–नये उपमान खोजता है। वह काव्य व्यक्ति की वास्तविक सत्ता से जुड़ा है, वे प्राचीन काव्यशास्त्र की उपेक्षा करते है तथा रसवादी अवधारण का खंडन करता है। प्रयोगवादी कवि की उपमान योजना का उदाहरण दृष्टव्य है–

दूर क्षितिज पर महुओं की दीवार खड़ी है,
जिस पर चढ़कर सूरज का शैतान छोकड़ा झांक रहा है।

इस प्रकार मूर्त के साथ मूर्त उपमान योजना दृष्टव्य है–

चाहता मन
तुम यहीं बैठी रहो
उड़ता रहे चिड़ियों सरीखा
वह तुम्हारा श्वेत आंचल।

इस प्रकार प्रयोगवाद कथ्य और शिल्प के स्तर पर एक नये भावबोध की सृष्टि करता है। परंतु उसका ऐतिहासिक काल विस्तार अधिक समय तक न चल सका और उसके व्यक्तिवादी रुझानों, प्रयोगवादी आग्रह एवं मनोविश्लेषणात्मक जटिलताओं से मुक्त नई कविता का अभ्युदाय हुआ। नई कविता की सामाजिक भावभूमि में डॉ. रघुवंश कहते हैं कि "कुछ विवेचक नई कविता व प्रयोगशील कविता में तात्विक अंतर नहीं करते, वे प्रायः उन्हें समानार्थक शब्द मान लेते हैं। पर नयी कविता अपनी अभीव्यक्ति प्रेषणीयता तथा उपलब्धि की दृष्टि से प्रयोगशील कविता के आगे की स्थिति है। दोनों में अनेक समान तत्व भी मिल जाते हैं। पर दोनों की भावभूमि में अंतर है।" शंभूनाथ सिंह के अनुसार "प्रयोगवाद नयी कविता में सबसे बड़ा अंतर यह है कि प्रयोगवाद छन्द और प्रतिक्रिया की कविता है किंतु नयी कविता संलेषण और सामंजस्य की कविता है।

ग्रीन हाउस प्रभाव

डॉ. नीलरतन सिंह
असि.प्रो., वनस्पति विज्ञान विभाग

ग्रीन हाउस प्रभाव शीत कटिबंधीय देशों में प्रयुक्त एक वैज्ञानिक प्रविधि है, जिसका उपयोग सब्जियों, फसलों को उगाने के लिए किया जाता है। फसलों के तैयार होने में सूर्य के प्रकाश का महत्वपूर्ण स्थान है जो इन्हें आवश्यक ऊष्मा प्रदान करता है। इन देशों में चूंकि सूर्य किरणें काफी तिरछी पड़ती है इसलिए प्रकाश की उपलब्धता कम है। शीत का अत्यधिक प्रभाव भी इसके मार्ग में एक अन्य बाधा है। अतः शीत प्रभावित देशों में काँच के विशाल हाउस अपने कृषि फार्मों के चारों ओर बना लेते हैं जो सूर्य से प्राप्त उष्मा को उस हाउस के अंदर अधिक समय तक केंद्रीभूत रखते हैं।

पृथ्वी भी एक विशाल ग्रीन हाउस की तरह कार्य करती है। पृथ्वी के ऊपर स्थित वायुमंडल का आवरण पृथ्वी से टकरा कर लौटती सूर्य की दीर्घ तरंगों को आसानी से बाहर नहीं जाने देता। अपितु इस ऊष्मा का विस्तारण धीरे–धीरे ही होता है। इससे आवश्यक उष्मा जंतु या वनस्पति के लिए सदैव उपलब्ध रहती है। पृथ्वी के वायुमंडल में ऐसा महत्वपूर्ण कार्य करने वाली ग्रीन हाउस गैस कार्बनडाई आक्साईड है। चूंकि प्राकृतिक रूप से कार्बन डाईआक्साइड का एक निश्चित आयतन वायुमंडल में मौजूद रहा है, अतः पृथ्वी का ग्रीन हाउस भी तब तक जैव मंडल के लिए अनुकूल बना रहा है। लेकिन मनुष्य के आर्थिक–वाणिज्यिक क्रियाकलापों, सुख प्रधान उपकरणों के अधिकाधिक उपयोग तथा प्राकृतिक संसाधनों विशेषकर वनों के अत्यधिक दोहन ने पृथ्वी के ग्रीन हाउस प्रभाव में वृद्धि कर दी है, इसके लिए कार्बन डाईआक्साइड और इस जैसी अन्य गैसें मुख्य रूप से उत्तरदायी हैं, जो हमारे फार्मों, फ्रिज, ए.सी. आदि से बाहर आती हैं। वायुमंडल में इनके बढ़ते आयतन के कारण पृथ्वी से टकराकर लौटने वाली सूर्य किरणें अब अधिक मात्रा में वायुमंडल में रुक रही हैं। इससे पृथ्वी पर आवश्यकता से अधिक उष्मा बनी रहती है। इसका दुष्परिणाम ग्लेशियर के पिघलने से समुद्रों के जल स्तर में बढ़ोतरी के रूप में सामने आया है, जो अनेक समुद्र तटीय क्षेत्रों के डूब जाने के लिए पर्याप्त है। इससे अनेक रोग भी उत्पन्न हो रहे हैं।

इस समस्या से निपटने के लिए उन्हीं विकसित देशों ने कवायदें शुरु की जो स्वयं इसके लिए सर्वाधिक जिम्मेवार है। 1997 में ग्लोबल वार्मिंग पर टोकियो में विकसित देशों के समूह ने प्रोटोकाल जारी किया था। वस्तुतः विकसित देश अपने औद्योगिक साम्राज्य के बचाव के लिए विकासशील राष्ट्रों की पशु आधारित अर्थव्यवस्था को ग्रीनहाउस के लिए अधिक उत्तरदायी ठहराते रहे हैं।

ग्रीनहाउस के प्रभाव एवं उससे होने वाले दुष्परिणामों को नियंत्रित करने के लिए परस्पर दोषारोपण के स्थान पर सामूहिक प्रयत्न की जरूरत है, क्योंकि ये किसी एक राष्ट्र या एक क्षेत्र की नहीं, संपूर्ण पृथ्वी की समस्या है। औद्योगिक राष्ट्रों के उन कारखानों पर अंकुश लगाना अत्यंत आवश्यक है, जो दिन–रात जहरीला धुंआ वायुमंडल में उगलते रहते हैं। सड़कों पर दौड़ने वाले वाहनों की संख्या कम करनी चाहिए तथा प्रदूषण रहित घरेलू उपकरणों का आविष्कार और उनके उपयोग को बढ़ावा देना चाहिए।

भारत–अमेरिका संबंध : एक मूल्यांकन

डॉ0 श्रवण कुमार त्रिपाठी
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में संबंधों के निर्धारण हेतु राष्ट्रीय हित को सदैव प्राथमिकता में रखा जाता है। इसलिए ब्रिटिश प्रधानमंत्री लार्ड पार्मस्टन (Lord Palmerston) ने कहा था कि, "अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में किसी राष्ट्र का ना तो कोई स्थाई मित्र होता है और ना ही स्थाई शत्रु। केवल राष्ट्रीय हित स्थाई होते हैं, जिसके लिए राष्ट्र सदैव कार्य करते हैं।"[1] अतः भारत एवं अमेरिका के मध्य संबंधों का मूल्यांकन भी राष्ट्रीय हित के आधार पर ही किया जाना आवश्यक है। शीतयुद्ध एवं शीतयुद्धोत्तर काल में दोनों राष्ट्रों के मध्य संबंधों में व्यापक परिवर्तन परिलक्षित होते हैं। इसका प्रमुख कारण दोनों राष्ट्रों के राष्ट्रीय हित में टकराव एवं सहयोग के मुद्दे हैं।

भारत एवं अमेरिका विभिन्न समान मूल्यों एवं हितों को साझा करते हैं। दोनों विश्व के दो महान लोकतंत्र हैं–जिसमें भारत विश्व का सबसे विशाल तथा अमेरिका सबसे प्राचीन लोकतंत्र है। दोनों ही राष्ट्र मानवाधिकार, स्वतंत्रता, समानता, उदारवादी लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, कानून के शासन, बंधुत्व एवं विश्वशांति में विश्वास करते हैं तथा आतंकवाद, पर्यावरण क्षरण, जलवायु परिवर्तन, मादक पदार्थों की तस्करी एवं विश्वव्यापी स्वास्थ्य समस्याओं (स्वाइन फ्लू, एड्स, पोलियो, इबोला, डेंगू, कोरोना आदि) के मामलों में समान हित रखते हैं।[2] भारत एवं अमेरिका का इतिहास विभिन्न मामलों में लगभग समान है, क्योंकि दोनों देशों ने औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध संघर्ष के बाद स्वतंत्रता प्राप्त की थी। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अमेरिकी स्वतंत्रता संघर्ष एवं संविधान से प्रभावित थे। इसके अतिरिक्त भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान अमेरिका ने ब्रिटेन पर भारत को स्वतंत्र करने हेतु दबाव डाला था।[3]

भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के प्रारंभिक दौर में अमेरिका, भारत को एक महत्वपूर्ण सहभागी के रूप में देखता रहा। अमेरिका का मत था कि भारत एक राष्ट्र ही नहीं अपितु एक महाद्वीप, एक क्षेत्र और एक सभ्यता है।[4] परंतु शीतयुद्धकाल की परिस्थितियां, आर्थिक एवं वैश्विक संबंधों के दृष्टिकोण में असमानता तथा भारत का सोवियत संघ की तरफ झुकाव आदि ने दोनों राष्ट्रों के मध्य संबंधों में तनाव को बढ़ावा दिया। भारत द्वारा गुटनिरपेक्षता, निःशस्त्रीकरण, पंचशील आदि का समर्थन किया गया तथा शीतयुद्ध, शस्त्र प्रतिस्पर्धा उपनिवेशवाद आदि का विरोध किया गया। अमेरिकी सैन्य गठबंधनों (नाटो, सेण्टो, सीटो) की सदस्यता भारत द्वारा स्वीकार नहीं की गई। इसके अतिरिक्त 1971 में सोवियत संघ के साथ 'शांति मित्रता एवं सहयोग संधि' पर हस्ताक्षर किया गया।[5] तथा 18 मई 1974 को पहला परमाणु परीक्षण किया गया [6] जिसका अमेरिका ने भारी विरोध किया।

1991 में सोवियत संघ के विघटन के साथ ही शीतयुद्ध समाप्त हो गया तथा विश्व एकध्रुवीय हो गया। भारत द्वारा उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण की नीति का अनुसरण किया गया, जिसके कारण भारत के प्रति अमेरिकी दृष्टिाकोण में परिवर्तन आया। परंतु 11–15 मई 1998 को भारत द्वारा पुनः परमाणु परीक्षण किया गया–जिससे अमेरिका ने भारत पर विभिन्न प्रतिबंध लगा दिये। परंतु 11 सितंबर 2001 को अमेरिका में हुए आतंकवदी हमले के पश्चात भारत के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया। आतंकवाद, मानवाधिकार, आणुविक मुद्दे, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद आदि में दोनों राष्ट्रों के मत लगभग

समान हैं। चीन के बढ़ते वर्चस्व को देखने के लिए अमेरिका को भारत की आवश्यकता है। अतः अमेरिका ने भारत को 'मिसाइल तकनीकी नियंत्रण प्रणाली' (MTCR-Missile Technology Control Regime) एवं आस्ट्रेलिया ग्रुप' (Australia Group) की सदस्यता दिलाई है। अतः भारत अमेरिका के मध्य संबंध को निम्नवत मूल्यांकन किया जा सकता है।

शीतयुद्धकाल में भारत अमेरिका संबंध :

16 जुलाई 1945 को संपूर्ण विश्व का नाभिकीय युग में प्रवेश हुआ[10] तथा नाभिकीय क्षमता का एहसास जापान के हिरोशिमा एवं नागासाकी में 6 एवं 9 अगस्त 1945 को नाभिकीय हथियार के प्रयोग के साथ हुआ।[11] जापान में परमाणु हथियार के प्रयोग के साथ ही द्वितीय विश्वयुद्ध समाप्त हो गया। द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के साथ ही वैश्विक स्तर पर शीतयुद्ध प्रारंभ हो गया। शीतयुद्ध विश्व की दो विचारधाराओं पूंजीवाद एवं साम्यवाद के मध्य टकराव था, जिससे अमेरिका एवं सोवियत संघ वैश्विक स्तर पर अपने प्रभावक्षेत्र को बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे। इस दौरान दोनों महाशक्तियों (अमेरिका एवं सोवियत संघ) ने अनेक सैन्य गठबंधनों का जैसे नाटो, सेण्टो, सीटो, वार्सापैक्ट आदि का निर्माण किया।[12]

अमेरिका भारत से यह अपेक्षा करता था कि वह अमेरिकी सैन्य गुट में सम्मिलित होकर साम्यवाद के प्रसार को रोकने में सहायता करे। परंतु भारत ने किसी भी गुट में शामिल न होने का निश्चय किया तथा गुटनिरपेक्ष नीति का अनुसरण किया। भारत ने शीतयुद्ध, शस्त्र प्रतिस्पर्धा नाभिकीय प्रसार, रंगभेद, नस्लभेद, सैन्य गठबंधनों का विरोध किया। शीत युद्ध के दौरान सोवियत संघ ने विदेश नीति का समर्थन किया तथा 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में भारत का समर्थन किया। इसके विपरीत अमेरिका गुटनिरपेक्ष नीति का विरोधी रहा तथा भारत के विरोधी देशों, पाकिस्तान एवं चीन के साथ मित्रता की। जिससे भारत–अमेरिका के संबंध तनावपूर्ण रहे। जिसे इस रेखाचित्र से समझा जा सकता है–

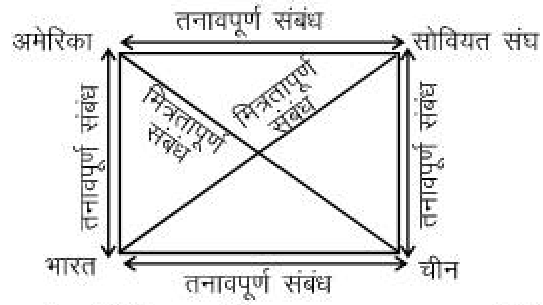

शीतयुद्धकालीन वैश्विक परिदृश्य तथा भारत–अमेरिका संबंध

उपर्युक्त रेखाचित्र से यह स्पष्ट है कि अमेरिका का भारत विरोधी राष्ट्रों चीन एवं पाकिस्तान के साथ सहयोगात्मक संबंध था। अतः भारत अपने विकास एवं सुरक्षा हेतु वैश्विक राजनीति में यथार्थवाद नीति को अपनाते हुए 1971 में सोवियत संघ से शांति, मित्रता एवं सहयोग संधि पर हस्ताक्षर किए तथा 18 मई 1974 को पहला परमाणु परीक्षण किया जिसके फलस्वरूप शीतयुद्ध के दौरान भारत एवं अमेरिका के मध्य तनावपूर्ण संबंध हेतु निम्नलिखित कारण उत्तरदाई रहे हैं–

1. संयुक्त राष्ट्र संघ सहित विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर कश्मीर के मुद्दे पर अमेरिका एवं पश्चिमी देशों द्वारा पाकिस्तान का समर्थन करना।
2. अमेरिका के विरोध के बावजूद भारत द्वारा साम्यवादी नीति को मान्यता प्रदान करना।

3. 1950 के कोरिया संकट के दौरान जब अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में उत्तर कोरिया के विरुद्ध 'शांति के लिए एकता प्रस्ताव' लाकर उसे आक्रांता घोषित किया तो भारत ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया परंतु जब चीन के खिलाफ यह प्रस्ताव लाया गया तो भारत ने अमेरिका का समर्थन नहीं किया।[13]

4. द्वितीय विश्वयुद्ध हेतु जापान को उत्तरदाई मानते हुए अमेरिका ने 1952 में सैनफ्रांसिस्को में एक सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें जापान को विश्वयुद्ध की क्षतिपूर्ति देने को कहा गया तथा शांति संधि पर हस्ताक्षर हुए। भारत ने इस सम्मेलन में सहभागिता का से इनकार करते हुए जापान के साथ द्विपक्षीय संबंध को बढ़ावा दिया।[14]

5. अमेरिका दक्षिण–पूर्व एशियाई संधि संगठन (सीटो) का प्रसार दक्षिण एशिया में करना चाहता था तथा भारत एवं श्रीलंका को भी इस संगठन में सम्मिलित करना चाहता था। परंतु दोनों ने गुटनिरपेक्ष राष्ट्र के रूप में सीटो का विरोध किया जबकि पाकिस्तान इसमें शामिल हो गया।

6. अमेरिका के चीन एवं पाकिस्तान के साथ मधुर संबंध थे तथा अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को भारी अनुदान एवं हथियारों की आपूर्ति की जा रही थी, जिससे भारत की सुरक्षा हेतु गंभीर खतरे विद्यमान थे। अतः अपनी सुरक्षा चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए 9 अगस्त 1971 को सोवियत संघ के साथ शांति, मित्रता एवं सहयोग संधि पर भारत ने हस्ताक्षर किया।

7. 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान अमेरिका एवं चीन ने पाकिस्तान का पूरा समर्थन किया। जिसके तहत अमेरिका ने भारत के खिलाफ सातवां बेड़ा बंगाल की खाड़ी में भेजा था, क्योंकि अमेरिका भारत को शीघ्र युद्ध बंद करने की धमकी दे रहा था।[15]

8. गोवा को पुर्तगालियों के आधीन से बाहर निकालने हेतु भारत द्वारा की गई सैन्य कार्रवाई का अमेरिका द्वारा भारी विरोध किया गया।

9. शीतयुद्ध के समय पश्चिम एशिया की राजनीति को लेकर भारत एवं अमेरिका के दृष्टिकोण में भिन्नताा थी। भारत ने सदैव फिलिस्तीन की स्वतंत्रता का समर्थन किया जबकि अमेरिका ने इजराइल का समर्थन किया। इस दौरान अमेरिका ने पश्चिमी एशिया के देश सऊदी अरब, ईरान, संयुक्त राज्य अमीरात को समर्थन दिया, तो भारत ने ईराक, सीरिया, लेबनान, लीबिया आदि देशों से घनिष्ठ संबंध स्थापित किए।

10. भारत द्वारा 1968 की भेदभावपूर्ण परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) पर हस्ताक्षर नहीं किया गया। अमेरिका ने सदैव भारत पर परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर हेतु दबाव बनाया।

11. शीतयुद्ध के समय अमेरिका एवं पाकिस्तान के मध्य संबंध अत्यधिक मधुर थे। इसलिए अमेरिका ने पाकिस्तान को अत्यधिक परिष्कृत हथियार (softisticated weapon) प्रदान किए तथा 'प्रेसलर कानून' में संशोधन करके पाकिस्तान को सहयोग भी किया, जिससे भारत–अमेरिका के संबंधों में अत्यधिक दूरियां बढ़ गई।

12. ब्रिटेन ने एशिया एवं अफ्रीका के देशों को स्वतंत्र करने के पश्चात् हिंद महासागर में स्थित 'शक्ति शून्यता' (power vaccume) की पूर्ति के लिए डियागोगार्सिया द्वीप अमेरिका को दे दिया। डियागोगार्सिया द्वीप पर अमेरिका ने नौसेनिक अड्डा बनाया। जिसका भारत सहित विभिन्न हिंद महासागर के तटीय देशों ने विरोध किया, क्योंकि वह हिंद महासागर को 'शांति क्षेत्र' (peace of zone) बनाना चाहते हैं।

उपर्युक्त परिस्थितियों के कारण शीतयुद्ध काल में भारत एवं अमेरिका के मध्य संबंध तनावपूर्ण बने रहे तथा अमेरिका द्वारा भारत विरोधी गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया।

शीतयुद्धोत्तर काल में भारत–अमेरिका संबंध :

1991 में सोवियत संघ के विघटन के साथ ही शीतयुद्ध समाप्त हो गया तथा विश्व एकध्रुवीय (Unipolar) हो गया। वैश्विक स्तर पर अमेरिका एकमात्र महाशक्ति के रूप में स्थापित हो गया। विश्व व्यवस्था में व्यापक बदलाव होने लगे जिससे एक नवीन विश्व व्यवस्था (New world order) प्रारंभ हो गई। वैश्विक स्तर पर उदारीकरण और निजीकरण एवं वैश्वीकरण का दौर प्रारंभ हुआ। इसके साथ ही चीन एक वैश्विक शक्ति के रूप में अपना वर्चस्व बढ़ाने लगा, जिससे अमेरिका सहित विभिन्न देशों को चुनौती मिलने लगी। भारत एवं चीन के मध्य तनावपूर्ण संबंध के कारण चीन के खिलाफ भारत–अमेरिका के लिए एक महत्वपूर्ण सहयोगी राष्ट्र की भूमिका में नजर आने लगा जिससे शीतयुद्धोत्तर काल में भारत एवं अमेरिका के मध्य सहयोगात्मक संबंधों की शुरूआत हुई। इन संबंधों रणनीतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्तर पर निम्नवत विश्लेषित किया जा सकता है।

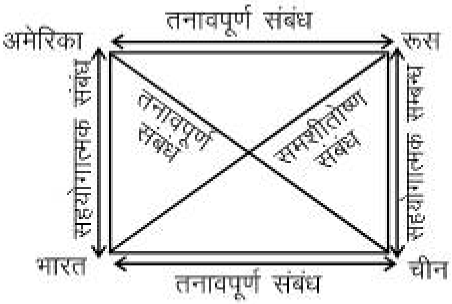

शीतयुद्धोत्तर कालीन वैश्विक परिदृश्य तथा भारत–अमेरिका संबंध

1. रणनीतिक संबंध :

शीतयुद्धोत्तर काल की वैश्विक परिस्थितियों के कारण भारत एवं अमेरिका के मध्य संबंधों में मधुरता आने लगी। चीन के बढ़ते वर्चस्व को रोकने के लिए अमेरिका ने भारत को एक महत्वपूर्ण सहयोगी के रूप में देखा, जिससे दोनों देशों के मध्य नजदीकियां बढ़ने लगी। इस दिशा में पहला कदम अमेरिका द्वारा भारत के लिए लाया गया 'किकलाइटर प्रस्ताव' (Kicklighter Propsal) था।[16] जिसके तहत दोनों देशों के मध्य रक्षा सहयोग को बढ़ावा दिया गया। अमेरिका द्वारा भारत को विभिन्न साजो–सामान की अपूर्ति की गई तथा 1992 में दोनों देशों के मध्य मालाबार तट पर पहला सैन्य अभ्यास किया गया। जिसमें जापान, आस्ट्रेलिया एवं सिंगापुर सम्मिलित है। प्रत्येक वर्ष मालाबार श्रंखला का नौसेना अभ्यास किया जाता है।

मालाबार श्रंखला के नौसेना अभ्यास में भारत के सम्मिलित होने का मुख्य उद्देश्य चीन की प्रसारवादी नीति को रोकना है, क्योंकि चीन द्वारा भारत को चारों तरफ से घेरने हेतु 'मोतियों की माला नीति' (String of policy) का अनुसरण किया जा रहा है।[17] जिसके कारण भारत द्वारा अपनी सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए अमेरिका के साथ रणनीतिक सहयोग को बढ़ावा देना पड़ा । इसी का परिणाम लोकतंत्र धुरी सिद्धांत (Democratic Pivot Theory) एवं मालाबार श्रंखला का नौसैनिक युद्धाभ्यास है।

शीतयुद्ध के दौरान भारत ने डियागोगार्सिया स्थित अमेरिकी नौसैनिक अड्डे का विरोध किया, परंतु

वर्तमान समय में चीन को हिंद महासागर एवं दक्षिण चीन सागर में संतुलित करने हेतु डियागोगार्सिया में अमेरिका की उपस्थिति को आवश्यक मानता है। भारत एवं अमेरिका के मध्य संबंध समान होने के कारण जापान, इजराइल, आस्ट्रेलिया आदि के साथ ही भारत के संबंधों को गति मिली है। इजरायल भारत का एक महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार बन गया है तथा भारत को अनेक प्रकार की हत्यारों एवं सैन्य साजो सामान की आपूर्ति की है। सितंबर 2014 में भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की जापान यात्रा के दौरान जापान ने भारत को विशेष रणनीतिक साझीदार का दर्जा प्रदान किया तथा भारत को एम्फीवियन लड़ाकू जहाज (Amphibian Fighter Plane) देने हेतु सहमत हुआ।[18]

21वीं सदी में भारत एवं अमेरिका के मध्य रणनीतिक भागीदारी बेहतर हुई है तथा अमेरिका भारत के लिए एक प्रमुख सैन्य साजो सामान निर्यातक बन गया है। रक्षा व्यापार संयुक्त सैन्याभ्यास, कार्मिक आदान–प्रदान, सामुदायिक सुरक्षा हेतु साझेदारी एवं सहयोग, सामुदायिक डकैती के विरुद्ध साझेदारी, आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई आदि में सहयोगी भूमिका में हैं। जून 2005 में दोनों देशों के मध्य रक्षासंबंध में नवीन ढाँचे हेतु हस्ताक्षर किए गए जिसके अंतर्गत सामुदायिक सुरक्षा, आपदा सहायता तथा आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई हेतु प्रावधान किए गए। 19 जुलाई 2005 में दोनों देशों के मध्य असैन्य परमाणु समझौता (Civil Nuclear Deal) किया गया।

जून 2010 में भारत एवं अमेरिका के मध्य पहली राजनीतिक वार्ता (Fierst Strategic Dialogue) प्रारंभ हुई तथा अमेरिकी सचिव हेनरी क्लिंटन ने भारत को एक 'परम आवश्यक सहयोगी' (Indispensable Partner) बताया। [21] जुलाई 2011 में दोनों देशों के मध्य साइबर सुरक्षा को लेकर समझौता ज्ञापन (MOU-Memorandum of Understanding) पर हस्ताक्षर हुए। इससे दोनों में साइबर सुरक्षा को लेकर सयोग को बढ़ावा मिला।[22]

जून 2016 में अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारत को एक 'प्रमुख रक्षा भागीदार' (Major Defence Ppartner) के रूप में मान्यता प्रदान की।[23] भारत एवं अमेरिका के मध्य विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय वार्ता तंत्र बनाया गया है। जिसमें रक्षानीति समूह (Defence Policy group), रक्षा संयुक्त कार्य समूह (Defence joint working group), रक्षा तकनीकी समूह (Defence Technical Group) सैन्य सहयोग समूह (Military Cooperation Group) आदि प्रमुख हैं।[24] दोनों देशों के मध्य 2016 में 'सैन्य तंत्र आदान–प्रदान समझौता ज्ञापन' (LEMOA-Logistic Exchange Memorandum of Agreement) पर हस्ताक्षर किए गए जिससे भारत एवं अमेरिकी सेनाओं के मध्य सैन्य सुविधाओं तक पहुंच में आसानी होगी।[25] जून 2017 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की अमेरिकी यात्रा के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ रक्षा सहयोग एवं आतंकवाद विरोधी प्रयास को बढ़ावा देने हेतु वार्ता हुई। इसके अतिरिक्त सितंबर 2018 में नई दिल्ली में '2+2 वार्ता (Two plus two Dialoge) में 'संचार अनुकूलता तथा सुरक्षा समझौता' (COMCASA-Communications Compatibility and Security Agreement) पर हस्ताक्षर हुए। इस समझौते से भारत, अमेरिका की उन्नत संचार तकनीकी का प्रयोग कर सकता है। इसके साथ रक्षा उपकरणों तथा सेनाओं के मध्य सूचना आदान–प्रदान में सहायता मिलेगी।[26]

भारत तथा अमेरिका रणनीति संबंधों के अंतर्गत हिंद महासागर एवं एशिया प्रशांत में मिलने वाले विभिन्न चुनौतियों को रोकने का प्रयास कर रहे हैं जिससे इस क्षेत्र में शांति एवं स्थिरता स्थापित की जा सके। वर्तमान समय में चीन आक्रामक विदेश नीति के अंतर्गत अपना वर्चस्व हिंद महासागर एवं एशिया

प्रशांत में बढ़ा रहा है तथा विभिन्न क्षेत्रों में एकाधिकार तथा सामूहिक व्यापार में शक्ति संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहा है जिससे हिंद महासागर में स्त्रातेजिक रूप से खतरा उत्पन्न हो रहा है। अतः अमेरिका द्वारा चीन के बढ़ते प्रभाव को रोकने हेतु भारत की आवश्यकता है। इसको ध्यान में रखते हुए अमेरिका ने भारत को प्रमुख रक्षा भागीदार का दर्जा प्रदान किया है। अतः हिंद महासागर एवं एशिया प्रशांत में दोनों देशों के सहयोग से संतुलन स्थापित किया जा सकता है तथा खतरों को सीमित किया जा सकता है।

2. राजनीतिक संबंध

शीतयुद्ध के दौर में भारत एवं अमेरिका के मध्य सदैव तनाव का दौर चलता रहा। परंतु शीतयुद्धोत्तर काल में सोवियत संघ के विघटन एवं चीन का एक प्रमुख शक्ति के रूप में उदय ने दोनों देशों के मध्य संबंध में सहयोग के पक्ष को बढ़ावा दिया। 1992 में भारत ने एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल को अमेरिकी दौरे पर भेजा ताकि दोनों देशों के मध्य संबंध तथा सहयोग की प्रक्रिया को और अधिक स्थाई तथा सुदृढ़ बनाया जा सके जिससे अमेरिका ने भारत के साथ सहयोग को बढ़ावा देना प्रारंभ कर दिया।

मई 1994 में भारत के प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हाराव की अमेरिकी यात्रा के दौरान लोकतंत्र, मानवाधिकार, आर्थिक उदारवाद की उपयोगिता को अमेरिका ने स्वीकार किया तथा इनको विश्वशांति, स्थायित्व तथा प्रसन्नता का आधारभूत तत्व माना। अमेरिका ने पहली बार माना कि कश्मीर पर भारत एवं पाकिस्तान के मध्य द्विपक्षीय वार्ता 1972 के शिमला समझौते के अनुसार होनी चाहिए। इससे पूर्व अमेरिका कश्मीर समस्या का अंतर्राष्ट्रीयकरण करता रहा है तथा कश्मीर समस्या को अंतरराष्ट्रीय समस्या की श्रेणी में रखता था। इसके अतिरिक्त कश्मीर मुद्दे पर मध्यस्थता ही बात करता था परंतु 1997 में भारतीय प्रधानमंत्री श्री इंद्रकुमार गुजराल के साथ वार्ता के दौरान अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने कहा कि अमेरिका कश्मीर के संबंध में कोई मध्यस्था नहीं करना चाहता।[27]

मई 1998 में भारत ने 5 परमाणु परीक्षण करके स्वयं को परमाणु शक्ति संपन्न राष्ट्र घोषित किया। इस परीक्षण के साथ ही अमेरिका ने भारत पर विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगा दिए। परंतु मार्च 2000 में अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा के दौरान सकारात्मक संबंधों का संकेत दिया तथा कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग माना। (इससे पूर्व अमेरिका कश्मीर को विवादित स्थान मानता था।) इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के मध्य विज्ञान एवं तकनीकी मंच की स्थापना की गई। सितम्बर 2000 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेई ने अमेरिका की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान आतंकवाद, सुरक्षा, पर्यावरण, पूंजी निवेश, तकनीकी आदि मुद्दों पर चर्चा की गई। अमेरिका ने स्वीकार किया कि वह कश्मीर समस्या में मध्यस्थता नहीं करेगा। सितंबर 2001 में अमेरिका ने भारत के सभी प्रतिबंध हटा दिए।[28] दोनों देशों के मध्य संबंधों में मधुरता लाने के लिए मार्च 2005 में ऊर्जा सुरक्षा हेतु वार्ता प्रारंभ हुई तथा जुलाई 2005 में दोनों देशों के मध्य असैन्य परमाणु समझौता (Civil Nuclear Deal) किया गया।[29] मार्च 2006 में राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने भारत की यात्रा कर असैन्य परमाणु समझौते के ढांचे को अंतिम रूप प्रदान किया तथा साथ ही सुरक्षा एवं आर्थिक समझौतों को बढ़ावा दिया।[30]

दोनों देशों के मध्य राजनीतिक संबंध को सुदृढ करने के लिए नवंबर 2010 में अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबाम ने भारत की पहली यात्रा की तथा भारतीय संसद को संबोधित करते हुए भारत को एक 'उभरती हुई शक्ति (Emerging Power) कहा था संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थाई सदस्यता की दावेदारी का समर्थन किया। भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की सितंबर 2013 में अंतिम

यात्रा के दौरान राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ सुरक्षा, व्यापार, असैन्य परमाणु समझौता तथा अप्रवास संसोधन आदि पर वार्ता हुई। सितंबर 2014 में अपने प्रथम कार्यकाल के प्रारंभ में ही प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी अमेरिका राष्ट्रपति के निमंत्रण पर अमेरिका की यात्रा की तथा आयात–निर्यात बैंक एवं भारतीय ऊर्जा एजेंसी के मध्य समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया। भारत के 66वें गणतंत्र दिवस 2015 के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारत की दूरी यात्रा की तथा अपने वक्तव्य में बराक ओबामा ने कहा कि "अमेरिका भारत का सर्वश्रेष्ठ भागीदार बन सकता है।" इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के मध्य 10 वर्षीय रक्षा ढांचा समझौता पर हस्ताक्षर किए गए तथा व्यापारिक संबंधों को 500 बिलियन डॉलर तक बढ़ाने में सहमत हुए। सितंबर 2014 एवं जनवरी 2015 की यात्राओं के दौरान दोनों देशों ने "चलें साथ–साथ" तथा 'साझा प्रयास, सबका विकास' के सिद्धांत पर बल दिया।[31]

जून 2016 में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका की यात्रा की। इस यात्रा के दौरान दोनों देश के राष्ट्राध्यक्ष ने अपने संयुक्त वक्तव्य में कहा कि भारत अमेरिका के मध्य संबंध 21वीं सदी में एक चिरस्थाई वैश्विक साझीदार के रूप में है" (Enduring Global Partner in the 21st century)[32] जून 2017 में भारतीय प्रधानमंत्री ने पुनः अमेरिका की यात्रा की, जिसमें अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत से व्यापार, जलवायु परिवर्तन तथा H-1B वीजा सेवा पर अपना विरोध जताया। दोनों राष्ट्राध्यक्षों ने अपने संयुक्त वक्तव्य में रक्षा सहयोग, आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई हेतु प्रयासों तथा आर्थिक समझौतों को बढ़ावा देने पर सहमति दी। जून 2019 में ब्रिस्बेन (ऑस्ट्रेलिया) में आयोजित जी–20 के दौरान दोनों देशों के राष्ट्राध्यक्ष के मध्य विभिन्न मुद्दों पर वार्ता हुई।[33] अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पहली भारत यात्रा फरवरी 2020 में प्रस्तावित है, जिसमें स्त्रातेजिक द्विपक्षीय साझेदारी सहित आर्थिक, सुरक्षा आदि मुद्दों पर बात हो सकती है।

3. आर्थिक संबंध

शीतयुद्धोत्तर काल से पूर्व भी भारत एवं अमेरिका के मध्य मजबूत आर्थिक संबंध था। शीतयुद्ध के समय भारत एकल टोकरी नीति का अनुसरण करता था, जिसके तहत मुख्यतः अमेरिका, रूस एवं यूरोपीय देशों के साथ भारत के आर्थिक संबंध थे। सोवियत संघ के विघटन, खाड़ी युद्ध, भारत में आर्थिक संकट तथा भारत द्वारा उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण की नीति के फलस्वरूप भारत अमेरिका के मध्य संबंधों में मधुरता आने लगी। भारत द्वारा अपनाई गई आयात नीति में उदारता, विनियंत्रण तथा भारतीय मुद्रा का अवमूल्यन की नीति को अमेरिका ने प्रशंसा की। अक्टूबर 1994 में अमेरिका ने भारत के विरुद्ध सुपर 301 के प्रयोग पर रोक लगाई। जनवरी 1995 में अमेरिका के वाणिज्य मंत्री रोनाल्ड ब्राउन ने भारत की यात्रा के दौरान व्यापार के विभिन्न क्षेत्रों के विकास हेतु विभिन्न समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

मई 1998 में भारत द्वारा किए गए परमाणु परीक्षण के कारण अमेरिका ने भारत पर विभिन्न प्रकार के आर्थिक प्रतिबंध लगा दिए। मार्च 2000 में राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की भारत यात्रा के दौरान विज्ञान एवं तकनीकी, वाणिज्य आदि समझौता हस्ताक्षर किए गए। सितंबर 2000 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी की अमेरिका की यात्रा के दौरान पूंजी निवेश, व्यापार व्यवस्था की सुदृष्टा पर विचार–विमर्श किया गया।[34] अमेरिका ने सितंबर 2001 में भारत पर लगाए सभी प्रतिबंध समाप्त कर दिए। भारत ने ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु 2005 में अमेरिका के साथ असैन्य परमाणु समझौता किया। मार्च 2006 में जार्ज बुश की भारत यात्रा के दौरान आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने हेतु 2009 तक व्यापार को 3 गुना बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया। 2007 में बुश प्रशासन में भारतीय फलों (आम आदि) पर 18 वर्ष से लगे प्रतिबंध को समाप्त

कर दिया तथा भारत ने हार्ले डेविडसन मोटरसाइकिल के आयात के प्रतिबंधों को सरल कर दिया।[35]

अप्रैल 2010 में अमेरिकी प्रशासन के कोष सचिव टिमोथी गेथनर ने भारत यात्रा के दौरान वित्तमंत्री श्री प्रणव मुखर्जी के साथ मिलकर नवीन आर्थिक एवं वित्तीय साझेदारी की शुरूआत की, जिससे आर्थिक एवं वित्तीय संबंधों को मजबूती मिली। 2010 में ओबामा की भारत यात्रा के दौरान 14.9 विलियन डॉलर के व्यापार का 500 मिलियन डॉलर रखा जबकि 2014 में यह वस्तु एवं सेवा व्यापार 104 विलयन डालर था। 2016 में दोनों देश नवीन अवसर की तलाश वस्तु एवं सेवा के मार्ग में अवरोध की समाप्ति तथा वैश्विक आपूर्ति श्रंखला में सहयोग को बढ़ाने पर सहमत हुए तथा रोजगार सृजन एवं आर्थिक समृद्धि के विकास पर बल दिया।[36]

जून 2017 में भारतीय प्रधानमंत्री की अमेरिका की यात्रा के दौरान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने व्यापार, जलवायु परिवर्तन तथा H-1B वीजा पर भारत के प्रति असहमति जतायी। परन्तु संयुक्त वक्तव्य में दोनों देश आर्थिक समझौतो को प्रोत्साहित करने पर सहमत हुए। 2018 में ट्रंप प्रशासन ने 1970 में प्राप्त भारत का विशेष व्यापारिक दर्जा (Proferential Trade Status) समाप्त कर दिया। विशेष व्यापारिक दर्जा विकासशील एवं अल्प विकसित राष्ट्रों के सामानों (goods) का अमेरिकी बाजार तक बिना 'कर' (Tax) पहुंचाने की प्रणाली है।[37] ट्रंप ने कहा कि भारत अपने बाजार में 'न्यायसंगत एवं तर्कसंगत पहुंच' (equitable & reserable access) की सुविधा नहीं देता है।[38] अतः अमेरिका ने भारत से आयात किए जा रहे स्टील एवं एल्युमिनियम पर शुल्क लगा दिया, जिसकी प्रतिक्रिया में भारत ने अमेरिका के 28 उत्पादों पर कर लगा दिया। जून 2019 में ब्रिस्वेन आस्ट्रेलिया में आयोजित जी–20 सम्मेलन के दौरान दोनों देशों के राष्ट्राध्यक्षों के मध्य व्यापार सम्बन्धी विभिन्न मुद्दों पर वार्ता हुई।[39]

वर्तमान समय में भारत एवं अमेरिका के आर्थिक संबंधों के मध्य बौद्धिक सम्पदा अधिकार, विश्व व्यापार संगठन में कृषि सब्सिडी, सामाजिक उपबंध, वीजा, आउटसोर्सिंग, पेटेन्ट, सैनिटरी एवं काइटो –सैनिटरी जैसे विभिन्न मुददे मौजूद हैं। परन्तु दोनों देशों के संयुक्त फाइटो प्रयास से वर्तमान समय में व्यापार 150 मिलियन डॉलर से अधिक है। 2018 में यह द्विपक्षीय व्यापार 142 विलियन डॉलर तक पहुंच गया था।[40] भारत एवं अमेरिका व्यापार के विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने का लगातार प्रयास कर रहे हैं।

21वीं सदी में भारत एवं अमेरिका के मध्य के संबंध समान मूल्यों, विधि के शासन तथा लोकतांत्रिक सिद्धान्तों पर आधारित हैं। दोनो देश आतंकवाद, मानवाधिकार, वैश्विक सुरक्षा एवं स्थिरता आदि मामलों मं समान विचार रखते हैं तथा व्यापार, निवेश एवं संचार के माध्यम से आर्थिक समृद्धि को बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं। एशिया प्रशांत की सुरक्षा, शांति, स्थिरता एवं समृद्धि हेतु दोनों देश वचनबद्ध हैं। अमेरिका संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत के स्थायी सदस्यता की दावेदारी को स्वीकार करता है तथा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचो पर भारत की सदस्यता का समर्थन भी करता है। एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में भारत का अमेरिका सहयोग कर रहा है। भारत एवं अमेरिका के संबंधों के कारण चीन की मोतियों की माला नीति को संतुलित किया जा सकता है। इसके साथ ही भारत की तकनीकी, ऊर्जा, रक्षा आदि आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो सकती है। वर्तमान समय में भारतीय विदेश नीति में आये परिवर्तन के कारण भारत के वैश्विक स्तर में बढ़ोत्तरी हुई है। चूंकि 21वीं सदी एशिया की सदी है जिससे वैश्विक स्तर पर विभिन्न मामलों में भारत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका में होगा।

संदर्भ

1. nato.int/docu/speech/2003/S0311129.htm
2. Dubey, Muchkund (2016), India's foreign policy"copiing with the changing world, Hyderabad, Orient Blackswan Private Limited, P. 209
3. Evic S. Rubin, (2011), America, Britain and Swarj: Anglo-American Relations and Indian Independance, 1939-1945, oniline:web https"//doi.org/10.1080/14736489.211.548245
4. Dubey, Muchkund (2017), India's foreign policy:copying with the changing world, Hyderabad, Orient Blackswan Private Limted. P.209
5. Ministry of External Affairs (1971), Treaty of Peace, Friendship and cooperaton, [online:web] mea.gov.in/bilateral.documents.htm\dt1/5139
6. BARC, Indian nuclear programme (online:web) https:www.atomicheritage.org/print/history/ Indian-Nuclear-Programme
7. IBID
8. BBC, India Joins Elite missile control group MTCR (online:web) bbc.com / news/world_asia_ india-36648279.
9. Kollol Bhattacharjee, India admitted to Australia group, (online:web) thehindu.com/news/national/India-admitted-to-asutrah-group/article2247543.ece.
10. U.S.Department of Energy, The mahhattan Project:on intereactive history. (Online:web)https:www.osti.gov/opennnet/monhatia.project history/events/1945/tinity.htm.
11. IBID.
12. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2007), समकालीन विश्व राजनीति, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., पे0 1–15
13. L.H. Woolsey, The uniting for peace resolution of the united nations, [online:web) https://doi.org/10.2307/2194786
14. Treaties.on/org/doc/publication/UNTS/volume%20136/volume_136_I-1832_English.pdf.
15. Josy Joseph, US forcess had orders to Indian Army in 1971 [online web] timesindia.indiatimes.com/india.forces_had_orders-to-target-Indian-Army-in-1971/articlesshow/10625404.cms
16. SAFPO, India US millitary cooperation:Deocratic firepowers (online:web) medium.com/safpo_debasis/india_us_millarty_cooperation_democratic_firpower_f6b07c3dc381
17. Prakash K. Dutta, can china really encircle India with its string of perls\ The great game of Aisa, [online:web] indiatoday.in/india/story/china-encircle-india-string of pearls-982930-2017-06-15.
18. Ministry of foreign affairs of Japan, "Japan-India-summit meeting (online"web) mafa-go.jp/s_S/sw/in/page 23e-00039.html.
19. Council of Foreign Relationship, US-India Relations 1947-2020, [online:web] efr.ordg/timelien/us-india-relations
20. Jayshree Bajoria & Esther Pan (2010), The U.S. India nuclear deal (online web) http://www.cfr.org/background/us-india-nuclear-deal.

21. MEA Joint statement issued after the conclusion of US-India stdrategic dialogue:(online:web)mea.gov.in/bilateral-documents.htms\dt1/4119/ joint+statement+issued+after+the+conclusion+of+us+India+strategic+dialogue

22. Malay Gupta (2019), India-US Relation (2001-2019), [online:web' thequcit.org.in/foregin-relations/india_india_us-relations-2001-2019/

23 विदेश मंत्रालय भारत सरकार, भारत–अमेरिका द्विपक्षीय संबंध (online:web) mea.gov.in/protal/foreignrelation/India-Us_bilatera-eb 2020-hindi.pdf

24. MEA, "Brief of India-US Relations." (online:web) ema.gov.in/protal/foreign relation/India-US-brief.pdf

25. Dinkar Pari, "What is Lemoa? (online web) thehindu.com/news/national/what-is-LEMOE/aricle 15604647.ece

26. Council on foreign relation, "US-India relations", (online web) efr.org/timeline/ US-India-relations.

27. घई, यू.आर. (2013) भारतीय विदेशनीति, जालंधर, न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कम्पनी, पेज 179

28. Council on foreign relations, "US India Relations". (online web) efr.org/timeline/us-india-relations

29. Ibid.

30. Avtar Singh Bhosind (Ed.2006), India's foreign relations 2006 documentss, (online web) mea. gove.in/images.pdf/main_2006.pdf

31. MEA, India-United States Relations." (online web) mes.gov.in/portal/foreign relation/USA-15-01-2016.pdf.

32. MEA, "Brief on India-U.S. Relations", (online:web) mea.gov.in/portal/foreign relations/india-us-brief.pdf.

33. Councile of Foreign Relations. "US-India Relations", (online web) cfr.org/timeline/ us-india-relations.

34. घई, यू.आर. (2013), भारतीय विदेशनीति, जालंधर, न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कम्पनी, पेज 179

35. Council on foreign relations, " US India Relations." (online web) cfr.org/timeline/us-india-relations

36. MEA, "Brief on India-US Relations," [online web] mea.gov.in/portal/foreignrelation/india-us-brief.pdf.

37. Council on foreign relations," US India Relations." (online web) cfr.org/timeline/us-india-relations

38. Statements & release of white hous, "Text of a Letter to the Speaken of the Hosue of Represantatives and President of teh senato", [online"web' whitehouse.gov/briefings-statements/text_letter_speaker-house-representatives president-senato_8/

39. Council on foreign relations,"US India Relations." (online web) cfr.org/timeline/us-india-relations

40. U.S. Department of State, "US Relations with India; [online web] state.gov/US.relations-with-india

बी0एड0 महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन

रश्मि जादौन
शोधार्थी, शिक्षक शिक्षा विभाग

प्रस्तावना –

प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण होता है जिसमें उसे रहना एवं जीना होता है। व्यक्ति को अपने आपको अपने प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के अनुकूल ढालने को मनोवैज्ञानिक भाषा में समायोजन कहते है।

मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के द्वारा समायोजन करने की योग्यता का परिणाम है। जो व्यक्ति अपने आपको अपने प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के अनुसार जितना अधिक सही रूप में ढाल लेता है। वह मानसिक रूप से उतना ही अधिक स्वस्थ होता है।

मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति का व्यक्तित्व असमायोजित हो जाता है और वह स्वयं तथा समाज के लिये हानिकारक व्यवहार करने लगता है। व्यक्ति एक मनोशारीरिक प्राणी है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार शारीरिक व मानसिक दोनों घटकों पर निर्भर करता है। जब शरीर व मन प्रभावशाली व उचित ढंग से कार्य करते हैं तो व्यक्ति को पूर्ण रूपेण स्वस्थ कहा जा सकता है। जब व्यक्ति अपने मानसिक स्वास्थ्य पर नियन्त्रण नहीं रख पाता तो अनेक समस्यायें उत्पन्न होती है। मानसिक रूप से अस्वस्थ छात्र–छात्राओं में पढ़ाई के प्रति विरक्ति होती है। जिससे वे सामाजिक वातावरण, शैक्षिक वातावरण एवं विद्यालयों में समायोजन करने में असफल होते है। ऐसे व्यक्तियों में अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता अच्छी नहीं होती है। उनकी मानसिक अस्वस्थता का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन एवं संवेगात्मक बुद्धि पर पड़ता है।

समस्या कथन –

बी0एड0 महिला एवं पुरूष प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।

समस्या में प्रयुक्त चरों का परिभाषीकरण

बी0एड0 प्रशिक्षु –

बी0एड0 प्रशिक्षु से तात्पर्य स्नातक स्तर की परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण करने के बाद उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर शिक्षण करने वाले भावी शिक्षकों से है।

मानसिक स्वास्थ्य –

मानसिक स्वास्थ्य का अर्थ मानसिक रोगों एवं दोषों का अभाव तथा मानसिक कार्य व्यवस्था का सम्यक संचालन है। वह व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ है जिसमें मानसिक रोगों, उलझनों, निराशाओं एवं अविश्वास ग्रन्थियों से रहित मानसिक कार्य करने की प्रक्रिया संतुलित और व्यवस्थित रूप में पायी जाये।

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य बी0एड0 महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

अध्ययन की परिसीमायें –

1. शोध अध्ययन में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध बी0एड0 कालेजों को लिया गया है।
2. इस शोध अध्ययन में बी0एड0 पाठ्यक्रम में अध्ययनरत द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षुओं को लिया गया है।
3. शोध अध्ययन में 100 प्रशिक्षुओं का न्यादर्श बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध बी0एड0 कॉलेजों से लिया गया है।
4. यह शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश राज्य के बुन्देलखण्ड क्षेत्र के झाँसी मण्डल तक सीमित है।
5. इस शोध अध्ययन में बी0एड0 छात्राध्यापिकाओं और छात्राध्यापकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन –

1. पी0शुक्ला (2009) ने आदिवासी लड़कियों की मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति और समायोजन की समस्याओं का अध्ययन किया और पाया कि मानसिक स्वास्थ्य और समायोजन की समस्याओं के बीच एक नकारात्मक सम्बन्ध मौजूद है।
2. डॉ0 नितिन बाजपेई (2012) ने हाईस्कूल विद्यार्थियों के समायोजन के सन्दर्भ में मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया और पाया कि उत्तम समायोजन के विद्यार्थी सार्थक रूप से औसत एवं निम्न समायोजन के विद्यार्थियों की अपेक्षा उत्तम मानसिक स्वास्थ्य जैसे प्रसन्न रहना, संवेगात्मक स्थिरता व सामाजिक परिक्वता रखते हैं।
3. योगेश कुमार, पी0 पाठक (2014) ने कॉलेज के छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य को मापने के लिये अध्ययन किया और पाया कि मानसिक स्वास्थ्य में लड़कों और लड़कियों के बीच महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है तथा उन्होंने मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक समायोजन के बीच महत्वपूर्ण सम्बन्ध देखा।
4. डॉ0 अजीत कुमार सक्सेना (2016) ने प्रभावी एवं अप्रभावी शिक्षकों के आत्मसम्मान आत्मप्रकटीकरण एवं मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन किया और पाया कि प्रभावी व अप्रभावी अध्यापकों का मानसिक स्वास्थ्य औसत स्तर का है।
5. सुषमा भारती (2016) ने बेरोजगार युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर अवसाद की चिन्ता का अध्ययन किया और पाया कि नियोजित और बेरोजगार युवाओं के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है।
6. आशा यादव चॉदनी (2017) ने बी0एड0 छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव का अध्ययन किया और पाया कि बी0एड0 के छात्रों और छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं पाया गया।

7. एस0आइ0 जोयल एम त्यागी (2018) ने नियोजित और बेरोजगार महिलाओं के वैवाहिक मानसिक स्वास्थ्य स्तर का निर्धारण करने के लिये अध्ययन किया और पाया कि बेरोजगार महिलाओं की तुलना में नियोजित महिलाओं ने उच्च अंहकारी और खराब वैवाहिक समायोजन प्रदर्शित किया। बेरोजगार महिलाओं ने रोजगार प्राप्त करने वाली महिलाओं की तुलना में बेहतर वैवाहिक समायोजन प्रदर्शित किया।

शोधविधि –शोधार्थी द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

प्रतिदर्श – प्रस्तुत शोध के प्रतिदर्श के लिये बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी से सम्बद्ध झाँसी मण्डल के जिला जालौन, झाँसी व ललितपुर के 5 कॉलेजों से 100 प्रशिक्षुओं का प्रतिदर्श बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिचयन विधि की लॉटरी तकनीकी का प्रयोग करके चुना गया है जिसमें 50 महिला व 50 पुरूष प्रशिक्षु सम्मिलित है।

उपकरण – शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य को मापने के लिये डॉ0 प्रमोद कुमार बल्लभ विद्या सागर, गुजरात द्वारा निर्मित मेण्टल हेल्थ चेक लिस्ट (MHCL-KP) का प्रयोग किया गया है। यह चेकलिसट मानसिक और शारीरिक दो भागों में विभक्त है।

सांख्यिकीय प्रविधियां –

शोधार्थी ने शोध अध्ययन के लिये मध्यमान, मानक विचलन तथा C.R. परीक्षण का प्रयोग किया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या –

1. परिकल्पनाः बी0एड0 महिला एवं पुरुष प्रशिक्षुओं के मानसिक स्वास्थ्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारिणी–1

N	M	SD	C.R.	d.f	Significant Level
50 महिला प्रशिक्षु	16.8	4.55	2.74	98	0.5 स्तर 1.98
50 पुरूष प्रशिक्षु	17.2	4.29			0.1 स्तर 2.63

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि महिला प्रशिक्षुओं का मध्यमान 16.8 है पुरुष प्रशिक्षुओं का मध्यमान 17.2 है। तथा महिला प्रशिक्षुओं का मानक विचलन 4.55 है और पुरूष प्रशिक्षुओं का मानक विचलन 4.29 है। 05 सार्थकता स्तर पर मूल्य 1.98 तथा .01 सार्थकता स्तर पर 0 मूल्य 2.63 है। गणना करने से प्राप्त क्रान्तिक अनुपात का मान 2.74 है जो 0.5 स्तर तथा 0.1 स्तर पर सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः इन दोनों स्तरों पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की गयी।

योग-प्राणायाम एवं मूल्य

डॉ० सुरेन्द्र यादव
असि. प्रो. (एम0एड0 विभाग)

किसी समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सभ्यता, संस्कृति और मूल्य होते हैं। आज जहाँ अंग्रेजी तथा अंग्रेजियत को प्रगति का प्रतीक समझा जा रहा है वहीं भारतीय वेशभूषा, भाषा, धर्म, संस्कृति व सभ्यता को हेय दृष्टि से देखा जाता है। नग्नता, अभद्रता, मदिरापान का चलन फैशन के साथ बढता चला जा रहा है। बढ़ते तलाक, बढ़ते अपराध, बढ़ती हत्यायें, आत्महत्यायें, अशान्ति, चिन्ता, तनाव तथा छोटी-छोटी बच्चियों तक का घरों में और बाहर सुरक्षित न रहना समाज की समसामयिक दशा को वर्णित करता है। वर्तमान में 'जिओ और जीने दो' का उच्च आदर्श अब समाप्ति की ओर है। शिक्षा के क्षेत्र में भी सामाजिक व नैतिक मूल्यों के ह्रास होने, अत्यधिक भौतिकतावादी दृष्टिकोण होने के साथ-साथ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में पूर्णतया विश्वास हो जाने से आपसी कलह एवं सामाजिक आतंक में काफी तेजी से वृद्धि देखने को मिल रही है। आज हमारा दृष्टिकोण साधना को छोड़ संसाधनों तक सिमटकर रह गया है। आज अरविन्द, टैगोर, महात्मा गाँधी, विवेकानन्द एवं महात्मा बुद्ध जैसे महापुरुषों के उच्च आदर्श एवं मूल्य पालन की बातें केवल सिद्धान्तों तक है, व्यावहारिकता में नहीं है। आज अधिकांश वर्ग, जिसमें शिक्षक एवं प्रशिक्षक भी सम्मिलित हैं, संस्कारविहीन व कर्तव्यविहीन होकर समाज की दिशा व दशा सुधार रहे हैं। परिणामतः मूल्य ह्रास के कारण शिक्षा व समाज दोनों की दिशा व दशा सही नहीं है। ऐसी दशा, परिस्थिति एवं वातावरण में सकारात्मक सुधार एवं मूल्यपरक व्यक्तित्व बनाने में 'योग शिक्षा' की महती आवश्यकता है।

आज वर्तमान समाज में मूल्यों, मान्यताओं, परम्पराओं, नैतिक विचारों एवं सकारात्मक नीतियों आदि का क्षरण हो रहा है। भारत को सांस्कृतिक मूल्यों का पुरोधा माना जाता है। परन्तु विडम्बना यह है कि नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के पतन से ही सम्बन्धित घटनायें इतनी प्रचुरता में विद्यमान हैं कि लगता है कि नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य 'वाद' प्रक्रिया से गुजरकर 'प्रतिवाद' की प्रक्रिया से गुजर रहा है किन्तु अब 'संवाद' की प्रक्रिया को पुनः लाने के लिये समाज के बुद्धजीवी वर्ग को गम्भीरता से मूल्य उन्नयन के सकारात्मक पहलुओं पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है जिसके फलस्वरूप समाज की दशा व दिशा दोनों में सुधार हो सके।

योग मात्र एक शारीरिक व्यायाम नहीं है अपितु योग एक जीवनदर्शन है, योग एक सम्पूर्ण आध्यात्मिक विद्या है, योग एक सम्पूर्ण सहज, सरल एवं संतुलित जीवनशैली है। योग को व्यापक रूप में आत्मसात् करने से जीवन एक उत्सव सा बन जाता है तथा इसी से एक समतामूलक, सहज, विकसित, स्वस्थ व सुखी समाज का निर्माण होता है। योग के निर्विवाद सत्य से हमें विदित होता है कि समस्या का समाधान बाहर नहीं, भीतर है। जब तक हम योग की शरण में नहीं जाते तब तक हम समाधान की बजाय व्यवधान ही उत्पन्न करते हैं। योग से शरीर का एनावोलिज्म, कैटावोलिज्म एवं मेटावोलिज्म अर्थात् वात, पित्त और कफ सम अवस्था में आ जाते हैं। मन शांत हो जाता है और गहरा संतोष भीतर से मिलता है।

अतः पूरा अवसाद दूर हो जाता है और व्यक्ति भारतीय संस्कृति का गौरव सम्वर्द्धन करते हुये 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की स्वस्थ व सुखी परम्परा का निर्माण करता है। अतः छोटे से जीवन की बहुत लम्बी यात्रा योग की शरण में रहकर तय करें तो निश्चित रूप से समाज एवं राष्ट्र के नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को ह्रास होने से पूर्णतः बचाया जा सकता है।[1]

आचार्य बालकृष्ण के अनुसार–''अच्छी आदतों के पुंज को मूल्य कहते हैं जिसे पूरा करने के लिये व्यक्ति जीता है तथा आजीवन प्रयास करता है।''

शब्दकोश के अनुसार– ''अन्तर्निहित अच्छाई अथवा कल्याण भाव ही मूल्य है।''

सी0वी0 गुड् के अनुसार– ''मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और सौन्दर्यबोध की दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। लगभग सभी विचार मूल्यों के अभिष्ट चरित्र को स्वीकार करते हैं।''

आलपोर्ट के अनुसार– ''मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुये कार्य करता है।''

उपरोक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि मूल्य एक आचरण की संहिता है, यह अच्छे गुणों का पुंज है जिसको व्यवहार में लाकर व्यक्ति अपने उद्देश्यों को प्राप्त करता है और अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। सर्वविदित यह भी है कि मूल्य समय के साथ बदलते रहते हैं, जो आदर्श या मूल्य पहले थे वे आज नहीं है। नैतिक एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे चलने वाला तथा उच्चकोटि के जीवनमूल्यों के लिये विख्यात भारत वर्ष आज अपनी बूढ़ी आँखों से आदर्शों के गगनचुम्बी प्रासाद को ढ़हते हुये देख रहा है। मूल्यहीन जनमानस निराश हुआ अपने पथ से गिर चुका है तथा अनेकों कुकृत्य करने से कोई परहेज भी नहीं कर रहा है।[2] विनाश के बाद सृजन और पतन के बाद उत्थान प्रकृति का शाश्वत नियम है। दुःख की काली रात बीत जाती है तो सुख देने वाला सवेरा अवश्य आता है। अतः हम पुनः उन्हीं आदर्शों को पा सकते हैं जिनके बल पर हमारा देश विश्वगुरु कहा जाता था। इसके लिये हमें एक पिता के रूप में, एक अभिभावक के रूप में, एक शिक्षक के रूप में तथा एक नेता के रूप में सकारात्मक प्रयास करना होगा ताकि आने वाली पीढ़ी के पैरों को फिसलने से बचाया जा सके।

हमारे देश के ऋषि महर्षियों ने योग शिक्षा के आचरण एवं अनुशासन की जो पूंजी दी है उसे धारण करना होगा। योगरूपी आदर्श मूल्यों का जो खजाना हमें सौंपा है, उसे हर बच्चे के हृदय में रोपित करना ऐसे में शिक्षक ओर अन्य सभी संस्थाओं का दायित्व है कि योग आधारित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को इस प्रकार व्यावहारिक रूप दें कि बच्चे तथा व्यक्ति आदर्शवान, संस्कारवान और मूल्यवान बन ''वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की संकल्पना को मूर्तरूप देकर अपने राष्ट्र को पुनः जगतगुरु के रूप में स्थापित कर सकें।

कुछ महत्वपूर्ण योग-प्राणायाम तथा उनके लाभ :

प्राणायाम से एक स्वस्थ एवं संवेदनशील मानव का निर्माण होता है। एक शरीर व मन से स्वस्थ तथा संवेदनशील व्यक्ति हिंसा, अपराध, बेईमानी, रिश्वतखोरी, चोरी, व्याभिचार, हत्या, आत्महत्या, दुराचार,

राष्ट्रदोह व विश्वासघात आदि नहीं कर सकता। इन सभी सामाजिक बुराईयों से सभी क्षेत्र में पनप रहे अविश्वास, असंवेदनशीलता व कर्तव्य विमुखता का भी एक मात्र समाधान, प्राणायाम व ध्यान ही है।

योग प्राणायाम करने से हृदय, फेफड़े व मस्तिष्क सम्बन्धी समस्त रोग दूर होते हैं। साथ–साथ रोग–प्रतिरोधक क्षमता अत्यधिक विकसित हो जाती है। नकारात्मक विचार समाप्त होते हैं तथा प्राणायाम का अभ्यास करने वाला व्यक्ति सदा सकारात्मक विचार व उत्साह से भरा हुआ होता है। वात, पित्त व कफ त्रिदोषों का शमन हो जाता है।

1. भस्त्रिका प्राणायाम– इस प्राणायाम के अन्तर्गत श्वास को पूरा अन्दर डायफार्म तक भरना एवं बाहर छोड़ना होता है। यह क्रिया मन्द गति से, मध्यम गति से तथा तीव्र गति से अपनी सामर्थ्य अनुसार की जा सकती है। सर्दी, जुकाम, एलर्जी, श्वास रोग इत्यादि समस्त कफ रोग दूर होते हैं। फेफड़े सबल होते हैं। साथ–साथ हृदय एवं मस्तिष्क को भी शुद्ध प्राण वायु मिलने से आरोग्य लाभ होता है तथा मन एकाग्र होने लगता है।

2. कपालभाँति प्राणायाम–भस्त्रिका में रेचक (श्वास बाहर छोड़ना) व पूरक (श्वास अन्दर लेना) में समान रूप से श्वास–प्रश्वास पर दबाव डालते हैं जबकि कपालभांति में मात्र रेचक (श्वास को शक्तिपूर्वक बाहर छोड़ना) पर ही पूरा ध्यान दिया जाता है। इससे मस्तिष्क व मुखमण्डल पर तेज व सौन्दर्य बढ़ जाता है, समस्त कफ, रोग, दमा, श्वास, एलर्जी के साथ ही हृदय, फेफड़े एवं मस्तिष्क के समस्त रोग दूर हो जाते हैं। मन स्थिर, शान्त व प्रसन्न रहता है तथा नकारात्मक विचार नष्ट हो जाते हैं जिससे तनाव से छुटकारा मिलता है।

3. अनुलोम–विलोम प्राणायाम– दाहिने हाथ को उठाकर दाहिने हाथ के अंगूठे द्वारा दाहिनी नासिका तथा मध्यमा या अनामिका अंगुलियों के द्वारा बायीं नासिका को बन्द करना चाहिये। हाथ की हथेली को नासिका के सामने नहीं रखना चाहिये। अनुलोम–विलोम प्राणायाम बांयी नासिका से प्रारम्भ करना चाहिये। अंगूठे के माध्यम से दाहिनी नासिका को बन्द करके बांयी नाक से श्वास धीरे–धीरे अन्दर भरना चाहिये। इसके पश्चात अनामिका या मध्यमा से बायीं नासिका को बन्द करके दाहिने नाक से पूरा श्वास बाहर छोड़ देना चाहिये। यह क्रिया मन्द, मध्यम व तीव्र अपनी सामर्थ्य अनुसार करनी चाहिये। इस प्राणायाम से शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ मिलता है। इस क्रिया के करने से बहत्तर करोड़, बहत्तर लाख दस हजार दो सौ दस नाड़ियां परिशुद्ध हो जाती हैं। सम्पूर्ण शरीर स्वस्थ्य, कान्तिमय एवं बलिष्ठ बनाता है। हृदय की शिराओं में आये हुये ब्लाकेज खुल जाते हैं। आनन्द, उत्साह व निर्भयता की प्राप्ति के साथ–साथ हमारे विचार नकारात्मकता से परिवर्तित होकर सकारात्मकता की ओर बढ़ने लगते हैं। तन, मन, विचार एवं संस्कार सब परिशुद्ध होने लगते हैं।

4. भ्रामरी प्राणायाम–इस प्राणायाम के अन्तर्गत श्वास पूरा अन्दर भरकर मध्यमा अंगुलियों से आंख के पास से दोनों ओर से ढ़के तथा अंगूठों के द्वारा दोनों कानों को पूरा बन्द कर लें। तत्पश्चात भ्रमर की भांति गुंजन करते हुये नाद रूप में ओऽम् का उच्चारण करते हुये श्वास को बाहर छोड़ दें। इस प्राणायाम को करने से मन की चंचलता दूर होने लगती है। मानसिक तनाव, उत्तेजना, उच्च रक्तचाप एवं हृदय रोग आदि में अत्यन्त लाभप्रद है।

5. उज्जायी प्राणायाम– इस प्राणायाम के अन्तर्गत गले को सिकोड़कर श्वास अन्दर भरते हैं। जैसे खर्राटे लेते समय गले से आवाज आती है, वैसे ही इसमें श्वास लेते समय कण्ठ से ध्वनि होती है। हवा का घर्षण नाक में नहीं होना चाहिये बल्कि कण्ठ में घर्षण होना चाहिये। टॉन्सिल, थायराइड ग्रन्थि, क्षय, ज्वर व प्लीहा आदि रोग में लाभप्रद है। अनिद्रा, मानसिक तनाव एवं कुण्डलिनी जागरण में उत्तम लाभ प्राप्त होता है।

उपर्युक्त पांच महत्वपूर्ण योग–प्राणायाम नियमित रूप से करते रहने से जीवन में दिव्यता आती है। सम्पूर्ण जीवन उत्सव बन जाता है तथा व्यक्ति वास्तविक सुख, शान्ति एवं आनन्द की अनुभूति करते हुये परमप्रद को प्राप्त करता है।

मूल्य विकास में योग शिक्षा की भूमिका व कार्य :

किसी व्यक्ति की पहचान उसके चरित्र से होती है। इस विषय में जीवधारी के रूप में मनुष्य की एक अलग पहचान उसके अपने चरित्र के आधार पर ही होती हैं। अपनी जिन चारित्रिक विशेषताओं का वह प्रतिनिधित्व करता है। उसके आधार पर प्रत्येक व्यक्ति अनोखा होता है। एक प्रकार से चरित्र को उसकी आत्मा कहा जा सकता है। आत्मा अनेक रूपों में प्रकट हो सकती है। कोई व्यक्ति सौम्य व संकोची हो सकता है या कोई अहंकारी एवं रौबदार हो सकता है। कोई अच्छे कामों के प्रति समर्पित हो सकता है या कोई संकीर्ण स्वार्थपूर्ण उद्देश्यों के धुन में लगा हो सकता है। हम जैसे भी चरित्र के धनी हैं उसके प्रेरक तत्व केवल मानवीय गुणों या मानवीय सीमाओं तक ही सीमित नहीं होने चाहिये अपितु इन सभी से परे हमारे चरित्र का लक्ष्य उस देवत्व की अभिव्यक्ति या अनुभूति होना चाहिये जो वस्तुतः हम सब में प्रच्छन्न रूप से पहले से ही विद्यमान है। जीवन का लक्ष्य इसी दैवी गुण को पोषित करना, अपने सामान्य मानवीय अस्तित्व को ईश्वरीय बनाना है जिसका हम प्रतिनिधित्व करते हैं।

मनुष्य तीन तत्वों का मिश्रण है– पाशविकता, मानवीयता व देवत्व। इस श्रृंखला में मानवीयता की कड़ी को देवत्व के अधिकाधिक समीप ले जाने के लिये अपने को दोषहीन बनाना होगा तथा पाशविक प्रवृत्तियों को रोकने की दिशा में प्रयास होना चाहिये। परिणामतः सच्चे मानवीय चरित्र की प्राप्ति होगी। इस स्थिति के उपरान्त देवत्व की ओर जाने का मार्ग प्रारम्भ होगा। देवत्व प्राप्त करने हेतु कुछ मार्गो का अनुशरण करना होगा यथा–

1. स्वयं को दुर्भावना, लोभ, ईर्ष्या, शत्रुता व हिंसा से बचना होगा।
2. ईमानदारी, सत्यनिष्ठा व नैतिक कर्तव्यों के प्रति सचेत रहना होगा।
3. बड़े व विशिष्ट व्यक्तियों का सहज सम्मान करना होगा।
4. प्रसन्नता व परोपकार की भावना रखनी होगी।
5. विलासिताओं के प्राचर्य के विपरीत साधारण जीवन का आदर्श अपनाना होगा।

स्वामी विवेकानन्द चाहते थे कि समाज का प्रत्येक सदस्य दुर्बल मानसिकता का त्याग करें, मानसिक व नैतिक शक्ति प्राप्त करे, देश की एकता के लिये कार्य करें, क्षुद्र स्वार्थों से ऊपर उठे, अंधविश्वासों को समाप्त करें एवं सर्वोपरि महिलाओं का अत्यधिक सम्मान करें।

आज योग के माध्यम से अच्छे नागरिक को अच्छा मनुष्य बनाया जा सकता है। अच्छाई की

विशिष्टताएं मनुष्य में अन्तर्निहित हैं। केवल उन्हें योग शिक्षा के माध्यम से बाहर लाने की आवश्यकता है। योग शिक्षा के माध्यम से उन्हें जितना उभारा जायेगा, मनुष्य में देवत्व के लक्षण उतने ही अधिक परिलक्षित होने लगेगें।

मूल्य विकास एवं यम, नियम योग :

आष्टांग योग के माध्यम से महर्षि पतंजलि का उद्देश्य व्यक्ति को अपनी आत्मा को प्राप्त करने के लिये तैयार करना है। आत्मा की अनुभूति तभी संभव है जब व्यक्ति नैतिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का यथावत पालन करें। इसके लिये पतंजलि ने सर्वप्रथम यम और नियम का प्रतिपादन किया जो क्रमशः सामाजिक अनुपालन व वैयक्तिक निग्रह कहलाते हैं। ये पांच 'यम' हैं– 1. सत्य 2. अहिंसा 3. अस्तेय 4. अपरिग्रह तथा 5. ब्रह्मचर्य। इसी प्रकार पांच नियम हैं– 1. शौच 2. संतोष 3. तप 4. स्वाध्याय तथा 5. ईश्वर प्राणिधान।

समाज में रहने के लिये प्रत्येक व्यक्ति को उक्त यम एवं नियम को आत्मसात करना होगा तभी जीवन परिपूर्णता की दिशा में सफल यात्रा कर सकेगा।

योग आधारित कुछ शोध के निष्कर्ष :

दूबे (2000)– ने योग शिक्षा प्राप्त करने वाले तथा योग शिक्षा नहीं प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन के अध्यनोपरान्त पाया कि योग शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों में लगनशीलता, मानवता, आत्मिक शक्ति तथा नैतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति, योग शिक्षा नहीं प्राप्त करने वाले छात्रों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

श्रीवास्तव (2000)– ने योगाभ्यासी तथा गैर योगाभ्यासी छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व के तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि योगाभ्यासी छात्र–छात्राओं में उच्च सामाजिकता, आज्ञाकारिता, शालीनता, नैतिक एवं ओजस्वी गुण गैर योगाभ्यासी छात्र–छात्राओं की अपेक्षा अधिक होती है।

कुमार, भवेश (2015) ने अपने शोध अध्ययन में सेवापूर्व शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं में तनाव पर योगाभ्यास के प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष स्वरूप पाया कि योगाभ्यास करने वाले शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं में तनाव पर प्रभाव पड़ता है अर्थात् तनाव कम हुआ।

पतंजलि योगपीठ के योग अनुसंधान एवं विकास विभाग द्वारा योग प्राणायाम के अभ्यास के प्रभाव के अध्ययन में मानसिक तनाव में कमी, सकारात्मक सोच में वृद्धि, याददाश्त में वृद्धि, पारिवारिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन, आपसी प्रेम, प्रसन्नता, बड़ों के प्रति सम्मान, दुखियों व गरीबों के लिये अच्छा करने की भावना एवं नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों आदि में सकारात्मक वृद्धि दृष्टिगत हुई। अतः कई शोध अध्ययनों से स्पष्ट हो चुका है कि वर्तमान मूल्यों के उन्नयन में योग पद्धति अति प्रासंगिक व महत्वपूर्ण है।

मूल्य, योग तथा निष्कर्ष :

संस्कृत में मूल्यों के लिये धर्म अथवा सदाचार शब्द का प्रयोग किया गया है और धर्म की व्याख्या एक ऐसे मूल्य समुच्चय के रूप में की गयी है जिस पर सृष्टि टिकी हुई है एवं जिसे अभाव में इसका अस्तित्व ही संकट में पड़ जायेगा। शंकराचार्य ने धर्म की परिभाषा उन मूल्यों के रूप में की है जिनसे मानव मात्र का अस्तित्व है व जिनसे इस संसार में एवं आध्यात्मिक संसार में आनन्द की प्राप्ति होती है।

योग मूल्यों एवं वास्तविकता को जोड़ने वाली कड़ी है। योग मूल्यानुभूति को गूढ़ अनुभव में रूपान्तरित कर देता है। योग हमें वह शक्ति देता है कि हम मूल्यों के परे जाकर उस परम वास्तविकता का साक्षात्कार कर सकें जिसको वे निरूपित करते हैं। शिक्षा अध्यापन व अधिगम योग की भांति किये जा सकते हैं। कलाओं का अध्ययन भी योग की भांति किये जा सकते हैं। विज्ञान की खोज भी योग की भांति की जा सकती हैं। समाज सेवा भी योग की भांति की जा सकती है। निश्चित रूप से व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन योग में परिवर्तित किया जा सकता है।

महर्षि पतंजलि का स्पष्ट मत है कि बिना सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य व्रत–शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और प्राणिधान नियमों के पालन करे बिना कोई व्यक्ति योग साधना नहीं कर सकता। यह आचार मनुष्य के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार के मूल्य विकास के लिये आवश्यक है।

आज विभिन्न सवालों पर मंथन की आवश्यकता है। हम समाज में जिस प्रकार के मूल्य चाहते हैं क्या आज उस तरह का है? क्या भारत की प्रभुता, एकता, अखण्डता एवं जगतगुरूत्व को पश्चिम की मानसिकता से जकड़े रखकर प्राप्त किया जा सकता है? मूल्य रहित व्यक्ति को सुख, शान्ति एवं आनन्द की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती। समाज की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो जायेगी इसलिये समय रहते योग शिक्षा को शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बनाने के लिये आमूल–चूल परिवर्तन की आवश्यकता है। आज मूल्यपरक समाज का होना मूलभूत आवश्यकता है जिसके लिये सिर्फ कागजों तक सीमित न रखकर प्रत्येक व्यक्ति को योग शिक्षा को अपनी जीवनशैली का अंग बनाना होगा, इसे व्यावहारिक रूप देना होगा तभी आने वाले कल में भ्रष्टाचार, शोषण, हिंसा, व्यभिचार एवं लूट–पाट जैसी भीषण महामारियों को अंकुश लगाने में हम सक्षम हो सकेगें।

'वर्तमान मूल्य एवं योग शिक्षा' के सन्दर्भ में कुछ सुझाव निम्नवत् हैं–

1. शिक्षा के सभी स्तरों पर शिक्षण पाठ्यक्रम में योग शिक्षा एवं मूल्य शिक्षा को सम्मिलित कर अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाये तथा तत्पश्चात् उसे व्यावहारिक रूप देने पर बल दिया जाये।
2. प्रतिदिन योगाभ्यास के क्रम में कम से कम 1 घंटे का समय तथा एक घंटे नैतिक चिन्तन के कार्य के लिये समय निश्चित किये जाये।
3. अनुशासन एवं चरित्र की भावना विकसित करने के लिये स्वयं अपने अन्दर अनुशासन एवं चरित्र को लाना होगा क्योंकि बच्चों का नैतिक अधिगम 'अनुकरण' पर निर्भर करता है।
4. महापुरूषों के जीवन प्रसंगों पर प्रभावशाली व्याख्यान आयोजित कराये जाने चाहिये।
5. जेल में बन्द अपराधियों को योग प्राणायाम तथा नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित विभिन्न पहलुओं पर व्यावहारिक रूप में अभ्यास कराया जाये।
6. यौगिक एवं नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों से प्रेरित होकर यदि कोई व्यक्ति समाज में अच्छे वातावरण का निर्माण करता है तो उसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। साथ ही उसे पारितोषक एवं प्रशस्ति पत्र आदि देकर उसका सम्मान करना चाहिये ताकि सभी तक अच्छा संदेश पहुंचे।

उपर्युक्त बिन्दुओं पर शिक्षक, सरकार एवं मान्य स्वायत्तशासी संस्थाओं एवं सामाजिक संगठनों आदि द्वारा प्रभावशाली कदम उठाया जाना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बालकृष्ण, आचार्य (2007); विज्ञान की कसौटी पर योग, दिव्य प्रकाशन, हरिद्वार, दिव्य योग मन्दिर ट्रस्ट, पतंजलि योगपीठ, पृ0सं0 9–11।
2. दूबे, सत्यनारायण (2007); मूल्य शिक्षा, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन, प्रथम संस्करण।
3. चौबे, कृपाशंकर (2008); समाज, संस्कृति और समय,ठाकुर एण्ड सन्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
4. योग शिक्षा (2015); एम0एड0 कार्यक्रम, नई दिल्ली, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद।
5. पाण्डेय, रामशकल (2011); मानवाधिकार और मूल्य शिक्षण, आगरा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, तृतीय संशोधित संस्करण।
6. पटेल, श्रीकृष्ण एवं डा0 मनोज प्रजापति (2015–16); शारीरिक स्वास्थ्य एवं योग शिक्षा, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन, प्रथम संस्करण।
7. गर्ग, ओमप्रकाश (2010); योग शिक्षा, आगरा, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर।
8. http://www.google.co.in
9. ndl.iitkgp.ac.in
10. shodganga.inflibnet.ac.in

उपाय

एक गर्म दोपहरी के दिन एक किसान बाँसों के झुरमुट में बनी हुई किसी सन्त की कुटिया के पास रुका। उस साल सूखा पड़ा था। पूरे गाँव की फसल चौपट हो गयी थी। किसान ने सोचा, सन्त के पास जाकर उपाय पूछा जाए। वह सन्त के आश्रम पहुँचा, तो देखा वह एक वृक्ष के नीचे बैठे हुए हैं। यह भी उनके सामने बैठ गया। सन्त चुप बैठे थे। चुप्पी तोड़ने के लिए किसान ने ही बात छेड़ी–खेती की हालत बहुत बुरी है। मुझे डर है कि इस साल गुजारा नहीं होगा। यह कहते हुए किसान के स्वर में भय था। सन्त ने सोचा, किसान कोई उपाय पूछ रहा है कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाए ? उन्होंने कहा, तुम पत्थरों को पानी दो। किसान को समझ में नहीं आया कि इससे क्या होगा ? उसने सन्त से इसका मतलब पूछा, तो उन्होंने उसे एक कहानी सुनाई कि एक दिन ऐसा ही सवाल किसी दूसरे किसान ने उससे पूछा था। एक दिन वह गुरु की कुटिया के पास आया, तो उसने देखा कि गुरु एक बाल्टी में पानी ले जा रहे थे। किसान ने पूछा कि वह पानी कहाँ ले जा रहे हैं ? गुरु ने किसान को बताया कि वह पत्थरों को पानी देते हैं, ताकि एक दिन उन पर वृक्ष उगें। किसान को इस पर बहुत आश्चर्य हुआ, वह सम्मान प्रकट करने के लिए मुस्कराते हुए चला गया। जैन गुरु प्रतिदिन पत्थरों को पानी देते रहे और कुछ दिनों में पत्थरों पर काई उग आई। काई में बीज आ गिरे और फिर अंकुरित हो गए। इस किसान ने कौतूहल से पूछा क्या यह सच है, तो गुरु ने उस वृक्ष की ओर इशारा किया, जिसके नीचे वह बैठे थे।

शुक्ल जी के निबंध विषयक विचार

डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी
असि. प्रो. हिन्दी विभाग

शुक्ल जी के निबंध विषयक विचारों को कालक्रमानुसार उनके ग्रंथों 'चिंतामणि' भाग 2 और 3 तथा 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में देखा जा सकता है। निबंध एक 'गद्य विधान' है। यह मुख्यतः विचार प्रसूत अर्थ प्रधान होता है। निबंध के वर्णनात्मक, विचारात्मक, आत्मकथात्मक तथा भावात्मक आदि प्रकार हो सकते हैं। परन्तु प्रवीण लेखक प्रसंग के अनुसार इन विधानों का सुन्दर मेल करके निबंध के नये प्रकार भी रचते रहते हैं। यथा भारतेन्दु के सहयोगियों का निबंध लेखन। भिन्न–भिन्न प्रकार के निबंधों के लक्ष्य भी भिन्न–भिन्न होते हैं। यथा वर्णनात्मक निबंधों का लक्ष्य होता है पाठक की कल्पना को जगा कर उसके सामने कुछ वस्तुयें या व्यापार मूर्त में लाना। विचारात्मक निबंधों का लक्ष्य होता है लेखक के विचारों से पाठक के विचारों का तादाम्य हो जाए। कथात्म्क निबंधों का लक्ष्य होता है किसी वृतान्त या घटना को क्रमबद्ध और रोचक रूप में प्रस्तुत करना। भावात्मक निबंधों का लक्ष्य होता है लेखक द्वारा अपने प्रेम, हास्य, करुणा आदि भावों की व्यंजना करना।

भिन्न–भिन्न प्रकार के निबंधों में भिन्न–भिन्न प्रकार की शैलियों का व्यवहार किया जाता है। यथा विचारात्मक निबंधों में व्यास और समास की रीति, तथा भावात्मक निबंधों में धारा, तरंग और विक्षेप की रीति के साथ–साथ 'प्रलाप शैली' का भी व्यवहार किया जाता है। व्यास शैली में छोटे–छोटे वाक्यों का प्रयोग होता है। इसमें नपे–तुले वाक्य को कई बार शब्दों के कुछ हेर–फेर के साथ कहने का ढंग अपनाया जाता है जो प्रायः समझाने–बुझाने के काम में लाया जाता है। यह विपक्षी को कायल करने के प्रयत्न में बड़े काम की है। महावीर प्रसाद द्विवेदी के विचारात्मक निबंधों में प्रायः इसी शैली का प्रयोग किया गया है। प्रगल्भ शैली का व्यवहार निबंध लेखक किसी आग्रह अथवा संकल्प की स्थिति में करता है यथा पंडित माधव प्रसाद मिश्र की निबंध शैली। विक्षेप शैली में भावावेश द्योतित करने के लिए भाषा बीच–बीच में असम्बद्ध अर्थात् उखड़ी हुई होती है। प्रलाप शैली में किसी नकार भाव विशेष को लेकर बार–बार दुहराव किया जाय। इस शैली को ठाकुर जगमोहन सिंह जी ने अपने निबंधों में अपनाया है। इनके अतिरिक्त शुक्ल जी और भी कई प्रकार की शैलियों की चर्चा अपने ग्रंथों में करते हैं। 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' में वे लिखते हैं कि आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए जिसमें व्यक्तित्व अर्थात् व्यक्तिगत विशेषता हो। 'व्यक्तित्व के सन्निवेश' को वे अनिवार्य तो मानते हैं किन्तु यह यथोचित, प्रकृत और मर्यादित होना चाहिए। निबंध में व्यक्तिगत विशेषता के सन्निवेश का अर्थ यह नहीं है कि निबंध विचार–शून्य कर दिया जाय अथवा विचार–श्रृंखला को विच्छिन्न कर दिया जाए। सुसम्बद्ध विचार श्रंखला तथा प्रकृत अर्थ योजना के अभाव में उच्छृंखल–विचार–प्रवाह को शुक्ल जीने स्वीकार नहीं किया है। निबंध का लेखक स्वेच्छा से विषय की सीमाओं में विचरण करता हुआ अपनी बात कहने के लिए स्वतंत्र है, किन्तु किसी–न–किसी संबंध सूत्र का आधार उनके पास होना ही चाहिए।

व्यक्तिगत विशेषता विचारात्मक निबंधों में भी विद्यमान हो सकती है, होती ही है। निबंध के लिए कोई विषय या कोई बात अवश्य होना चाहिए, चाहे वह 'छोटी से छोटी' तुच्छ–से–तुच्छ क्यों न हो। निबंध लेखक का अपनी विशिष्ट दृष्टि एवं प्रकृति के अनुसार विषय विशेष को भिन्न–भिन्न रूपों में देखना और प्रस्तुत करना ही 'अर्थ संबंधों का वैचित्र्य' है। अर्थगत वैशिष्ट्य–वैचित्र्य के कारण निबंध की भाषा और अभिव्यंजना प्रणाली भी विशिष्ट एवं विचित्र हो जाया करती है।

निबंध का लेखक तत्व–चिंतक से भिन्न होता है। निबंध लेखक जिधर चलता है, अपनी सम्पूर्ण मानसिक सत्ता के साथ अर्थात् बुद्धि और भावात्मक हृदय दोनों को साथ लिए हुए चलता है। भावात्मक और काव्यात्मक गद्य का गद्य–साहित्य में विशेष स्थान है। परन्तु उसका सर्वत्र प्रयोग न ही उचित है और न वांछित, बस यह यथोचित, मर्यादित होता है। कवियों की आलोचना जैसे गम्भीर विचारपरक विषयों में भी यदि भावात्मक गद्य का दखल होगा तो इससे हमारे साहित्य में घोर विचार शैथिल्य और बुद्धि का आलस्य फैलने की आशंका है। ऐसी स्थिति में अनुशासन, गंभीरता और व्यवस्था ही काम आती है। निबंध अपने प्रकृत रूप में असंदिग्ध रूप से विषय प्रधान और बुद्धि प्रधान हैं, व्यक्ति–प्रधान और हृदय–प्रधान या भाव प्रधान नहीं। अर्थ का अभिप्राय वस्तु या विषय से है। अर्थ चार प्रकार के हैं–प्रत्यक्ष, अनुमित, आप्तोपलब्ध, कल्पित।

निबंध–लेखन कला का तात्पर्य है–'सूक्ष्म विचारों की दृष्टि संपन्नता'। निबंध लेखन एक गूढ़ और गंभीर कार्य है। विचारोद्‌भावन और विचारोत्तेजन करना निबंध का प्रधान गुण होना चाहिए। निबंध पढ़ते ही पाठक की बुद्धि उत्तेजित होकर किसी नई विचार पद्धति पर दौड़ पड़े, वही निबंध अपने उद्देश्य में सफल समझा जाएगा। इनमें भाषा की नूतन–शक्ति का चमत्कार भी लक्षित होता है। शुद्ध विचारात्मक निबंधों का चरम उत्कर्ष वहीं कहा जा सकता है जहां एक–एक पैराग्राफ में विचार दबा–दबा कर कसे गए हों और एक–एक वाक्य किसी सम्बद्ध विचार–खण्ड को लिए हों। निबंध में विचारों की सघन कसावट आवश्यक है। उत्कृष्ट कोटि के निबंधों की शैली असाधारण होती है तथा उनकी विचारधारा गहन होती है जो पाठकों को 'मानसिक श्रम साध्य नूतन उपलब्धि' के रूप में जान पड़ती है।

शुक्ल जी निबंध विषयक विचारों में पाश्चात्य मान्यता से पार्थक्य रखते हैं। जहां पाश्चात्य विचारक व्यक्तित्व को प्रधानता प्रदान करते हैं वहीं शुक्ल जी विषय, विचार, बुद्धितत्व को अपेक्षाकृत अधिक महत्व और प्रधानता प्रदान करते हैं। वैसे भी शुक्ल जी की दृष्टि वस्तुपरक है। वे भौतिक जगत् को महत्व देते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि इहलौकिक और जागतिक ही होती है। निबंध गद्य की कसौटी है, क्योंकि भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंध में ही सबसे अधिक सम्भव होता है।

निबंध : गद्य की कसौटी

आचार्य शुक्ल मानते हैं कि निबंध गद्य की कसौटी है क्योंकि भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक सम्भव होता है। प्रयोग और लक्ष्य भेद से भाषा की शक्ति के अनेक रूप और कार्य हो सकते हैं। लेकिन उसका एक प्रमुख रूप और कार्य है–अर्थबोध कराना, कथ्य की सटीक एवं प्रभावशाली अभिव्यक्ति करना। अतः अर्थबोध एवं कथ्य की प्रभावशाली अभिव्यक्ति का सर्वाधिक सामर्थ निबंध में ही होती है, हो सकती है। और गद्य एवं उसकी भाषा की इस शक्तिमत्ता की सबसे सटीक परख भी

निबंध में हो ही सकती है।

चिंतामणि भाग 3 में शुक्लजी लिखते हैं कि भाषा अपनी शक्तियों का व्यवस्थित रूप में विकास गद्य में ही करती है। एक ओर तो संसार के सारे व्यवहार गद्य द्वारा चलते हैं, दूसरी ओर गूढ़ और जटिल विचारों को व्यक्त करने का उपयुक्त साधन भी गद्य ही है। बातों का बोध कराने के अतिरिक्त हृदय के हर्ष, विषाद, प्रेम, करुणा इत्यादि भावों की व्यंजना के लिए भी गद्य का प्रयोग कम नहीं होता। इस प्रकार गद्य का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है।

आधुनिकता की संवाहिका, वैज्ञानिक चेतना, बौद्धिकता, तर्कशीलता और स्वचेतना के निकट पद्य की अपेक्षा गद्य का सबल वर्चस्व तथा उसकी अपरिहार्य क्रांतिकारी उपयोगिता उनके समक्ष उद्घाटित हो चुकी थी। वे निबंध को आत्मप्रबोधन, आत्मसाक्षात्कार तथा वैचारिक संप्रेषण के अत्यंत समर्थ क्रांतिकारी माध्यम के रूप में ग्रहण कर चुके थे। परंतु इस शक्तिशाली माध्यम का समुचित एवं अपेक्षित विकास, उनके समय तक न हो पाने का दुख उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया है–

1. भाषा के नूतन शक्ति चमत्कार के साथ नए विचारों की उद्भावना करने वाले निबंध बहुत ही कम मिलते हैं। (हिंदी साहित्य का इतिहास)
2. विश्वविद्यालयों के उच्च शिक्षा क्रम में हिंदी साहित्य का समावेश हो जाने के कारण उत्कृष्ट कोटि के निबंधों की, ऐसे निबंधों की जिनकी असाधारण शैली या गहन विचारधारा पाठकों को मानसिक श्रमसाध्य नूतन उपलब्धि के रूप में जान पड़े–जितनी ही अधिक आवश्यकता है उतने ही कम वे हमारे सामने आ रहे हैं। (हिंदी साहित्य का इतिहास)
3. ऐसे प्रकृत निबंध विचार–प्रवाह के बीच लेखक के व्यक्तिगत वाग्वैचित्र्य तथा उसके हृदय के भावों की अच्छी झलक हो, हिंदी में अभी कम देखने में आ रहे हैं। (चिंतामणि भाग 2)
4. खेद है कि समाज शैली पर ऐसे विचारात्मक निबंध लिखने वाले, जिनमें बहुत ही चुस्त भाषा के भीतर एक पूरी अर्थ–परंपरा कसी हो, अधिक लेखक हमें न मिले। (हिंदी साहित्य का इतिहास)
5. अर्थ वैचित्र्य और भाषा शैली का नूतन विकास कहानियों में तो आया, निबन्ध में नहीं, जो उसका प्रकृत स्थान है। (हिन्दी साहित्य का इतिहास)

आचार्य शुक्ल ने 'प्रकृत' निबंध को विचार प्रसूत एवं अर्थप्रधान मानते हुए विचारात्मक निबंध को बहुत व्यापक अर्थ में ग्रहण किया है। उनके कृतित्व में इधर–उधर बिखरे हुए निबंध विषयक विचारों से यह ज्ञात होता है कि उन्होंने निबंध में इन तत्वों, विशेषताओं आदि का समावेश माना है। इन तत्वों और विशेषताओं से पुष्ट निबंध के दायरे में आचार्य शुक्ल कृतियों की समीक्षा, आलोचना, यात्रावृत्त आदि को भी समाहित करके उसको बहुत व्यापक बना देते हैं। इसी व्यापक क्षेत्रीय निबंध को वे "गद्य की कसौटी" मानते हैं।

आचार्य शुक्ल भावात्मक निबंध के नाम से निबंध के एक और भेद की कल्पना करते हैं–पर उसे वे भाषा के लिए हितकर नहीं मानते–'यह भाषा की शक्ति के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए ठीक नहीं जान पड़ता।' (चिंतामणि 3) अर्थात भाषा की 'पूर्णशक्ति के विकास की संभावना' बौद्धिक विचार के निबंधों में ही सर्वाधिक हो सकती है। बाबू गुलाबराय शुक्ल जी के इस अभिमत का समर्थन करते हैं कि निबंध गद्य की

कसौटी है। वे कहते हैं कि

1. निबंध में ही हम गद्य का निजी रूप देखते हैं। साहित्य की अन्य विधाओं में (जैसे जीवनी आदि में) तो गद्य की भाषा एक माध्यम मात्र है किंतु निबंध में वह पूर्ण शक्ति और सज–धज के साथ प्रकट होती है।
2. निबंध में ही गद्य लेखक की शैली का पूर्ण विकास दिखलाई पड़ता है और "शैली ही व्यक्ति है" की उक्ति साहित्य की इस विधा के संबंध में ही पूर्णतया सार्थक होती है।
3. कोई विषय निबंध के क्षेत्र के बाहर का नहीं है।
4. निबंध कला अपने लिए साहित्य की सभी विधाओं से सामग्री ग्रहण करती है।

जीवनी आदि में जो कुछ ऐसा घटित हो चुका है वही गद्य में बंधेगा। गद्य उसी को शब्दमूर्त करेगा। इसी प्रकार का कथारूपों में गद्य पात्र, परिस्थिति, देशकाल, वातावरण आदि की अपेक्षाओं के अनुरूप ही विकसित होगा, रचनाकार शर्तों के भीतर ही लिखेगा या नाटक में संवाद की तकनीकी और कौशल के अनुसार ही रचनाकार को गद्य लिखना होगा ; ऐसी तैयारी करनी होगी कि शब्द मंच पर घटित होता हुआ दिखाई दे।

निबंध की स्थिति भिन्न है। व्यक्तिप्रधान निबंधों में तो लेखक आत्माभिव्यक्ति के लिए पूरी तरह स्वतंत्र है। विषय प्रधान निबंधों में भी उसको व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति के अवसर मिलते हैं, वस्तु और रूप दोनों स्तरों पर उसको आत्माभिव्यक्ति की मर्यादित स्वतंत्रता मिलती है। व्यक्तिप्रधान निबंधों में लेखक वैयक्तिक भावनाओं एवं अनुभवों की अभिव्यक्ति तथा भावना–कल्पना की उड़ान के लिए पूर्णतः स्वतंत्र रहता है। तदनुसार उसकी भाषा भी बहुआयामी होने लगती है। ऐसे में उसकी निबंध रचना सर्जनात्मक वैविध्य से पुष्ट होकर बहुआयामी हो जाती है और निश्चय ही भाषा की शक्ति के पूर्ण विकास के लिए अधिकाधिक सक्षम होती जाती है। प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक जार्ज लुईस बफों (1707–88 ई0) की उक्ति 'स्टाइल इज द मैन' इन्हीं निबंधों के संदर्भ में सर्वाधिक चरितार्थ होती है।

गूढ़–गंभीर निबंध ही भाषा की पूर्ण शक्ति प्रदर्शित करने वाले होते हैं। इसी प्रकार के निबंध को शुक्ल जी 'गद्य की कसौटी' मानते हैं। स्वयं आचार्य शुक्ल के अपने मनोविकार विषयक निबंध इसी उत्कृष्ट कोटि के सघन वैचारिक कसावट और असाधारण शैली वाले निबंध हैं। इनको गद्य की कसौटी माना जा सकता है। गुरु गंभीर विषय अनेकानेक अर्थ संबंध सूत्र और सूत्र शाखाओं में लक्षित अंतर्भुक्त प्रौढ़ चिंतन–मनन; व्यापक अध्ययन; सूक्ष्म पर्यवेक्षण; गहन अनुभव; प्रकाण्ड पांडित्य; युक्त, तर्क, प्रमाण, दृष्टांत से पुष्ट प्रतिपाद्यः खड़ी बोली हिंदी की अपनी प्रकृति और संस्कृत तत्सम बहुल शब्दावली से युक्त भाषागत आधार; प्रौढ़ सजीव आत्मीय शैली; व्यक्तित्व व्यंजक उपकरण एवं ललित (स्थल) सरस स्टीक व्यंग्य–विनोद, चुटकी, छेड़छाड; मुहावरे–लोकोक्ति; लाक्षणिकता; बिम्बधर्मिता आदि विविध रचनाधर्मी तत्वों से युक्त सर्जनात्मक भाषा प्रखर बौद्धिक एवं गहन चिंतन–मनन की सांद्र–सघन संक्षिप्त सूत्राभिव्यक्ति आदि जैसे तत्व उनके निबंधों में भाषा की पूर्ण शक्ति के विकास के द्वार उन्मुक्त कर देते हैं। इन्हीं तत्वों से पुष्ट निबंध को आचार्य शुक्ल गद्य की कसौटी मानते हैं।

भाषिक संक्रमण का समय और हिन्दी

रवि प्रकाश पाण्डेय
अंसि. प्रो., हिन्दी विभाग

भूमण्डलीकरण और बाजारवाद की आंधी ने हमारी दुनिया के अनेक समीकरणों को बेतहाशा और बेतरतीब रूप से उलट–पलट दिया है। इसने हमारे वैचारिक जगत् और जीवन–पद्धति को आमूल–चूल रूप से परिवर्तित कर दिया है। वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण हर बात, विचार और, संस्कृति को एकमेक करना चाहता है। यह विभिन्नता अथवा अलग होने के भाव का पोषण नहीं करता है। विजय के रथ पर सवार पश्चिम के सांस्कृतिक उपनिवेशवाद के दानव ने दुनिया के अपरिमित विस्तार को विश्वग्राम के छोटे से डिब्बे में कैद कर दिया है।

विश्वग्राम की अवधारणा खान–पान, रहन–सहन, बोलचाल प्रत्येक स्तर पर एकरूपता का पक्ष लेती है। भाषा के स्तर पर इस बात को और भी अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। दुनियाभर में अंग्रेजी को 'लिंगुआ फ्रैंका' या सम्पर्क भाषा के रूप में मान्यता मिलना इसी एकीकरण की प्रक्रिया को रेखांकित करता है। दुनिया ज्ञान–विज्ञान से कदमताल करने के लिए अंग्रेजी को अपनाती जा रही है। बात यहीं तक होती तो भी ठीक था, परन्तु वैश्वीकरण की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप लोगों में अपनी भाषा के प्रति अनादर व उपेक्षा का भाव भी पैदा हो रहा है, यह गहरी चिंता का विषय है। अब अंग्रेजी केवल भाषा नहीं रही अपितु एक वर्चस्ववादी मानसिकता बनती जा रही है। इसमें औपनिवेशिकता के जीवाणु मिले हुए हैं।

हम सब इस तथ्य से भलीभाँति परिचित हैं कि हमारी भाषा हमारे दे ा और समाज की पहचान होती है। भाषा से ही हमारी सभ्यता, संस्कृति और संस्कार प्रतिबिम्बित होते हैं। हमारा दे ा भाषा के स्तर पर अत्यधिक धनी है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पि चम तक भारत में अनेक भाषाएं न केवल अस्तित्ववान् हैं अपितु उनकी अपनी वाचिक और साहित्यिक रूपों में एक समृद्ध परम्परा भी है। इन भाषाओं में से हिन्दी सबसे स ाक्त भाषा है। यह राष्ट्रीय स्तर पर प्रयुक्त, सम्पर्क भाषा और जनभाषा है। यह भारतीय नवजागरण की वाहिका भी रही है और आज आम लोगों की भाषा है। इसको महर्षि दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, सरदार बल्लभभाई पटेल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने भारतीय जनमानस में जागृति लाने के लिए सम्पर्क भाषा और जनभाषा के रूप में अपनाया था। 1905 में का ाी नागरी प्रचारिणी सभा में आयोजित सम्मेलन में तिलकजी ने देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को स्वीकृत करने का अनुरोध किया था। महात्मा गांधी ने हिन्दी में राष्ट्रभाषा बनने की सभी गुण पाये थे। 1905 में ही श्री अरविन्द ने वन्दे मातरम् के अग्रलेख में हिन्दी की पैरवी सर्वमान्य रूप में की थी। 1975 में बंगाल के आचार्य के ावचन्द्र सेन ने भारत की एकता के लिए हिन्दी को अपनाने के लिए कहा था। स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े सभी नेता चाहते थे कि दे ा की सम्पर्क भाषा हिन्दी बने। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय राज–काज की भाषा की समस्या खड़ी हो गयी। 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को राजभाषा घोषित कर दिया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 में लिखा है "देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी संघ की राजभाषा होगी।" आगे चलकर

राजभाषा अधिनियम 1963 तथा अधिनियम 1976 पारित हुए और ये अधिनियम हिन्दी के मौलिक और स्वाभाविक विकास में अब तक के सबसे बड़े घातक कदम साबित हुए। सं ोधित अधिनियम से एक लम्बी द्विभाषी स्थिति लागू करके हिन्दी के राष्ट्रभाषा के अस्तित्व पर ही प्र न–चिह्न लगाने का प्रयास किया जाने लगा। निरन्तर सत्ता परिवर्तन होता रहा है लेकिन सरकार की भाषा नीति में बदलाव नहीं आया।

हिन्दी को यह सौभाग्य अपने उद्भव काल से ही प्राप्त हुआ कि वह भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा, अधिकांश भारतीयों की सम्पर्क भाषा, श्रेष्ठ साहित्य की भाषा तथा आर्थिक वर्चस्व की भाषा रही हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में विशेषकर भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के काल में जब विश्रृंखलित भारत को एक सूत्र में बांधने की आवश्यकता पड़ी तब हिन्दी ने ही इस दायित्व को पूरा किया। अतः स्वाधीनता के बाद हिन्दी को राजभाषा का दायित्व मिलना स्वाभाविक ही था। एक छोटे से कालखण्ड में हिन्दी को अपने देश और वैश्विक धरातल पर जो प्रतिष्ठा और अर्हता प्राप्त हुई है वह कम महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन विश्वभाषा के रूप में हिन्दी की स्वीकृति अब तक क्यों नहीं हो पायी ? और संयुक्त राष्ट्र संघ में स्वीकृत अन्य भाषाओं के मुकाबले हिन्दी पीछे क्यों रह गई? इस पर यदि गम्भीरता से विचार किया जाए तो कतिपय बिन्दु उभर कर सामने आते हैं।

प्रथमतया प्रत्येक भाषा का एक परिनिष्ठित या मानक रूप होता है, बावजूद इसके उसकी अनेक बोलियाँ, उपभाषाएं तथा बोलचाल के अनेक रूप उसके साहित्य को रचनात्मक ताजगी से भरते हैं। किन्तु, किसी भी राष्ट्रभाषा का एक परिनिष्ठित रूप सम्पूर्ण राष्ट्र में एक जैसा व्यवहृत हो, यह आवश्यक है। राष्ट्रभाषा के प्रति सम्पूर्ण राष्ट्र की जनता में मोह और गर्व का भाव भी होना चाहिए। अपनी–अपनी मातृभाषाओं के प्रति अनुराग के साथ राष्ट्रभाषा सीखने की ललक भी हर भारतीय के मन में जाग्रत हो। हिन्दी के साथ ऐसा आत्मिक लगाव और सम्मानजनक व्यवहार अभी भी देखने को नहीं मिलता है। द्वितीयतः हिन्दी को लेकर आजकल के जनसंचार माध्यम, फिल्म जगत्, राजनीतिज्ञ, लेखक और पत्रकार जितने भी प्रयोग कर रहे हैं उससे यदि एक ओर हिन्दी का किसी न किसी रूप में विकास हो रहा है तो कहीं न कहीं भाषाई अराजकता का जन्म भी हो रहा है। इलेक्ट्रानिक मीडिया ने हिन्दी को हिंगलिश बनाकर अथवा विज्ञापन की भाषा ने बाजारवाद के कारण जिस तरह की बाजारू भाषा को बढ़ावा दिया है, उससे नयी पीढ़ी किस तरह के भाषिक संस्कार ग्रहण करेगी, यह चिन्तनीय है। तृतीयतः हम संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिन्दी को मान्यता दिलाकर उसके विश्वभाषा होने का सपना पूरा करना चाहते हैं, पर अभी तक यह अपने देश में ही सर्वस्वीकृत नहीं हो सकी है। चतुर्थतः अहिन्दी भाषियों के मन से हिन्दी साम्राज्यवाद का भय (सरकारी नौकरियों में पिछड़ जाने का भय) अभी तक दूर नहीं किया जा सका है, जबकि आजीविका के लिए हिन्दी भाषी और गैर–हिन्दी भाषी दोनों ही अंग्रेजी की अनिवार्यता को वर्षों से महसूस कर रहे हैं। यदि यह भय हिन्दी के प्रति न होकर अंग्रेजी के प्रति होता तो भायद ज्यादा प्रासंगिक होता। पांचवी बात यह कि अंग्रेजी शासनकाल में देशी भाषाओं की घोर उपेक्षा के बावजूद माध्यमिक स्तर की शिक्षा तक उन्हें माध्यम बनाया गया था। जबकि आज हम अंग्रेजों की उपनिवेशवादी व्यवस्था से मुक्त होने के बावजूद बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की उपनिवेशवादी व्यवस्था से आतंकित हो अपने बच्चों से उनकी मातृभाषा छीन रहे हैं और प्रारम्भिक स्तर से ही उनकी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा के बजाय एक विदेशी भाषा को रखना चाहते हैं। अन्त में एक बात और हमारा ध्यान आकृष्ट करती है, वह यह कि हमारे दे ा में,

खासकर दक्षिण भारत में, हिन्दी का विरोध प्रबलता के साथ किया जाता है। क्यों किया जाता है ? इसका कोई स्पष्ट कारण नज़र नहीं आता सिवाय राजनीति के। चलो उसे भी अगर स्वीकार कर लिया जाए तो दूसरा प्र   न उठता है कि हिन्दी के विरोध का वास्तविक फायदा क्या इन क्षेत्रीय भाषाओं को मिल पा रहा है ? व्यवहारतः तो ऐसा होता नहीं दिख रहा है बल्कि इसका वास्तविक फायदा तो दूसरी भाषा (अंग्रेजी), जो कि भारोपीय परिवार की भी नहीं है, को मिलता नज़र आ रहा है। अब यह हमारे विवेक पर निर्भर करता है कि हम अपना विरोध या समर्थन क्या करना चाहते हैं ? इतिहास की सामान्य जानकारी रखने वाला हर जागरुक भारतीय भी यह जानता है कि हिन्दू राजाओं ने आपसी वैर–भाव के चलते मुस्लिम आक्रांताओं का समर्थन किया जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण दे   ा पर उनका भासन हो गया था और कमोबे   ा अंग्रेजों के आधिपत्य के पीछे भी कुछ ऐसे ही कारण थे। इसी परम्परा में उल्लेखनीय बात यह है कि आज, जब हम मुक्त वातावरण में सांस ले रहे हैं, फिर उसी परम्परागत मानसिकता का समर्थन करते जा रहे हैं जिसके कारण हम भाताब्दियों से गुलाम रहे। हमें अब तो अपनी गलती से सीख लेते हुए 'निजता' के महत्व को पहचानना चाहिए। इसी राह से हम भाषा के क्षेत्र में विचार करें तो पाएंगे कि हमें हर हाल में भारतीय भाषाओं को ही अपनाना चाहिए इसके लिए चाहे जो भी कीमत हमें चुकानी पड़े।

इन बिन्दुओं के आलोक में वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जब हम हिन्दी की दशा और दिशा पर विचार करते हैं तो अनेक भाषा चिन्तकों के विचारों को रेखांकित किया जा सकता है। वैश्विक परिदृश्य में किसी भाषा की लोकप्रियता और श्रेष्ठता के सम्बन्ध में प्रख्यात हिन्दी विमर्शकार डॉ0 वेदप्रताप 'वैदिक' के विचार अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। वे लिखते हैं कि ''जो भाषायें संयुक्त राष्ट्रसंघ में मान्य हुईं, क्या वे विश्व की सर्वश्रेष्ठ भाषाएं थीं? नहीं। वस्तुतः वे द्वितीय विश्वयुद्ध में विजित देशों की भाषायें थीं। वहां तर्क भाषा की श्रेष्ठता का नहीं अपितु भाषा–भाषी की श्रेष्ठता का था। तर्क श्रेष्ठता का भी नहीं अपितु जय–पराजय का था। जिन राष्ट्रों के पास ताकत थी, पैसा था, उनकी भाषा इस विश्व संस्था की भाषा बन गई। सन् 1945 ई0 में जब संयुक्त राष्ट्र बना, भारत गुलाम था। हिन्दी पराजित से भी अधिक पराजित गुलाम राष्ट्र की भाषा थी।''[1] (हिन्दी कैसे बने विश्वभाषा (लेख)– वेदप्रताप वैदिक वाक् अंक–02, वर्ष–2007, पृ0 94) विश्वभाषा के संदर्भ में निःसन्देह हिन्दी को यह सौभाग्य नहीं मिला पर स्वाधीनता के बाद हिन्दी को राष्ट्र भाषा का दायित्व आज तक न मिलना अधिक दुर्भाग्यपूर्ण है। इसके पीछे एक बहुत बड़ी साजिश है, जिसके तहत भारत को अंग्रेजी भाषा–भाषी देश कहा जा रहा है। राजभाषा आयोग ने जिन कारणों से हिन्दी को राजभाषा के पद पर आसीन किया था, उनकी घोर उपेक्षा की गयी है। राजभाषा आयोग के प्रस्ताव की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं, ''हम देश के सांस्कृतिक जीवन की अनन्यता को दृढ़ करने वाले तत्वों की खोज करते हैं। सदियों के बाद पुनः प्राप्त इस राजनीतिक एकता के साथ–साथ भाषाई एकता भी हम पाना चाहते हैं। इस एकता की प्राप्ति के लिए हम अंग्रेजी भाषा की स्थानापन्न किसी देशी भाषा को बनाना चाहते हैं। सभी प्रादेशिक भाषाओं में हिन्दी को राष्ट्रभाषा इसलिए चुना गया कि इसके बोलने वालों की संख्या सबसे अधिक है।''[2] (भूमण्डलीकरण, भारत की भाषा समस्या और डॉ0 लोहिया–डॉ0 ब्रज कुमार पाण्डेय, वाक् अंक–03, वर्ष 2007, पृ0 104) पर राजभाषा आयोग के इस मन्तव्य का क्या हुआ इससे हम भलीभांति परिचित हैं।

बावजूद इसके हिन्दी की विश्व यात्रा के पक्ष में बहुत सी महत्वपूर्ण बातें हैं। पहली यह कि हिन्दी बहुत तेजी के साथ आजीविका (रोजगार) से जुड़ रही है, काफी हद तक जुड भी चुकी है। सम्पूर्ण देश में

यह सम्पर्क भाषा बन ही चुकी है। प्रवासी भारतीयों को भी यह आपस में एकता के सूत्र में बांधे हुए है। विश्व के अस्सी से अधिक देशों के सैकड़ों विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। पचास से अधिक देशों में लगभग 2 करोड़ हिन्दी भाषी निवास करते हैं। इनमें से ग्यारह देश ऐसे हैं जिनमें हिन्दी भाषियों की संख्या पांच लाख से अधिक है। भारतीय उपमहाद्वीप के देशों में लगभग बीस करोड़ लोग हिन्दी को बोल और समझ लेते हैं। साइबर–स्पेस की भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व निरन्तर बढ़ता जा रहा है। भाषाशास्त्री अशोक केळकर का मानना है कि हिन्दी वैश्वीकरण की भाषा बनने की दौड़ में सबसे आगे है। वे लिखते हैं कि, ''यद्यपि वैश्वीकरण की शुरुआत उद्यम के क्षेत्र से हुई फिर धीरे–धीरे यह क्रिया जीवन के अन्य क्षेत्रों को व्याप्त कर रही है। भाषा भी इसका अपवाद नहीं है। जिस तरह शब्द वैश्विक बनते हैं उसी तरह भाषाएं भी बन सकती हैं। फ्रेन्च, स्पैनिश, अंग्रेजी ये पहली वैश्विक भाषाएं थीं। संयुक्त राष्ट्रसंघ ने बाद में इसमें रूसी और चीनी को भी सम्मिलित कर दिया। बाद में अरबी भी। जबकि हिन्दी और जापानी इस दौड़ में शामिल हैं।''[3] (भाषा का वैश्वीकरण और वैश्वीकरण की भाषा–डॉ0 अशोक केळकर, आलोचना, अंक–09, वर्ष 2002, पृ0 87) हिन्दी के प्रचार प्रसार में कतिपय अन्य कारक भी हैं यथा–दूरसंचार माध्यमों (दूरदर्शन आदि) पर हिन्दी कार्यक्रमों/धारावाहिकों आदि की लोकप्रियता, हिन्दी फिल्मों का वैश्विक प्रसार, देश और विश्व की लगभग समस्त महत्वपूर्ण भाषाओं में हिन्दी की महत्वपूर्ण कृतियों का अनुवाद तथा उन भाषाओं की महत्वपूर्ण कृतियों का हिन्दी में अनुवाद आदि। हिन्दी की इन समस्त विशेषताओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि हिन्दी की विश्व यात्रा निरन्तर जारी है। प्रसिद्ध कथाकार राजेन्द्र राव के शब्दों में, ''भाषा यात्रा नहीं करती, मनुष्य यात्रा करके भाषा को अपने साथ ले जाता है।'' (राजेन्द्र राव का कथन– एक साक्षात्कार)

सुप्रसिद्ध भाषाचिन्तक डॉ0 उदय नारायण सिंह ने अपने बृहद् अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला है कि, ''आज संसार में कुल छह हजार भाषायें हैं, इनमें से मात्र एक सौ भाषाएं ऐसी हैं जिन्हें पृथ्वी के 95 प्रतिशत लोग बोलते हैं और उनमें से आधे लोग सिर्फ पांच भाषाएं ही बोलते हैं– चीनी, अंग्रेजी, स्पेनिश, रूसी और हिन्दी।''[5] (भाषा, भाषी, भाषिकी (लेख) डॉ0 उदय नारायण सिंह, बहुवचन, अंक–2, अप्रैल–जून, 2000 ई0, पृ0 305) यह हिन्दी के लिए कम गर्व की बात नहीं है, जहाँ विश्व की अनेक छोटी भाषाएं क्रमशः विलुप्ति के कगार पर हैं और हजारों भाषाएं नष्ट हो चुकी हैं, हिन्दी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। पर इसके लिए सरकार की ओर से कोई कारगर प्रयत्न नहीं किये जा रहे हैं। इस सम्बन्ध में प्रो0 ए0 अरविन्दाक्षन के विचार महत्वपूर्ण हैं, ''हिन्दी को जो अर्हता प्राप्त हुई है, उसके भौगोलिक एवं ऐतिहासिक कारण हैं, जिनको नजरअन्दाज नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह भी सच है कि हिन्दी को विश्वभाषा के रूप में परिकल्पित करने के स्वप्न में मग्न होने से कोई फायदा नहीं है। संयुक्त राष्ट्र में यह देखना आवश्यक है कि, अन्य भाषायें किस तरह से स्वीकृत हैं और अब तक हिन्दी स्वीकृत क्यों नहीं है। स्वीकृति के मानक, प्रतिमान कौन–कौन से हैं? सरकार को इस दिशा में कौन–कौन सी कार्यवाहियां करनी हैं।''[6] (केरल में हिन्दी की स्थिति (लेख) ए0 अरविन्दाक्षन, वाक्, अंक–02, वर्ष 2007, पृ0 122)

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की दशा और दिशा और बेहतर हो इसके लिए हमें हिन्दी को आर्थिक, राजकीय, सामाजिक, वैचारिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में सर्वसमावेशी भाषा बनाना होगा। डॉ0 परमानन्द श्रीवास्तव का कहना है कि, ''हिन्दी की यह त्रासदी है कि जो सरकारी कृत्रिम अनुवाद बोझिल संस्कृतनिष्ठ हिन्दी बन रही है, जिसे मानक बनाकर सत्ता प्रतिष्ठानों द्वारा पेश किया जा रहा है, वह हिन्दी उस अर्थ में

नहीं है जिसमें वह सहज वाणी पाती है।" (हिन्दी का प्रश्न हम हार चुके हैं–परमानन्द श्रीवास्तव, वागर्थ, अंक–86, पृ0 5) फिर भी हम कह सकते हैं कि हिन्दी में वह शक्ति और सामर्थ्य है कि अनेक बाधाओं के बावजूद उसका विस्तार हो रहा है और निश्चय ही निकट भविष्य में वह विश्व भाषाओं की सूची में अपना नाम दर्ज कराएगी।

स्वातंत्र्योत्तरकाल में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए भाषा समृद्धि के नाम पर 15 वर्षों के लिए टालकर अंग्रेजी को थोपे रखने का बहाना गढ़ा गया। फलतः भासकों और नीतिनियंताओं की बेहतरी का माध्यम अंग्रेजी बनी रही। अंग्रेजी के साथ कुछ वि ाष्ट एवं हिन्दी वालों से अलग दिखने का भाव भी बना रहा। वास्तव में हिन्दी एकता का सूत्र है। इसमें अब हम अपने सभी औपचारिक एवं भासन सम्बन्धी कामकाज करते हैं। आज क्षेत्रीय, जातीय तथा इलाकाई भाषाओं का दुराग्रह, भारतीय राजनीति की स्थायी बुराई के रूप में स्थापित होता जा रहा है। फिर भी हिन्दी अपनी जीवन्तता के कारण स्वतः फल–फूल रही है।

इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ से ही वै वक स्तर पर बाजार हावी हो गया है। हिन्दी बाजार की भाषा बन चुकी है। इसके विज्ञापनों की संख्या बढ़ी है। बाजार की आव यकता ने आज हिन्दी का रूप ही बदल दिया है। आज हिन्दी वह नहीं रह गई जो पहले थी। निजी कंपनियों के लिए हिन्दी क्षेत्र विस्तृत बाजार है। अतः हिन्दी का प्रयोग बाजार की आव यकता बन चुका है। अपने उत्पादों को जनसामान्य तथा आम उपभोक्ता तक पहुँचाने के लिए हिन्दी का सहारा लेना पड़ रहा है। अपने माल के प्रचार–प्रसार, गुणवत्ता आदि के लिए हिन्दी अपनाना बहुराष्ट्रीय कंपनियों की विव ाता है। सभी चैनल तथा फिल्म निर्माता अंग्रेजी कार्यक्रमों एवं फिल्मों को हिन्दी में डब करके प्रस्तुत करने लगे हैं। पत्र–पत्रिकाएं, ज्ञान–विज्ञान एवं साहित्यिक पुस्तकें बहुत अधिक संख्या में हिन्दी में लिखी और छापी जा रही हैं। आज हिन्दी अपने मूल्य, आद ा, श्रम, निष्ठा, चिन्तन, समझ, विवेक, अनुभव से वि व बाजार की आधारि ाला बन चुकी है। वै वक स्तर पर यह व्यापार, वाणिज्य, कला, संस्कृति तथा विज्ञान के क्षेत्रों में अग्रिम पंक्ति में है।

आज दुनिया के लगभग 150 विश्वविद्यालयों और संस्थानों में हिन्दी में पठन–पाठन व शोधकार्य हो रहा है। विदेशों से कई हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। हाल ही में अबूधाबी के न्यायालयों में हिन्दी को तीसरी भाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। 2008 में न्यूयार्क में हुए तीसरे विश्व हिन्दी सम्मेलन में हिन्दी को संयुक्त राष्ट्रसंघ की आधिकारिक भाषा के तौर पर शामिल करने की मांग की गई थी। फलस्वरूप संयुक्त राष्ट्रसंघ ने हाल ही में एक फैसला लेकर हिन्दी में रेडियो और समाचार बुलेटिन का प्रसारण शुरू किया है। 2016 में विश्व आर्थिक मंच ने दुनिया की दस सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं की सूची में हिन्दी को शामिल किया है।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में हम कह सकते हैं कि हिन्दी धीरे–धीरे अधिक सामर्थ्यवान् और वैभवशाली भाषा के रूप में परिणत होती जा रही है। अंग्रेजी और अगेजियत के तमाम अवरोधों तथा क्षेत्रीय व भाषायी राजनीति के टुच्चेपन के बावजूद यह निरन्तर विकास के पथ पर अग्रसर है और भारतीयता की वास्तविक पहचान बनकर उभर रही है।

सोचो ! पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमना बन्द कर दे, तो क्या होगा ?

शिवानी तिवारी
एम.ए. पूर्वार्द्ध (हिन्दी)

ये तो हमलोग जानते हैं कि पृथ्वी अपने अक्ष पर और सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, लेकिन, कभी सोचा है कि अगर पृथ्वी एक सेकेण्ड तक के लिए भी घूमना बन्द कर दे तो क्या होगा और इसका पृथ्वी पर रह रहे लोगों पर क्या असर होगा।

पृथ्वी अपने अक्ष पर चक्कर लगाती है, जिससे पृथ्वी पर दिन और रात बदलते हैं, पृथ्वी एक साल में सूर्य का एक चक्कर लगाती है। और उससे मौसम में बदलाव होता रहता है, ये तो आप जानते ही होंगे, लेकिन अगर मान लीजिए पृथ्वी एक सेकेण्ड तक ऐसा करना बन्द कर दे तो क्या होगा। अगर पृथ्वी एक सेकेण्ड तक घूमना ही बन्द कर दे तो क्या होगा ? क्या पृथ्वी पर कुछ असर पड़ेगा या फिर जैसे नॉर्मल चल रहा है वैसे ही चलता रहेगा। हो सकता है कि आप इसकी कल्पना भी नहीं कर पा रहे हों, क्योंकि बात ही कुछ ऐसी है।

तो आज हम आपको कुछ रिसर्च के आधार पर बताने की कोशिश करते हैं कि अगर पृथ्वी एक सेकेण्ड तक अपना घूर्णन बन्द कर दें तो क्या होगा ?

जानते हैं अगर ऐसा हुआ यानि पृथ्वी अपनी जगह रुक गयी तो इससे पृथ्वी पर बहुत ही भयावह दृश्य देखने को मिलेगा या फिर कुछ नहीं न हो।, तो आइए जानते हैं इस परिस्थिति से जुड़ी हर एक घटना को।

पृथ्वी घूमना बंद कर दे तो क्या होगा ?

अगर पृथ्वी के थमने की बात करें तो यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है और पृथ्वी अपना एक चक्कर 24 घण्टे में पूरा करती है और पृथ्वी की घूमने की गति करीब 1000 माइल / घण्टा मानी जाती है। लेकिन हम लोगों को इस गति का एहसास नहीं होता है, क्योंकि इसके साथ हम भी घूमते रहते हैं। इसलिए हम लोगों को इसकी गति का सूक्ष्म भी एहसास नहीं होता है ?

एवीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार– अगर अचानक पृथ्वी घूमना बन्द कर दे तो पृथ्वी के अधिकांश भाग में प्रलय आ जाएगी। इससे होगा क्या कि पृथ्वी के आधे भाग को लगातार सूर्य की गर्मी का सामना करना पड़ेगा और आधे भाग पर अंतरिक्ष जैसी ठण्ड होगी। इस कारण आधे भाग पर इतनी गर्मी व सर्दी हो जाएगी कि इस प्रकार के वातावरण में समायोजन ही स्थापित नहीं कर पायेंगे। इसके साथ–साथ वाष्पीकरण आदि की प्रक्रिया पर काफी असर पड़ेगा और ये सोचना भी दुर्लभ है कि उस समय क्या होगा ?

Q.N.A. की रिपोर्ट में वैज्ञानिक Neil degrasse Tyson के इंटरव्यू के आधार पर कहा गया है कि अगर ऐसा होता है तो इस तरह की भयावह घटना में पृथ्वी के सम्पूर्ण विनाश की सम्भावना है, अर्थात् पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो जाएगा।

क्योंकि हम सभी पूर्व की ओर 800 मील प्रति घण्टे की गति से पृथ्वी के साथ आगे बढ़ रहे हैं, वहीं अगर पृथ्वी का घूमना रुक जाए तो आप 800 मील की स्पीड के साथ आगे गिर जाएंगे और पृथ्वी पर भयानक दृश्य देखने को मिलेगा। माना जाता है इस स्थिति में पृथ्वी पर जीवन समाप्त हो जाएगा और सम्पूर्ण विनाश हो जाएगा।

अगर पृथ्वी अचानक घूमना बन्द कर दे तो वायुमण्डल आगे की ओर घूमता रह जाएगा, भूमध्य रेखा पर मौजूद सभी चीजें पूर्व दिशा में उड़ने लगेगी। पृथ्वी पर मौजूद सभी चीजों व मनुष्य भी 1670Km/h की गति से हवा में उड़ने लगेंगे।

लगातार घूमते रहने की वजह से पृथ्वी का आकार गोल न होकर जियॉर्ड आकार है। लेकिन अगर पृथ्वी घूमना बन्द कर देगी तो पृथ्वी का आकार गोलाकार तो जायेगा और समन्दर का पानी सभी जगह समान मात्रा में बंटने लग जाएगा जिस कारण पृथ्वी के North & South Fall पानी में डूब जायेगा। भूमध्य रेखा पर सुनामी आ जायेगी तथा पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण तल क्षीण हो जायेगा।

पृथ्वी पर सबकुछ तबाह हो जायेगा और सूरज एक ही जगह स्थित दिखेगा क्योंकि पृथ्वी तो थम ही नहीं रही है इस वजह से एक दिन 24 घण्टे की जगह 365 दिन का हो जायेगा।

पृथ्वी के ना घूमने की वजह से पृथ्वी का प्रोटोक्टिव मैग्नेटिक फील्ड गायब हो जाएगा जिस वजह से पृथ्वी पर सूरज का हानिकारक रेडिएशन बढ़ जायेगा।

उठाना ही महानता है

एक बार पहलवान गामा बनारस पहुँचे। मदनमोहन मालवीय ने हिन्दू विश्वविद्यालय में पहलवान गामा का सम्मान समारोह रखा। उसमें विश्वविद्यालय के सभी छात्रगण उपस्थिति थे। मदनमोहन मालवीय ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा–प्यारे विद्यार्थियों! तुम्हें भी गामा पहलवान की तरह बहादुर और बलवान बनना है।

मदनमोहन मालवीय जी का भाषण चल ही रहा था कि बीच में गामा पहलवान ने कहा–विद्यार्थियों! मेरी तरह तुम्हें गामा नहीं बनना है क्योंकि गामा दूसरों को पछाड़ना जानता है। मैं कहता हूँ तुम्हें मदनमोहन मालवीय बनना है, जो दूसरों को उठाते हैं। पछाड़ने का काम बहादुरी का नहीं है। उठाने का काम है बहादुरी का। इसलिए तुम सभी मालवीय बनना।

पर्यावरण संरक्षण : हमारा नैतिक धर्म

डॉ0 कृपाशंकर यादव
असि0 प्रो0–अर्थशास्त्र विभाग

'पर्यावरण संरक्षित तो जीवन सुरक्षित' यह मात्र एक उक्ति भर नहीं वरन ध्रुव सत्य है जिसे संसार का प्रत्येक प्राणी स्वीकार करता है। न केवल वर्तमान उत्तर आधुनिक काल में अपितु वैदिक काल से ही पर्यावरण को लेकर मानव सजग है। अग्नि, जल, पृथ्वी, वायु और आकाश पंचतत्व प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मानव जीवन के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान देते हैं। वे हमारे इस पर्यावरण के निर्माता व पोषक हैं। यजुर्वेद के शान्ति पाठ 'ऊँ द्यौ शान्ति अन्तरिक्ष शान्ति' इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि पर्यावरण कोशान्त व संतुलित रखा जाए। पृथ्वी से आकाश पर्यन्त सभी जैविक व अजैविक घटक संतुलन की अवस्था में रहें।

आधुनिकता के बदलते परिवेश में पर्यावरण का महत्वपूर्ण व सराहनीय योगदान है। स्वास्थ्य पर्यावरण ही जीव जगत की आधारशिला है। परन्तु वर्तमान समय में विकास की अंधी दौड़ में जाने–अनजाने मानव के द्वारा ही यह सुरक्षा कवच नष्ट–भ्रष्ट हो रहा है। नित नए आयामों को प्राप्त करने की लिप्सा में हमने अपने ही हाथों अपने विनाश का मार्ग निर्मित कर लिया है। प्रकृति प्रदत्त उन समस्त उपहारों का हमने बड़ी ही निर्ममता के साथ दोहन किया है कि आज हमारी मानव सभ्यता विनाश के मुख पर पहुंच गई है। हमारे द्वारा किए गए प्रकृति के इस दोहन से प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता तथा खपत में उद्वेलन हो गया है। यही कारण है कि ज्ञान–विज्ञान की सभी शाखाओं के विद्वान, चिंतक पर्यावरण की सुरक्षा और संचालन के प्रति जागरूक हैं। आज ज्ञान–विज्ञान की कोई भी शाखा ऐसी नहीं है जिसमें पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं की चर्चा न होती हो।

पर्यावरण = परि + आवरण। परि अर्थात् चारों ओर और आवरण अर्थात् ढका हुआ अथवा रुका हुआ। वे सारी स्थितियों एवं परिस्थितियों का प्रभाव जो किसी भी प्राणी या प्राणियों के विकास पर चारों ओर से प्रभाव डालता है। वह उसका पर्यावरण है। वस्तुतः पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मिलित है जिसे हम अपने चारों ओर देखते हैं। जल, स्थल, वायु, मनुष्य, पशु, जलचर, थलचर, नभचर, वृक्ष, पहाड़, घाटियां आदि सभी पर्यावरण की भाग हैं। अगर हम पर्यावरण के एकीकृत रूप को देखें तो पाएंगे कि प्रत्येक पर्यावरण घटक में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उर्जा का अक्षय भंडार है व उसका उपभोग निश्चित है।

यदि हम कुछ क्षण एकाग्र होकर चिंतन करें कि हमारे चारों ओर किस वस्तु का आवरण है,वे कौन–कौन सी वस्तुएं हैं जिनसे हम घिरे हैं। हमारे चारों ओर वायु है, पेड़–पौधे हैं, पशु–पक्षी हैं, जल है, नीचे पृथ्वी है, ऊपर अनन्त ब्रह्मांड है। अतः यह सारी चीजें हमारे पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं और इन्हीं से मिलकर बना है हमारा यह पर्यावरण। जब हम पर्यावरण की बात करते हैं तो उसका तात्पर्य इन्हीं सभी चीजों से होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि यह सारी चीजें तो सदियों से हमारे आसपास में पाई जाती हैं फिर पर्यावरण को लेकर इतना चीखना–चिल्लाना क्यों? चिंता किस बात की है? वस्तुतः समस्या गंभीर है। अतः चिन्ता करना स्वाभाविक है क्योंकि यह सारी चीजें जिस रूप में और जितनी मात्रा में पहले पाई जाती थीं उस स्थिति में अब नहीं पाई जाती। इसके विपरीत हमारे मनीषियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही मानव जीवन के कल्याणार्थ और पर्यावरण का महत्व और उसकी रक्षा, प्रकृति से सानिध्य, संवेदनशीलता, रोगों के उपचार

तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेकों उपयोगी सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया था।

वैदिक युगीन समाज में न केवल पर्यावरण पर ध्यान केन्द्रित था अपितु उसकी रक्षा व जनसाधारण को भी उसके महत्व से भी अवगत कराया गया था क्योंकि हमारे ऋषिगण, मनीषी, चिंतक भी प्रदूषित होते पर्यावरण को लेकर चिंतित व गंभीर थे। अतः वे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पर्यावरण संरक्षण पर जोर देते थे। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि महाभूतों को ईश्वर का रूप मानना तथा उनकी पूजा करना उनकी इसी उदात्त भावना का द्योतक है। हमारे देश में वनों का आधिक्य होने से ऋषि–मुनियों का आश्रम इन वनों में हुआ करता था, जो वहां पर अध्ययन–अध्यापन, नित नए–नए अविष्कार किया करते थे। इन आश्रमों में विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षी, मृगादि वन्य जीव निर्भय होकर विचरण करते थे। आश्रमों के आसपास के परिक्षेत्र में शिकार खेलना मना था। हम वृक्षों में विभिन्न देवताओं का वास मानते हैं, जिस कारण हरे वृक्षों को काटना वर्जित था। केवल सूखे हुए वृक्षों को ईंधन आदि उपयोग हेतु काटा जाता था। गांवों और कस्बों में उपवनों की भरमार थी। हमारी संस्कृति में बसंतोत्सव जैसे विभिन्न उत्सवों का विधान था जो हमें प्रकृति से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करते थे। चिड़ियों का चहचहाना, बुलबुल का गाना और कोयल की कूक प्रत्येक प्राणी को स्फूर्ति, उत्साह व आनन्द प्रदान करती थी। परंतु अब यह सब परीकथा सी हो गई हैं। चिड़ियों की चहचहाहट सुनने के लिए हमारा मन तरस जाता है, कोयलों ने अब गाना छोड़ दिया है, बरसात में अब मोर नहीं नाचते, हिरण, खरगोश, शेर, चीता आदि वन्य पशु जंगलों की बजाय चिड़ियाघरों में शोभायमान हो रहे हैं। हम सुरसा के मुंह की भांति बढ़ती जा रही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ऐनकेन प्रकारेण प्रयास कर रहे हैं। जंगलों को काटते जा रहे हैं, वन्यजीवों का प्राकृतिक आवास उजाड़ते जा रहे हैं जिस कारण आज ये वन्यजीव मानव बस्ती में चले आते हैं। क्या यह चिंता का विषय नहीं है?निसंदेह इससे ज्यादा चिन्ता का कोई दूसरा कारण वर्तमान में नहीं है।

हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो जैसी उच्च सभ्यताओं के उत्खनन से प्राप्त प्रमाणों के अध्ययनों व अनवेषणों से यह ज्ञात हो चुका है कि हमारे पूर्वजों को जल एवं वातावरण प्रदूषण की संपूर्ण जानकारी थी जिस कारण उन्होंने नागरिक स्वास्थ्य रक्षा के लिए हर सम्भव तरीके की प्रबन्ध व्यवस्था कर रखी थी। महान सम्राट अशोक के समय तो पर्यावरण रक्षा हेतु एक संपूर्ण अपराध संहिता थी जिसके अनुसार राज्य को प्रदूषण से बचाने के लिए विभिन्न स्थानों में विशेष वृक्षों को लगाने का प्रावधान था तथा प्रदूषण फैलाने पर दंड व्यवस्था थी। आज भी यदि हम स्वयं को पर्यावरण प्रदूषण से मुक्त रखना चाहते हैं तो इसी प्रकार की आचार संहिता की आवश्यकता है। पर्यावरण को बचाने की मुहिम में जन–जन की भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। सरकारी प्रयत्नों का मुंह ताकना बंद करना होगा।

अमेरिका में कार्यरत् प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक प्रोफेसर ओ. पी. द्विवेदी ने अपनी कृति 'एनवायरमेंटल क्राइसिस एंड हिंदू रिलिजन' में स्पष्ट शब्दों में बताया है कि वर्तमान काल में प्राकृतिक पदार्थों, वनस्पति एवं जीव जगत के अंधाधुंध शोषण के कारण ही पर्यावरण का इस स्तर पर अपकर्ष हो रहा है कि वह मानवीय अस्तित्व के लिए एक भयंकर संकट बन गया है। उन्होंने इसके मूल में पर्यावरणीय नीति में लापरवाही बरतना और समाज के लिए नए मानदंडों की रचना करने में विफलता को माना है।

वाशिंगटन के 'क्लाइमेट इंस्टीट्यूट' की रिपोर्ट 2008 में यह स्पष्ट चेतावनी दी गई थी कि एशिया के आठ देशों के जलवायु में एकाएक होते परिवर्तनों के कारण इन देशों की एक चौथाई आबादी तबाही की कगार पर है। यह खतरा पर्यावरण के विनाश के कारण पैदा हुआ है और यह देश हैं भारत, पाकिस्तान श्रीलंका, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, मलेशिया, वियतनाम और फिलीपींस। इनमें से हमारे देशभारत में तो

पर्यावरण की समस्या सुरसा के मुंह के समान बढ़कर विकराल रूप धारण करती जा रही है। एक स्वयंसेवी संगठन की रिपोर्ट के अनुसार राष्ट्रीय लक्ष्य के मुताबिक कुल भू क्षेत्र के तैतीस प्रति   ात जंगल होना चाहिए, जबकि सिर्फ पन्द्रह प्रति   ात के लगभग भू क्षेत्र में ही जंगल रह गया है। नतीजतन पर्यावरण असंतुलित होकर जन जीवन के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा होता जा रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण में निरंतर वृद्धि को ध्यान में रखते हुए जनचेतना के विकास तथा पर्यावरण के प्रति देशव्यापी अभियान को गति प्रदान करने एवं देश में पर्यावरण संबंधी नीति का निर्धारण करने तथा इसके अनुपालन के प्रयोजन हेतु नवंबर 1980 में केन्द्र सरकार ने पर्यावरण विभाग की स्थापना की, जिसे बाद में पर्यावरण एवं वन मंत्रालय बनाया गया, जो एक स्वतंत्र मंत्री के अंतर्गत कार्य करता है। तद्न्तर इसी प्रकार के मंत्रालय राज्यों में भी स्थापित किए गए हैं। इनकी स्थापना का उद्देश्य देश के पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाना, उनका संरक्षण करना तथा पर्यावरण नियोजन का प्रारूप तैयार करना है। इसी दिशा में केन्द्रिय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की स्थापना की गई जिसका प्रमुख उद्देश्य जल तथा वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने हेतु समुचित उपाय करना है। बोर्ड के कार्यों में प्रचार–प्रसार के माध्यम से जनजागृति तथा प्रदूशण मुक्ति हेतु संचालित शोधकार्यों की द   ाा–दिशा तय करना भी सम्मिलित है। दे   ा के अनेक राज्यों ने भी अपने–अपने राज्यों में पेयजल, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण बोर्ड आदि की स्थापना की है। पर्यावरण को विकृत होने से बचाने, उसके संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु आज भारत में अनेक शोध संस्थान राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर कार्यरत हैं। राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान, नागपुर इसमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। परमाणु ऊर्जा आयोग, टाटा इंस्टिट्यूट, विभिन्न तकनीकी संस्थान, इंजीनियरिंग संस्थान तथा विश्वविद्यालयों में आज पर्यावरण पर पर्याप्त शोध हो रहे हैं। न केवल विज्ञान के क्षेत्र में अपितु अनेक सामाजिक संस्थान भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। विशेष समस्याओं को लेकर विशिष्ट दल, निगम, बोर्ड, विभाग आदि स्थापित किए जाते हैं जैसे गंगा के शुद्धिकरण हेतु अभिकरण की स्थापना की गई। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि देश में पर्यावरण अभियान को आज अत्यधिक महत्व दिया जा रहा है। सरकारों द्वारा उठाए गए कदम उचित एवं सराहनीय तो है परन्तु पर्याप्त नहीं। शोधकार्यों से प्राप्त निश्कर्शों को और विभिन्न निकायों द्वारा लिए गए निर्णयों को क्रियान्वित करने के लिए भी ठोस कदम उठाने होंगे, तभी सफलता मिल सकती है।

गांव को जाती पगडंडियां, मिट्टी के घर और छत पर खपरैल, खेतों में घूमती–नॉचती हरी–भरी फसलें, बगीचों में पक्षियों का कलरव,कुएं का मीठा पानी, आंगन में नीम की ठंडी छांव, गंगा, यमुना, गोदावरी आदि नदियों को पापनाशिनी, देवी, मां आदि विशेषणों से सम्मानपूर्वक अर्चन सभी कुछ तो विलुप्त हो चला है। अब परिचय मात्र नदी तक सीमित रह गया है। वह समय भी जब किसी के आने का संदेश कौवा अपनी कांव–कांव से देता था, फल के मीठे होने की सूचना हमें तोते के द्वारा होती थी और हम भी बड़े चाव से उस झूठे फल को खाते थे। लेकिन अब न तो वह तोता है और न वह झूठा फल। और तो और अपशकुन का पर्याय उल्लू, गिद्ध, गीदड़ जैसे पशु–पक्षी अब देखने को नहीं मिलते हैं। सर्दी–खांसी होने पर झट से तुलसी का काढ़ा बना पी लेते थे हम, सामान्य चोट पर सामने के मैदानों से चार पत्ते चिरोल के तोड़कर रगड़ लेते थे, लेकिन न वह तुलसी है, न मैदान और न चिरोल के पत्ते। सभी कुछ तो लील गई हमारी आधुनिक बनने की होड़ और इस विकास की होड़ में हमने अपने हाथों से ही प्रदूषण रूपी भस्मासुर को पोषित किया है और आज यही भस्मासुर हमें भस्म करने पर तुला है।

हमने ही गंगा को विषैला कर दिया, यमुना पर कब्जा कर शहर बसा डाले, गोमती का चीरहरण कर कंक्रीट के जंगल बना दिए, क्षिप्रा और चंबल को नाले में तब्दील कर दिया। हमारी विकास की हवस ने

तो पहाड़ों को भी नहीं बख्शा, उनमें सुराख करके सीमेंट भरकर अट्टालिकाएं खड़ी कर दी। अब पर्वतों पर सुख का अनुभव नहीं होता, शान्ति नहीं मिलती है। जंगलों को नेस्तनाबूद कर नगर बसा लिए हैं। अहर्निश वृद्धि को प्राप्त होती जनसंख्या, वृक्षों की अंधाधुंध कटाई, सिमट खेत, फैलते कंक्रीट के जंगल, अधिकाधिक खाद्यान्न प्राप्त करने के लिए कृषि में प्रयुक्त रासायनिक उर्वरक, विभिन्न प्रकार के अपशिष्ट पदार्थों के विसर्जन से प्रदूषित नदियां। क्या इस कीमत पर ऐसा विकास उचित है? कब तक हम आंख बंद करके स्वयं को धोखा देते रहेंगे? क्या आंख बंद कर लेने भर से समस्या का निराकरण हो जाता है? कब तक उपेक्षा करेंगे इन यक्ष प्रश्नों की। यह हमारी विशेषता है कि हम अपनी प्रत्येक समस्या का दोषारोपण दूसरे पर करते हैं और उसके निराकरण के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं। लेकिन कब तक, आखिर यह मनोवृत्ति कब तक रहेगी। कब तक हम हर समस्या के लिए सरकार पर निर्भर रहेंगे। हम अपने तुच्छ स्वार्थों के वशीभूत अपने आसपास के पर्यावरण को ही दूषित करने पर तुले हैं। लेकिन अब समय आ गया है कि हमें एकजुट होकर अपनी समस्या स्वयं ही सुलझानी होगी। हमारे भी तो समाज और देश के प्रति कुछ दायित्व बनते हैं। हमें अब अपने कर्तव्यों के प्रति स्वयं जागना होगा और आगे बढ़कर अपनी जिम्मेवारियों को उठाना होगा।

आज विश्व समुदाय से हमारी यह अपील है कि अब हमें विकास और पर्यावरण दोनों को साथ–साथ लेकर चलें। मानव जागृति के चहुंमुखी विकास के स्वर्णिम भविष्य को स्वस्थ पर्यावरण के चश्मे से देखना मूर्खतापूर्ण होगा। कुल मिलाकर पर्यावरण और मानव पर बड़ी–बड़ी परियोजनाओं, कल–कारखानों द्वारा पड़ने वाले दुष्परिणामों के लिए निश्चित ही सरकार को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए, परंतु पर्यावरण सुरक्षा की सम्पूर्ण जिम्मेवारी मात्र सरकार पर नहीं थोपी जा सकती है। सभ्य समाज को भी इसकी नैतिक जिम्मेदारी लेनी होगी। काम करने कि नियमों व पर्यावरणीय व्यवहार में सुधार करके हमें अपनी सामाजिक और आर्थिक जीवन शैली में वो सभी आवश्यक परिवर्तन करने चाहिए जो कि हमारी प्रगति में तो बाधक न हों परन्तु पर्यावरण संरक्षण में सहायक हो सकें।

हम सभी को पर्यावरणीय सुरक्षा को एक आंदोलन के रूप में लेना चाहिए, क्योंकि पूरी मानव सभ्यता का अस्तित्व इसी पर्यावरण पर निर्भर है। आज प्रत्येक व्यक्ति को स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त पर्यावरण में रहने के अपने अधिकारों के प्रति सजग होना चाहिए और अपने दायित्वों को समझना चाहिए। बिना किसी पूर्वाग्रह के स्वयं ही अपने कर्तव्य को जान, उसकी जिम्मेदारी अपने कन्धों पर धारण कर अधिकाधिक प्रयास कर अपने पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करना चाहिए। हमें इस बात की चिंता छोड़ देनी चाहिए कि अन्य जन क्या कर रहे हैं, वे अपनी जिम्मेवारी निभा रहे हैं अथवा नहीं। कहा भी गया है कि 'हम सुधरेंगे जग सुधरेगा' जब हमें स्वयं ही कर्तव्य बोध होगा, हम उसको कर्म में परिणित करेंगे तभी हम अन्य जनमानस को अपने इस पर्यावरण के प्रति सचेत कर जागरुक कर सकेंगे। हमारा उद्देश्य अपने गौरवशाली अतीत का गौरव गान भर करना नहीं है, अपितु यह स्पष्ट करना है कि हम क्या थे, क्या हैं और इसी गति से चलने पर हम कहां पहुंचेंगे? विनाश की जिस आहट को हम आज भी नहीं सुन पा रहे हैं, उसे हमारे मनीषियों, चिंतकों ने शताब्दियों पूर्व ही भांप लिया था। यथार्थ के धरातल पर उतरकर यदि अभी भी हमने सत्य को अंगीकार नहीं किया तो मानव सभ्यता ने अपने विनाश के लिए पर्याप्त संसाधन जुटा लिए हैं। जागना है इस भौतिकता की नींद से, आत्मसात करना है पर्यावरण के महत्व को और निस्पृह भाव से, मनसा, वाचा, कर्मणा शपथ लेनी है पर्यावरण की रक्षा की।

एक महान् शासिका : रुद्रमा देवी

अलाउद्दीन
शोधार्थी, इतिहास विभाग

रुद्रमा देवी (1245–1289) जिन्हें दक्षिण भारत के इतिहास में एक योद्धा रानी के रूप में जाना जाता है, रुद्रमा देवी को बहुत ही कम उम्र से शक्ति प्राप्त करने के लिए जाना जाता था जिसकी शुरुआत 1259 में हुई थी, जब उन्हें संयुक्तरूप से अपने पिता राजा गणपित के साथ सह संरक्षक के रूप में नियुक्त किया गया था। गणपति के कोई पुत्र नहीं था, और उन्होंने अपनी बेटी को रुद्रदेव का नाम दिया और औपचारिक रूप से उन्हें अपना पुरुष अधिकारी घोषित किया। यह छवि एक महिला सम्राट के खिलाफ प्रचलित रवैये के कारण बनाई गयी थी, उसने इस छवि को रोकने के लिए कुछ नहीं किया और रजिया की तरह पुरुष पोशाक पहनी हालांकि उसने दिद्दा बोलू के राजकुमार बीरबद्र से शादी की थी जिससे उसकी दो पुत्रियाँ भी थी, लेकिन उनकी जल्द ही मृत्यु हो गयी,

रुद्रमा के अपने पिता के साथ सह–शासन में पहले के कुछ वर्षों में पाण्डयों के आक्रमण को देखा था, जिसको सफलतापूर्वक पीछे धकेल दिया गया लेकिन इससे राज्य की स्थिति कमजोर हो गयी। इन विफलताओं के परिणामस्वरूप गणपति सार्वजनिक जीवन से हार गये और रुद्रमा के राज्य का पूर्ण निमंत्रण दे दिया। इसके बाद 1269 में गणपति की मृत्यु हो गयी और रुद्रमा को अधिकारिक रूप से काकतीय साम्राज्य के शासक के रूप में ताज पहनाया गया।

रजिया सुल्तान की तरह रुद्रमा को बहुत से पुरुष विरोधों के साथ संघर्ष करना पड़ा जिन्होंने एक महिला की सत्ता को स्वीकार करने से इंकार कर दिया, लेकिन वह भी इस तरह के विद्रोहों को कुचलने में सफल रही। आन्तरिक विद्रोहों से अपने राज्य को सुरक्षित करने के बाद रुद्रमा ने अपने शेष शासनकाल को बाहरी खतरों से बचाने में लगाया। काकतीय दक्षिण भारत की चार प्रमुख शक्तियों में एक थे जो एक–दूसरे से द्वन्द युद्ध करते रहते थे, 1268–1270 तक यादव राजा महादेव ने काकतीयों पर निरंतन आक्रमण किया जिसका समापन काकतीय राजधानी ओरूगल्लू (अब वारंगल) की घेराबन्दी में हुआ। अतः रुद्रमा ने भयंकर आक्रमण शुरू किये जो पन्द्रह दिनों आक्रमण को भी रुद्रमा ने सेनापतियों द्वारा हार का सामना करना पड़ा।

अपने राज्य की सुरक्षा के लिए रुद्रमा ने ओरूगल्लू किले की संरचना में एक–दूसरी दीवार और एक खंदल जोड़कर उसमें निवेश किया जिसमें भविष्य में कई घेराबंदियों के खिलाफ शहर की रक्षा की। वेनिश यात्री मार्कोपोलो ने रुद्रमा के शासनकाल के दौरान ओरूगल्लू का दौरा किया और उसे एक विवेकशील महिला के रूप में वर्णित किया जिसने न्याय और समभाव के साथ शासन किया।

1280 ई. में रुद्रमा ने अपने नाती प्रतापरुद्र को राजमुकुट पहनाया क्योंकि वह बूढ़ी हो रही थी और उसका स्वयं का कोई पुत्र नहीं था। हालांकि राज्य को 1285 में एक सहार अम्बादेव के नये खतरे का सामना करना पड़ा जिसने काकतीय साम्राज्य को नष्ट करने के लिए पाडयों और यादवों से गठबन्धन कर लिया था। इस समय वृद्धावस्था के बावजूद रुद्रमा ने अपनी सेना का कार्यभार संभाला, लेकिन होने वाली लड़ाई में वे मारी गयी, लेकिन दक्षिण भारत के इतिहास में रुद्रमा देवी का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है।

What Psychology is not?

Samya Baghel
Assistant Professor
Department of Psychology

As a student of psychology, I have often come across people who think that I can tell what goes on in their minds. People who are a little more aware expect me to be an expert on dream interpretation and unconscious in a typical Freudian manner. There are others who dismiss psychology as 'just commonsense' and use the term in the most careless manner. Either they consider the subject as a magic want or they dismiss it as a pseudoscience; people having no direct knowledge of psychology often have misconceptions about the subject and its students. However, such misconceptions indicate towards one thing for sure-that people are greatly interested in psychology and are very curious about it. Spending some years in the study of psychology equips me relatively well to dispel some of the misconceptions. Here, I'll be discussing the most common ones-

1. Psychologists are not mind readers

People think psychologists must be able to tell what's going on in someone's mind just by looking at their faces. Any human interaction calls for understanding and predicting other's behaviour to some extent for appropriate functioning. Becasue of their strong background in the study of human behaviour and very good observational skills, psychologists might be better placed to understand the causes of certain behaviours and the forms it may take. They can even make fairly accurate predictions about behaviour but that doesn't mean they would be able to tell precisely what some passerby is thinking. Studying about mind and behaviour doesn't give psychologists the ability to read someone's mind. The need for assessment and prediction of behaviour by a psychologist comes within a context and it is in such contexts that it should be expected of them.

2. Psychology is not just common sense

Psychology deals with day-to-day behaviours of human beings. Folk wisdom often offers conclusions and predictions about such behaviours in the form of idioms and phrases e.g."Opposites attract". Hence, whenever people come across the findings of some psychological research, they tend to dismiss it as something they already knew, something which didn't require research at all and could be concluded by common sense alone. But as professor Baron puts it, "Common sense often leads us astray". If common sense or folk wisdom tells "Opposites attract", it also says, "Birds of a feather flock together"

Just try to think about a situation where somebody needs help. How would the number of People present there determine his chances of getting help? Would his chances of getting help increase if the number of bystanders increases ? Common sense says the more people present, the greater chances of getting help. But research by Latane & Darley (1969) concludes quite the contrary-the more bystanders present, the less chances of getting help!

Common sense can at best be treated as some hunch that may be tested scientifically. Psychology is a science which provides conclusions about human behaviour only after objective and fair investigation. Its occasional overlap with folk wisdom doesn't mean psychology is just common sense.

3. Psychology is not just about treating mental illnesses

The branch of psychology that is concerned with diagnosing and treating psychological disorders (commonly known as mental illnesses) is clinical psychology. There are various otehr areas of specialization covering a wide range of fields such as sports psychology, military psychology, forensic psychology, neuropsychology, congnitive psycholgoy, school counseling, counseling psychology, social psychology, child psychology, organizational psychology, human engineering etc. Psychology has numerous applications in different walks of life. While forensic psychologist works in legal settings and scrutinizes psychological evidence, military psychologists are trained in conducting psychological evaluations, dealing with PTSD and frequent relocation and deployment issues of military personnel etc. There are cognitive psychologists who work in cognitive science laboratories. Similarly, engineering psychologists study the relationship between man and machine and work upon how machines can be made more human-friendly. There are professors of psychology indulged in teaching undergraduates, postgraduates, guiding research scholars and conducting researches on relevant issues.

4. All psychologists are not psychoanalysts

Sigmund Freud, the father of psychoanalysis, is still one of the most famous figures in the history of psychology. However, psychoanalysis is just one of the many approaches to the study of human behaviour. Today undergraduates are taught psychoanalysis more for its historical value than for any practical use. Psychoanalysis cannot be practised by any psychologist unless she/he is trained from some certified psychoanalytic institute.

5. All psychologists cannot hypnotize you

Just like psychoanalysis, hypnosis is also a specialize skill which can be learn and practiced only after approriate and adequate training. It can be put to therapeutic use by the psychologists who are trained in its use. Contrary to popular belief, a person cannot be hypnotized against his/her will. Hypnosis requires voluntary participation and can be effectively used in pain management, fear management, smoking cessation etc.

6. A bachelor's degree doesn't make you a therapist

A bachelor's or even a master's degree in psychology doesn't authorize one for therapy. Bachelor's and master's degrees in psychology make students eligible only for entry level works in the field of mental health e.g. internships or summer workshops. To become a therapist, a student needs to complete her post-graduation in psychology followed by M.Phil. in Clinical Psychology or some other form of supervised clinical work for a specified number of hours. In our country, therapists are certified by Rehabilitation Council of India. Only RCI certified individuals are authorized to provide therapy. Not just 'therapist'. even 'psychologist' is a regulated term. One can be called a psychologist only after a doctorate in psychological research.

The Indian English Novel

Dr. Sheelu Sengar
Asst. Prof., English Department

Novel is a piece of prose fiction, which dramatizes life with the help of characters and situation with a real-life atmosphere. This literary genre in India came at a much larger stage. In comparison to poetry and drama, India English fiction appeared quite late on the Indian English literary scene. In India the novel developed and became popular with the advent of "British rule which set in the progress of industrialisation". Inspired by the English novel, Indian English writers copied and experimented this genre from the works of English romantics and Victorians in the regional languages. Some of these Indians novels were translated into English and later these were written originally in English. Bankim Chandra Chatterjee, the father of Indian English Novel wrote his works in Bengali and later on traslated in English by the author himslef. In the early decades of 20th century Rabindranath Tagore's famous work, The Home and the World, The wreck and Gora were written originally in Bengali and translated into English. Though the growth and development of Indian English Novel was initially weak, but gradually it is started to take its roots with the emergence of the "Big three" They were Mulk Raj Anand, Raja Roy and R.K. Narayan.

Mulk Raj Anand's Untouchable published in 1935 and Coolie in 1936 were acclaimed for portraying the reality of the life of the downtrodden and the deprived sections of society. Mulk Raj Anand came to be known as a committed writer. Raja Roy's inclination was towards Indian metaphysics and philosophical strain in his work became the hallmark of his novels. RK Narayan created his famous Malgudi as a setting to his novels, which he gave us consistently from Swami and Friends to The World of Nagaraj. He was loved for his Ironic vision of life. It is indeed not possible to think of the Indian English Novel without these three novelists who can we called the principle "trail blazing Indian novelists in English " These three novelist continued to write till the end of 20th century and made a solid ground for Indain English novel. Apart from the works of Anand, Narayan and Rao produced a considerable amount of fiction during the period. This period also witnessed the rise of ethnic novel Ahmed Ali's Twilight in Delhi (1940) was such a novel. An interesting phenomenon is the rise of Muslim novelists, most of them wrote evocatively about the life of Muslim households. Among other novelists, Dha Gopal Mukherji (Kari, the Elephant, 1992) was a notabel writer.

H.M. Williams, a critic felt that "the history of the Indian English Novel was a development from poetry to prose and from romantic idealisation to various kind of realism and symbolism." In the 1920s through 1940s India was passing through turbulent period in history. The novelist found different themes for their stories like the freedom struggle, Gandhian ideology and its impact on soiety, social reforms, India's modern destiny, the partition, the emergence of the new india, the problem of rulal India.

The tradition of social realism established by Mulk Raj Anand was continued by novelists like Bhabani Bhattacharya, Manohar Malgonkar and Khushwant Singh, who made their appearance during the 1950s and the early 1960s. A notable development was the emergence of an entire school of women novelists among them the leading figures were Ruth Prawer Jhabvala, Kamala Markandaya, Nayantara Sahgal and Anita Desai. Writers like Nayantara Sehgal, Manohar Malgonkar and Bhawani Bhattacharya give new direction to fiction.They started dealing with the new subject matter. Nayantara Sehgal took up political themes, while Malgonkar gave historical perspectives in his novels. Arun Joshi and Anita Desai gave the psychological insights to their novels. By the 1980s the novel had matured sufficiently in themes, use of language and style and technique. Novelists like Amitav Ghose, Vikram Seth, Shashi Tharoor, Shashi Despande, Bharti Mukherjee, Arundhati Roy, Vikram Chandra, Manju Kapoor, Rohinton Mistry, Indira Goswami, Kamala Das and a number of other novelists came in the field of fiction writing and have written in abundance.

At present, Indian English novel has developed into a deep-rooted big tree. It has become now an independent and most popular branch in the arena of English literature. It is enriched with writers like Kiran Desai, Jhumpa Lahiri, Jaishree Misra, Anees Jung, Tabish Khair, Arvind Adiga, Chetan Bhagat, Anees Salim etc. who have brought a marked change in modern Indian English fiction. The century has also witnessed the emergence of many pulps fiction and novels of metro which caught the interest of young readers of the time.

आँसू

आँसू भावों के अतिरेक को बताते हैं। भाव जब शिखर पर पहुँचता है तो वह बस, आँसुओं के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। आँसू अनिवार्य रूप से दुःख के कारण नहीं होते। हालाँकि सामान्यजन दुःख के इसी एक कारण से परिचित हैं। दुःख के अलावा करुणा में भी आँसू बहते हैं। प्रेम में भी आँसू बहते हैं, आनंद में भी आँसू बहते हैं, अहोभाव में भी आँसू बहते हैं और कृतज्ञता में भी आँसू बहते हैं।

आँसू तो बस, अभिव्यक्ति हैं– भाव के शिखर पर, चरम पर पहुँचने की। ये प्रतीक हैं कि भीतर कोई ऐसी घटना घट रही है, जिसको सँभाल पाना मुश्किल है। दुःख या सुख, भाव इतने ज्यादा उफन रहे हैं कि अब ऊपर से बहने लगे हैं। जो कुछ घटित हो रहा है, वह बहुत ज्यादा है। उसे सँभालना मुश्किल हो गया है। अब वह ऊपर से बहने लगा है। आँखों से आँसू बनकर बह निकला है। जलबिन्दुओं के रूप में आँसू बनकर स्वयं को प्रकट कर रहा है।

आँसुओं का संबंध न तो दुःख से है और न ही सुख से। इनका संबंध तो बस, भावों के अतिरेक से है। जिस भाव का अतिरेक होगा, आँसू उसी को लेकर बहने लगेंगे। जब हृदय पर कोई चोट पड़ती है, जब किसी अज्ञात का मर्म भाव को छूता है, दूर अज्ञात की किरण हृदय को स्पर्श करता है, जब हृदय की गहनता में कुछ उतर जाता है, जब कोई तीर हृदय में चुभकर उसमें पीड़ा या आह्लाद का उफान ला देता है, तो अपने आप ही आँखों से आँसू बह निकलते हैं।

जिनके भाव गहरे हैं, केवल उन्हीं के आँसू निकलते हैं। जिनके भाव शुष्क हो गए हैं, उन्हें आँसुओं का सौभाग्य नहीं मिलता। ये भाव यदि निर्मल हैं, पावन हैं तो इनके शिखर पर पहुँचने से जो आँसू निकलते हैं, वे भगवान को भी विवश कर देते हैं। तभी तो मीरा के आँसुओं ने, चैतन्य के आँसुओं ने–भगवान् को उनके पास आने के लिए विवश कर दिया था। (साभार–अखण्ड ज्योति)

वृक्षारोपण

डॉ. के.के. निगम
अस‍ि. प्रो., संगीत विभाग

ये अभियान तुम्हारा है, ये अभियान हमारा है।

एक वृक्ष सौ पुत्र समान'

जन–जन का यह नारा है।

तुमने ही जिस पौधे को रोपा–सींचा।

हुआ शौक पूरा तो उसको जड़ से खींचा ।

जितना सहज वृक्ष आरोपण

उतना कठिन सुरक्षा पोषण

ये माना कि बोल नहीं पाते पौधे,

पर कैसा इन्साफ वही बोये और रौंदे जाते।

क्या उनमें भी जान नहीं है या

निश्छल मुस्कान नहीं है।

इन निरीह पौधों में सब है

पर तुम जैसा अभिमान नहीं है

निज स्वारथ में लिप्त आज तुम भले मौन हो।

पर सबने पहिचाना, क्या हो और कौन हो ?

यह रुचि का चापल्य पड़ेगा तुमको भारी।

सह न पाया कोई नियति की मार करारी।।

कलम के किरदार में

विवेक कुमार यादव

हुई पेशकश मेरी दरबार में,
मैं था तब कलम के किरदार में,

वो बचपन का खेल दिखाना था,
जब नन्हें हाथों ने मुझे थामा था।
गिरती, उठती, चलती वो बच्चों के प्यार में
मैं था तब.. ।

अभी मैं किरदार में ही आया था,
बच्चों ने मुझे प्यार से सहलाया था।
अब कहीं भी लिखते मुझे चलाते बेकार में,
मैं था तब.. ।

अब उन्हें थोड़ा ज्ञान आया था,
गुरू ने मेरा उपयोग बताया था।
अब चलती तो शब्दों के आकार में,
मैं था तब.. ।

मेरे किरदार में अब बरकत हो गई,
थामने वाले हाथों में हरकत हो गई।
मैं चलती और दौड़ा करती रफ्तार में,
मैं था तब.. ।

खत्म मेरा जब किरदार हुआ,
पड़ा कहीं मैं कोने में बेकार हुआ।
अब करते मेरा उपयोग व्यापार में,
मैं था तब.. ।

भारत का गौरव

उर्वशी द्विवेदी
एम.एस–सी. चतुर्थ सेमेस्टर
वनस्पति विज्ञान विभाग

मैं तो अपने भारत की, तस्वीर निहारा करती हूँ
कभी पाक तो कभी बाँग्ला, बटते देखा करती हूँ
इतिहास पढ़ा है वह भी मैंने, आजाद, सुभाष से वीरों का,
इतिहास पढ़ा है, वह भी मैने पृथ्वीराज के तीरों का
पर आतंकवाद की ज्वाला में,
कश्मीर निहारा करती हूँ । मैं तो अपने.......................... ।
इतिहास पढ़ा है, वह भी मैंने सूर्या और परिमला का
इतिहास पढ़ा है वह भी मैने रानी झाँसी दुर्गा का
भारत की बालाओं में मैं बेटी को निहारा करती हूँ, मैं तो अपने.......... ।

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा

विवेक कुमार 'अकेला'
मनोविज्ञान विभाग

सुनो रे भईया मैं कहता हूँ सबके जीवन की ओर से
सदा ही चलना, सड़क पे भइया अपनी बाईं छोर से,
सड़क पे जईयो कान से हटाके फोन,
कुछ चलते जल्दी में, कुछ होते स्टोप नोन,
सड़क सुरक्षा समझो और न गुजरो जा दौर से,
सदा ही चलना.. ।
बिना हैलमेट के न निकलो दो पहिया वाहन में,
सदा ही खतरा रहबे जानो भईया अपनी जान में,
हैलमेट जान बचा लेगा, चोट न आवे जोर से ?
सदा ही चलना.. ।
खाकर केले छिलके सड़क पे रोज तो फैंको न,
चंदा बसूली करने को तुम, बीच सड़क को छैंको न,
यातायात नियम को समझो, तब निकलो उस दौर से,
सदा ही चलना.. ।
बस यही है कहना, यही समझाना,
सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा को तुम अपनाना,
तुमने सुना अब औरों को भी बताना अपनी तौर से,
सदा ही चलना.. ।

सीख

अंजली निराला
बी.ए., द्वितीय वर्ष

मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं
जिनकी जिंदगी सफर में होती है
छोड़ देते है जो कारवां
अक्सर किस्मतें उन्हीं की सोती हैं।
हारता वो है जो शिकायत
बार–बार करता है,
और जीतता वो है, जो कोशिश
हजार बार करता है।
उड़ान तो भरना है
चाहे कई बार गिरना पड़े
सपनों को पूरा करना है,
चाहे खुद से भी लड़ना पड़े
शिक्षा और संस्कार, जिन्दगी
जीने का मूल मंत्र है
शिक्षा कभी झुकने नहीं देगी
और संस्कार कभी गिरने नहीं देंगे।

काश मेरे भी पंख होते

अंजली वर्मा
बी.एस.–सी., प्रथम वर्ष

काश मेरे पास भी पंख होते, सपने मेरे भी सारे सच होते।
रोज सबेरे आकाश में मैं भी, चिड़िया बनकर उड़ पाती,
सारी दुनिया से दूर मैं अपने लिए भी जी पाती।
स्वतन्त्र आसमान में बस उड़ती ही चली जाती।
न काम की कोई टेन्शन, न बेमतलब के गम होते।
काश मेरे पास भी पंख होते, सपने मेरे भी सारे सच होते,
जहाँ चाहे खुले आसमान में उड़ पाती, अपने सारे ख्वाबों को मैं पूरा कर पाती।
न कोई रोक–टोक होती, न किसी का डर होता,
न मेरी कोई जाति होती, न ही कोई धर्म होता।
उड़कर चली जाती ऐसे जहाँ में, जहाँ सारे लोग खुश होते।
काश मेरे पास भी पंख होते, सपने मेरे भी सारे सच होते।

प्रेरणा गीत

अंशिका शर्मा
बी.ए., तृतीय वर्ष

आशाओं के दीप जिनके दिल में जलते रहते हैं,
हार नहीं सकते हैं वे, जो कोशिश करते रहते हैं।
साक्षी हैं इतिहास, अमर वीरों की गाथाओं का,
झाँसी की रानी के साहस का, हल्दीघाटी की घटनाओं का,
धैर्य और साहस से जिनका परचम जग में फहर गया,
वही सूरमा हारा है जो बीच राह में ठहर गया,
कुछ करने की चाहत में जो रातों जगते रहते हैं,
हार नहीं सकते.. ।

तिनका–तिनका उठा–उठा कर, चिड़ियां नीड़ बनाती है,
धीरज, मेहनत और लगन से मंजिल को पा जातीं हैं,
दो बूँद मधु की खातिर भंवरे कितना गुंजन करते हैं।
नन्हें–नन्हें पँखों से मीलों का सफर, तय करते हैं।
जो अपने मन मस्तिष्क में उड़ान हौसलों की रखते हैं।
हार नहीं सकते.. ।

बाधायें आती हैं, विचलित कर जाती हैं,
शोकग्रस्त होता है, हीन मनुज रोता है,
अंतिम आस जरूरी है, बस इक प्रयास जरूरी है।
खुद से ये वादा करना है, बस इक बार फिर से लड़ना है,
विपदाओं के कुरूक्षेत्र में जो खिलते हंसते रहते हैं,
हार नहीं सकते हैं वे, जो कोशिश करते रहते हैं।।

पहचानो खुद को संघर्षों से हार कभी न मानो तुम,
रोशन करने से पहले तपता खुद सूरज है ये जानो तुम
विपदाओं के महासागर में, कभी नहीं घबराओ तुम
छोड़ो ये मखमली बिछौना, पथरीली राहें अपनाओ तुम।।
गुनगुन गुनगुन करके भंवरे गीत उन्ही के गाते हैं।
वही पुरुष पाषाण इस धरती पर पूजे जाते हैं।।

पिता का बेटी के प्रति प्यार

आँचल स्वामी
एम.ए., प्रथम वर्ष (हिन्दी)

तेरी मासूम आँखों में, शरारत अच्छी लगती है,
मेरी बेटी, मुझे तेरी हर आदत अच्छी लगती है।
तेरी बख्शी हुई मालिक, ये दौलत अच्छी लगती है।
बना हूँ बाप बेटी का, ये किस्मत अच्छी लगती है।
तुझे खामोश देखूँ तो, लगे हैं बोझ–सा दिल पे
अगर तू चहचहाए तो तबीयत अच्छी लगती है।।
लगाकर तुझको कन्धे से सुलाता हूँ मैं रातों को।
तो अगली सुबह तक मेरी हरारत अच्छी लगती है।।
रुलाकर एक दिन मुझको पराये घर तू जाएगी।
अमानतदार हूँ तेरा, अमानत अच्छी लगती है।
तुझे मैं दूर खुद से जिन्दगी भरकर नहीं सकता।
मगर ये सच है बेटी जब हो रुखसत अच्छी लगती हैं
कभी भी फर्क मैंने न किया है बेटे और बेटी में।
मुझे पुरखों कि अपनी ये रवायत अच्छी लगती है।।

जीवन

आकाँक्षा वर्मा
बी.ए., प्रथम वर्ष

कभी तो मुस्कुराया कीजिये
गमों को भूल जाया कीजिए,
जब भी मिले वक्त
मीठी यादों में खो जाया कीजिए
प्यारा सा गीत कोई गुनगुनाया कीजिए,
कड़वी यादों से दिल को न जलाया कीजिए,
जो लगे प्यारा उससे बतियाया कीजिए,
कभी खुद को आईने में निहारा कीजिये
मन ही मन खुद की तारीफ किया कीजिये,
कभी सैर सपाटे पर निकल जाया कीजिये
कुदरत के सुन्दर नजारों को दिल में उतारा कीजिये।
कभी अपने बनाये नियम भी तोड़ा कीजिये।
जो भी मन करे उसे किया कीजिये।

आज की नारी

आकृति रावत
एम. ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)

कभी रहती थी जो चार दीवारों में बन्द
वही आज नए आयाम दे रही है।
वह आज की नारी है, जो आगे बढ़ रही है।।
वो दहलीज न लांघने वाली
आज पर्वतों को लांघ रही है।
वह आज की नारी है, जो नया इतिहास रच रही है।।
चुपचाप सह जाती थी जो हर जुल्म
मुहतोड़ सबको जबाब अब वो दे रही है
वह आज की नारी है, जो सम्मान से सज रही है।
जो समझ नहीं पाती थी कभी दो शब्द विज्ञान के,
आज वही राकेट उड़ा रही है।
वह आज की नारी है, जो विज्ञान रच रही है।
कभी बेजान थी जो किसी पत्थर की तरह
उसमें अब थोड़ी सी जान आ रही है।
वह आज की नारी है, जो सम्मान पा रही है।

सुभाषितम्

सत्यं वद। धर्म चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। उपनिषद्

भावार्थ : सत्य बोलो। धर्म का आचरण करो। स्वाध्याय में कभी आलस्य न करो। सत्य से कभी न डिगो। धर्म से कभी न डिगो। शुभ कर्म के लिए सदैव तत्पर रहो। उन्नति के साधनों से लाभान्वित होने में कभी चूकना नहीं चाहिए।

सपनों में जान

आकृति रावत
एम. ए. प्रथम वर्ष (हिन्दी)

यूं तो हर शख्स के सपनों में जान होती है
पूरी नहीं पर थोड़ी सी उड़ान होती है।
लेकर उनके सपनों के छोटे से पंख
नौकायें भी समन्दर के पार होतीं हैं
यूं तो हर शख्स के सपनों में जान होती है।
पूरी नहीं पर थोड़ी सी उड़ान होती है।
आज तक जो मंजर न देखे होंगे
उनके लिये भी तड़प बे ुमार होती है।
यूं तो हर शख्स ....
सपनों में जीना हर शख्स चाहता है
मगर मंजिल भी उन्हीं को मिलती है!
जिनकी चाहत में आग होती है।
यूं तो हर शख्स ....
तड़प उठता है हर वो इंसान अपने सपनो के लिये,
जिनकी आंखों में आग होती है।
यूं तो हर शख्स ....
बुझा देता है प्यास एक छोटा सा घड़ा पानी का
मगर आस तो हर एक को समन्दर की ही होती है।
यूं तो हर शख्स ....
बदल देता है उस लोहे की कीमत भी लोहर,
बाजार में जिसकी कीमत कुछ आम होती है।
यूं तो हर शख्स ....

वीर शहीदों की कहानी

सृष्टि जादौन
बी.ए., तृतीय वर्ष

मैं जगा रहूँ रात–दिन
चाहे धूप हो या बरसात हो
चाहे तूफान आये या पूस की ठंडी रात हो
मैं खड़ा रहूँगा सरहद पर सीना ताने
चाहे गोलियों की बौछार हो,
चाहे न खाने को कुछ भी आहार हो
अपने "वतन" की खातिर मैं
हर दर्द हँस के सह लूँगी
निकले जो खून बदन से मेरे,
मैं खुश हो लूँगी
कभी आँखों में रेत भी चली जाए तो,
वादा है, मेरी पलकें नहीं झपकेगी
लहू भी जम जाए अगर जो सीने में,
मेरे हाथ बंदूक नीचे नहीं रखेंगे,
दुश्मन के हाथ मेरे वतन की चट्टानों का
एक टुकड़ा न जा पायेगा,
जमीदोंज कर दूँगी मैं काफिर तुमको,
जो मेरी धरती की तरफ आँख उठाएगा,
कितना भी दुर्गम रास्ता हो,
किंचित भी नहीं डरूँगी मैं,
चप्पे–चप्पे पर रहेगी नजर मेरी,
देश के गद्दारों पर अब रहम नहीं करूंगी मैं।

बुन्देली कविता

हँसना मत

साक्षी राजपूत
बी.ए., द्वितीय वर्ष

इमली के पत्ते पे बसे, तीन गाँव
दो खाली हैं एक में आदमी नईयाँ
जोन में आदमी नईया, वा में खुदे तीन तला
दो सूखे हैं एक पे पानी नईयाँ
जोन में पानी नईया, वा में तैरे तीन तैराक
दो डूब गये एक को पतो नईयाँ
जोन को पतो नईयाँ, बाय मिले तीन घड़ा
दो फूटे हैं एक में मौ नइयाँ
जोन में मौ नईयाँ बामें चुराए तीन चाऊर
दो घुर गये एक को पतो नईयाँ
जोन को पतो नइयाँ, बाये खान आए तीन मेहमान
दो रूठ गये एक मानो नईयाँ
जोन मानो नइया, बाय घले तीन पन्हा
दो उटक गये एक घलो नईयाँ

एक औरत की कहानी

अंकुर बाथम
एम.ए. प्रथम वर्ष (अर्थशास्त्र)

तू एक औरत है, तुझे बचपन पिता की छत्रछाया में,
जवानी पति की छत्रछाया में और बुढ़ापा बेटों की
छत्रछाया में बिताना है, तेरी जिन्दगी बस चूल्हा–चक्की,
घर के काम तक ही सीमित है, तुझे जिन्दगी भर बस दूसरे के इशारों पर ही नाचना है,
क्या होती है ये जानना भी तेरे लिए पाप है,
क्योंकि तुझे परम्पराओं की जंजीरों से जकड़ दिया गया है।
तुझे जिन्दगी भर बस उन्हीं मान्यताओं के बोझ को ढोते जाना है,
तेरे लिए हजारों तरह के प्रतिबंध हैं,
तेरी जिन्दगी घर की चाहर दीवारी से शुरू होकर घूँघट–बुरखे में खत्म हो जाती है,
तुझे अपनी पहचान बनाने का कोई अधिकार नहीं क्योंकि ये परंपरा,
ये रीति–रिवाज तुझे इसकी इजाजत नहीं देते,
हाँ तुझे, माँ के रूप में लोगों की कुछ संवेदनाएं जरूर मिल जाती हैं,
लेकिन उसके लिए भी तेरा बेबस–लाचार,
मजबूर और अनपढ़ होना जरूरी है।
तू पिता की इज्जत, पति की दासी और बेटे स्नेहिल माँ के सिवा कुछ भी नहीं।
पिता, पति और पुत्र के बिना तेरा कोई अस्तित्व नहीं।
अगर तू पढ़ी–लिखी है और अधिकारों की बात करती है
तो स्नेहिल मां तुझे यही समाज चरित्रहीन कहकर बुलायेगा।
अगर तू यह सोचती है कि तेरी इस लाचार स्थिति के लिए
कोई और जिम्मेदार है,
तो तुझे अपनी राय में परिवर्तन करना चाहिए।
इसके लिए सिर्फ व सिर्फ तू ही खुद जिम्मेदार है।
क्योंकि जिन परम्पराओं ने तुझे बेबस बनाया आज तुझे उसी से प्यार है।
जिसने तेरी शिक्षा के लिए आंदोलन किये, तुझे अधिकार दिए,
आज शायद तुझे उनके नाम तक याद न हों,
तुझे आज भी अपनी वही परंपरा प्यारी है
जिसके नाम पर सदियों से तुझे जिंदा फूँका जाता रहा हे,
तुझे आज भी अपनी वही परंपराएँ प्यारी हैं
जिसके नाम पर तेरे शौहर तुझे तीन मामूली से शब्द बोलकर तुझसे
छुटकारा पा लेते हैं तेरा प्यार तीन और खातूनों के हिस्से में चला जाता है।
तेरे ही नजर में देश–विदेश में पुरुषों से कदम से कदम

मन की बात

नेहा राजपूत
बी.ए. तृतीय वर्ष

तन से बृहद स्त्री, जाति से तुच्छ
न कोई अपना मेरा, न ही पराया है।
थोड़ी दूर है गाँव से घर मेरा,
मैने खुद बनाया है।
बिजली आती नहीं यहाँ,
रात के अँधेरे में दिया जलाया है।
थोड़ी खामोशी है यहाँ, पर सुकून रहता है
पंछियों के स्वर की गूँज है,
सर पे आसमां की नीली छाया है।
अपने बूढ़े हाथों से मैने, ये घर स्वयं बनाया है।
कोई यहाँ आता नहीं, शायद किसी को मेरा ख्याल नहीं,
आज कुछ लोग आये हैं, मुझसे मिलने
बड़े विनम्र दयालु प्रतीत होते हैं,
मस्तक उन्होंने मेरे आगे झुकाया है।
कागज के कुछ टुकड़े हैं उनके हाँथों में,
एक टुकड़ा मेरे हाँथों में थमाया है।
मन मेरा हंस कर बोला मुझसे,
देख ज्यादा खुश न हो,
और पढ़ इन पर्चों को
चुनाव आया है।।

सुभाषित

आरोग्यमानृण्यविप्रवासः, सद्भिर्मनुष्यैः सह सम्प्रयोगः ।
स्वप्रत्यया वृत्तिरभीतवासः, षड्जीवलोकस्य सुखानि राजन्।।

निरोगी शरीर, ऋणी (कर्ज) न होना, परदेश में न रहना
अच्छे लोगों के साथ मेल–मिलाप होना,
अपनी कमाई से जीविका चलाना तथा निर्भय होकर रहना,
यह छह मनुष्य जीवन के सुख बताये गये हैं।

एकता गीत

धीरेन्द्र प्रताप सिंह
बी.ए. द्वितीय वर्ष

जांत पांत का भेद नहीं, ये यारों का याराना है,
रिश्तेदारी तो ठीक है, सबसे प्यारा दोस्ताना है !
जाति धर्म के ऊपर उठकर सबको साथ में लाना है,
हर जगह सिर्फ प्रेम बहेगा, ये इतिहास दोहराना है!
आपस में न लड़–झगड़ के, अपना भाईचारा बिगाड़ेंगे,
दुश्मन सिर्फ देखते रहेंगे, हम आपस में झूमेगे गायेंगे !
यारों के इस याराने से, हम इतिहास दोहरायेंगे,
वसुधैव कुटुंबकम् की नीति से, सुखी संसार सजायेंगे!

जिन्दगी

वर्षा देवी
बी.ए., तृतीय वर्ष

ऐ जिन्दगी तू कितनी हंसी है,
मैंने तुझको पाया जबसे वर्षा इसी में फंसी है।
ऐ जिन्दगी तू किसी ओरों की भी जिन्दगी हंसी वर्ना
जो तुझे पाये बोले ऐ जिन्दगी तू कितनी हंसी है।
ऐ जिन्दगी उन्हें भी तू सिखा जीने के मायने
जो कहते हैं ये जिन्दगी कितनी समस्याओं से लदी है।
ऐ जिन्दगी तू इतनी रंगीन कैसे हो सकती
जरा उन्हें भी तो बता जो कहते हैं जिन्दगी गिरगिटों से भरी है।
ऐ जिन्दगी तूने तो कमाल ही कर दिया
जिन्दगी जैसी हंसी और कोई जिन्दगी नहीं होती है।
ऐ जिन्दगी तू कितनी हंसी है
मैने तुझको पाया जबसे वर्षा इसी में फंसी है।

Consolation Prize in a National Level "E-Poetry Writing Competition"

I Wish...

Jyoti Kushwaha
Research Scholar
English Department

I wish I could be a little ignorant in life
so that I could avoid the doubts that arise because of knowing a lot,

I wish I could stop tiring myself
in trying to please people near and far

I wish I could be a YES BOSS type
so that I could have a happy professional life

I wish I could say NO
when I was given work which my colleagues denied

I wish I could also share my feelings
when people around opened their hearts to me

I wish I culd free myself from the guilt
whenever I thought of giving myself time

I wish I could be a little less traditional
so that I could ask my husband to cook at times for me

I wish I could forgo some of the better opportunities in life
when I already had the good ones

I wish I could ask God to answer some of the questions
to which I had no answers in life

I wish I could bring these changes in my life
so that perfect tranquility prevailed at heart and mind.

BOTANY

Shlesha Kanchan
M.Sc. Botany 2nd Sem

There sould be no monotony
In studying your botany;
It helps to train
And spur the brain
Unless you haven't got any.

It teaches you, does Botany,
To know the plants and spot any,
And learn just why
They live or die-
In case you plant or pot any.

You learn, from reading Botany,
Of wooly plants and cottony
That grow on earth,
And what they're worth,
And why some spots have not any.

You sketch the plants in Botany,
You learn to chart and plot any
Like corn or oats-
You jot down notes,
If you know how to jot any.

Your time, if you'll allot any
Will teach you how and what any
Old plant or tree
Can do or be-
And that's the use of Botany

Don't Quit

Vaishnavi Yadav
B.Sc. III Year

When things go wrong as they sometimes will,
When the road you're trudging seems all up hill,
When the funds are low and the debts are high
And you want to smile, but you have to sigh,
When care is pressing you down a bit,
Rest if you must, but don't you quit.

Life is strange with its twists and turns
As every one of us sometimes learns
And many a failure comes about
When he might have won had he stuck it out
Don't give up though the pace seems slow-
You may succeed with another blow.

Success is failure turned inside out-
The silver tint of the clouds of doubt,
And you never can tell just how close you are,
It may be near when it seems so far;
So stick to the Fight when you're hardest hit-
It's when things seem worst that you must not quit.

For all the said words of tongue or pen
The saddest are these: "It might have been."

A Munda Song (Symbol of real Women Eupowerment)

Dr. Atul Prakash Budhoulia
Asst. Prof. (English)

My mother, the sun rose
A son was born.
My mother, the moon rose
A daughter was born.
A son was born
The cowshed was depleted :
A daughter was born
The cowshed filled up.

The Munda tribals live in parts of Jharkhand, West Bengal, Assam, Tripura Madhya Pradesh and Orissa. A Munda song is known to be sung at the birth of a son or daughter and it invariably communicates their close association with nature. The birth of a daughter is associated with a cowshed full of coes and that of the son with its depletion. It is therefore clear that the daughter is considered to be a more precious asset than the son. This is probably because, in Munda society, the women have a dominant role to play in the various economic, social and ritual activities.

Atal Bihari Vajpayee was one of the greatest politicians of India was a man of words and a renowned Hindi poet. Poets like Atal Ji are not born or made (nothing in isolation). Poets like Atal Ji are developed by time itself. Time needs someone to embed the immortality of thoughts on its history scrapbooks so that the world can remember the lessons for long.

काल की कपाल लिखता-मिटाता हूँ, गीत नया गाता हूँ, गीत नया गाता हूँ,

Lines like the above or lines from his poem Rag-Rag Hindu Mera Parichay, Atal Ji was a capable poet who could achieve what he wanted to achieve in his poems. His diction was very carefully designed and his references were pulled out of the exact match to match the rhythm, tone, mode and nature of the poem. He was also a well-read man who could understand several languages, human psychology and also an expert in philosophy. To summarise Atal Bihari Vajpayee as a poet in few words would be a foolish exercise which has just been committed here. But by reading these facts about him, we can at least get introduced to his powerful personality as a poet. You will also see the links to the reviews of his poetry collections added in the works section once we come across the reviews on the web. To conclude, we do need to add the poems by Atal Ji in the syllabus because children do need to read an Indian poet who was not scared to flaunt his Indianness in his verse in Hindi.

हिन्दी परिषद की रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी
असि. प्रो., हिन्दी विभाग

कोरोना वायरस का फैलाव वैश्विक स्तर पर था। हमारा देश और समाज भी इससे अछूता नहीं रहा। इसके संक्रमण के भयावह परिणाम रहे। जन सामान्य का जीवन बुरी तरह से प्रभावित हुआ। इस भयावह संक्रमण के कारण लोगों को शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस आपदाकाल में लोग जहां शारीरिक रूप से कमजोर हुए वहीं क्रोध, तनाव, अवसाद आदि अनेक मानसिक समस्याओं से भी घिरे रहे। तालाबंदी (लॉकडाउन) के कारण शिक्षण संस्थानों में पठन–पाठन की गतिविधियां भी बुरी तरह से प्रभावित हुईं। छात्र–छात्राएं भी अपने भविष्य के प्रति चिंतित तथा आशंकित रहे। इन्हीं विपरीत परिस्थितियों के कारण ही गतिमान सत्र में हिन्दी साहित्य परिषद का औपचारिक गठन नहीं हो पाया। परन्तु ऐसी तनावग्रस्त परिस्थितियों में शिक्षकों की भूमिका एक सलाहकार तथा मार्गदर्शक के रूप में और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। परिस्थितियों की मांग को देखते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य एवं हिन्दी विभाग प्रभारी प्रो0 (डॉ.) राजेश चन्द्र पाण्डेय ने 10 फरवरी 2022 को जूम वेब प्लेटफार्म के माध्यम से विद्यार्थियों को शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य की देखभाल तथा पठन–पाठन में निरंतरता बनाये रखने पर एक ऑनलाइन व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान के माध्यम से प्रो. पाण्डेय ने कोविड–19 से बचाव के लिए भारत सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों जैसे बार–बार हाथ धोना, मास्क पहनना, शारीरिक दूरी बनाकर रखना, अनावश्यक रूप से घर के बाहर न निकलना, भीड़भाड़ वाले स्थानों पर जाने से बचना आदि के विषय में विद्यार्थियों को जागरूक किया। प्रो. पाण्डेय ने लॉकडाउन के कारण पठन–पाठन में आए अवरोध तथा अपने परिजनों व स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति चिंता के कारण बढ़ते तनाव का प्रबंधन करने की सीख भी विद्यार्थियों को दी। आपने विद्यार्थियों से सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ स्वस्थ जीवन शैली के प्रति जागरूक रहने की बात भी कही। डॉ. रामप्रताप सिंह ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें इस कठिन दौर में अपना अधिक से अधिक समय प्रकृति के बीच व्यतीत करना चाहिए और योग व ध्यान जैसी क्रियाओं के माध्यम से तनाव को नियंत्रित करना, गायन, पेंटिंग अथवा किसी खेल को अपनी रुचि में शामिल करना, परिवार के सदस्यों व मित्रों से सार्थक संवाद करना, अध्यात्मिकता की तरफ मुड़कर ईश्वर, जगत तथा मनुष्य जीवन की वास्तविकता पर चिंतन–मनन करना चाहिए। डा. नीरज कुमार द्विवेदी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए कहा कि ऑनलाइन प्लेटफार्मों का प्रयोग करते हुए नया कौशल सीखना, विद्यार्थियों में राष्ट्र व समाज के प्रति दायित्वबोध विकसित करना, आपदा को अवसर में परिवर्तित करने के लिए अनेक रचनात्मक उपायों पर चर्चा की। आपने विद्यार्थियों को अपने भीतर करुणा, संवेदनशीलता व मानसिक दृढ़ता जैसे सद्‌गुणों को धारण करने की सलाह भी दी। साथ ही इस व्याख्यान के माध्यम से छात्रों की अनेक शंकाओं का समाधान करने का भी प्रयास किया गया। इस ऑनलाइर्नन व्याख्यान में स्नातक–परास्नातक के अनेक छात्र–छात्राएं सम्मिलित रहे।

संस्कृत साहित्य परिषद् रिपोर्ट सत्र : 2021–2022

डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य
असि. प्रो. एवं प्रभारी
संस्कृत विभाग

परिषद् गठन : 2021–22 (ऑनलाइन माध्यम)

दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई का संस्कृत विभाग लगभग 5–7 वर्षों की शून्यता को त्याग अक्टूबर 2018 से पुनः द्रुतगति से आगे बढ़ रहा है। सत्र 2021–22 में बी.ए. प्रथम सेमेस्टर में रिकॉर्ड 93 विद्यार्थियों ने संस्कृत विषय का चयन किया। द्वितीय वर्ष और तृतीय वर्ष के भी विद्यार्थी विभाग की उत्तरोत्तर प्रगति का सूचक हैं।

मार्च 2020 से भारत में आए कोरोना वायरस के कारण हुए लॉकडाउन से शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक जैसी सभी प्रकार की गतिविधियां प्रभावित रहीं, यह सर्वविदित है। सत्र 2021–22 में भी कोविड–19 की दूसरी लहर के कारण महाविद्यालय का भौतिक रूप से संचालन कई बार बाधित हुआ परन्तु विद्यार्थियों के हित में उत्तर प्रदेश सरकार एवं विश्वविद्यालय के निर्देशों पर कॉलेज लगातार वैकल्पिक ऑनलाइन माध्यमों से प्रयोग करता रहा। क्योंकि विद्यार्थियों का हित एवं सर्वांगीण विकास हमारी संस्था का सर्वोपरि उद्देश्य रहा है।

संस्कृत साहित्य परिषद् का कई माह से अवरुद्ध गठन भौतिक रूप से सम्पन्न न हो सका तो 10 फरवरी 2022 को गूगल मीट के माध्यम से ऑनलाइन सम्पन्न कराया गया। जिसमें कॉलेज के आदरणीय प्राचार्य प्रोफेसर (डॉ.) राजेश चन्द्र पाण्डेय जी, चुनाव अधिकारी डॉ. कृपाशंकर यादव, असिस्टेण्ट प्रोफसर, अर्थशास्त्र विभाग, डी.वी. कॉलेज उरई, डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, रक्षा अध्ययन विभाग, डी.वी कॉलेज उरई, डॉ. मोनू कुमार मिश्र, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गांधी महाविद्यालय उरई तथा बी.ए. प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संस्कृत विभाग के प्रभारी एवं संस्कृत साहित्य परिषद् के संयोजक डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य की देखरेख में चुनाव अधिकारी डॉ. कृपाशंकर यादव जी के द्वारा ऑनलाइन चुनाव सम्पन्न कराया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने विगत वर्षों की भांति बड़े ही उत्साह से चुनाव प्रक्रिया का पालन किया और सर्वसम्मति से पदाधिकारियों का चयन किया।

चुनाव के बाद परिषद् की अध्यक्षता कर रहे कॉलेज के सम्मान्य प्राचार्य प्रोफेसर (डॉ.) राजेश चन्द्र पाण्डेय ने कहा कि कोरोना वायरस का यह कालखण्ड सभी दृश्यों में अपकर्ष का काल है पर मेरी कोशिश है कि इस दौर में भी महाविद्यालय की शैक्षणिक गतिविधियां प्रभावित न हों इस हेतु इस सत्र में ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण के अलावा कॉलेज की परिषदों का गठन किया जा रहा है। प्राचार्य जी ने कहा कि सभी

विद्यार्थी इस कोरोना वायरस के समय अपना और अपने परिवार का ध्यान रखें। वायरस से बचने के जो 2 गज की दूरी, मास्क, सैनिटाइजर का प्रयोग जैसे साधनों का प्रयोग करें और अपने गांव एवं क्षेत्र में लोगों को जागरुक करें। साथ ही उन्होंने सभी पदाधिकारियों और कार्यकारिणी के सदस्यों को बधाइयां दी।

इस अवसर पर गांधी महाविद्यालय से जुड़े डॉ. मोनू कुमार मिश्र ने कठिन परिस्थितियों में भी सम्पन्न हुई छात्र–छात्राओं की भागीदारी वाली इस शैक्षिक गतिविधि पर हर्ष प्रकट किया और विद्यार्थियों को मानसिक रूप से स्वस्थ रहने के लिए सकारात्मक रहने के साथ ईश्वर चिन्तन, योग एवं ध्यान जैसे कई साधनों को सरल विधि से बताकर सभी को मनोबल प्रदान किया।

चुनाव अधिकारी डॉ. कृपाशंकर यादव जी ने पदाधिकारियों को बधाइयां दी और कहा कि आप लोग कोविड 19 से अपना बचाव करते हुए घर पर ऑनलाइन माध्यम से पढ़ें और अपने, विभाग एवं कॉलेज के उत्कर्ष में योगदान दें।

उपस्थित सभी लोगों के प्रति आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापन संस्कृत साहित्य परिषद्, के संयोजक एवं कार्यक्रम के संचालक डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य ने किया।

<u>समस्त पदाधिकारियों की सूची इस प्रकार है–</u>

क्र.सं.	**पदनाम**	**पदाधिकारी**	**कक्षा**
1.	अध्यक्ष	नीलम राजपूत	बी.ए. तृतीय वर्ष
2.	उपाध्यक्ष	प्रद्युम्न	बी.ए. द्वितीय वर्ष
3.	महामन्त्री	अभय द्विवेदी	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर
4.	संयुक्त मन्त्री	चन्द्रकान्त	बी.ए. तृतीय वर्ष
5.	कोषाध्यक्ष	कृति तिवारी	बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

6. कार्यकारिणी सदस्य :

1.	मुस्कान बानो	2. अभिषेक सोनी	3. प्रियंका
4.	गुरुदेव	5. गौरव सिंह सेंगर	6. मोहन पांचाल

यह उपक्रम संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों को निरन्तर गतिमान् और शैक्षिक रूप से समृद्ध करने का काम करेगा।

English Association Report : 2021-22

Dr. S. M. Yadav
Asst. Prof.
Department of English

The unexpected lockdown due to covid-19 has defintely brought a drastic impact on the lives of people all over the world. The long lockdown during Pandemic is naturally affecting the mental health of people resulting in wide range of symtoms of psychological stress and disorder like anger, anxiety, insomina, depression etc. To make the P.G. Students of English Department mentally rejuvenated and strong, a virtual lecture on "Maintaining, Mental Health During Pandemic" on Zoom platform by Dr. Alka Rani purwar, Incharge, department of English, D.V. College Orai, was delivered on 16 Feb. 2021.

Through this programme, the guidelines for covid-19 including social distancing, wearing mask, sanitizing the hands, practising yoga for physical and mental health were elaborately discussed by Dr Purwar. In her deliverance Dr. Purwar gave some useful tips to the students like :

- Emphasis on positive and happy attitude
- To take shelter in the lap of nature.
- Utilize this time to pursue one's hobbies/dreams.
- Take this opportunity to pass quality time with family.
- Help the needy around you.
- Be busy by acquiring knowledge available on various online educational resources platforms.

In the response to this enlightening speech, students put up many questions which were answered to their satisfaction by the speaker. Doubts, confusion and specially fear and stress related to covid-19 were removed efficiently. Most of the students attended this programme enthusiastically, In the beginning. Dr. Atul Praksh Budhoulia introduced aforesaid topic widely before the lecture and entire programme was anchored by Dr Sheelu Sengar. Finally, vote of thanks was given by Dr Neeta Gupta. The technical handling of the whole programe was managed by Dr S.M. Yadav.

इतिहास परिषद् की रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. मंजू जौहरी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी
इतिहास विभाग

कोरोना वायरस संक्रमण काल में तालाबंदी (लॉकडाउन) के कारण शिक्षण संस्थाओं में पठन–पाठन की गतिविधियां प्रभावित हुईं। इन परिस्थितियों के कारण वर्तमान सत्र में इतिहास परिषद् का औपचारिक गठन नहीं हो पाया। अतः परिस्थितियों को देखते हुए गूगल मीट के माध्यम से विद्यार्थियों को एक ऑनलाइन व्याख्यान कराया गया।

दिनांक 11.01.2022 को "21वीं सदी में स्वामी विवेकानन्द के विचारों की उपादेयता" विषय पर पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. शारदा अग्रवाल एवं डॉ. मन्जू जौहरी, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई द्वारा व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर स्वामी विवेकानन्द जी के विचारों को विद्यार्थी के समक्ष प्रस्तुत किया गया एवं भारत के भविष्य संगठन के लिए धार्मिक एकता की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में डॉ. शारदा अग्रवाल जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

समय–समय पर स्वामी जी द्वारा भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं के रूप को दर्शाया गया है एवं इस सन्दर्भ में डॉ. मन्जू जौहरी द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। अन्त में विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, मानसिक विकास पर जोर देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की गयी।

आदर्श वाक्य

- तीन चीजें कोई चुरा नहीं सकता– अक्ल, चरित्र, हुनर। –अज्ञात
- झूठ मत बोलो क्योंकि एक छोटा सा झूठ भी एक बड़ी समस्या पैदा कर सकता है –अज्ञात
- जीवन में सफलता उनको मिलती है, जो बहादुरी और धैर्य से कठिनाइयों का सामना करता हैं। –अज्ञात
- 'असम्भव' शब्द का प्रयोग केवल कायर करते हैं। बहादुर व बुद्धिमान् व्यक्ति अपना मार्ग स्वयं प्रशस्त करते हैं। –चाणक्य
- मैं उनसे प्रेम करता हूँ जो मुसीबत में खड़े हो सकें, संकट में शक्ति एकत्रित कर सकें, जो आत्मचिंतन से साहसी बन सकें। –अज्ञात
- प्रत्येक पशु, पक्षी को उसी प्रकार इस धरती पर रहने का हक है, जिस प्रकार मनुष्य को है। अज्ञात
- पशुओं के साथ पशुओं जैसा व्यवहार न करें क्योंकि वे भी जीवित हैं। –अज्ञात
- परोपकार, प्रेम असहायों की मदद व उदारताओं मानव चरित्र के वे विशेष गुण हैं, जिनके बल पर कोई भी व्यक्ति महान् कहला सकता है । –अज्ञात
- दान देने का स्वभाव, मधुरवाणी, धैर्य और उचित–अनुचित की पहचान मनुष्य के स्वाभाविक गुण हैं, इसलिए ये चार बातें अभ्यास से नहीं आती हैं। –चाणक्य

अर्थशास्त्र परिषद् रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. कृपाशंकर यादव
असि. प्रो., अर्थशास्त्र विभाग

कोविड–19 महामारी का अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ शिक्षा पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा । स्कूल कॉलेज तथा इससे संबंधित अन्य संस्थान भौतिक रूप से बंद करने पड़े थे। इस विषम परिस्थितियों में भी पठन–पाठन सरकार तथा कॉलेज प्रशासन के आदेशानुसार कभी ऑनलाइन, कभी ऑफलाइन चलता रहा।

सत्र 2021–22 के लिए अर्थशास्त्र परिषद् का गठन 24–10–2021 को किया गया। अर्थशास्त्र परिषद् द्वारा क्विज कंपटीशन का आयोजन किया गया जिसमें B.A.I से M.A.II तक के छात्र–छात्राओं ने भाग लिया।

दिनांक 07–11–2021 को अर्थशास्त्र द्वारा एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. सुरेंद्र यादव (M.Ed विभाग, विभाग प्रभारी) द्वारा बच्चों को मानसिक स्वास्थ्य और शिक्षा पर एक व्याख्यान दिया गया।

अपने व्याख्यान में उन्होंने कोविड काल में शिक्षा का स्तर, शैक्षिक गतिविधि, कोविड से बचाव संबंधित महत्वपूर्ण बातें छात्रों को बताई ! इस व्याख्यान का संचालन अर्थशास्त्र परिषद् के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष द्वारा किया गया। अर्थशास्त्र परिषद् छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए हमेशा तत्पर रहा है और आगे भी तत्पर रहेगा।

संगीत परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. शगुफ्ता मिर्जा
असि. प्रो., संगीत विभाग (गायन)

संगीत परिषद् 2021–22 के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं के लिए देशभक्ति गीतों पर आधारित एक प्रतियोगिता का परिषद द्वारा आयोजन किया गया, जिसमें छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। इस प्रतियोगिता में छात्र–छात्राओं के साथ तबले पर राज ने व हारमोनियम पर अरुण कुमार (बी.ए. तृतीय वर्ष) ने संगत की। प्रस्तुत कार्यक्रम विभाग प्रभारी डा. अलकारानी पुरवार जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें डॉ. मंजू जौहरी, डॉ. शीलू सेंगर, डॉ. नीता गुप्ता व डॉ. नगमा खानम् आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शगुफ्ता मिर्जा ने व आभार प्रदर्शन डॉ. के.के., निगम द्वारा किया गया।

उपर्युक्त प्रतियोगिता में परिषद द्वारा पुरस्कृत छात्र–छात्राओं ने महाविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम 'आजादी के अमृत महोत्सव' शीर्षक के अन्तर्गत देशभक्ति गीतों की प्रतियोगिता में भिन्न–भिन्न देशभक्ति गीतों का अभूतपूर्व प्रदर्शन किया तथा आये हुये गणमान्य अतिथियों को आह्लादित किया। प्रस्तुत प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर अरुण कुमार, बी.ए. तृतीय वर्ष द्वितीय स्थान पर कु. राधा शास्त्री (बी.ए. प्रथम वर्ष तृतीय स्थान पर रहीं ।

भूगोल परिषद् की शैक्षणिक गतिविधियां : 2021–22

डॉ. गौरव यादव, विभाग प्रभारी, (भूगोल विभाग)
डॉ. मलिखान सिंह, कार्यक्रम संयोजक, (भूगोल विभाग)

भूगोल विभाग में भूगोल परिषद् का गठन विगत वर्ष की भांति दिनांक 13/12/2021 को किया गया जिसमें एम.ए. उत्तरार्द्ध, एम.ए. पूर्वार्द्ध तथा बी.ए. तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों ने सहभागिता की। परिषद के गठन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में कौशल विकास, अभिव्यक्ति एवं तार्किक क्षमता को विकसित करना है। इन विद्यार्थियों में से ही निम्नलिखित पदाधिकारियों को मनोनीत किया गया–

भूगोल परिषद् के पदाधिकारी

1. अध्यक्ष	सुरभि मिश्रा (एम.ए. उत्तरार्द्ध)
2. उपाध्यक्ष	प्रिंसी सोनी (एम.ए. पूर्वार्द्ध)
3. सचिव	प्राची ताम्रकार (एम.ए. उत्तरार्द्ध)
4. उपसचिव	आदित्य कुमार (एम.ए. पूर्वार्द्ध)
5. कार्यकारिणी सदस्य	जैनेंद कुमार (एम.ए. उत्तरार्द्ध)
	परवेज अख्तर (एम.ए. पूर्वार्द्ध)
	अनुप्रिया त्रिपाठी (बी.ए. तृतीय वर्ष)
	अनुज कुशवाहा (बी.ए. तृतीय वर्ष)
	आशीष राजावत (बी.ए. तृतीय वर्ष)

भूगोल परिषद् के कार्यक्रम

- भूगोल विभाग में दिनांक 28/02/2022 को भूगोल परिषद के अंतर्गत **"वर्तमान संदर्भ में भूगोल विषय की प्रासंगिकता"** विषय पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें डॉ. गौरव यादव (विभाग प्रभारी) ने विद्यार्थियों को भूगोल विषय के बहुआयामी पक्षों से अवगत कराया तथा भूगोल विषय में भविष्य से संबंधित जिज्ञासाओं पर प्रकाश डाला।
- दिनांक 21/05/2022 को भूगोल विभाग में भूगोल परिषद द्वारा विदाई समारोह का आयोजन किया गया जिसमें एम.ए. उत्तरार्द्ध के विद्यार्थियों को एम.ए. पूर्वार्द्ध के विद्यार्थियों द्वारा विदाई दी गयी। सभी विद्यार्थियों ने मंच पर अपने शैक्षणिक जीवन से संबंधित अनुभवों को एक–दूसरे से साझा किया।

  इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेश चंद्र पांडेय ने विद्यार्थियों के लिए उज्ज्वल भविष्य की कामना की तथा विद्यार्थियों को समाज में एक जिम्मेदार नागरिक बनने की सलाह दी। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. आर.के. श्रीवास्तव (पूर्व विभागाध्यक्ष, भूगोल

विभाग) ने भूगोल विषय के व्यवहारिक पक्षों पर प्रकाश डाला। डॉ. गौरव यादव (विभाग प्रभारी, भूगोल विभाग) ने विद्यार्थियों से अपने छात्र जीवन के अनुभवों को साझा किया तथा भूगोल विषय में भविष्य को लेकर छात्रों की जिज्ञासाओं का समाधान किया। डॉ.माधुरी रावत (विभाग प्रभारी, मनोविज्ञान विभाग), डॉ. नमो नारायण (राजनीति शास्त्र) तथा डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी (रक्षा अध्ययन विभाग) ने समस्त विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम के अंत में डॉ. मलखान सिंह (कार्यक्रम संयोजक) ने अपनी कविताओं के माध्यम से विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया तथा समस्त अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

भूगोल विषय के पाठयक्रम के अंतर्गत आयोजित अनिवार्य शैक्षणिक भ्रमण / सर्वे कैंप

- दिनांक 07/03/2022 तक बी.ए. तृतीय वर्ष के भूगोल विषय के विद्यार्थियों का अनिवार्य शैक्षणिक भ्रमण खजुराहो, पन्ना, रीवा, चित्रकूट (म.प्र.) के समीपवर्ती क्षेत्रों में कराया गया। इस शैक्षणिक भ्रमण में विद्यार्थियों को क्षेत्र विशेष की जलवायु, भू–आकृति, नदी, जलप्रपात, कृषि तथा वनस्पतियों आदि का अध्ययन अवलोकन कराया गया। उक्त भ्रमण से संबंधित टूर रिपोर्ट को डॉ. गौरव यादव (विभाग प्रभारी) एवं डॉ. मलखान सिंह के कुशल मार्गदर्शन में तैयार कराया गया।
- दिनांक 03/05/2022 से 12/05/2022 तक एम.ए. पूर्वार्द्ध तथा एम.ए. उत्तरार्द्ध का अनिवार्य शैक्षणिक भ्रमण / सर्वे कैंप उत्तराखण्ड राज्य के हरिद्वार, ऋषिकेश, सहस्त्रधारा, मसूरी, कैंपटी फॉल तथा टेहरी डैम आदि क्षेत्रों में आयोजित कराया गया। जिसमें विद्यार्थियों ने क्षेत्र विशेष की जलवायु, अपरदनात्मक एवं विश्लेषणात्म्क स्थलाकृतियों, सीढ़ीदार कृषि, अधिवासों इत्यादि का विस्तारपूर्वक अवलोकन किया। एम.ए. उत्तरार्द्ध के विद्यार्थियों ने अपने पाठ्यक्रम के अनुसार हरिद्वार के प्रमुख बाजार का सर्वे किया। डॉ.गौरव यादव (विभाग प्रभारी) तथा डॉ. मलखान सिंह के कुशल मार्गदर्शन में उक्त शैक्षणिक भ्रमण / सर्वे कैंप सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

वर्ग संघर्ष

(कन्नड़ लघुकथा)

स.ल. कोडले

उधर एक विशाल वृक्ष है, जिसकी खोखली डालियों के अंदर–बाहर असंख्य चमगादड़ लटके रहते हैं। कुल मिलाकर वे कई प्रकार के चमगादड़ हैं और श्रेणियों में विभक्त हैं। छोटे–बड़े दरम्याने प्रत्येक वर्ग की अपनी एक विशेष डाल है और उस पर केवल वे ही लटकते हैं, दूसरे वर्ग का कोई चमगादड़ नहीं लटक सकता। बड़ी श्रेणी के चमगादड़ जितने कम है, उनकी डाल उतनी ही मोटी है।

वे सब दिन भर एक दूसरे पर आरोप–प्रत्यारोप करते रहते हैं, मगर अंधेरा होते ही वे सब निकल पड़ते हैं। रात को उन्हें रोकने वाला कोई नहीं होता, निष्कंटक होकर घूमते हैं। तब छोटे–बड़े दरम्याने सब एक–से दिखते हैं। उनमें भेद करना कठिन हो जाता है। यही उनकी विशेषता है, जो कहीं–कहीं कभी–कभी उनके लिये बड़ी लाभदायक सिद्ध होती है और निकटवर्ती पेड़ों पर डेरा जमाये उल्लू उन्हें आँखें फाड़े देखते रह जाते हैं।

राजनीति विज्ञान परिषद् रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. नगमा खानम्
असि. प्रो., राजनीति विज्ञान विभाग

कोरोना वायरस से उपजी महामारी के कारण पिछले दो वर्ष भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व के अत्यंत निराशाजनक और भयाक्रांत रहे हैं। जहाँ एक ओर सभी लोग अपने जीवन की सुरक्षा के लिए घरों में कैद थे, तो वहीं वैज्ञानिक चिकित्साकर्मी, सिविल सोसाइटी और सरकार इससे निपटने के उपाय खोजने में दिन दूनी, रात चौगनी मेहनत करने में जुटे थे। पर जैसा कि महान् जीवशास्त्री चार्ल्स डार्विन ने कहा है कि "जिन्दगी अपना रास्ता ढूंढ ही लेती है।" कोरोना महामारी के प्रकोप को हराकर हम एक बार पुनः विकास के पथ पर अग्रसर हैं।

विभाग ने भी (उच्चतर शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार) शिक्षण–प्रशिक्षण कार्य के तरीकों में बदलाव कर ऑफलाइन कक्षाओं के बजाए ऑनलाइन माध्यम से कक्षाओं में शिक्षण कार्य जारी रखा। पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजनीति विज्ञान परिषद की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसे परिषद संयोजक डॉ. नगमा खानम् के निर्देशन में एवं विभाग प्रभारी डॉ. नमो नारायण की उपस्थिति में गठित किया गया। सत्र 2021–22 के परिषद् की चुनाव अधिकारी डॉ. नीति कुशवाहा की देखरेख में नई कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का चयन किया गया। सत्र 2021–22 की कार्यकारिणी में एम.ए. द्वितीय वर्ष के राज को अध्यक्ष, एम.ए. द्वितीय वर्ष की सोनाली वर्मा एवं प्रथम वर्ष के प्रतीक को उपाध्यक्ष, हृदेश सक्सेना को कोषाध्यक्ष, प्रिया राठौर व अनुरुद्ध को सचिव, आरिध्या गुबरेले व ऋषि यादव को उपसचिव तथा एम.ए. द्वितीय वर्ष के धीरज कुमार को कार्यक्रम सचिव का कार्यभार सौंपा गया। इसके अतिरिक्त कार्यकारिणी के अन्य सदस्यों में शुभाली दुबे, साक्षी वर्मा, नन्दनी वर्मा, जितेन्द्र दीपक त्रिपाठी, हरिओम, शिवांगी द्विवेदी, आकांक्षा नगायच, साक्षी चौहान, करन सोनी, शिवम राज, चंचल सोनी, तानिया सोनी, विजय लक्ष्मी, अजयपाल, केशवचन्द्र, मयंक, ऋतिक शर्मा भी शामिल रहे।

प्रशासन द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों व छात्र–छात्राओं के जीवन की सुरक्षा के मद्देनजर इस सत्र में परिषद के द्वारा सीमित कार्यक्रमों को ही करवाया जा सका। इस क्रम में 8 मार्च 2022 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में राजनीति विज्ञान परिषद के द्वारा कार्यक्रम संयोजिका डॉ. नगमा खानम के निर्देशन में "महिलाओं की स्थिति व सुरक्षा" जैसे कई मुद्दों पर चर्चा–परिचर्चा व संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष राज ने अभी महिलाओं की पुरुषों से अनुमति लेने की परंपरा को राष्ट्र की प्रगति में बाधक माना। परिषद के पूर्व अध्यक्ष अमित ने महिलाओं के वस्तुकरण को उनकी प्रगति में बाधक माना तो वहीं प्रगति पाण्डेय ने इससे निपटने के लिए महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता सामाजिक सुरक्षा को सबसे महत्वपूर्ण उपाय सुझाया। इस सार्थक चर्चा के साथ ही परिषद संयोजक डॉ. नगमा खानम ने समाज के द्वारा लैंगिग समानता को आत्मसात् करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस प्रकार सार्थक चर्चा और परिचर्चा के द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों को करवाकर परिषद ने अपना 2021–22 का सत्र पूर्ण किया और राजनीति विज्ञान विभाग एवं परिषद की मेधावी छात्रा प्रगति पाण्डेय (एम.ए.) ने सत्र 2021–22 में 75 %अंकों के साथ विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी प्राप्त की।

समाजशास्त्र परिषद् रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव
असि. प्रो., समाजशास्त्र विभाग

समाजशास्त्र परिषद दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई की नवीन कार्यकारिणी की बैठक में विभिन्न कार्यक्रमों को सम्पन्न कराया गया जिसमें सर्वप्रथम विभाग प्रभारी डॉ. आनन्द कुमार खरे के आकस्मिक निधन पर शोकसभा की गयी तदुपरान्त विभिन्न गतिविधियां परिषद् के माध्यम से कराने पर विचार किया गया। जिनका जाना विभाग को ही नहीं अपितु सम्पूर्ण कालेज को स्तब्ध एवं निशब्द कर गया इस दुःखद परिस्थिति में भी विद्यार्थियों के हित को दृष्टिगत रख परिषद के अन्तर्गत औपचारिक रूप से निम्न कार्यक्रम सम्पन्न किए गए–

1. भाषण प्रतियोगिता–

विषय– 1. चुनाव प्रक्रिया में मतदाता का महत्व : अतिथि व्याख्यान

विषय : दायित्व से विमुख होते युवा

अतिथि वक्ता : डा. नगमा खानम्, राजनीति शास्त्र विभाग, डी.वी. कालेज, उरई।

2. निबन्ध प्रतियोगिता

निबन्ध प्रतियोगिता डॉ. आनन्द कुमार खरे की स्मृति में आयोजित की गई जिसमें B.A.I व B.A.II एवं B.A.III के छात्र एवं छात्राओं ने भाग लिया जिसमें मेहर, निशा, प्रथम स्थान, गोल्डी यादव द्वितीय स्थान सोनम वर्मा तृतीय स्थान एवं अन्य छात्र/छात्राओं को सान्त्वना पुरुस्कार दयानन्द वैदिक कालेज के प्राचार्य डा. राजेश चन्द्र पाण्डेय, डा. नगमा खानम, राजनीति शास्त्र विभाग, ने संयुक्त रूप से प्रतिभागी छात्र एवं छात्राओं को प्रदान किया इसके बाद प्राचार्य डा. राजेश चन्द्र पाण्डेय ने सभी छात्र/छात्राओं को आशीर्वाद देते हुये आगामी परीक्षा में परिश्रम करने पर जोर दिया। डॉ. नगमा खानम ने इन सभी आयोजनों की सराहना की। अन्त में संयोजक डा. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव ने सभी छात्र/छात्राओं को सम्बोधित करते हुये आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की एवं सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया।

समाजशास्त्र की कार्यकारिणी :

1. मेहर निशा	अध्यक्ष	2. नेहा यादव	उपाध्यक्ष (प्रथम)
3. समरीन बानो	उपाध्यक्ष (द्वितीय)	4. अरविन्द कुमार	मंत्री
5. शिवम् राज	कोषाध्यक्ष	6. अभिषेक सचान	सूचना एवं प्रसारण मंत्री
7. पूनम वर्मा	कार्यक्रम संयोजक		

8. कार्यकारिणी सदस्य

1. नीलम वर्मा	2. दीक्षा वर्मा	3. आकाश गुप्ता	4. आकांक्षा
5. मुस्कान	6. विकेन्द्र सिंह	7. वर्षा	8. अनुराधा
9. कहकशां	10. सोनम	11. पूनम वर्मा	12. मनीष सोनी
13. सीमा सोनी	14. सरिता वर्मा		

मनोविज्ञान परिषद् रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. माधुरी रावत
अिस. प्रो. एवं प्रभारी, मनोविज्ञान विभाग

सत्र 2021–22 में विभाग द्वारा आत्महत्या रोकथाम दिवस के उपलक्ष्य में एकदिवसीय वेब गोष्ठी का आयोजन मनोविज्ञान विभाग, डीवी कॉलेज, उरई के द्वारा 10 सितंबर 2021 को "आत्महत्या संकट की पहचान व रोकथाम शीर्षक पर आयोजित की गई है जिसके मुख्य वक्ता के रूप में श्री प्रदीप गुप्ता जी मनोवैज्ञानिक, डी.आर.डी.ओ., दिल्ली व विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. तारेश भाटिया पूर्व प्राचार्य व एसोसिएट प्रोफेसर, दयानंद वैदिक कॉलेज, उरई उपस्थित रहे हैं। महाविद्यालय के संरक्षक के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रामप्रताप सिंह का स्नेहिल संरक्षण प्राप्त रहा। इस वेब गोष्ठी के माध्यम से समाज के लोगों के बीच आत्महत्या को कैसे रोका जाये, आत्महत्या के कारणों, व कैसे आत्महत्या को समाज से दूर किया जा सके आदि ज्वलंत मुद्दों पर चर्चा की गई। इस संगोष्ठी के माध्यम से सभी विद्वानों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए जो वास्तव में आज के परिवेश में हम सभी के लिए बहुत ही लाभप्रद और सफल जीवन जीने के लिए एक मील का पत्थर साबित हो सकता है।

सत्र 2021–22 के परिप्रेक्ष्य में 15 दिसंबर 2022 को परिषद् का गठन किया गया। विभाग के सभी प्राध्यापकों की उपस्थिति में विभाग के परिषद का गठन किया गया और पूरे वर्ष में संचालित होने वाले कार्यक्रमों की एक रूपरेखा तैयार की गई।

18 दिसम्बर 2022 को मनोविज्ञान विभाग में स्वागत समारोह का आयोजन किया गया जिसमें बी. ए. प्रथम सेमेस्टर और एम.ए. प्रथम वर्ष के छात्र/छात्राओं का स्वागत के लिए स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। तदुपरांत 8 जनवरी 2022 को दिन शनिवार को मनोविज्ञान विषय के छात्र/छात्राओं के द्वारा पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया है।

12 फरवरी 2022 शनिवार को भाषण प्रतियोगिता विभाग द्वारा आयोजित की गई, जिसमें महाविद्यालय के बच्चों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया जिसका विषय–वर्तमान समय में मनोविज्ञान की उपयोगिता। वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 28 फरवरी 2022 को किया गया जिसका शीर्षक–"विद्यार्थियों द्वारा सोशल मीडिया का प्रयोग सही या गलत।" इस बारे में लोगों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए। कुछ लोगो ने इसके पक्ष में और कुछ लोगों ने इसके विपक्ष में भी अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

इसके उपरांत सभी कार्यक्रमों के आयोजन के बाद पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिन्होंने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया है उन सभी छात्र/छात्राओं को विभाग में पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। जिन छात्र/छात्राओं में वास्तव में प्रतिभा थी लेकिन कुछ कारणवश किसी स्थान में नहीं आ पाए तो उन बच्चों को सांत्वना पुरस्कार भी विभाग के प्राध्यापकों के द्वारा उन बच्चों को भविष्य में उज्ज्वल भविष्य की रूपरेखा तैयार करने के लिए उनको एक प्रोत्साहन के तौर पर उनको भी पुरस्कृत किया गया।

शिक्षक शिक्षा विभाग रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. शैलजा गुप्ता

एसो. प्रो., शिक्षक शिक्षा विभाग

बी.एड. प्रथम वर्ष की प्रवेश प्रक्रिया दिनांक 27/09/2021 से प्रारंभ हुई। दिनांक 18/10/2021 से बी.एड. प्रथम वर्ष का शिक्षण सत्र प्रारंभ हुआ। बी.एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को विस्तार से बी.एड. कोर्स के विषय में अवगत कराने हेतु प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम दिनांक 23/11/2021 से संचालित हुआ जिसमें महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेश चंद्र पांडे एवं विभाग के सभी शिक्षकों द्वारा विषय विशेषज्ञ के रूप में व्याख्यान प्रस्तुत किए गए एवं छात्रों को लाभान्वित किया गया।

बी.एड. द्वितीय वर्ष की प्रवेश प्रक्रिया 11 अक्टूबर 2021 से प्रारंभ की गई। दिनांक 18 अक्टूबर 2021 से बी.एड. द्वितीय वर्ष की कक्षाएं प्रारम्भ की गई। बी.एड. द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों को शिक्षण कौशलों का ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से दिनांक 04 दिसंबर 2021 से सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching) कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सूक्ष्म शिक्षण कार्यक्रम में विभाग प्रभारी डॉ. शैलजा गुप्ता, डॉ. राजेश पालीवाल, डॉ. शशि तिवारी, डॉ. विजेंद्र कुमार एवं डॉ. जितेंद्र प्रताप द्वारा क्रमशः प्रश्न कौशल, प्रस्तावना कौशल, उद्दीपन परिवर्तन कौशल, पृष्ठ पोषण कौशल एवं श्यामपट्ट कौशल के विषय में विस्तार से समझाया गया।

दिनांक 28/12/2021 से बी.एड. प्रथम वर्ष एवं बी.एड. द्वितीय वर्ष की इंटर्नशिप प्रारंभ की गई। दिनांक 11 जनवरी 2022 को युवा दिवस के अवसर पर विभाग द्वारा ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन कराया गया। दिनांक 22 फरवरी 2022 को समस्त छात्र–छात्राओं ने विभाग द्वारा आयोजित वर्कशॉप में प्रतिभाग किया। दिनांक 22 मार्च 2022 से 26 मार्च 2022 के मध्य बी.एड. के विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की गतिविधियां संपन्न की गयी जिनमें पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन, रीडिंग एवं रिफ्लेक्टिंग ऑन टेक्स्ट प्रमुख थे। साथ ही साथ इन गतिविधियों में से बी.एड. द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम की पूर्ति के क्रम में दिनांक 25 मार्च 2022 को सांस्कृतिक कार्यक्रमों 'उमंग उत्सव' का आयोजन बगिया परिसर स्थित सेमिनार हॉल में किया गया। इस काय्रक्रम में छात्र–छात्राओं द्वारा अनेक मनमोहक प्रस्तुतियां दी गई, जिनकी भूरि–भूरि प्रशंसा दर्शक दीर्घा में उपस्थित महाविद्यालय के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रस्तुत कुछ प्रमुख कार्यक्रम थे–एकल गायन, नुक्कड़ नाटक, एकल नृत्य प्रस्तुति, कब्वाली, कविताएं, योगासन, भोजपुरी नाटक, समूह गान एवं समूह नृत्य, राष्ट्रभक्ति समूह गीत इत्यादि।

दिनांक 11 मई 2022 को बी.एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के समस्त विद्यार्थियों को उरई स्थित दिव्यांग विद्यालय का भ्रमण कराया गया। दिनांक 2 जून से 9 जून 2022 के मध्य विभाग द्वारा पूर्व यूनिवर्सिटी एग्जाम (Pre-University Exam) संपन्न कराए गए। कोरोना महामारी के दौरान विभाग के सभी शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन कक्षाएं ली गई। बी.एड. पाठ्यक्रम की पूर्ति के क्रम में पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से छात्रों से ऑनलाइन प्रस्तुतीकरण भी कराया गया।

एम.एड. (स्ववित्तपोषित) विभाग रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. सुरेंद्र यादव
असि. प्रो., एम.एड. विभाग प्रभारी

दयानंद वैदिक कॉलेज के महत्वपूर्ण परास्नातक एम.एड. (स्ववित्तपोषित) पाठ्यक्रम में एनसीटीई के द्वारा प्रदत्त एक इकाई यानी कुल 50 सीटों के सापेक्ष प्रथम वर्ष में 50 विद्यार्थियों का पूर्ण रूप से प्रवेश दिनांक 20 अक्टूबर 2021 तक पूर्ण कर दिनांक 22 अक्टूबर 2021 से कक्षाएं संचालित होना प्रारंभ हुई।

प्रारभ में विद्यार्थियों के महाविद्यालयीय वातावरण समायोजन के परिप्रेक्ष्य में पांच दिवसीय ओरिएंटेशन प्रोग्राम कराया गया। इस ओरियंटेशन कार्यक्रम के क्रम में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास एवं व्यक्तित्व समायोजन के दृष्टिगत विभिन्न बिंदुओं पर उनके समक्ष चर्चाएं संपन्न हुई तथा उन्हें एनसीटीई व बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के विभिन्न मानक व मानदंडों से संबंधित विभिन्न बिंदुओं से अवगत कराकर शिक्षण हेतु उनके व्यवहार में परिवर्तन किया गया। प्राध्यापक डॉ. योगेश कुमार पाल एवं श्री उमेश सिंह द्वारा पाठ्यक्रम से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को योजनाबद्ध तरीके से पूर्ण कराई जाती रही। शिक्षण सत्र में कोरोना वायरस के खतरनाक संकट का भी सामना करना पड़ा। कोविड–19 के दृष्टिगत शासन एवं महाविद्यालय के प्राचार्य के आदेश अनुसार दिनांक 10 जनवरी 2022 से 6 फरवरी 2022 तक ऑनलाइन गूगल मीट के माध्यम से विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम शिक्षण का कार्य पूर्ण कराया गया। ऑनलाइन कक्षाओं के उपरांत ऑफलाइन कक्षाएं सुनियोजित तरीके से पाठ्यक्रम अनुसार चलती रहीं तथा दिनांक 20 अगस्त 2022 तक संचालित कर पाठ्यक्रम पूर्ण कराया गया ।

इसी क्रम में एम0 एड0 द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम का संचालन भी 22 अक्टूबर 2021 से प्रारंभ हुआ। एम.एड. द्वितीय वर्ष का पाठ्यक्रम विविधताओं से भरा हुआ है। द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम के अंतर्गत तीन इंटर्नशिप जिसमें प्रथम इंटर्नशिप कार्य के अंतर्गत चार सप्ताह की क्षेत्रीय आधारित गतिविधियां द्वितीय इंटर्नशिप के अंतर्गत चार सप्ताह की विशेषज्ञता संबंधित गतिविधियां एवं तृतीय इंटर्नशिप के अंतर्गत चार सप्ताह तक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में जुड़कर शिक्षण अभ्यास कार्य करने की गतिविधियां, सम्मिलित हैं जिन्हें योजनाबद्ध तरीके से विभिन्न विद्यालयों में पूर्ण कराई गई। इंटर्नशिप कार्य के उपरांत विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से लघुशोध प्रबंध का कार्य पूर्ण करना होता है। इस कार्य के अंतर्गत विद्यार्थी वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग कर नवीन ज्ञान की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास करते हैं तथा अपने दृष्टिकोण को वैज्ञानिक रूप प्रदान करते हैं। एमएड द्वितीय वर्ष द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के समस्त दस्तावेजों के संकलन एवं संरक्षण में वरिष्ठ लिपिक डॉ. रामजी समाधिया की महत्वपूर्ण भूमिका प्रशंसनीय रहती है। उपर्युक्त एम.एड. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष का पाठ्यक्रम प्राध्यापकों द्वारा बड़ी सहजता एवं सरलता से प्रसन्नचित्त वातावरण में दिनांक 20 अगस्त 2022 को पूर्ण कर लिया गया। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षा में एम.एड. विद्यार्थियों द्वारा विश्वविद्यालय रैकिंग में प्रमुखता से स्थान प्राप्त करना एवं हर सत्र में नेट परीक्षा अधिकांश विद्यार्थियों द्वारा उत्तीर्ण करना प्रशंसनीय रहता है।

वनस्पति विज्ञान परिषद् रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. नीति कुशवाहा
असि. प्रो., वनस्पति विज्ञान विभाग

दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई के वनस्पति विज्ञान विभाग में संचालित वनस्पति विज्ञान परिषद का उद्देश्य विद्यार्थियों के शैक्षणिक विकास के साथ–साथ व्यक्तित्व विकास का भी रहा है। इसी उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए शिक्षण कार्य के समानान्तर पाठ्येतर गतिविधियाँ समय–समय पर संचालित होती रहती हैं। इन गतिविधियों में स्नातक एवं परास्नातक स्तर से विद्यार्थियों की उत्साहपूर्ण सहभागिता रहती है।

महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ एवं हराभरा रखने के उद्देश्य से महाविद्यालय में 01 से 07 जुलाई 2021 के मध्य वनसप्ताह के आयोजन के अंतर्गत वृक्षारोपण किया गया जिसमें सभी प्राध्यापकों की सक्रिय प्रतिभागिता रही। 02/02/2022 World Wetland Day के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन (Online Mode) में किया गया जिसमें मुख्य वक्ता डा0 वी0के0 यादव ने World Wetland Day 2022 की Theme Action for people And nature" पर वक्तव्य देते हुऐ इसके महत्व एवं सतत् उपयोग पर प्रकाश डाला। डॉ0 आर0 के0 गुप्ता ने अपने अध्यक्षीय उदबोधन में बताया Wetland महत्वपूर्ण पारिस्थिकी तंत्र है जो प्रथ्वी के लिये किडनी की तरह कार्य करता है। अतः इनका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।

28/02/2022 को National Science Day पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता डॉ0 वी0 के0 यादव ने डॉ0 सी0 बी0 रमन के जीवन परिचय एवं अविष्कार पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय एवं अध्यक्ष डॉ0 आर0 के0 गुप्ता ने भी अपने वक्तव्यों से विद्यार्थियों को लाभान्वित किया। संचालन डॉ0 नीति कुशवाहा ने किया।

विभागीय परंपरा के अनुसार दिनांक 02/03/2022 को एम0एस–सी0 तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने एम0एस–सी0 प्रथम सेमेस्टर के नवागन्तुक विद्यार्थियों को वेलकम पार्टी देकर स्वागत एवं औपचारिक परिचय दिया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय ने सभी विद्यार्थियों को मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम का संचालन छात्रा साक्षी त्रिवेदी ने किया।

प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय की उपस्थिति में दिनांक 03/03/2022 को "विश्व वन्यजीव दिवस" का आयोजन किया गया जिसमें डॉ0 वी0 के0 यादव, डॉ0 आर0 के0 गुप्ता एवं डॉ0 नील रतन ने अपने विचारों से विद्यार्थियों को ज्ञानवर्धक महत्वपूर्ण जानकारी दी। संचालन डॉ0 नीति कुशवाहा ने किया।

World Forstry Day 2/03/2022 के अवसर पर संचालिका डॉ0 नीति ने विषय प्रवर्तन करते हुए वनों के कटाव से उत्पन्न हुई समस्याओं पर प्रकाश डाला। डॉ0 आर0 के0 गुप्ता ने अध्यक्षीय उद्बोधन में ग्लोबल वार्मिंग, एसिड रेन तथा ओजोन परत में छिद्र जैसी पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में वनों की भूमिका एवं महत्व को समझाया। मुख्य वक्ता डॉ0 वी0 के0 यादव पे वनों के महत्व पर ज्ञानर्वधन जानकारी दी।

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की श्रृंखला में दिनांक 21/05/2022 को "अंतर्राष्ट्रीय जैवविविधता दिवस" के अवसर पर 'जैवविविधता एवं संकटग्रस्त प्रजातियाँ' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी का विषय प्रवर्तन समारोह अधिकारी डॉ0 राजेश पालीवाल ने किया। अध्यक्षीय भाषण डॉ0 आर0 के0 गुप्ता द्वारा दिया गया एवं संचालन

डॉ0 नीति कुशवाहा ने किया। दिनांक 04/06/2022 को विश्व पर्यावरण दिवस की पूर्व संध्या पर 'Only one earth : Living Sustainably and harmony with nature' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें अनेक विद्यार्थियों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। मुख्य वक्ता डॉ0 वी0 के0 यादव ने पर्यावरणीय समस्याओं पर अनेक रोचक एवं ज्ञानवर्धक संस्मरण सुनाते हुए विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ0 राजेश पालीवाल, डॉ0 आर0 के0 गुप्ता, डॉ0 हर्ष गर्ग ने अपने अपने विचारों से लाभान्वित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ0 शरत् श्रीवास्तव ने किया।

डॉ0 आर0 के0 गुप्ता के शोध निर्देशन में सुप्रिय दीक्षित् को बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी द्वारा शोध उपाधि प्रदान की गई। डॉ0 वी0 के0 यादव ने परास्नातक कक्षाओं के लिए विश्वविद्यालय की पाठ्यक्रम समिति के संयोजक के रूप में नवीन पाठ्यक्रम का निर्धारण किया।

रसायन विज्ञान परिषद् रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. नफीसुल हसन
अंसि. प्रो., रसायन विज्ञान विभाग

सत्र 2021–22 में छात्र–छात्राओं के विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश अक्टूबर–नवम्बर 2021 में पूर्ण हुए। सत्र 2021–22 में दिनांक 09.09.2021 को रसायन विज्ञान विभाग में रसायन विज्ञान परिषद का गठन डॉ. विजय कुमार चौधरी एवं समस्त विभागीय शिक्षक तथा छात्र–छात्राओं की उपस्थिति में किया गया जिनमें सर्वसम्मति से ऋतुराज सिंह को अध्यक्ष, अनुष्का तिवारी को उपाध्यक्ष तथा सोनल नायक को संयुक्त सचिव का पद दिया गया। समिति को सुचारु रूप से चलाने के लिये समिति सदस्य पारुल गुप्ता, अमन वर्मा, शालिनी दीक्षित, प्रियंका नियुक्त किये गये।

रसायन विज्ञान परिषद के गठन के उपलक्ष्य में डॉ. ज्ञानेंद्र मोहन बसेड़िया ने विज्ञान में शोध के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी से अवगत कराया तथा डॉ. हर्ष कुमार गर्ग नेचुरल प्रोडक्ट और उसके मेडिसिनल यूजेस के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। इसी क्रम में डॉ. शरद श्रीवास्तव ने पॉलीमर के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा डॉ. सैयद नफीस उल हसन ने ग्लोबल वार्मिंग और उसके दुष्प्रभावों को विस्तार से चर्चा करके हम सबका ज्ञानवर्धन किया इसी क्रम में डॉ. प्रवीण सिंह ने कार्बन क्रेडिट और कार्बन डेटिंग के बारे में चर्चा की। इसी क्रम में शिवराग मिश्रा ने कार्सिनोजेनिक हाइड्रो हाइड्रोकार्बन से होने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया। रसायन विज्ञान परिषद का समापन रसायन विज्ञान विभाग के प्रभारी डॉ. विजय कुमार चौधरी के उद्बोधन से हुआ जिन्होंने अपने उद्बोधन में जीवन में रसायन विज्ञान के महत्व को भलीभांति से हम सबको परिचित कराया। इस अवसर पर विभाग के सभी सहयोगियों के साथ स्नातक एवं परास्नातक के छात्र–छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

Zoology Association की गतिविधियाँ : 2021–22

डॉ0 आलोक पाठक
अंसि. प्रो., जन्तु विज्ञान

कोरोना महामारी के आघातों से उबरने के पश्चात्, विलम्ब से ही सही महाविद्यालय के नवीन सत्र में एम.एस–सी प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों का प्रवेश प्रारम्भ हुआ, विगत सत्रों की भाँति जन्तु विज्ञान विभाग में परास्नातक तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने परास्नातक प्रथम सेमेस्टर के विद्यार्थियों के लिए स्वागत समारोह का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में उन्होंने अपने वरिष्ठ साथियों को भी आमंत्रित किया।

इस स्वागत कार्यक्रम में जन्तु विज्ञान सामान्य प्रतियोगिता और रंगारंग कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम प्राचार्य प्रो0 (डॉ0) राजेश चन्द्र पाण्डेय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथियों पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव एवं डॉ0 विजय कुमार यादव ने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए आशीर्वाद व शुभकामनाएँ दी।

विभाग में डॉ0 मनोज कुमार गुप्ता की अध्यक्षता में एम0एस–सी0 छात्र/छात्राओं को लेकर "जन्तु विज्ञान परिषद् सत्र 2021–22" का गठन किया गया जिसके अन्तर्गत एम0एस–सी0 तृतीय सेमेस्टर से सत्यम पाल (अध्यक्ष), साफिया खान (उपाध्यक्ष) एवं प्रथम सेमेस्टर से कृतिका शर्मा (सचिव), प्रिंसी राजावत (संयुक्त सचिव) का चुनाव लोकतांत्रिक विधि से किया गया।

शैक्षिक सत्र के अर्न्तगत एम0एस–सी0 विद्यार्थियों का एकदिवसीय शैक्षिक भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमें सभी छात्र/छात्रायें 19/12/2021 को "मत्स्य बीज उत्पादन केन्द्र, कोंच" निरीक्षण के लिए गये। इस शैक्षिक भ्रमण के दौरान श्री सियाशरण कुशवाहा जी (मत्स्य विभाग कर्मचारी, कोंच) ने विद्यार्थियों को मत्स्य पान की विस्तृत जानकारी दी। कुशवाहा जी ने बताया कि रोहू, कतला, नैन, सिल्वर कार्प व ग्रास कार्प मछलियों के कृत्रिम प्रजनन के पश्चात् मत्स्य बीज उत्पादन केन्द्र, कोंच से जालौन, झाँसी, ललितपुर, हमीरपुर, औरैया, इटावा, आगरा में मत्स्य बीजों की आपूर्ति की जाती है, उन्होंने यह भी कहा कि सरकारी योजनाओं के अर्न्तगत कोई भी व्यक्ति छोटी लागत लगाकर इस व्यवसाय को कर सकता है। यह एकदिवसीय भ्रमण विभाग के सभी शिक्षकों के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। इस भ्रमण के दौरान विभाग के श्री गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव, राघवेन्द्र राजपूत व श्री राजकुमार भी उपस्थित रहे।

कोरोना अवकाश के कारण इस सत्र में एम0एस–सी0 प्रथम व तृतीय सेमेस्टर में दो दिवसीय पाठ्यक्रम सेमिनार का आयोजन 18 व 19 जनवरी 2022 को किया गया जिसमें विद्यार्थियों ने अपने पाठ्यक्रम के सम्बन्धित शीर्षकों को प्रस्तुत किया। महाविद्यालय में आजादी का अमृत महोत्सव, युवा महोत्सव एवं मातुश्री चित्रा देवी पुरवार रुचि महोत्सव का आयोजन 04 और 05 मार्च 2022 को किया गया, जिसमें विभाग के विभिन्न छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया और विशेष स्थान भी प्राप्त किया। 13–14 मार्च 2022 को महाविद्यालय में उ0प्र0 शासन द्वारा मोबाईल/टैबलेट का वितरण किया गया, इसी क्रम में जन्तुविज्ञान विभाग के एम0एस–सी0 तृतीय सेमेस्टर के सभी विद्यार्थियों ने टैबलेट प्राप्त किये जो उनके स्नाकोत्तर अध्ययन में विशेष सहायक होंगे। इसी उम्मीद के साथ सत्र 2021–22 की सेमेस्टर परीक्षाओं व उज्ज्वल भविष्य के लिए सभी जन्तु विज्ञान स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को विभाग की ओर से ढेरों शुभकामनाएँ।

गणित परिषद् रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. सुरेन्द्र सिंह चौहान
प्रभारी, गणित विभाग

सत्र 2021–22 में छात्र–छात्राओं के विभिन्न कक्षाओं में प्रवेश अक्टूबर–नवम्बर 2021 में पूर्ण हुए दिनांक 06.12.2021 को मध्यान्ह 02.30 बजे गणित विभाग में कोविड–19 के नियमों का अनुपालन करते हुए लोकतांत्रिक तरीके से गणित परिषद् 2021–22 का गठन किया गया। इस परिषद के गठन में चुने हुए पदाधिकारियों के नाम विवेक कुशवाहा (अध्यक्ष), जगभान सिंह (उपाध्यक्ष), निखिल वर्मा (महामंत्री), अंजुल प्रजापति (संयुक्त मंत्री), आशीष श्रीवास्तव, साक्षी राजपूत, सौम्या गुप्ता, स्वैच्छा श्रीवास्तव (सदस्यगण) हैं। इस गठन प्रक्रिया में डा. एस. एस. चौहान (प्रभारी, गणित विभाग), डा. हरीश श्रीवास्तव (असि. प्रोफेसर, गणित विभाग) उपस्थित रहे। दिनांक 28.01.2022 को मध्याहन 2.30 बजे गणित परिषद की ऑनलाइन मीटिंग हुयी। इस मीटिंग में कोविड–19 से बचाव, सावधानियां एवं टीकाकरण पर विस्तार से चर्चा हुई। इस ऑनलाइन मीटिंग में लगभग 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया। दिनांक 14.02.2022 को मध्याह्न 3.00 बजे गणित विभाग में गणित परिषद की एक बैठक आयोजित की गयी। इस बैठक में ऑफलाइन पढ़ाई, सेमिनार एवं परीक्षा से सम्बन्धित विषय पर विस्तार से चर्चा हुई।

महान भारतीय गणितज्ञ रामानुजन

भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन इयंगर ने अपने प्रतिभा और लगन से न केवल गणित के क्षेत्र में अद्भुत अविष्यकार किए वरन भारत को अतुलनीय गौरव भी प्रदान किया। ये बचपन से ही विलक्षण प्रतिभावान थे। इन्होंने खुद से गणित सीखा और अपने जीवन भर में गणित के 3, 884 प्रमेयों का संकलन किया। इनमें से अधिकांश प्रमेय सही सिद्ध किये जा चुके हैं। लैंडा–रामानुजन स्थिरांक, रामानुजन–सोल्डनर स्थिरांक रामानुजन थीटाा फलन, रॉजर्स–रामानुजन तत्समक, रामानुजन अभाज्य, कृत्रिम थीटा फलन, रामानुजन योग जैसी प्रमेय का प्रतिपालन रामानुजन ने किया। इंग्लैंड जाने से पहले भी 1903 से 1914 के बीच रामानुजन ने गणित के 3,542 प्रमेय लिख चुके थे।

22 दिसंबर 1887 में कोयंबटूर जिले के इरोड नामक गांव में एक ब्राह्मण परिवार में श्रीनिवास रामानुजन का जन्म हुआ। उनके पिता श्रीनिवास अयंगर, एक स्थानीय कपड़े की दुकान में मुनीम थे। उनकी माताजी का नाम कोमलताम्मल था। वर्ष की आयु में अपने परिवार के साथ कुंभकोणम में आकर बस गए। उनका विवाह 22 वर्ष की उम्र में अपने से 10 साल छोटी जानकी से हुआ मात्र 33 वर्ष की उम्र में आज ही दिन (26 अप्रैल) 1920 में क्षय रोग के कारण वे पंचतत्व में लीन हो गए।

Report of Council of Physics : 2021-22

Dr. Angad Singh Kushwaha
Asst. Prof. Dept. of Physics

During and after COVID-19 pandemic, the classess of B.Sc. I, II & III had been conducted in blended mode as per the direction issued by the college authority. Students of B.Sc. first year gained awareness about the vision of new education system of India i.e. National Education Policy 2020. "The rich heritage of ancient and eternal Indian knowledge and thought" has been a guiding light for this Policy. The pursuit of knowledge (Jyan), wisdom (Pragyaa), and truth (Satya) were always consideed as the hghest human goal in Indian Philosophy. The aim of education in ancient India was not just the acquisition of knowledge as preparation for life in this world, or life beyond schooling, but for the complete realization and liberation of the self. World-class institutions of ancient India such as Takshashila, Nalanda, Vikramshila, Vallabhi, set the highest standards of multidisciplinary teaching and research and hosted scholars and students from across of the countries. The Indian education system produced great scholar such as Charaka, Susruta, Aryabhata, Varahamihira, Bhaskaracharya, Brahmagupta, Chanakya, Chakrapani Datta, Madhava, Panini, Patanjali, Nagarjuna, Gautama, Pingala, Sankardev, Maitreyi, Gargi and Thiruvalluvar, among numerous others, who made seminal contributions to world knowledge in diverse fields such as mathematics, astronomy, metallurgy, medical science and surgery, civil engineering, architecture, shipbuilding and navigation, yoga, fine arts, chess, and more. Indian culture and philosophy have a strong influence on the world.These rich legacies to world heritage must not only be nurtured and preserved for posterity but also researched, enhanced, and put to new uses throught our education system.'

The above quoted paragraph, mentioned in new education policy had been thoroughly delivered to the student. Moreover, the students of B.Sc. I, II & III interacted with us (Dr. Angad Singh Kushwaha & Dr. Aram Singh), sought guidance and support for exercising the choice among various vocational courses. It enabled them to identify what they know and to set their goal for upcoming challenges. Further, it encouraged the students to look beyond textual knowledge and to learn from each other in cooperative manner.

To summarise, the event during the given session, promoted enthusiasm among the students with a competitive spirit.

समारोह दृश्य श्रृव्य समिति–वार्षिक आख्या : 2021–22

डॉ. राजेश पालीवाल
संयोजक

सत्र 2021–22 में महाविद्यालय में निम्नलिखित समारोह आयोजित किए गए।

जश्न–ए–आजादी–15 अगस्त 2021 को स्वतंत्रता दिवस आजादी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर अमृत महोत्सव पर्व के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की प्रबंधकारिणी कमेटी के अवैतनिक मंत्री डॉ. देवेन्द्र कुमार जी द्वारा झंडा फहराया गया। इसके बाद समारोह दृश्य श्रृव्य समिति की उप संयोजिका डॉ. माधुरी रावत द्वारा उच्च शिक्षा निदेशक, उच्च शिक्षा, डॉ. अमित भारद्वाज से प्राप्त संदेश का वाचन किया गया जिसमें उन्होंने प्रदेश में नए राज्य विश्वविद्यालय खोलने एवं नई शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन पर दक्षता आधारित कोर्सों को बढ़ावा देने की बात की। माननीय अवैतनिक मंत्री जी ने विभिन्न स्तरों पर उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की सराहना की एवं अमृत महोत्सव वर्ष में भारत माता के अनगिनत शहीदों को याद कर उन्हें अपने को श्रृद्धा सुमन अर्पित किये। उन्होंने महाविद्यालय में नवाचार को बढ़ावा देने पर जोर दिया। महाविद्यालय के तत्कालीन कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. रामप्रताप सिंह जी ने स्वतंत्रता दिवस पर एकत्रित जन समुदाय को बधाई दी तथा देश की सेवा में सदैव तत्पर रहने का विचार रखा। कार्यक्रम का संचालन समारोह समिति के संयोजक डॉ. राजेश पालीवाल द्वारा किया गया।

गांधी जयन्ती– इसके अनन्तर 2 अक्टूबर 2021 को महाविद्यालय में महात्मा गांधी एवं लाल बहादुर शास्त्री जयंती समारोह मनाया गया। इस शुभ अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डा. रामप्रताप सिंह जी ने झंडा फहराया तत्पश्चात महाविद्यालय की परंपरा के अनुसार प्रशासनिक भवन के कार्यालय में हवन का आयोजन हुआ जिसमें प्राचार्य शिक्षकों तथा शिक्षणेत्तर कर्मचारियों ने अपनी सहभागिता की। 2 अक्टूबर को महाविद्यालय के पुस्तकालय सभागार में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के चित्रों की एक अनूठी प्रदर्शनी लगाई गई जिसका संग्रह एवं प्रस्तुति डॉ. हरीमोहन पुरवार एवं श्री अयूब अहमद खां की थी। प्रदर्शनी के उद्घाटन में प्रबंधकारिणी कमेटी के अवैतनिक मंत्री एवं उपाध्यक्ष जी द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वालन कर हुआ। महाविद्यालय परिवार एवं गणमान्य नागरिकों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया और इससे प्रेरणा ली।

अटल बिहारी वाजपेयी जयंती समारोह– 25 दिसम्बर 2021 को महाविद्यालय के सेमिनार हाल में राज्य सरकार द्वारा लैपटॉप वितरण का लखनऊ से सजीव प्रसारण महाविद्यालय के शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं ने देखा।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह– इस समारोह का 11 जनवरी 2022 को सजीव प्रसारण महाविद्यालय के सेमिनार हाल में किया गया जिसमें प्रदेश की राज्यपाल महामहिम श्रीमती

आनंदीबेन पटेल ने उच्च शिक्षा में नवाचार एवं उपाधि प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को आशीष वचन दिए। कार्यक्रम को बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर मुकेश पाण्डेय जी ने भी संबोधित किया।

गणतंत्र दिवस समारोह— इस अवसर पर महाविद्यालय के अवैतनिक मंत्री डॉ. देवेन्द्र कुमार एवं आयोग से चयनित होकर पूर्णकालिक प्राचार्य के रूप में कार्यभार ग्रहण करने वाले प्रो0 (डॉ.) राजेश चंद्र पाण्डेय जी ने तिरंगा फहराया। इस अवसर पर शिक्षा निदेशक उच्च शिक्षा डॉ. अमित भारद्वाज के संदेश का वाचन समारोह समिति के संयोजक डॉ. राजेश पालीवाल द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने वर्ष पर्यंत केंद्र एवं राज्य सरकारों द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किए गए विभिन्न कार्यों को साझा किया तथा इस विशेष अवसर पर उच्च शिक्षा जगत से जुड़े सभी को शुभकामनाएं दी। 26 जनवरी के इस अवसर पर सेमिनार हॉल में नई पीढ़ी में देशभक्ति की भावना जाग्रत करने के लिए 'शेरशाह' फिल्म भी प्रदर्शित की गई।

आजादी का अमृत महोत्सव— महाविद्यालय में 4 एवं 5 मार्च को आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत युवा महोत्सव एवं मातु श्री चित्रादेवी परिवार की स्मृति में 'रुचि महोत्सव' का शुभारंभ हुआ। इस 02 दिवसीय महोत्सव में व्याख्यानों, विभिन्न कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ। उद्घाटन सत्र में कॉलेज की प्रबंधकारिणी कमेटी के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष हरीमोहन पुरवार, कॉलेज के प्राचार्य प्रो0 (डॉ.) राजेश चंद्र पाण्डेय, प्रबन्धकारिणी कमेटी के सदस्य डॉ.राकेश गुप्ता एवं श्री हरिशंकर रावत, युवा महोत्सव की संयोजिका डा. अलकारानी पुरवार समारोह समिति के संयोजक शिक्षक तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे। 'विरासत के वातायन से' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में डा. हरीमोहन पुरवार जी रहे। डॉ. पुरवार ने अपने व्याख्यान में कहा कि किसी भी देश की पहचान उसकी संस्कृति और सभ्यता पर टिकी रहती है। भारतीय संस्कृति की जड़ें बहुत ही मजबूत हैं तभी तो यूनान, मिस्त्र रोम जैसी अनेक संस्कृतियाँ मिट गईं किन्तु भारतीय संस्कृति आज भी निर्बाध रूप से पुष्पित और पल्लवित हो रही है। आजादी के अमृत महोत्सव की विशेषता बताने के बाद उन्होंने भगवान विष्णु के 10 अवतारों की वैज्ञानिकता पर भी प्रकाश डाला और विद्यार्थियों को चेताया कि मोबाइल के दौर में संबंध कमजोर होते जा रहे हैं जिन्हें बचाना और संरक्षित करना भावी पीढ़ी का काम है। व्याख्यान के बाद नेताजी सुभाषचंद्र बोस को समर्पित 'चित्र, डाक टिकट एवं मुद्रा प्रदर्शनी' के आयोजन का उद्घाटन डॉ. देवेंद्र कुमार जी, अवैतनिक मंत्री, प्रबंध कार्यकारिणी कमेटी के द्वारा किया गया जिसमें इंटेक संस्था, उरई की सदस्य श्रीमती संध्या पुरवार एवं लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड में शामिल डॉ. हरीमोहन पुरवार जी ने अपने दुर्लभ एवं अनोखे संग्रह प्रस्तुत कर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को स्मरण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। युवा महोत्सव के प्रथम दिन रंगोली और निबंध प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। रंगोली प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आकांक्षा यादव, द्वितीय स्थान कीर्ति अग्रवाल, प्रतीक्षा पांचाल और तृतीय स्थान साक्षी चौहान, रोशनी ने प्राप्त किया।

द्वितीय दिवस के कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री दिलीप सेठ, सदस्य प्रबन्धकारिणी कमेटी, प्राचार्य प्रो0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, समारोह समिति के सदस्यों एवं शिक्षकों की उपस्थिति में भगवती सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वालन कर किया गया। दिलीप सेठ ने सभी प्रतिभागियों से

राष्ट्रभक्ति के भाव को जीवंत रखने की बात कही। द्वितीय दिवस में एकल गायन, भाषण, क्विज, रोल प्ले एवं मेंहदी प्रतियोगिता का आयोजन कराया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ एकल गायन से हुआ जिसमें बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा आकांक्षा नगायच प्रथम स्थान, एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा दीक्षा कटारे द्वितीय स्थान तथा तृतीय स्थान पर संयुक्तरूप से राधा, चांदबीबी एवं अरुण कुमार रहे। इस प्रतियोगिता में महारानी लक्ष्मीबाई टीम को प्रथम स्थान, सरदार भगत सिंह टीम को द्वितीय स्थान एवं स्वामी विवेकानन्द टीम को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। देशभक्ति आधारित रोल प्ले कार्यक्रम के अंतर्गत बी.ए. तृतीय वर्ष की आकांक्षा को प्रथम स्थान, बी.ए. द्वितीय वर्ष की छात्रा तृप्ति गुप्ता को द्वितीय स्थान एवं बी.एस.सी द्वितीय वर्ष की छात्रा रिचा गुप्ता एवं उजमा परवीन को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

देशभक्ति आधारित भाषण प्रतियोगिता कार्यक्रम में छात्र एवं छात्राओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया जिसमें छात्र विजयलक्ष्मी को प्रथम स्थान, कल्पना यादव को द्वितीय स्थान एवं छात्र अनिरुद्ध प्रताप सिंह को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। मेंहदी प्रतियोगिता में रोशनी सिंह एवं आकांक्षा यादव को संयुक्त रूप से प्रथम स्थान, सुषमा यादव को द्वितीय स्थान एवं गौरव सेंगर तथा पूजा वर्मा को संयुक्त रूप से तृतीय स्थान प्राप्त हुआ।

आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत माह अप्रैल में चार कार्यक्रम आयोजित किए गये जिसमें 18 अप्रैल 2022 को 'विश्व विरासत दिवस' एवं 'शहीद दिवस' 21 अप्रैल को 'राष्ट्रीय नागरिक सेवा दिवस' 22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस तथा 24 अप्रैल को 'राष्ट्रीय पंचायत दिवस' आयोजित किया गया।

आजादी के अमृत महोत्सव के तहत मई 2022 में 07 कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें महाराणा प्रताप जयंती 9 मई 2022, 1857 का महान विद्रोह 10 मई 2022, अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस 14 मई 2022, जैव विविधता दिवस 21 मई 2022, विश्व थायराइड दिवस 25 मई 2022, विनायक दामोदर सावरकर जयंती 28 मई 2022 एवं 31 मई 2022 को तंबाकू निरोधक दिवस मनाया गया।

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में ही जून माह में 05 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई तथा 21 जून 2022 को महाविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, एनसीसी, एनएसएस, रोवर्स/रेंजर्स के कार्यक्रम अधिकारियों एवं छात्र–छात्राओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

सहारा

(मिस्री लघुकथा)

यूसफ अल शरूनी
अनुवाद : सुखबीर

एक शाम मैं अपनी बेटी को गोद में उठाये जा रहा था। उसने मेरे कंधे से सिर टेका हुआ था और अपनी नन्हीं–नन्हीं बाँहें मेरी गर्दन के गिर्द लपेटी हुई थीं। अचानक एक जगह मेरा पाँव उखड़ा। मैं मुँह के बल गिरने ही वाला था कि बच्ची ने मेरी गर्दन के गिर्द अपनी बाहों की पकड़ मजबूत करते हुये कहा– 'पापा, डरिये नहीं, मैंने आपको मजबूती से पकड़ लिया है। मैं आपको गिरने नहीं दूंगी' और जब मैं गिरने से बच गया, तो बच्ची को खुशी हुई कि उसने मुझे बचा लिया था।

राष्ट्रीय सेवा योजना वार्षिक आख्या : 2021–22

महाविद्यालय में संचालित चारों इकाइयों की समग्र रिपोर्ट

कार्यक्रम अधिकारी

1. डा. माधुरी रावत (प्रथम इकाई) – असिस्टेंट प्रोफेसर मनोविज्ञान विभाग
2. डॉ. सुरेंद्र मोहन यादव (द्वितीय इकाई) – असिस्टेंट प्रोफेसर–अंग्रेजी विभाग
3. डॉ. नीता गुप्ता (तृतीय इकाई) – असिस्टेंट प्रोफेसर–अंग्रेजी विभाग
4. डॉ. सुरेंद्र यादव (चतुर्थ इकाई) – असिस्टेंट प्रोफेसर–एम.एड. विभाग

सामान्य कार्यक्रम एवं एकदिवसीय शिविरों का स्वरूप

दयानंद वैदिक कॉलेज में राष्ट्रीय सेवा योजना की चार इकाइयां कुशलतापूर्वक संचालित हैं। कार्यक्रम अधिकारियों ने अपने कार्य–दायित्व को प्राप्त करने के उपरांत राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम की गतिविधियों के क्रम में 3 दिसम्बर 2022 को दयानंद वैदिक कॉलेज के प्राचार्य प्रो0 (डॉ0) राजेश चंद्र पांडेय की अनुमति के उपरांत सेमिनार हॉल में मतदाता जागरूकता से संबंधित गोष्ठी का आयोजन किया। तदुपरांत राष्ट्रीय सेवा योजना की चारों इकाइयों के कार्यक्रम अधिकारियों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत कर वर्ष भर राष्ट्रीय सेवा योजना की समस्त गतिविधियों की रूपरेखा एवं उनके उद्देश्य तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के लक्ष्य गीतों को बता कर कार्यक्रम को संपन्न किया। इसी क्रम में 18 फरवरी 2022 को कॉलेज के सभी इकाइयों के स्वयं सेवक एवं सेविकाओं के साथ कार्यक्रम अधिकारियों ने बुलौआ टोली का आयोजन किया जिसमें घर–घर जाकर मतदाताओं को चावल, अक्षत सहित आमंत्रण देकर उन्हें मतदान के लिए प्रेरित किया। 2 मार्च 2022 को सेमिनार हॉल में घरेलू हिंसा पर आधारित जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्तव्य देते हुए डॉ. शैलजा गुप्ता ने कहा कि वर्तमान समय में शारीरिक, मानसिक आर्थिक एवं नैतिक विकारों से समाज में घरेलू हिंसा का दुष्प्रभाव बढ़ता जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस पर कठोर कदम उठाकर रोकने की प्रबल आवश्यकता है। स्वयं–सेवी विद्यार्थी मनीष यादव, हर्षवर्धन, प्रेमपाल आराध्या, वर्षा आदि विद्यार्थियों ने भी घरेलू हिंसा से संबंधित अपने–अपने विचार व्यक्त किये। इसी क्रम में स्वच्छता अभियान, पढ़े जालौन–बढ़े जालौन, इत्यादि कई कार्यक्रमो को संपादित कराया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना की मासिक गतिविधियों के क्रम में जुलाई 2021 से मार्च 2022 तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिसमें महिला दिवस कार्यक्रम, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम अंतरराष्ट्रीय नस्लीय भेदभाव उन्मूलन दिवस, विश्व वन दिवस, इत्यादि महत्वपूर्ण दिवसों को संपादित कराते हुए विभिन्न समसामयिक बिंदुओं जैसे जल संरक्षण पर कार्यक्रम, पर्यावरण संरक्षण पर कार्यक्रम, पर्यावरण स्वच्छता संबंधी कार्यक्रम, कोरोना वायरस से बचाव संबंधी कार्यक्रम, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ संबंधी कार्यक्रम, महिला सशक्तिकरण संबंधी कार्यक्रम, एड्स जागरूकता कार्यक्रम, साइबर अपराध नियंत्रण कार्यक्रम, तंबाकू निषेध जागरूकता कार्यक्रम, मजदूरी दिवस पर कार्यक्रम, इकोवृक्ष कार्यक्रम, महत्वपूर्ण महापुरुषों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी कार्यक्रम एवं अनेकों मूल्य संवर्धन व जागरूकता संबंधी कार्यक्रम समय–समय पर आयोजित किए गए। 1 जुलाई से 7 जुलाई तक वन महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर में 200 पौधों का वृक्षारोपण कर महाविद्यालय को हरा–भरा बनाने का कार्य किया गया। 1 दिसंबर को 'विश्व एडस जागरुकता' पर विभिन्न प्रकार के प्रतियोगिता कार्यक्रम जैसे पोस्टर

प्रतियोगिता, मेंहदी प्रतियोगिता व निबंध प्रतियोगिता का आयोजन कर जागरुकता का संदेश फैलाया गया। 12 जनवरी को विवेकानंद जी की जयंती पर कॉलेज में राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन किया गया, यह कार्यक्रम 'पढ़े जालौन–बढ़े जालौन' पर आधारित था। 4 फरवरी को राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा 'चौरी–चौरा शताब्दी वर्ष' के उपलक्ष्य में एक विशाल रैली का आयोजन किया गया। 6 फरवरी को राष्ट्रीय तंबाकू नियंत्रण इकाई, के तत्वावधान में संगोष्ठी संपन्न हुई। 11 एवं 12 फरवरी को पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सपनों का भारत पर एक निबंध प्रतियोगिता एवं प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के चारों इकाईयों द्वारा समय–समय पर महत्वपूर्ण कार्यक्रमों एवं गतिविधियों में प्राचार्य प्रो0 (डा0) राजेश चंद्र पाण्डेय, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. माधुरी रावत, डॉ. सुरेंद्र मोहन यादव, डॉ. नीता गुप्ता एवं डॉ. सुरेंद्र यादव एवं प्राध्यापक डॉ. विजय कुमार यादव, डॉ. शैलजा गुप्ता, डॉ. अलकारानी पुरवार, डॉ. राजेश पालीवाल, डॉ. बृजेंद्र कुमार,डॉ. जितेंद्र प्रताप, डॉ. शीलू सेंगर, डॉ. नगमा खानम, डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी, डॉ. नीति कुशवाहा, डॉ. नमो नारायण, डॉ.गौरव यादव, डॉ. मलिखान सिंह, डॉ. योगेश कुमार पाल, सहित कई प्राध्यापकों एवं गोपाल कृष्ण, दीनदयाल, पंकज व गोकुल सहित कई शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की उपस्थिति एवं सहभागिता रही।

वीमैन सेल की वार्षिक आख्या : 2021-2022

डॉ. मन्जू जौहरी
एसो.प्रो., इतिहास विभाग

समाज गतिशील है जिसमें सभी की सहभागिता समान रूप से अपेक्षित है तभी सामाजिक गतिशीलता सही रूप से आकार लेती है। गतिशील समाज में महिलाओं की भूमिका भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है जिसके लिये उन्हें आत्मनिर्भर व जागरूक होना आवश्यक है। इसी संदर्भ में दिनांक 20.09.2021 को एक संगोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें विशेषरूप से आत्मसुरक्षा व आत्मनिर्भरता की ओर विशेष ध्यान आकर्षित करने पर जोर दिया गया तथा सभी ने स्वीकार किया कि महिलाओं को सशक्त बनाने हेतु उपर्युक्त तथ्य आवश्यक है। अतः इसी क्रम को आगे बढ़ाने हेतु 25.02.2022 को प्राचार्य प्रो. राजेश चन्द्र पाण्डेय जी की अध्यक्षता में एक आवश्यक बैठक सेमिनार हॉल में हुई जिसमें यह निर्णय लिया गया कि छात्राओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने हेतु विभिन्न व्याख्यान व कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे जिससे छात्राओं का सर्वांगींण विकास संभव हो सके। इसी क्रम में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय द्वारा आदेशित एक पांच सदस्यीय महिला सहायता सेल भी गठित की गयी। दिनांक 03.03.2022 को सेमिनार हॉल में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 'हमारी उम्मीद मिशन' के विभिन्न पदाधिकारी उपस्थित रहे व उन्होंने आत्मसुरक्षा के विभिन्न टिप्स दिये जो कि लड़कियों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। अवन्तिका जी ने बताया कि कभी यदि हम असहज स्थिति में फँस जाते हैं तो आत्मसुरक्षा हेतु यह टिप्स बहुत की कारगर सिद्ध होंगे। साथ ही उन्होंने बताया कि वह निःशुल्क एक विशेष स्थान पर प्रत्येक रविवार को ट्रेनिंग भी देती है। इसके उपरान्त 10.03.2022 को IGNOU की एक संगोष्ठी में सह निर्देशक अनिल कुमार मिश्रा जी (Deputy Director IGNOU Lucknow) ने बताया कि एक श्रेष्ठ और सशक्त भारत बनाने के लिये सभी को शिक्षित होने के साथ–साथ आत्मनिर्भर होना भी आवश्यक है इसके लिये IGNOU के विभिन्न कोर्सेज संचालित किये जा रहे हैं जिसका फायदा सभी को लेना चाहिए।

पर्यावरण समिति रिपोर्ट : 2021–22

डॉ. नमो नारायण
संयोजक, पर्यावरण समिति

महाविद्यालय की पर्यावरण समिति के द्वारा महाविद्यालय की हरितिमा हेतु अप्रतिम प्रयास किया जा रहा है। सत्र 2021–22 में भी पर्यावरण समिति के द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम के साथ–साथ उन वृक्षों को बचाने पर भी फोकस किया गया जो पहले से रोपित थे। दिनांक 30.06.2021 को महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया की सेवानिवृत्ति के अवसर पर महाविद्यालय की प्रबंधकारिणी कमेटी के अवैतनिक मंत्री महोदय डॉ. देवेंद्र कुमार जी, अध्यक्ष/उपाध्यक्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार महोदय, वर्तमान प्राचार्य डॉ. रामप्रताप सिंह, तथा पूर्व प्राचार्य डॉ. तारेश भाटिया के कर कमलों द्वारा महाविद्यालय के मुख्य परिसर में मौलश्री, अमलतास, पारस पीपल, फायकस जैसे औषधीय और छायादार पौधों का रोपण किया गया। इन पौधों की सुरक्षा और संरक्षण हेतु महाविद्यालय परिसर में कार्यरत इंडियन बैंक तथा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, मुख्य शाखा, उरई के द्वारा कॉर्पोरेट सोशल रेस्पॉन्सबिलिटी (सीएसआर) के तहत रुपये छत्तीस हजार तथा रुपये छह हजार पांच सौ का सहयोग प्रदान किया गया। उक्त बैंकों द्वारा महाविद्यालय को ऐसा सहयोग पहली बार प्रदान किया गया। साथ ही महाविद्यालय के बाहर बगिया परिसर और पुरातन परिसर के दोनों ओर भी वृक्षारोपण किया गया जिनकी सुरक्षा और संरक्षण के लिए महाविद्यालय के विभागों से सहयोग राशि प्रदान की गई। उत्तर प्रदेश शासन के तत्वावधान में बृहद वृक्षारोपण अभियान के तहत महाविद्यालय परिसर व परिसर के बाहर शासन द्वारा निर्धारित तिथि 4 जुलाई को पौधरोपण का कार्य भी कराया गया। महाविद्यालय की पर्यावरण समिति छात्र/छात्राओं में पर्यावरण के प्रति जागरुकता और उनकी सहभागिता से महाविद्यालय की हरीतिमा के लिए दृढ़ संकल्पित है। पर्यावरण समिति आगामी सत्र में महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों को परिसर में रोपित पौधों को गोद लेने हेतु प्रेरित करेगी ताकि उनमें पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का भाव जाग्रत हो सके।

एन.सी.सी. रिपोर्ट : 2021–22

ले. (डॉ.) रामप्रताप सिंह
ए.एन.ओ.

डी.वी. कॉलेज में छात्र/छात्राओं को सैन्य प्रशिक्षण कराने के लिए 58 बटालियन के सहयोग से प्रशिक्षण दिया जाता है। अक्टूबर 2021 में 58 बटालियन के सहयोग से CATC कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें कैडेटस को व्यवहारिक सैनिक प्रशिक्षण दिया गया। इसके अतिरिक्त समय–समय पर व्यक्तित्व विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रम कराये जाते हैं। नवम्बर 2021 में सफाई अभियान चलाया गया। 58 बटालियन के सहयोग से विशाल रैली का आयोजन किया गया। सभी कैडेटो को सफाई के महत्व से परिचित कराया गया। जनवरी 2022 में डी.वी. कॉलेज परिसर में ही एक सप्ताह का विशेष कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें सभी को व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। अप्रैल 2022 में 'सड़क सुरक्षा सप्ताह' का आयोजन किया गया, जिसमें एन.सी.सी. कैडेट्स ने रैली निकाली। इसके साथ वाहन चालको को फूल देकर सभी आमजन से हेलमेट/सीट बेल्ट व यातायात नियमों के पालन करने की अपील की।

रोवर–रेंजर की वार्षिक आख्या : 2021–22

डॉ० श्रवण कुमार त्रिपाठी

संयोजक, रोवर–रेंजर

स्काउट एवं गाइड एक अन्तर्राष्ट्रीय स्वयंसेवी संस्था है जो समाज में सेवाभाव के विस्तार हेतु प्रत्येक नागरिक को प्रशिक्षत करने एवं स्वयं सेवा करने के प्रति सदैव तत्पर रहती है। उत्तर प्रदेश भारत स्काउट एवं गाइड, लखनऊ के अन्तर्गत महाविद्यालय में दो छात्रों की अर्थात् रोवर क्रू की एवं दो छात्राओं की अर्थात् रेंजर टीम की. कुल चार यूनिट संचालित हैं। सत्र 2021–22 में रोवर–रेंजर की रेंजर प्रभारी डॉ. अलकारानी पुरवार एवं डॉ. शीलू सेंगर तथा रोवर प्रभारी डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी एवं डॉ श्रवण कुमार त्रिपाठी द्वारा अपनी–अपनी ईकाईयों का निर्धारित प्रक्रिया का अनुपालन करते हुए गठन किया गया। सत्र पर्यन्त रोवर–रेंजर द्वारा संचालित गतिविधियों का विवरण इस प्रकार है–

- सत्र का आरम्भ दिनांक 15 अगस्त 2021 को सर्वधर्म प्रार्थना के साथ हुआ। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के रोवर–रेंजर द्वारा टी.टी. हॉल में कोरोना से बचाव के नियमों का पालन करते हुए सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय परिवार ने उत्साह के साथ सहभाग किया।

- दिनांक 13 अक्टूबर 2021 को 'मतदाता जागरुकता कार्यक्रम' का आयोजन जिला प्रशासन के सहयोग से हुआ। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के पुस्तकालय सेमिनार हॉल में कोरोना से बचाव के नियमों का पालन करते हुए बड़ी मात्रा में छात्र–छात्राओं के साथ महाविद्यालय परिवार ने उत्साह के साथ सहभाग किया। सेमिनार हॉल की व्यवस्था और कुशल संचालन में रोवर–रेंजर ने अहम भूमिका अदा की। साथ ही उन्होंने मतदान के लिए आमजन को जागरुक करने का वचन लिया।

- दिनांक 1 नवम्बर 2021 को 'मतदाता जागरुकता कार्यक्रम' का आयोजन जिला प्रशासन के सहयोग से पुस्तकालय सेमिनार हॉल में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में जिला प्रशासन ने मतदाता पंजीकरण अभियान चलाया। इस कार्यक्रम में कोरोना से बचाव के नियमों का पालन करते हुए बड़ी मात्रा में छात्र–छात्राओं के साथ महाविद्यालय परिवार ने उत्साह के साथ सहभाग किया और महाविद्यालय के अट्ठारह वर्ष पूर्ण कर चुके विद्यार्थियों का पंजीकरण किया गया। सेमिनार हॉल की व्यवस्था और कुशल संचालन में रोवर–रेंजर ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। साथ ही उन्होंने नवीन मतदाताओं के पंजीकरण हेतु आमजन को जागरुक करने की प्रेरणा ग्रहण की।

- बुन्देलखंड विश्वविद्यालय अंतर्महाविद्यालयीय त्रिदिवसीय (दिनांक 27 से 29 दिसंबर 2021) रोवर–रेंजर समागम 2021–22 में बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, झांसी, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, झांसी, बिपिन बिहारी महाविद्यालय, झांसी, मथुरा प्रसाद महाविद्यालय, कोंच, दयानंद वैदिक कॉलेज, उरई, आर्य कन्या महाविद्यालय, झांसी एवं टीकाराम महाविद्यालय, मोंठ की रोवर–रेंजर टीमों ने सहभाग किया। समागम के दौरान टेंट निर्माण, गांठबधन, प्राथमिक चिकित्सा, हस्तकला प्रदर्शनी, पुल निर्माण, नाट्य प्रतियोगिता क्विज प्रतियोगिता, लोक नृत्य,

लोकगीत आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। समागम के द्वितीय दिवस दिनांक 28 दिसंबर 2021 में निर्णायकों द्वारा पूर्वनिर्धारित प्रतियोगिताएं यथासमय सम्पन्न हुईं एवं निर्णायकों द्वारा उनका कुशलतापूर्वक निरीक्षण किया गया। द्वितीय दिवस की संध्या पर अचानक बरसात हो गई जिससे संध्याकाल में खुले मैदान में आयोजित होने वाला कैम्प फायर कार्यक्रम थोड़ा व्यवधानित हुआ। परन्तु आयोजक टीम द्वारा यथासमय इसको टी.टी. हॉल में स्थानांतरित कर कुशलतापूर्वक सम्पन्न कराया। कैम्प फायर कार्यक्रम बड़ा ही रोचक, आकर्षक और मनमोहक रहा। कैम्प फायर कार्यक्रम में सम्मिलित अथितियों ने समवेत स्वर में इसकी भूरि–भूरि प्रशंसा की। तृतीय दिवस दिनांक 29 दिसंबर 2021 को बुंदेलखंड विश्वविद्यालय अंतरमहाविद्यालय त्रिदिवसीय रोवर–रेंजर समागम 2021–22 का समापन मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र सिंह हंसपाल (प्रादेशिक संगठन आयुक्त स्काउट), कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. हरिमोहन पुरवार (अध्यक्ष / उपाध्यक्ष प्रबंधकारिणी कमेटी, डी.वी.सी. उरई), विशिष्ट अतिथि डॉ. देवेंद्र कुमार (अवैतनिक मंत्री, प्रबंधकारिणी कमेटी डी.वी.सी. उरई), विशिष्ट अतिथि सुश्री पूनम (ए.एस.ओ.सी., झांसी मंडल, झांसी), डॉ. प्रवीण पांडे (जिला कमिश्नर स्काउट गाइड), श्री राकेश निरंजन (जिला सचिव स्काउट गाइड), डॉ. आनंद गुप्ता (जिला स्काउट गाइड), श्रीमती संध्या पुरवार (सदस्य प्रबंधकारिणी कमेटी, डी.वी.सी. उरई), श्रीमती किरण वर्मा (सचिव, झाँसी स्काउट गाइड), महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) राजेश चंद्र पाण्डेय द्वारा समागम के कुशलतापूर्वक पूर्ण होने पर आयोजन समिति को धन्यवाद दिया। समागम शिविर के समापन पर समागम के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभागी विद्यार्थियों को पुरस्कार भी वितरित किए गए। आयोजित प्रतियोगिताओं के आधार पर सहभागी महाविद्यालयों में से रोवर वर्ग में प्रथम स्थान स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, झांसी, द्वितीय स्थान बुंदेलखंड महाविद्यालय झांसी एवं तृतीय स्थान संयुक्त रूप से तीन महाविद्यालयों मथुरा प्रसाद महाविद्यालय, कोंच, दयानंद वैदिक कॉलेज, उरई एवं टीकाराम महाविद्यालय, मोंठ ने प्राप्त किया है। पुरस्कार के इसी क्रम में रेंजर वर्ग में प्रथम स्थान बुंदेलखंड महाविद्यालय, झांसी, द्वितीय स्थान स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, झांसी एवं तृतीय स्थान संयुक्त रूप से दो महाविद्यालयों आर्य कन्या महाविद्यालय, झांसी एवं टीकाराम महाविद्यालय, मोंठ ने प्राप्त किया। समागम संयोजक एवं रोवर प्रभारी डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी, डॉ. अलकारानी पुरवार, डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी, डॉ. शीलू सेंगर के साथ बुंदेलखंड विश्वविद्यालयान्तर्गत सहभागी टीमों के रोवर–रेंजर प्रभारी डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. वंदना कुशवाहा, डॉ. छाया त्रिवेदी, डॉ. सुनीता प्रजापति, डॉ. कल्पना निरंजन, डॉ. कविता अग्निहोत्री, डॉ. पूनम यादव, डॉ. पुष्पेंद्र निरंजन, डॉ मधुरलता द्विवेदी, डॉ. भूपेंद्र त्रिपाठी ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

❖ दिनांक 17 फरवरी 2022 को 'मतदाता जागरुकता कार्यक्रम' का आयोजन जिला प्रशासन के सहयोग से आगामी विधानसभा चुनाव के परिप्रेक्ष्य में महाविद्यालय परिसर में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में जिला प्रशासन ने मतदाता जागरुकता अभियान चलाया। इस कार्यक्रम में हल्दी–पीले अक्षत–मेंहदी लगाकर मतदाताओं को मतदान हेतु प्रेरित करने जैसे नवाचारी कार्यक्रम के माध्यम से आमजन को मतदान करने हेतु बड़ी मात्रा में छात्र–छात्राओं के साथ महाविद्यालय परिवार द्वारा समाज को जागरुक करने हेतु प्रेरित करने का प्रयास किया गया। इस नवाचारी कार्यक्रम की व्यवस्था और कुशल संचालन में रोवर–रेंजर ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया। साथ ही उन्होंने नवीन मतदाताओं को मतदान हेतु जागरुक करने की प्रेरणा ग्रहण की।

❖ दिनांक 19 से 31 मई 2022 तक संचालित 'सड़क सुरक्षा पखवाड़ा' के अन्तर्गत दिनांक 23 मई

2022 को आमजन को परिवहन संचालन के प्रति जागरुक करने के उद्देश्य से एक रैली का आयोजन रोवर–रेंजर, एन.एस.एस., एन.सी.सी. के साथ संयुक्त रूप से किया गया। यह रैली महाविद्यालय से आरम्भ होकर शहीद भगत सिंह चौराहे तक पूर्ण उत्साह के साथ विभिन्न सूत्र वाक्यों का जोर–शोर से उद्घोष करते हुए कुशलतापूर्वक संचालित हुयी। इस रैली का आयोजन समाज को जागरुक करने एवं आमजन को परिवहन नियमों के पालन हेतु प्रेरित करने का प्रयास किया गया। इस नवाचारी कार्यक्रम की व्यवस्था और कुशल संचालन में रोवर–रेंजर ने पूर्ण जिम्मेवारी के साथ अपने दायित्व का निर्वाहन किया।

❖ दिनांक 19 से 31 मई 2022 तक संचालित 'सड़क सुरक्षा पखवाड़ा' के अन्तर्गत दिनांक 28 मई 2022 को आमजन को परिवहन संचालन के प्रति जागरुक करने के उद्देश्य से एक क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें रोवर–रेंजर, एन.एस.एस., एन.सी.सी. के साथ महाविद्यालय के अनेक छात्र–छात्राओं ने सहभाग किया। यह क्विज प्रतियोगिता टीम बनाकर आयोजित की गई। कुल छः टीमें बनाई गई। विजित टीमों को प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।

❖ रोवर–रेंजर यूनिट गठन के उपरान्त रोवर–रेंजर के स्वरूप एवं महत्व से परिचित करवाने के उद्देश्य से एक अर्द्धदिवसीय शिविर दिनांक 11 अक्टूबर 2021 को पुस्तकालय सभागार में आयोजित किया गया जिसमें सभी रोवर–रेंजर को इसके गठन और इतिहास से परिचित कराया गया। साथ ही रोवर–रेंजर की ड्रेस आदि के बारे में भी बताया गया। दूसरा अर्द्धदिवसीय शिविर दिनांक 18 दिसम्बर 2021 को पांच दिवसीय शिविर की तैयारियों के उद्देश्य से आयोजित किया गया। इसमें शिविर हेतु आवश्यक सामग्री का पुनरीक्षण किया गया एवं सभी रोवर–रेंजर को ड्रेस की साफ–सफाई और प्रेस आदि के बारे में बताते हुए कहा गया कि शिविर में किए जाने वाले आचार व्यवहार महाविद्यालय की प्रतिष्ठा के अनुरूप होना चाहिए।

❖ सत्र 2021–22 में रोवर–रेंजर का पांच दिवसीय प्रवेश निपुण प्रमाण–पत्र हेतु जाँच (प्रशिक्षण) शिविर का आयोजन पुस्तकालय परिसर में आयोजित किया गया जो दिनांक 24 से 28 मार्च 2022 में संचालित रहा। इसमें कुल 39 छात्र/छात्राओं ने भागीदारी की थी जिसमें से प्रवेश रेंजर की संख्या 11, प्रवेश रोवर की संख्या 13, निपुण रेंजर की संख्या 05, निपुण रोवर की संख्या 10 थी। पांच दिवसीय जाँच (प्रशिक्षण) शिविर में रोवर–रेंजर के व्यक्तित्व विकास एवं कठिन परिस्थितियों समझने और उनसे निपटने के विभिन्न आयामों से परिचित कराया गया। साथ ही छात्र–छात्राओं को रोवरिंग और रेंजरिंग के गठन के उद्देश्य, इतिहास, दायित्व आदि विविध पहलुओं से अवगत कराया गया। इस शिविर में दिये गये प्रशिक्षण शिविर के अन्तर्गत टेंट निर्माण, अस्थाई पुल निर्माण, गांठ बंधन, प्राथमिक चिकित्सा, योगाभ्यास, नक्शा अध्ययन, प्रतीक चिन्ह, बी.पी. सिक्स आदि भौतिक प्रशिक्षण के साथ–साथ क्विज, निबंध प्रतियोगिता, पोस्टर निर्माण, मांइड गेम, मनोरंजन के साधन आदि पर भी ध्यान दिया गया। शिविर के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं को रोवर–रेंजर पाठ्यक्रम संबंधी लिखित सामग्री भी प्रदान की गई। शिविर संचालन अवधि के दौरान ही सहायक प्रादेशिक संगठन आयुक्त, स्काऊट एवं गाईड, झांसी मण्डल पूनम संधू ने शिविर का अवलोकन कर रोवर–रेंजर एवं शिविर संचालकों का उत्साहवर्द्धन किया। इस शिविर में डॉ० अर्चना व्यास एवं श्री मुकेश सक्सेना जी ने प्रशिक्षक के दायित्व का निर्वहन कर रोवर–रेंजर को पूर्ण सहयोग एवं मनोयोग से प्रशिक्षित किया।

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय अन्तर्महाविद्यालयीय रोवर–रेंजर समागम रिपोर्ट

डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी
समागम संयोजक

शिक्षा निदेशक (उ0शि0) के पत्र डिग्री विकास/134912/2021–22 दिनांक 1.11.2021 के अनुपालन में दिनांक 27–29 दिसम्बर 2021 के मध्य दयानन्द वैदिक महाविद्यालय, उरई परिसर में आयोजित "बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय अन्तर्महाविद्यालयीय रोवर–रेंजर समागम 2021–22" महाविद्यालय परिसर में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

समागम का प्रथम दिन उद्घाटन सत्र के साथ आरम्भ हुआ। दिनांक 27 दिसंबर 2021 को बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठित संस्था दयानंद वैदिक कॉलेज, उरई में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय अंतर्महाविद्यालयीय त्रिदिवसीय (दिनांक 27 से 29 दिसंबर 2021) रोवर–रेंजर समागम 2021–22 का शुभारंभ जिला स्काउट–गाईड कमिश्नर एवं मुख्य अतिथि श्री भगवत पटेल (डी.आई.ओ.एस., जालौन) कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार (अध्यक्ष/उपाध्यक्ष, प्रबंधकारिणी कमेटी, डी.वी.सी., उरई), विशिष्ट अतिथि डॉ. देवेंद्र कुमार (अवैतनिक मंत्री, प्रबंधकारिणी कमेटी, डी.वी.सी., उरई), विशिष्टि अतिथि श्री पूनम संधू (ए.एस.ओ.सी., झांसी मण्डल), डॉ0 प्रवीण पांडे (जिला कमिश्नर, स्काउट गाइड), श्री राकेश निरंजन (जिला सचिव, स्काउट गाइड), डॉ आनंद गुप्ता (अध्यक्ष, जिला स्काउट गाइड), श्रीमती संध्या पुरवार (सदस्य, प्रबंधकारिणी कमेटी, डी.वी.सी., उरई) एवं सभी सहभागी महाविद्यालयों के रोवर–रेंजर प्रभारीगण द्वारा सरस्वती प्रतिमा पर दीप प्रज्ज्वालन एवं माल्यार्पण कर किया गया। कार्यक्रम समागम के प्रारंभ में रोवर–रेंजर गीत एवं झंडारोहण कार्यक्रम के पश्चात विभिन्न महाविद्यालयों से आए रोवर–रेंजर का मार्च पास्ट के उपरान्त मुख्य अतिथियों को सभी आगंतुक क्रू एवं टीम सदस्यों द्वारा सैल्यूट किया गया।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) राजेश चंद्र पांडेय ने अपने वक्तव्य में विभिन्न महाविद्यालयों से आए रोवर–रेंजर के पदाधिकारियों एवं छात्र–छात्राओं सहित अतिथियों एवं मुख्य अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही रोवर–रेंजर को टीम भावना से जुड़कर कार्यक्रम संपन्न कराने की बात कही। महाविद्यालय के अवैतनिक मंत्री डॉ. देवेंद्र कुमार ने अपने संबोधन में रोवर–रेंजर के विद्यार्थियों का उत्साहवर्द्धन करते हुए देश को विकास के पथ पर ले जाने की बात कही। जिला विद्यालय निरीक्षक श्री भगवत पटेल ने रोवर–रेंजर के विद्यार्थियों को रोवर–रेंजर के उद्देश्यों पर ध्यान आकृष्ट कराते हुए उसे व्यावहारिकता में लाने की बात कही। महाविद्यालय प्रबंधकारिणी कमेटी के अध्यक्ष/उपाध्यक्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार ने रोवर–रेंजर के विद्यार्थियों को देश का सजग प्रहरी बताया तथा उन्हें विषम परिस्थितियों में देश के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली टीम की संज्ञा दी। समागम कार्यक्रम में रोवर–रेंजर के पदाधिकारियों ने अपने–अपने विचार विद्यार्थियों के समक्ष रखे तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। रोवर–रेंजर विद्यार्थियों को समागम के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं यथा टेंट निर्माण, गांठबंधन, प्राथमिक चिकित्सा, हस्तकला प्रदर्शनी, पुल निर्माण, नाट्य प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता,

लोक नृत्य एवं लोकगीत इत्यादि के संबंध में निर्देशित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. माधुरी रावत द्वारा किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापन समागम संयोजक डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के इस अवसर पर महाविद्यालय द्वारा निर्मित समागम समिति के समस्त समिति संयोजक एवं अध्यापकों, कर्मचारियों सहित महाविद्यालय के अनेक छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

समागम के द्वितीय दिवस दिनांक 28 दिसंबर 2021 में निर्णायकों द्वारा पूर्वनिर्धारित प्रतियोगिताएं टेंट निर्माण, गांठबंधन, प्राथमिक चिकित्सा, हस्तकला प्रदर्शनी, पुल निर्माण, नाट्य प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता, लोक नृत्य, लोकगीत आदि यथासमय सम्पन्न हुई एवं निर्णायकों द्वारा उनका कुशलतापूर्वक निरीक्षण किया गया। द्वितीय दिवस की संध्या पर अचानक बरसात हो गई जिससे संध्याकाल में खुले मैदान में आयोजित होने वाला कैम्प फायर कार्यक्रम थोड़ा व्यवधानित हुआ परन्तु आयोजक टीम द्वारा यथासमय इसको टी.टी. हॉल में स्थानातरित कर कुशलतापूर्वक सम्पन्न कराया। कैम्प फायर कार्यक्रम बड़ा ही रोचक, आकर्षक और मनमोहक रहा। कैम्प फायर कार्यक्रम में सम्मिलित अतिथियों ने समवेत स्वर में इसकी भूरि–भूरि प्रशंसा की।

तृतीय दिवस दिनांक 29 दिसम्बर 2021 को बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय अंतरमहाविद्यालयी त्रिदिवसीय रोवर–रेंजर समागम 2021–22 का समापन मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र सिंह हंसपाल (प्रादेशिक संगठन आयुक्त स्काउट), कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. हरीमोहन पुरवार (अध्यक्ष / उपाध्यक्ष प्रबंधकारिणी कमेटी, डी.वी.सी., उरई), विशिष्ट अतिथि डॉ. देवेंद्र कुमार (अवैतनिक मंत्री, प्रबंधकारिणी कमेटी, डी.वी.सी., उरई) विशिष्ट अतिथि सुश्री पूनम संधू (ए.एस.ओ.सी., झांसी मंडल, झांसी), डॉ. प्रवीण पांडे (जिला कमिश्नर, स्काउट गाइड), श्री राकेश निरंजन (जिला सचिव, स्काउट गाइड), डॉ. आनंद गुप्ता (अध्यक्ष, जिला स्काउट गाइड), श्रीमती संध्या पुरवार (सदस्य प्रबंधकारिणी कमेटी, डी.वी.सी., उरई), श्रीमती किरण वर्मा सचिव, झाँसी स्काउट, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) राजेश चंद्र पांडेय, महाविद्यालय के मुख्य अनुशासन अधिकारी डॉ. गौरव यादव, समागम संयोजक एवं रोवर प्रभारी डॉ. नीरज कुमार द्विवेदी, डॉ. अलकारानी पुरवार, डॉ. श्रवण कुमार त्रिपाठी, डॉ. शीलू सेंगर तथा बुंदेलखण्ड के विभिन्न महाविद्यालयों के रोवर–रेंजर प्रभारी डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. वंदना कुशवाहा, डॉ. छाया त्रिवेदी, डॉ. सुनीता प्रजापति, डॉ. कल्पना निरंजन, डॉ. कविता अग्निहोत्री, डॉ. पूनम यादव, डॉ. पुष्पेंद्र निरंजन, डॉ. मधुरलता द्विवेदी, डॉ. भूपेंद्र त्रिपाठी द्वारा सरस्वती प्रतिमा पर दीप–प्रज्ज्वालन एवं माल्यार्पण कर किया गया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में रोवर–रेंजर गीत, सर्वधर्म प्रार्थना एवं झंडारोहण कार्यक्रम किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) राजेश चंद्र पांडेय ने अपने वक्तव्य में विभिन्न महाविद्यालयों से आए रोवर–रेंजर के पदाधिकारियों एवं छात्र–छात्राओं सहित अतिथियों एवं मुख्य अतिथियों का स्वागत एवं धन्यवाद ज्ञापित किया, साथ ही रोवर–रेंजर के सभी विद्यार्थियों को अपने संगठन के उद्देश्यों के प्रति समर्पित रहकर कार्य करने की सराहना की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राजेंद्र सिंह हंसपाल ने अपने वक्तव्य में तीन दिवसीय रोवर–रेंजर समागम में प्रतिभाग कर रहे विद्यार्थियों को आजीवन संगठन के उद्देश्यों को ईमानदारी के साथ इसे व्यवहारिक रूप देने की बात कही तथा इस अवसर पर उन्होंने एक कर्णप्रिय देशभक्ति गीत की भी प्रस्तुति कर सभी को मंत्रमुग्ध किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. हीरमोहन पुरवार ने रोवर–रेंजर के विद्यार्थियों को अपने देश की संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति गर्व करने एवं

उसे संजोए रखने की बात कही। महाविद्यालय के अवैतनिक मंत्री डॉ. देवेंद्र ने सभी को सफल कार्यक्रम हेतु शुभकामनाएं दी। महाविद्यालय में समागम कार्यक्रम में रोवर–रेंजर के कई पदाधिकारियों ने अपने–अपने अनुभवों को विद्यार्थियों से साझा किए तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। तीन दिवसीय बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय अंतरमहाविद्यालयीय रोवर–रेंजर समागम कार्यक्रम की संक्षिप्त रिपोर्ट सुश्री पूनम संधू ने प्रस्तुत की। रोवर–रेंजर समागम प्रतियोगिता कार्यक्रम में प्रतिभागी विद्यार्थियों को पुरस्कार भी वितरित किए गए जिसमें रोवर वर्ग में प्रथम स्थान–स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, झांसी, द्वितीय स्थान बुंदेलखण्ड महाविद्यालय, झांसी एवं तृतीय स्थान संयुक्त रूप से तीन महाविद्यालयों मथुरा प्रसाद महाविद्यालय, कोंच, दयानन्द वैदिक कॉलेज, उरई एवं टीकाराम महाविद्यालय, मोंठ ने प्राप्त किया। पुरस्कार के इसी क्रम में रेंजर वर्ग में प्रथम स्थान बुंदेलखंड महाविद्यालय, झांसी, द्वितीय स्थान स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, झांसी एवं तृतीय स्थान संयुक्त रूप से दो महाविद्यालयों आर्य कन्या महाविद्यालय, झांसी एवं टीकाराम महाविद्यालय, मोंठ ने प्राप्त किया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. अलकारानी पुरवार द्वारा अभार प्रदर्शन तथा समागम समाप्ति की घोषणा मुख्य अतिथि द्वारा राष्ट्रगान के उपरांत की गई। कार्यक्रम के इस अवसर पर श्री मुकेश बाबू सक्सेना (सदस्य, जिला स्काउट गाइड) सहित समागम कार्यक्रम समिति के समस्त समन्वयक एवं शिक्षक व शिक्षणेत्तर कर्मचारी आदि उपस्थित रहे। इस सम्पूर्ण सत्र का संचालन महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्राध्यापक डॉ. सर्वेश कुमार शाण्डिल्य द्वारा किया गया।

स्काउट गाइड नियम और प्रतिज्ञा

(स्काउट और गाइड नियम एक है लेकिन इसके खण्ड (भाग) नौ (09) है)

स्काउट नियम	**गाइड नियम**
1.) स्काउट विश्वसनीय होता है।	1.) गाइड विश्वसनीय होती है।
2.) स्काउट वफादार होता है।	2.) गाइड वफादार होती है।
3.) स्काउट सबका मित्र और प्रत्येक दूसरे स्काउट का भाई होता है।	3.) गाइड सबकी मित्र और प्रत्येक दूसरे गाइड की बहन होती है।
4.) स्काउट विनम्र होता है ।	4.)गाइड विनम्र होती है ।
5.) स्काउट पशु –पक्षियों का मित्र और प्रकृति प्रेमी होता है।	5.) गाइड पशु–पक्षियों का मित्र और प्रकृति प्रेमी होती है।
6.) स्काउट अनुशासनशील होता है और सार्वजनिक सम्पति की रक्षा करने में सहायता करता है।	6.)गाइड अनुशासनशील होती है और सार्वजनिक सम्पति की रक्षा करने में सहायता करती है।
7.) स्काउट साहसी होता है।	7.) गाइड साहसी होती है।
8.) स्काउट मितव्ययी (कम खर्चीला) होता है।	8.) गाइड मितव्ययी (कम खर्चीला) होती है।
9.) स्काउट मन, वचन और कर्म से शुद्ध होता है।	9.) गाइड मन, वचन और कर्म से शुद्ध होती है।

सेवानिवृत्त कर्मचारी

नाम :	–	**बालकृष्ण**
पिता का नाम	:	स्व. श्री शिवदीन
माता का नाम	:	स्व. श्रीमती रामरानी
पत्नी का नाम	:	श्रीमती बेबी
पुत्र एवं पुत्रबधु	:	अभिषेक कुमार, श्रीमती वर्षा
पुत्री एवं दामाद	:	श्रीमती साधना– अनिल, श्रीमती सरिता– शशि
श्रीमती सारिका	–	विक्रान्त
शैक्षिक योग्यतायें	–	इण्टरमीडिएट
जन्मतिथि	:	20.08.1961
कार्यभार ग्रहण की तिथि	:	21.09.1994
सेवानिवृत्ति की तिथि	:	19.08.2021
सेवानिवृत्ति के समय धारित पद	–	हेड जमादार

स्मृति–शेष

श्री विजयराम

नाम	:	विजयराम
पिता का नाम	:	स्व. श्री रामदीन
माता का नाम	:	स्व. श्रीमती मन्नू
पत्नी का नाम	:	श्रीमती अनीता देवी
पुत्र	:	राज चक्रवर्ती
पुत्री	:	आकांक्षा, अनामिका
पुत्री एवं दामाद	:	वर्षा–रवि
शैक्षिक योग्यताय	:	इण्टरमीडिएट
जन्मतिथि	:	01 / 01 / 1979
कार्यभार ग्रहण की तिथि	:	20 / 07 / 2011
सेवानिवृत्ति के सयम धारित पद	–	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी
अवसान तिथि	:	24 / 06 / 2022

स्मृति–शेष

डॉ. मदन मोहन तिवारी

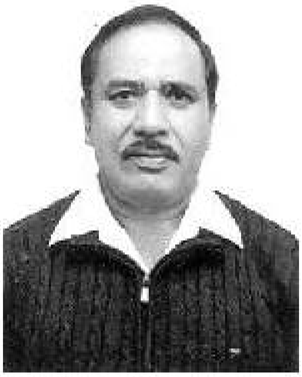

09 अगस्त, 1953 को श्री ज्वालादत्त (पोस्टमास्टर) एवं श्रीमती रुक्मणी देवी की प्रथम सन्तान के रूप में जन्मे डॉ. मदन मोहन तिवारी की सम्पूर्ण शिक्षा अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) में सम्पन्न हुई। कुमाऊँ विश्वविद्यालय के अल्मोड़ा परिसर से वर्ष 1977 में भूगोल विषय से एम.ए. परीक्षा प्रथम श्रेणी में स्वर्णपदक के साथ उत्तीर्ण की। 1977 से 1980 तक अल्मोड़ा परिसर के भूगोल विभाग में अस्थायी प्रवक्ता के रूप में अध्यापन कार्य किया। 1980 से 1983 के मध्य यू.जी.सी. फैलोशिप में कार्य करते हुए 1983 में पी–एच्.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपकी 1983 से 1986 तक डी.एस.टी. पी.आर.एल. तथा ऑक्सफोर्ड पॉलीटेक्निक जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं से सम्बद्ध शोधपरियोजनाओं से जुड़े रहे। इसके अन्तर्गत 14 शोधपत्रों का प्रकाशन करवाया। डा. तिवारी जी ने 1986 में उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग से चयनित होकर 15 जुलाई 1986 को डी0वी0 कालेज, उरई के भूगोल विभाग में कार्यभार ग्रहण किया। महाविद्यालय में लगभग 30 वर्षों तक शिक्षण एवं अन्य शिक्षणेतर दायित्वों का सफल निर्वहन करते हुए महाविद्यालय के उन्नयन हेतु अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

आपके शोधनिर्देशन में 02 विद्यार्थियों ने पीएच्.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस दौरान महाविद्यालय एवं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की विभिन्न समितियों के सक्रिय सदस्य के रूप में कार्य करते हुए 30 जून 2016 को इस महाविद्यालय से सेवानिवृत्त हुए। आपके परिवार में आपकी पत्नी श्रीमती गीता तिवारी जी.जी. आई.सी. उरई में गणित की प्रवक्ता हैं तथा एकमात्र पुत्र अश्रुत तिवारी, जो बंगलौर स्थित एक मल्टीनेशनल कम्पनी में साफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर कार्य कर रहे हैं। सेवानिवृत्ति के ही कुछ समय पश्चात् 10 जुलाई 2021 को अकस्मात् हृदयाघात से आपका निधन हो गया।

डॉ. तिवारी स्वभाव से सरल एवं सौम्य थे। सदैव ही आपने अपने कर्तव्यों को महत्व प्रदान किया। आप सदैव ही महाविद्यालय समय से आए और विद्यार्थियों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन पूर्ण निष्ठा के साथ आजीवन करते रहे। आपकी जीवन–चर्या महाविद्यालय परिवार के लिए सदैव प्रेरणास्रोत रहेगी।

स्मृति–शेष

डॉ. साम्या बघेल

संक्षिप्त परिचय–

जन्म – 20 अगस्त, 1992

अवसान – 31 मार्च, 2022

ग्राम – पुरवा बले, पोस्ट–सल्लापुर, (फफूंद) औरैया, उ.प्र.

हाईस्कूल – 76 प्रतिशत (2006)

इंटरमीडिएट– 79 प्रतिशत (2008)

बी0ए0 – 78 प्रतिशत (2011)

एम0ए0 – 73.38 प्रतिशत (2013)

यूजीसी नेट/जेआरएफ उत्तीर्ण (2013)

पीएच0डी0 एवार्ड–2022 (सर्वश्रेष्ठ पी.एच.डी. एवार्ड)

नियुक्ति–11 सितम्बर, 2017, असिस्टेंट प्रोफेसर (मनोविज्ञान विभाग), डी.वी. कॉलेज, उरई (उ0प्र0 उच्च शिक्षा आयोग से चयनित)

डॉ. साम्या बघेल एक आत्मनिर्भर, सशक्त, सामर्थ्यवान् एवं कर्तव्यनिष्ठ विदुषी प्राध्यापिका थीं। चिंतनशील एवं सुलझी हुई स्पष्ट दृष्टि से संचालित उनका व्यक्तित्व स्वयं में एक संदेश रहा। परिस्थितियों के संघात ने जीवन के सच को चाहे जैसे बदला हो, पर उनके 'जीवन से भरपूर' सकारात्मक दृढ़ व्यक्तित्व की जो छवि उन्हें जानने वालों के मन में है, वह तो सबके मन में सदैव रहेगी। एक अकादमिक और टेक्नोक्रेट प्राध्यापिका के तौर पर वह विद्यार्थियों में बहुत लोकप्रिय थीं। अपने सहज और सरल स्वभाव के कारण, आज भी वह कितने ही विद्यार्थियों के लिए वे रोल मॉडल हैं। शिक्षिका के साथ–साथ वे व्यावहारिक दृष्टि से एक आदर्श व्यक्ति के रूप में लोकप्रिय रहीं।

"मेरे ख्वाबों की जागीरों से मुझे फुरसत कहां" कहने वाली डॉ. साम्या की जागीरें निश्चय ही असाधारण थीं। उनके व्यक्तित्व को शब्दों में बांध पाना बहुत मुश्किल है। वह अपने आस–पास के लोगों से सहज और आत्मीय थीं, पर वास्तव में उनके अन्तर्मन की चेतना के विस्तार के विषय में अधिक कह पाना कठिन है। महादेवी वर्मा की पंक्ति हैं–

"सुधि मेरे आगम की जग में, सुख की सिहरन हो अंत खिली।"

उनके जीवन की भास्वरता उनकी स्मृतियों एवं शिक्षा के माध्यम से सदा प्रकाशित रहेगी। डॉ. साम्या का इतनी कम उम्र में असमय जाना महाविद्यालय और अकादमिक उत्कर्ष के लिए बहुत बड़ी क्षति है।

जब अपने चले जाते हैं तो बहुत दुःख होता है, मगर सच यह भी है कि शरीर नश्वर है। इस नश्वर संसार में उनका जीवन बस इतना ही था। जब हम अपने जीवन में इस तरह के एक विशेष व्यक्ति को खो देते हैं, समय रुकता प्रतीत होता है, पर समय रुकता नहीं, एक समय लगता है कि लोग भूल लाते हैं, पर लोग भूलते नहीं। डॉ. साम्या बघेल के उदात्त व्यक्तित्व, योग्यता एवं उन्नत जीवन के कारण महाविद्यालय परिवार उनकी कमी को सदैव अनुभव करेगा।

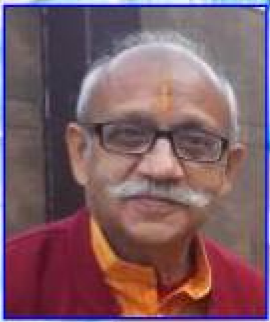

डॉ. हरीमोहन पुरवार
अध्यक्ष/उपाध्यक्ष

प्रो० (डॉ०) राजेश चन्द्र पाण्डेय
प्राचार्य

डॉ. देवेन्द्र कुमार
अवैतनिक मंत्री/प्रबन्धक

प्रबन्धकारिणी कमेटी

1.	डॉ0 हरीमोहन पुरवार	अध्यक्ष/उपाध्यक्ष
2.	डॉ0 देवेन्द्र कुमार	अवैतनिक मंत्री/प्रबन्धक
3.	श्री इन्द्रजीत सिंह यादव	सदस्य
4.	श्री हरीशंकर रावत	सदस्य
5.	श्री राजेन्द्र कुमार खरे	सदस्य
6.	डॉ0 दिलीप सेठ	सदस्य
7.	श्री सत्यप्रकाश खरे	सदस्य
8.	डॉ0 राकेश गुप्ता	सदस्य
9.	श्री कैलाश खरे	सदस्य
10.	प्राचार्य	पदेन सदस्य
11.	शिक्षक प्रतिनिधि सदस्य	
12.	शिक्षक प्रतिनिधि सदस्य	
13.	शिक्षक प्रतिनिधि सदस्य	
14.	शिक्षणेतर कर्मचारी प्रतिनिधि सदस्य	

- स्वामी दयानन्द सरस्वती प्रख्यात लेखक, वेदों के विद्वान, संन्यासी, योगी, आध्यात्मिक नेता, धार्मिक सुधारक, भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थानवादी पुरोधा, राष्ट्रभक्त, दार्शनिक–शिक्षक, समाज सुधारक, क्रांतिकारी विचारक, शिक्षाविद्, भारत के शैक्षिक पुनर्जागरण की आधारशिला, कर्मयोगी थे। उनका विचार था कि व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य लोगों के शारीरिक, सामाजिक और आध्यात्मिक कल्याण के लिये कार्य करना होना चाहिये। उन्होंने व्यक्तिगत उत्थान के स्थान पर सामूहिक उत्थान को अधिक महत्त्व दिया। उन्होंने कहा कि सामाजिक कल्याण और सामूहिक उत्थान तभी संभव है जब व्यक्ति में सेवा और त्याग की भावना हो।

- उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ विज्ञान और समाजशास्त्र जैसे विषयों का अध्ययन नहीं बल्कि चरित्र निर्माण, सेवाभाव और निष्ठा का विकास करना है। उनके द्वारा शिक्षा को जनहितकारी गतिविधियों के साथ संयोजित किया गया।

- स्वामी दयानन्द सरस्वती अंग्रेजी सीखने के विरुद्ध नहीं थे पर उनका मानना था कि बच्चों की शिक्षा भारतीय भाषा के माध्यम से ही होनी चाहिए। वे हिन्दी की शिक्षा पूरे भारत में अनिवार्य करना चाहते थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रयासों के फलस्वरूप ही उच्च शिक्षा तक का माध्यम देशी भाषायें बन सकीं। स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान एक विचारक और सुधारक दोनों ही रूपों में सहज प्रेरणा का स्रोत है।

स्वधर्म, स्वभाषा, स्वराष्ट्र, स्वसंस्कृति
और स्वदेशोन्नति के अग्रदूत एवं
वैचारिक आन्दोलन, शास्त्रार्थ तथा
व्याख्यान के पुरोधा–

स्वामी दयानन्द सरस्वती
(1824–1883)